"नाथ-सम्प्रदाय और सूक्ष्म-वेद"
प्रकाशक
योगी शंभूनाथ 'रावल'
संकलन एवं सम्पादन
योगी सवाईनाथ 'सामाँ'

Scanned by CamScanner

प्रकाशक एवं वितरक- Publisher & Sole Distributor
योगी शंभूनाथ रावल- Yogi Shambhoo Nath 'Raval'

श्री शिवावतार योगाचार्य Shri Shivavatar Yogacharya Guru Goraksh
गुरु गोरक्षनाथ योगाश्रम समिति, Nath Yogashram Samiti,
आम्बेश्वर धाम, पोस्ट पालड़ी एम., Aambeshwar Dham, Post Paldi M.,
सिरोही, राजस्थान Sirohi, Rajasthan
अमृत संजीवनी बाग, नैशनल हाईवे नं. 11, पो. पालड़ी एम., सिरोही, राजस्थान

प्रथम संस्करण : 2000 प्रतियां

मूल्यः रू. 300/-

रूप सज्जा एवं परिकल्पना
योगी सवाई नाथ 'सामाँ'
पोस्ट : टहला, तहसील : राजगढ़, जिला : अलवर, राजस्थान पिन : 301410
गुरुद्वारा, मढ़ी लौंद, तहसील : नरवाणा, जिला : जींद, हरियाणा
साभार : 1. षट्वक्र में नाद (नाथ) व ज्योतिष में नाद वाले चित्रांकन योगी शंभू नाथ 'रावल'
2. सिद्ध कुंभारीपाव की सत्ताई चक्रों वाली कलात्मक प्राचीन प्रति से प्राप्त चित्र
श्री बोदन मीणा वैद्य, मल्लाणा, राजगढ़, अलवर
मुद्रक : एस. डी. आर दिल्ली

"आशीर्वचन"

S.T.D. (0551)
255453
☎ 255454
255455

॥ ॐ नमो भगवते गोरक्षनाथाय ॥

श्री गोरखनाथ मन्दिर

गोरखपुर

महन्त अवेद्यनाथ
पूर्व संसद सदस्य (लोक सभा)

प्रिय योगी सवाई नाथ जी

शुभाशीर्वाद।

आपके द्वारा सम्पादित एवं शीघ्र, प्रकाशित होने वाली पुस्तक "नाथ सम्प्रदाय एवं सूक्ष्म वेद" की विषय सूची, सम्पादकीय, प्रकाशकीय लेख तथा भूमिका की प्रति प्राप्त हुई जिसे पढ़कर हृदय आनन्द विभोर हो गया। यह तो निर्विवाद रूप से मान्य है कि वैष्णव भक्ति के विकास के पूर्व समग्र भारत भूमि में नाथ पंथी योगियों का व्यापक प्रभाव था। उत्तरी भारत की सन्त परम्परा तो नाथ योग से प्रभावित है ही, दक्षिण में भी महाराष्ट्र भक्ति साहित्य एवं पश्चिम में गुजरात तथा राजस्थान भक्ति साहित्य पर भी नाथ–मत का प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। भारत की किसी भी जाति के इतिवृत्त का अनुशीलन करने से पता चलता है कि सभी की साधना के क्रम पर्याय भंग अथवा विशृंखल हो चले हैं केवल नाथ उपाधिधारी योगी गण ही अपने पूर्व पुरुषों के स्मृति स्वरुप ऊँकार साधना और नाथ योग साधना को अव्याहत रखते चले आ रहे हैं। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ अयोनिज एवं सर्वकालिक हैं। जब से इस पृथ्वी पर मानव की सृष्टि हुई है, जब से देवता हैं, जब से पृथ्वी पर गंगा बह रही है, जब से गगन में सूर्य चन्द्र विद्यमान हैं, तब से ही इस पृथ्वी पर नाथ सम्प्रदाय एवं नाथ योगी हैं। इस तरह का परिचय पृथ्वी पर किसी अन्य वर्ग का नहीं है। विश्व मानव के कल्याण के लिये सहज निराकार ऊँकार साधना द्वारा भगवान का सान्निध्य लाभ तथा नाथत्व, स्वामित्व अथवा प्रभुत्व की प्राप्ति होती है। जीव, जगत तथा ईश्वर ये तीनों तत्व परस्पर आलिंगन करके ही नित्य विद्यमान रहते हैं। ये तीनों ही परस्पर सापेक्ष हैं। इनमें से किन्हीं दो के सामरस्य से ही तीसरे का अस्तित्व परिलक्षित होता है। इस परम् सिद्धान्त का अनुशीलन करते हुये अनेक विप्लवों, ताण्डवों का सामना करते हुये नाथ योगीगण अविछिन्न रूप से अपनी स्थिति में सुदृढ़ हैं। नाथ योगियों की धर्म वाणी मानवात्मा की मुक्ति है। ज्ञानी कई जन्मों में ज्ञानार्जन के बाद योगी होता है पर योगी एक ही जन्म में ज्ञानी हो जाता है। चाहे जो भी कारण रहे हों पर यह कटु सत्य है कि नाथ पंथ के दुर्लभ ग्रन्थों, लेखों एवं मंत्रों का विपुल भण्डार काल के गर्भ में विलीन हो गया है। कुछ अलिखित विचार एवं मंत्र योग्य शिष्य न होने के कारण गुरु के शरीर छोड़ने के साथ ही सृष्टिकर्ता में विलीन हो गये। ऐसे में बचे एवं यत्र–तत्र बिखरे हुये नाथ साहित्य को सहेजना एक दुष्कर एवं अथाह समुद्र में मोती खोजने जैसा कार्य था। इस महान कार्य के सम्पादन के लिये, लोक कल्याण के लिये गंगा माता को पृथ्वी पर लाने वाले राजा भागीरथ के समान एक दूसरे भागीरथ की आवश्यकता थी और वह भागीरथ बने हमारे पूज्य गुरुदेव प्रातः स्मरणीय ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज। अलौकिक तत्व ज्ञानी योगी गम्भीरनाथ जी के सानिध्य में गुरु महाराज ने विपुल नाथ साहित्य का सम्पादन करवाया। उनके इस अमूल्य योगदान के लिये नाथ पंथ सदैव उनका ऋणी रहेगा। उन्हीं की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मैं भी यह कार्य जारी रख सका हूँ। इसके लिये तमाम विद्वानों, शोधार्थियों, नाथ योगियों एवं अन्य मतावलम्बी सन्तों महन्तों की सेवायें ली गयी हैं। आप द्वारा सम्पादित

पुस्तक "नाथ सम्प्रदाय एवं सूक्ष्म वेद" के शीघ्र प्रकाशन की बात जानकर हृदय में कुछ इस प्रकार का भाव आया कि आप गोरक्षपीठ के ही अधूरे कार्यों को सम्भवतः प्रतिपादित कर रहे हैं।

मूल रूप से नौ भागों में विभक्त पुस्तक के प्रथम भाग में जिन विषयों एवं सामग्रियों का समावेश किया गया है, वे मूलतः नाथ पंथ की आत्मा ही है। द्वितीय भाग जाप एवं मंत्रों से समृद्ध है। इतने सारे मंत्र एक साथ सम्भवतः अन्यत्र दुर्लभ होंगे। तृतीय भाग में भेष बारह पंथ में प्रयुक्त होने वाले अवधूत मंत्रों की विषद एवं व्यापक चर्चा तथा चतुर्थ एवं पंचम भाग में क्रमशः नाथ जी के भण्डार में प्रयुक्त किये जाने वाले मंत्रों एवं नाथ जी के रोट में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों की चर्चा है। वस्तुतः इन सभी बातों का सम्यक ज्ञान नाथ पंथ के अनुयायिओं के लिये काफी ज्ञानवर्द्धक एवं लाभदायी होगा क्योंकि यह सभी उनकी जीवन चर्चा का ही एक अंग है। छठे भाग में नाथ सम्प्रदाय की सायं एवं प्रातः की आरती के साथ नौ नाथ स्वरुप, श्री गुरु गोरक्षनाथ के द्वादश नाम आदि के साथ द्वादश ज्योर्तिलिंग की आरती भी दी गयी है जो कि नाथ पंथ की उदारता एवं उसके लोक कल्याणकारी स्वरुप को दर्शाती है। सप्तम भाग भैरव पूजन की जानकारी देने वाला तथा अष्टम भाग बारह पंथों के बारे में विशद जानकारी देने वाला है। नवम् एवं अन्तिम भाग में राजा मानसिंह एवं पूर्व नेपाल नरेश पृथ्वी नारायण शाह के आख्यानों की चर्चा के साथ पुस्तक समाप्त की गई है जो कि सर्वथा उचित है क्योंकि हिमालय की गोद में बसे हुये विश्व के एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल की आत्मा में ही गोरक्षनाथ जी निवास करते हैं। जैसा कि यह सर्वविदित है नेपाल नरेश पृथ्वी नारायण शाह ने युद्ध के मैदान में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा की थी तथा एक राजाज्ञा द्वारा अपने राज्य का प्रमुख संरक्षक श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को घोषित किया था। तभी से इस राजवंश का नाम श्री गोरक्ष शाह वंश पड़ गया। शिवावतार श्री गुरु गोरक्षनाथ जी नेपाल के प्रतिपालक सन्त हैं। वास्तव में नाथ सम्प्रदाय भारत एवं नेपाल के सम्बन्धों के बीच एक अटूट कड़ी है। नाथ दर्शन में शिव तत्व को ही सृष्टि का आधार एवं शक्ति के साथ उसके समरसीकरण की आध्यात्मिक प्रक्रिया को ही कुण्डलिनी साधना का नाम दिया गया है। कुण्डलिनी में निरूपित ध्वनियों की स्थिति, बीज मंत्रों, तत्वों, देवों तथा उनके वाहन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से पुस्तक में दी गयी कुण्डलिनी चक्रतालिका नाथ योगियों के लिये एक सूक्ष्म शब्दकोश के रूप में सिद्ध होगी।

प्रियवर इतनी सारी ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण यह पुस्तक वास्तव में गागर में सागर सिद्ध होगी तथा नाथ पंथ के लिये एक अमूल्य धरोहर होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। आयु अधिक होने एवं स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण अब मुझे अपनी दिनचर्या सीमित करनी पड़ी है। इससे पठन–पाठन एवं लेखन कार्य भी प्रभावित हुआ है इसी से लेख भेजने में कुछ विलम्ब हुआ। इस पीठ के उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ भी प्रबल इच्छा रहते हुये अपना अलग से लेख नहीं भेज पा रहे हैं। वैसे पुस्तक की विषय सामग्री, सम्पादकीय, प्रकाशकीय लेख पढ़कर उन्हें भी अतीव प्रसन्नता हुई थी।

अन्त में पुनः इस आशा एवं विश्वास के साथ कि यह पुस्तक लोकप्रियता के उच्चतम् शिखर तक पहुंचेगी एवं नाथ पंथ के अनुयायिओं के लिये एक सच्चे मार्गदर्शक का कार्य करेगी आपको तथा पुस्तक के प्रकाशक योगी शम्भूनाथ "रावल" को साधुवाद देता हूँ। प्रकाशन के पश्चात् पुस्तक की एक प्रति गोरखपुर अवश्य भेजें ताकि लोक कल्याण के लिये उसकी विषय वस्तुओं का उपयोग योगवाणी के आगामी अंकों में किया जा सके तथा आपकी इस कीर्ति का नाथ पंथ के अनुयायी तथा अन्य जिज्ञासु लाभ उठा सकें।

शुभेच्छु

दिनांक : 20.03.2004

महन्त अवेद्यनाथ

आशीर्वचन

प्रिय आत्मन्

सामीं योगी सवाई नाथ

आश्रम के सभी साधु महात्माओं सहित आपको आदेश आदेश।

आपके द्वारा प्रेषित पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि आप नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित पुस्तक 'नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद' का लेखन कार्य सम्पादित कर रहे हैं। नाथ सम्प्रदाय में प्रचलित परम्परायें भेष में पुरातन कालीन गौरव पूर्ण ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक आत्मोत्थान से सम्बन्धित पद्धति, आत्म तत्त्व बोध, शब्द, नाथ, नाद आदि गूढ़ विषयों का गवेषणात्मक विवेचन तथा वैदिक कालीन परम्पराओं का समावेश सूक्ष्म विवेचना करना आपके बुद्धि कौशल एवं ज्ञान की उच्चता को प्रदर्शित करेगा। अनुक्रमणिका, भूमिका, प्रस्तावना के अवलोकन से विदित होता है कि यह पुस्तक उस सूर्य की प्रभा के सदृश होगी जो अनन्त भूमण्डलीय नक्षत्रों को प्रकाशित कर और अमावस्या के गहन अन्धकार को नष्ट करता है। सन्त महात्मा रूपी सज्जनों के हृदय कमल इस ज्ञान प्रकाश में प्रफुल्लित होंगे।

पुरातन नाथ सम्प्रदाय को कितने झंझावातों का सामना करना पड़ा, यद्यपि आदि नाथ शिव सदाशिव अविनाशी जो अनन्त ब्रह्माण्डों के नायक हैं इसके आदि प्रवर्तक हैं। विभिन्न सम्प्रदायों से इसका सामंजस्य कर एक विनीत भाव प्रकट किया गया है। यह दुरुह कार्य कर तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन तमाम, घात-प्रत्याघातों का सामना नाथ सम्प्रदाय को करना पड़ा था। वैदिक मन्त्रों का शिव द्वारा श्रापित होना तदुपरान्त शिव स्वरूप गुरु गोरक्ष नाथ द्वारा शाबरी मन्त्रों का सृजन और कलिकाल में उनकी उपासना की पद्धतियों का सकारात्मक रूप में अवतरित करना। गुरु शिष्य परम्परा की अविरल धारा द्वारा निरन्तर शब्द रूप में प्रवाहित होना। युगानुरुप उनको साहित्यिक रूप देना। इस कार्य के लिए आपको साधुवाद देता हूँ और इस कार्य की साधु साधु कहकर प्रशंसा करता हूँ।

हमारे आश्रम द्वारा सम्प्रदाय की गोरक्ष सिद्ध सिद्धांत पद्धति, गोरक्ष मन्त्रावली लघु पुस्तिका दादा गुरु प्रातः स्मरणीय स्वामी गुरु पूर्ण नाथ योगी द्वारा पूर्व काल में प्रकाशित हुई हैं। अक्षर अविनाशी है इसलिए वह ब्रह्म स्वरुप है। सृष्टि के आदि काल में पूर्ण तत्त्व सदा शिव तत्वतः तीन स्वरुपों में सृष्टि रचना, पालन एवं संहारण शक्ति के रूप में विभाजित हो गया इस लेखन कार्य से रचित साहित्य सरल, परिमार्जित, सुबोध, सर्वहितकारी तथा साधकों एवं साधुओं के लिए गम्भीर विषयों की गूढ़ ग्रन्थियों को खोलकर उनका मार्ग प्रशस्त करेगा। मठ का इतिहास 'बाबा मस्तनाथ चरितम्' पूर्व गुरुवर्य श्री महन्त श्रेयोनाथ योगी द्वारा पूर्व में प्रकाशित कराया गया वर्तमान में मेरा भी प्रयास है कि नाथ सम्प्रदाय का विच्छिन्न साहित्य संकलित हो। इस ओर मैं अपने संस्थान से संस्कृत विद्वानों का उन स्थानों पर जहाँ सुना गया है कि कुछ हस्त लिखित लिपियां उपलब्ध हैं, उनको भेजा किन्तु सफलता उपलब्ध नहीं हुई। आगे भी मैं स्वतः इस कार्य के लिए कृत संकल्प हूँ। सद्यः एक नवीन पुस्तक एक भक्त द्वारा प्रकाशित होने जा रही है। आपके इस सद्प्रयास की "नाथ सम्प्रदाय एवं सूक्ष्म वेद" अन्तिम चरण में है। कलेवर में विषय सामग्री वर्तमान युगानुरुप सन्तों महात्माओं एवं जनोपयोगी हो। बेशक अन्य सम्प्रदाय अनुयायी किन्हीं भावनाओं की शृंखला में आबद्ध हों किन्तु भारत के कोने कोने में शाबरी मन्त्रों द्वारा जीवन दायिनी शक्ति, ऊर्जा का संचार हो रहा है। अशिक्षित से अशिक्षित व्यक्ति गुरु गोरक्ष नाथ जी कृत मन्त्रों के प्रभाव से लाभान्वित है।

इस प्रकाशन एवं प्रकाशित सामग्री के लिए किये गये स्तुत्य प्रयास के लिये श्री बाबा मस्तनाथ जी की महती अनुकम्पा से मैं मंगल कामना करता हूँ कि यह धरातलीय सच्चाई को प्रस्तुत कर सर्व जनोपयोगी एवं योगियों का पथ प्रशस्त करने वाली सिद्ध हो।

मेरी हार्दिक कामना है कि आप सतत् लेखन कार्य करते हुए इस पावन कार्य में अपनी ज्ञान आहुति से इस ज्ञान की शिखा को प्रज्वलित रखें। अन्यान्य प्राचीन काल में भी जो ग्रन्थ या शास्त्र लिखे गये हों या उपलब्ध हों उनको भी प्रकाशन में लाया जाए। मैं पुनः इस पुनीत कार्य और आपके पवित्र भावों की मंगल कामना करता हुआ सफल सम्पादन तथा योगी शंभू नाथ जी के लिए साधुवाद देता हूँ। लेखनी को विराम न देना युग के अनुरूप समाज में धार्मिक गुणों माता पिता, सन्त, महात्माओं का समादर आदि से ओत प्रोत भावों तथा सच्चे भारतीयता के आत्मोत्थान व तात्त्विक विवेचन की गवेषणात्मक शैली हो।

धन्यवाद, कल्याण हो, कल्याणकारी कार्य के प्रति समर्पित भाव से अग्रसर हों, यही मेरी आपके प्रति मंगल कामना आशीर्वचन सर्व लोक हिताय।

आपका कल्याण हो।

जय श्री बाबा मस्तनाथ जी !

भवदीय शुभाकांक्षी

महन्त चांद नाथ योगी
मठ गद्दी अस्थल बोहर रोहतक (हरियाणा)
पिन : 124021
रजि. ले. नं. 157 दिनांक 10.03.04

"ॐ शिव-गोरक्ष"

अनुक्रमणिका

नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद

"प्रथम-भाग"

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	प्रकाशकीय प्राक्कथ्य	1 – 3
2.	भूमिका	4 – 12
3.	प्रस्तावना	13 – 23
4.	सूक्ष्मवेद (जोगेश्वरी साषी)	24 – 44
5.	महात्म्य सूक्ष्म–वेद	45 – 46
6.	गोरक्ष शिक्षा दरसण	46 – 47
7.	तिलक–ज्ञान	47 – 51
8.	अजपा–गायत्री	51 – 52
9.	कुंडलिनी चक्र तालिका	53
10.	ज्ञान–गोष्ठी	54
11.	ब्रह्म–ज्ञान	54 – 56
12.	तिलक–ज्ञान	56 – 58
13.	ज्ञान–गोदड़ी	58 – 60
14.	आत्म–ज्ञान	60 – 61
15.	योग–ज्ञान–चालीसा	61 – 64
16.	गोरख–बोध	64 – 88
17.	गोरख–गणेश–गोष्ठी	88 – 90
18.	अथपंच अग्नि कथन	90
19.	अथ अष्टमुद्रा कथन	91
20.	अजैपाल की सबदी	91 – 92
21.	भर्तृहरि जी की संक्षिप्त सबदी	92
22.	चर्पट जी की सबदी	92 – 96

"द्वितीय-भाग"

" नाथ सम्प्रदाय के गायत्री जाप, मंत्र"

1.	कामधेनु गायत्री	97
2.	धौल (धवल) बैल गायत्री	97 – 98
3.	धरती द्वादश नाम जाप	98
4.	अलील गायत्री	98
5.	शिव गायत्री	99

6.	गोरक्ष गायत्री	99
7.	आदेश गायत्री	100
8.	मोक्ष गायत्री	100
9.	बाला अमर गायत्री	100
10.	सरजीवन बाला	101
11.	श्री अमर बाला मंत्र	101
12.	श्री बाला जप बीज मंत्र	101 – 103
13.	गणेश गायत्री	104
14.	त्रिकाल गायत्री	105
15.	शंख गायत्री	105 – 106
16.	गर्भ गायत्री	106 – 110
17.	काल गायत्री	111
18.	जल गायत्री (छोटी)	111
19.	काया गायत्री अधूरी	111
20.	अघोर मंत्र	112
21.	सरभंग गायत्री	113 – 114
22.	भस्म गायत्री	115
23.	भस्म गायत्री सर्वमान्य	115 – 116
24.	चारों युग की भस्म गायत्री	116 – 120
25.	विभूति पलटने का मंत्र	121
26.	हुकम जाप	121 – 124

''तृतीय–भाग''

भेष बारह पंथ में प्रयुक्त होने वाले अवधूत मंत्र

1.	चोटी काटने का मंत्र	125
2.	गुरु बीज मंत्र	125 – 126
3.	बीज मंत्र	126
4.	धूणा पाणी मंत्र	126
5.	धूप ध्यान का मंत्र	126 – 127
6.	नाद जनेऊ का मंत्र	127
7.	नाद जनेऊ जाप	128
8.	चीरा देने का मंत्र	128

9.	भगवां मंत्र	129
10.	तूम्बे का मंत्र	129
11.	चिमटे का मंत्र	129
12.	बाघाम्बर मृगछाला मंत्र	129
13.	खप्पर का मंत्र	130
14.	विभूति धारण करने का मंत्र	130
15.	धूप ज्योति मंत्र	130
16	औघड़ पंच मात्रा	131
17	औघड़ पंच मात्रा	131
18	रुद्राक्ष मंत्र	132
19	चौरासी सिद्ध गायत्री जाप	132 – 133
20	पंच धूनी चौरासी सिद्ध जाप	133 – 135
21.	जाप की कार का मंत्र	135
22.	श्री पात्र देव स्थापना	136
23.	नाद मुद्रा चक्रावलि जाप	136 – 137
24.	रौरास (रहोरहस्य)	137 – 138
25.	षट्दर्शन गायत्री	138 – 139
26.	अवधूत गायत्री	139 – 140
27.	गोरक्ष कुंडली	140 – 141
28.	मोहम्मद बोध	141 – 142
29.	धूनी प्रचण्ड जाप	143
30.	गोरक्ष कील	143 – 144
31.	लक्ष्मण कुंडली	144 – 145
32.	सूर्य मंत्र	145
33.	पंच स्नान व्रत जाप	146
34.	सर्भङ्ग लीला	146 – 147
35.	सर्भङ्ग गायत्री जाप	147
36.	जोत माता की रौरास	147 – 149
37.	समाधि गायत्री बीज मंत्र	149
38.	समाधि गायत्री	150 – 151

"चतुर्थ–भाग"

श्री नाथ जी के भण्डार में प्रयुक्त किये जाने वाले मंत्र

1. गणेश कूंची 152
2. गणेश कूंची मंत्र 152
3. कुबेर भण्डार गायत्री 152
4. भण्डार का मंत्र 153
5. भण्डार चेताने का मंत्र 153
6. बिल पात्रा 153
7. भण्डार पाने का मंत्र 154
8. अन्नपूर्णा मंत्र 154

"पंचम–भाग"

श्री नाथ जी के रोट में प्रयुक्त होने वाले मंत्र

1. धूनी पर रोट बनाने का मंत्र 155
2. रोट को गादी देने का मंत्र 155
3. रोट मुक्ता जाप 155
4. रोट नथाना जाप 155 – 156
5. दश बिल पात्रा 156 – 159

"छठा–भाग"

सायं व प्रातः आरती स्तुतियां

1. निर्गुण लीला 160 – 161
2. निर्वाण समाधि 161 – 162
3. छः जतियों का शब्द 162 – 163
4. बाला अष्टक 163 – 164
5. शिव गोरक्ष मंगला आरती 164 – 165
6. श्रीनाथ जी की संध्या आरती 165 – 166
7. स्तुति संध्या काल की 166 – 167
8. नौ नाथ स्वरूप 167 – 171
9. श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी के द्वादश नाम 171 – 172

10. नौ नाथ माला — 172
11. विधि महात्म्य पाठ नव–नाथ — 172 – 173
12. श्री गोरक्ष चालीसा — 173 – 174
13. गोरक्षनाथ का बारह मास — 175
14. गोरक्षनाथष्टक — 175
15. शिव गोरक्ष बावनी — 176 – 177
16. श्री सिद्ध चालीसा — 177 – 179
17. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग आरती — 180
18. भगवान शिव शंकर की आरती — 180 – 181
19. श्री पात्र देवता अष्टक — 181 – 182
20. गोरक्ष स्तवाधीश स्तोत्रम् — 183
21. प्रातः स्मरण — 183
22. नाथ निरंजन की आरती — 184
23. आदेशार्थ दोहा — 184 – 185
24. नौनाथ रक्षा जाप — 185
25. गोरक्ष स्तुति — 185
26. मत्स्येन्द्र स्तुति — 185
27. अथ ज्वाला काली सप्तवार स्तुति — 186

"सप्तम–भाग"

भैरव पूजन

1. अष्ट भैरव जाप — 187 – 188
2. भैरव अष्ट नाम — 189
3. भैरव ईष्ट जंजीरा — 189
4. भैरव नाथ स्तुति — 190
5. भैरव चोला जाप — 190
6. भैरव चालीसा — 191 – 192
7. काल भैरव बीज मंत्र — 192
8. भैरव जी की आरती — 192

''अष्ठम्–भाग''

1. बारह पंथों के मूल स्थान 193
2. बारह पंथों के स्वरूप 193
3. घोड़ा चोली जी की बारह पंथ मात्रा 194 – 195
4. वर्तमान के बारह पंथ 195

''नवम्–भाग''

राजा मानसिंह व नेपाल नरेश का पृथ्वी नारायण शाह देव नाथ–गुरु–गुणगान

1. आदेश राजा मानसिंह 196
2. गोरख गणेश वन्दना राजा मानसिंह 196
3. नेपाल नरेश पृथ्वी नारायण शाह देव 196

प्रकाशकीय–प्राक्कथ्य

स्वतन्त्रता से पहले भारत में शिक्षा की बहुत कमी थी। नाथ सम्प्रदाय की शिक्षा इससे कुछ भिन्न थी। नाथ सम्प्रदाय ने आदिकाल से शब्द को गुरु माना है और इसके महत्व को समझा है। शब्द की सर्वोच्च सत्ता नाथ साहित्य में स्वीकार की गई, इसलिए शब्द को गुरु माना गया है। नाथ सिद्धों की मार्यादा एवं आचरणों में शब्द का महत्व उनकी श्वाच्छोश्वांस (अजपा जाप) में पैठा था। इसके अतिरिक्त शब्द को निराकार मानने में नाथ सम्प्रदाय की विशेष आस्था थी। शब्द को आकारबद्ध या लेखबद्ध करना घोर पाप माना जाता था। आज भी यह मर्यादा नाथ योगियों की शिव गोरक्ष योग जमातों में उपस्थित है। आकारहीन ध्वनियों को आकार देकर सृष्टि को अनुबन्धित करना, नौ नाथ चौरासी सिद्धों और देव पुरुषों को लिखने और चुनौती देने के समान अपराध था। जो भी लेखन होते थे बहुत गुप्त होते थे तथा इसका पता चलने पर लेखनकर्त्ता को नाथ सम्प्रदाय से बाहर निकाल दिया जाता था। इस पर भी गुप्त रूप से योगियों के परम्परागत स्थानों पर मंत्र आदि लिखकर सुरक्षित रखने की अपवाद के रूप में गूढ़ प्रथा थी। इससे पहले सिद्धों के काल में साहित्य का मौखिक और फिर लिखित में विस्तार था। किन्हीं अज्ञात कारणों अथवा नाथ साहित्य के उद्देश्य को भटकाव से बचाने या उसकी पहचान बनाये रखने के लिये मंत्र लेखन पर प्रतिबन्ध लगाया गया ऐसा अनुमान होता है। प्रत्यक्ष रूप से लेखन प्रतिबन्ध के कारण नाथ साहित्य का बहुत बड़ा भाग लुप्त हो गया था। स्वतंत्रता के बाद इस समस्या को शिक्षित अनुयायियों ने गम्भीरता से लिया और नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धी साहित्य को प्रकाशित करने का समय समय पर साहस दिखाया। इन में गोरक्षनाथ मंदिर, गोरखपुर के प्रातः स्मरणीय परम पूज्य पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजय नाथजी ने अपने गुरु प्रातः स्मरणीय परम पूज्य पीठाधीश्वर महंत योगी गंभीर नाथजी के सान्निध्य में महत्वपूर्ण प्रकाशन करवाये तथा उनके पश्चात् उनके उत्तराधिकारी गोरक्ष पीठाधीश्वर महन्त अवेद्य नाथ जी का नाथ साहित्य के प्रकाशन में सबसे अधिक व उल्लेखनीय योगदान रहा। आप अपने प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव गोरक्ष पीठाधीश्वर के नेतृत्व में कई ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन करा चुके थे। योग वाणी का सतत् प्रकाशन गत पांच दशकों से अधिक समय से उनके द्वारा जारी है। अंग्रेजी काल में दो पीढ़ी पूर्व के मस्तनाथ पीठ के अंग्रेज शासन द्वारा केसरे हिन्द की पदवी प्राप्त प्रातःस्मरणीय परम पूज्य महन्त योगी पीर पूर्णनाथ जी मठ अस्थल बोहर, रोहतक ने गोरक्ष सिद्ध सिद्धान्त पद्धति तथा गोरक्ष मंत्रावली (लघु पुस्तिका) का प्रकाशन कराया। मस्तनाथ पीठ के पूर्व पीठाधीश्वर महंत योगी पीर श्रेयोनाथ जी ने 'मस्तनाथ चरितम्' पुस्तक में मठ के इतिहास को गौरवान्वित किया। यह नाथ साहित्य की जाग्रति का अनुभव कराता है। गोरक्ष टिल्ला काशी से गोरक्ष ग्रन्थ माला के नाम से एक सौ आठ से अधिक अंकों में नाथ साहित्य (पुस्तक, पुस्तिकाएं व गुटकों) का नये सिरे से प्रकाशन हुआ। इसमें शास्त्रार्थ महारथी योगी शंकर नाथ जी 'फलेग्रही', विद्यालंकार

कविरत्न योगी नरहरिनाथ, षड्दर्शनाचार्य योगी पारसनाथ तथा क्षिप्रानाथ का योगदान सराहनीय रहा। कदरी मठ के पूर्व योगी राजा चन्द्रनाथ अरसू, कदरी मठ, मैंगलूर, कर्णाटक द्वारा योगमाया सेवक मण्डल उल्हासनगर, महाराष्ट्र द्वारा सम्पादन एवं प्रकाशन का योगदान भी भुलाया नहीं जा सकता। उस गुटके की प्रतियां जीर्ण शीर्ण दशा में कुछ स्थानों पर देखने को मिलती हैं। इन सब योगेश्वरों ने; नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वरों द्वारा, नित्य क्रियाओं में काम आने वाले मंत्रों एवं शब्द साहित्य का प्रकाशन कराया। इसके अतिरिक्त भी स्वतन्त्र रूप से योगेश्वरों ने नाथ साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाले साहित्य का अनुवाद कर प्रकाशन कराया। इनमें सर्व श्री योगी गंगाई नाथ जी स्थान बिलगा; पंजाब, संस्कृत व हिन्दी टीकाकार 'सिद्ध–सिद्धान्त–पद्धति' तथा योगी पीर उत्तम नाथ जी; स्थान दिल्ली, हिन्दी टीकाकार उपनिषद् 'ईश्वस्यादि–नवचिन्तन' के प्रकाशन उल्लेखनीय हैं। इधर खोजी बाबा कहे जाने वाले पाटन देवी के पूर्व महन्त, आजीवन गोरख नाथ मंदिर, हरिद्वार दलीचा के पुजारी योगी भंभूल नाथ जी ने नाथ साहित्य का संकलन किया व प्रधानमंत्री योगी रामसिंह नाथजी के नेतृत्व में योगी महासभा ने प्रकाशन कराया। उन्होंने मन्त्रावली, योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय व अन्य के दर्शन छोटी–छोटी ५–७ पुस्तिकाओं के माध्यम से हमें कराए। भंभूल नाथ जी ने बहुत सा नाथ साहित्य व पाण्डुलिपियां एकत्रित कीं। योगी महासभा के पूर्व उपमन्त्री औघड़ योगी शंभू नाथ जी ने अपना एकत्रित सारा साहित्य योगी भंभूल नाथ जी को दिया। इसी के साथ अखिल भारतवर्षीय अवधूत योगी (भेष बारह पंथ) महासभा के महामंत्री योगी आनंदनाथ जी के सान्निध्य में उनके शिष्य योगी विलास नाथ के सम्पादन में 'नाथ–रहस्य' का प्रकाशन योगी महासभा द्वारा कराया गया।

यह कहना उचित होगा कि उचित उत्तराधिकारियों के हाथों में न जाने के कारण भी साहित्य का दुरुपयोग होता है। किसी समय गोरक्ष मढ़ी गुजरात में नाथ सम्प्रदाय का विपुल साहित्य गोरक्ष वाचनालय में सुरक्षित था, जो अब समाप्त हो चुका है। इस वाचनालय में गुरु गोरक्षनाथ जी की हस्तलिखित पुस्तक 'सारस्वत कुडंलिनी योग' अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ गायब हो गई थी। स्वयं शंभूनाथ शास्त्री पूर्व उपमन्त्री अखिल भारतवर्षीय अवधूत (भेष बारह पंथ) योगी महासभा का सारस्वत ब्राह्मण के घर से शरीर थां तथा वे गुरु गोरक्षनाथजी को सारस्वत ब्राह्मण के घर से उत्पन्न मानने वाली परम्परा को सही मानते थे, ने इस पुस्तक को पढ़ा था तथा दोबारा गायब हो जाने पर उसे ढूंढने की कोशिश की थी।

लेखन पर प्रतिबन्ध के परिणामस्वरुप स्वतन्त्र भारत में भी योगियों ने बहुत अल्प मात्रा में नाथयोग एवं नादयोग सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन कराया है। गत ५६ वर्षों में प्रकाशित नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धी नित्यप्रति प्रयोग में ली जाने वाली मन्त्रावलियां, गायत्रियां व वेषभूषा धारण करने सम्बन्धी मंत्रों में से कुछ तथा मेरे पास संग्रहीत मंत्र गायत्रियों व योगेश्वरों से एकत्र की गई सामग्री का प्रकाशन योगी सवाईनाथ शिष्य योगी बाबा सुन्दराईनाथ जी, मढ़ी लौंद, नरवाणा, हरियाणा, संस्थापक–भर्तृहरि सिद्धपीठ (तपोभूमि) संस्थान–. सरिस्का, अलवर, सरस्वती संगीत

सभा– अलवर, नैतिकोत्थान की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'सीमाँ', टहला, अलवर, राजस्थान के सम्पादन में कराया जा रहा है।

सम्पादक ने 'नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्मवेद' के लिए सार्थक भूमिका और प्रस्तावना लिखी है। ऐसी भूमिका और प्रस्तावना हमें किसी अन्य पुस्तक में पहले कभी पढ़ने को नहीं मिली। भूमिका और प्रस्तावना से नाथ–सम्प्रदाय व नाथ–साहित्य को सार्थक अर्थों सहित समझने में हमें सुविधा व सरलता होगी। पुस्तक में षट्चक्रों की ध्वनियों का अर्थों सहित विश्लेषण करने, नाथ वाणी को समझने और प्रयोग करने में योगेश्वरों व पाठकों को सहायता मिलेगी। पुस्तक की भूमिका और प्रस्तावना से इस पुस्तक का महत्व विशेषतः बढ़ गया है। नाथ सम्प्रदाय व अन्य भारतीय सम्प्रदायों के मध्य सार्थक संवाद स्थापित करने में यह प्रकाशन सहायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त यह विश्व में टुकड़े–टुकड़े होकर बिखरते मानव समाज को संगठित व अनुशासित करने में भी सहायक सिद्ध होगा। वर्तमान समय में जो त्रुटियां, बुराइयां एवं विकृतियां समाज में आ गई हैं, उन्हें दूर करने में भी यह पुस्तक सहयोगी व सहायक सिद्ध होगी। इन शब्दों को अपनाने से समाज का नैतिक उत्थान जरूर होगा और समाज की सभी विकृतियां दूर होंगी। पुस्तक में जीवन को सहज, सरल व शान्तिमय बनाने वाले नाथ एवं सिद्ध योगीयों के शब्दों को दोहराने की चेष्टा हुई है। प्रकाशन सामग्री सरल तरीके से तैयार की गई है। हर व्यक्ति इसे समझ कर लाभान्वित हो सकेगा तथा अन्य लोगों को भी दिशा दे सकेगा। इससे पूरे विश्व में ऐतिहासिक सीमाओं से आगे बढ़कर नाथ योग का प्रचार व प्रसार अत्यन्त सरल हो सकेगा व इससे लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

पुस्तक की सम्पादन व प्रकाशन सामग्री को यथास्थान, रख कर ग्राह्य बनाने के लिए सम्पादक द्वारा बहुत कोशिश की गई है। इससे नाथ सम्प्रदाय की प्रासंगिकता व महत्व बढ़ा है। साथ ही पुस्तक के प्रकाशन का कार्य कराके सफल बनाने के लिए कम्प्यूटर पर प्रकाशन सामग्री तैयार करने का उनसे प्रासंगिक सहयोग मिला है। प्रकाशन योग्य सामग्री बनाने में जिन्होंने योगदान दिया है वे सब भी धन्यवाद के पात्र हैं।

शिवगोरक्षमस्तु !

योगी शंभू नाथ 'रावल'

श्री शिवावतार योगाचार्य गुरु गोरक्ष नाथ योगाश्रम समिति

आम्बेश्वर धाम, पोस्ट पालड़ी एम., सिरोही (राजस्थान)

मिति आषाढ सुदी १५, रविवार,

गुरु पूर्णिमा, संवत. २०६०

दिनांक 13.07.2003

''शिव–गोरक्ष''

भूमिका

भारत के इतिहास में एक समय ऐसा भी आया जब डॉक्टर ग्रियर्सन जैसे इतिहासकारों ने उस महत्वपूर्ण काल को भारत के अंधयुग की संज्ञा दे डाली। इतिहासकारों के अनुसार युद्धों की विभीषिका के कारण भारत के पांच सौ वर्षों का इतिहास भारत का अंध युग कहा गया। पांच सौ वर्षों के अंधयुग के बाद मुगलों के आक्रमण से भारत का राजनैतिक इतिहास पुनः मुखरित हुआ। इतिहासकारों के अनुसार बार बार युद्धों से भारत की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई थी। असभ्य, बर्बर व जंगली जातियां भारत में निवास करने लगी थीं। धार्मिक मान्यताओं का दुरुपयोग होने लगा था। ऐसे पिछड़े काल में नाथ सिद्धों ने भारतीय समाज को नई दिशा दी और नाथ सम्प्रदाय की स्थापना की।

उपरोक्त अंध युग मिथक और नाथ–सम्प्रदाय की परम्परा व दर्शन के अन्तर को सोचे समझे बिना जो नाथ सम्प्रदाय का उत्पत्तिकाल निर्धारित किया गया है, उससे भारतीय साहित्य परम्परा के इतिहास का उल्लंघन और अवहेलना हुई है। साथ ही संस्कृत, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व अभिव्यक्ति के मूल्यांकन में अवरोध उत्पन्न हुआ है। साहित्य के मूल्यांकन के स्थान पर अदृग्गोचर को दृग्गोचर करने की चेष्टा की जाती रही है। नाथ सम्प्रदाय का ऐतिहासिक काल भारत का वह गौरवमय इतिहास है जिसमें भगवान आदिनाथ महादेव सदाशिव शंकरजी ने पृथ्वी पर योग मार्ग की प्रतिष्ठा की और उस आदि योग की गुरु गोरक्षनाथ जी ने दूसरी बार कलियुग में प्रतिष्ठा की और सम्प्रदाय को पुनर्गठित किया। रामायण और महाभारत काल के ऐतिहासिक पात्रों की नाथ सम्प्रदाय के सामाजिक ढांचे में अनूठी उपस्थिति है। संस्कृत साहित्य के प्रतिनिधि शिव हैं तो भारतीय हिन्दी साहित्य के पितामह गोरक्ष हैं। गोरक्ष की शिष्य परम्परा में विक्रमादित्य के ज्येष्ठ भ्राता भर्तृहरि और शालिवाहन के पुत्र पूरण जैसे ऐतिहासिक राजाओं का उल्लेख नाथ सम्प्रदाय का ऐतिहासिक महत्व है जो सम्प्रदाय को संवत निर्माताओं के नामों से जोड़ता है। यही नहीं पूर्व में महाभारत काल का भीष्म संवत नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथों में गंगा, भीष्म और भागीरथ का पंथ गंगनाथी पंथ कहलाता है। महाभारत से गंगा का वंश गुप्त हो गया क्योंकि देवव्रत के प्रतिज्ञा करने के कारण भीष्म सन्तानहीन व ब्रह्मचारी रहे। गंगा एवं भीष्म के वंश को चलाने के लिये नाथ सम्प्रदाय की गुरु शिष्य परम्परा के बारह पंथों में गंगा के वंश को स्थान दिया गया है। इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय, काल गणना के इतिहास सहित भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं देव संस्कृति के वैदिक देव प्रतीकों को सूक्ष्म रूप से अपने सम्प्रदायिक आदि प्रतीकों के रूप में स्थान देता है। यह वैदिक और देव संस्कृति का सूक्ष्म रूप है। योग के आदि ऋषि कपिल मुनी को पंथ के रूप में मान्यता देकर सम्प्रदाय को सिद्धों की ऋषि परम्परा से संबद्ध किया गया है। नाथ सम्प्रदाय वैदिक, पौराणिक और ऐतिहासिक प्रतीकों का सूक्ष्म रूप है। राम को पंथ के रूप में मान्यता देकर परम्परा में त्रेता के इतिहास को दोहराया

गया है। इसके साथ ही नाथ परम्परा में राजा राम के स्थान पर सत्यनाथ ब्रह्मा को गद्दी पर प्रतिष्ठित करने का अनूठा मिथक गुरु शिष्य नाथ परम्परा से जुड़ा हुआ है। नाथ रहोरहस्य में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। सत्य नाथ ब्रह्मा के अवतार तथा सन्तोष नाथ विष्णु के अवतार राम हैं। प्रत्येक प्रातः और संध्या काल में बार बार उद्घोषक (पंख) द्वारा यह घोषणा नाथ सम्प्रदाय के अनुयायिओं को प्रतिदिन प्रातः व सायं स्मरण कराई जाती है कि राम के स्थान पर सत्य नाथ ब्रह्मा को प्रतिष्ठित करना है क्योंकि सिद्धों ने ऐसा ही किया है। ऐसा सम्प्रदाय जिसमें महाराजा भर्तृहरि, गोपीचन्द व निन्यानवे कोटि राजाओं के योगी बनने की अवधारणा है; समाज के बहुत बड़े राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों की ओर प्रेरित और इंगित करता है, ऐसा युग अंध युग नहीं हो सकता। भारतीय साहित्य में गुरु शिष्य परम्परा द्वारा बिल्कुल नये प्रकार के समाज का गठन नाथ सम्प्रदाय की नये प्रकार की जीवनशैली में है तथा यह परम्परा आज भी उपस्थित है। पूर्वकाल से भरत खण्ड एशिया अफ्रेशिया सहित नौ खण्ड पृथ्वी पर परिभ्रमण करने की परम्परा को प्रमाणिक रूप से प्रासंगिक सिद्ध करने के लिये उपस्थित है तथा ऐसा संविधान लेकर उपस्थित है कि मूल अभिव्यक्ति के आधार पर सम्पूर्ण सृष्टि पर एक ही सामाजिक व्यवस्था लागू की जा सकती है। उसमें से भेदभाव को निर्मूल किया जा सकता है।

नाथसम्प्रदाय का इतिहास और साहित्य विश्व में मानव समाज को अखण्ड व नए सिरे से संगठित करने की क्षमता रखता है अतः ऐतिहासिक रूप से समाज की व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में इसका महत्व त्रिकालिक और सर्वकालिक है। वासना के अंधकार से संसार को मुक्ति दिलाने तथा अभिव्यक्ति के माध्यम से विश्व मानव को एक परिवार और एक समाज के नैतिक रूप में व्यवस्थित व संगठित करने के लिए आदिकाल में नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने नाथ सम्प्रदाय की स्थापना की। नाथ सिद्धों का सिद्धसम्प्रदाय ही नाथसम्प्रदाय, अवधूत एवं योगी सम्प्रदाय कहलाया। इनमें नौ नाथ चौरासी सिद्ध व आदि पुरुष गुरु गोरक्ष नाथ कलियुग में सम्प्रदाय के आचार्य हुए।

नाथ सम्प्रदाय और उसका साहित्य विश्व मानव और विश्व अभिव्यक्ति के विकास का क्षितिज है। यह जीवन को सहज में प्रकाशित करने के लिए ज्योति पुंज है। संस्कृत व हिन्दी दो भाषाओं के दर्शन और मिलान का सन्धिकाल है। संस्कृत साहित्य की दार्शनिकता नाथ साहित्य की विशेषता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत की मूल भाषा संस्कृत का हिन्दी में रूपान्तरण नाथ सिद्धों की सिद्ध भाषा की विशेषता है। यदि ध्यान से देखा जाये तो हिन्दी भाषा का इतिहास ही नाथ सिद्धों की 'सिद्धि भाषा' से शुरु होता है। नाथ सम्प्रदाय के अनुयायिओं को पूर्व में सिद्ध कहा जाता था। उनके द्वारा प्रस्तुत साहित्य पूर्व में सिद्ध साहित्य कहा जाता रहा है। प्रस्तुत पुस्तक सिद्ध भाषा का ऐतिहासिक प्रमाण है। सिद्ध शब्द नाथ सम्प्रदाय के आदि योगियों के लिए प्रयुक्त हुआं है। सिद्धों की भाषा को पहले सिद्धि कहा जाता रहा। 'स' ध्वनि का 'ह' में रूपान्तरण सिद्धों की भाषा का सामान्य लक्षण है। सिद्धी से हिद्धी

तथा हिद्धी में ध के स्थान पर नाथ शब्द के 'न' के हलंत प्रयोग (न के प्रयोग) से हिद्धी से हिन्दी बना। इस भाषा को प्रयोग में लेने के कारण भारत के नागरिक पहले सिद्ध, हिद्ध तथा पश्चात में हिन्दू कहे गए। सिंधु या सिन्धी से हिन्दू या हिन्दी शब्द की उत्पत्ति मानना लक्ष्यजनक नहीं है। सिन्धु सभ्यता के अवशेषों में जहां नाथ सिद्ध व नाथ सम्प्रदाय के आचार्य गुरु गोरक्ष नाथ के गुरु आचार्य मत्स्येन्द्र नाथ तथा शिव लिंग व पार्वती शिव की मूर्तियां उपलब्ध होती हैं सिन्धु सभ्यता की जगह सिद्ध या सिद्ध सभ्यता कहना ज्यादा व्यवहारिक प्रतीत होता है। सिन्धु नदी का नाम भी सिद्धों की उपस्थिति के कारण ही सम्भव हुआ है तथा न शब्द का प्रयोग सिद्धों के उपनाम नाथ से सम्बन्ध रखता है। सिन्धी से हिन्दी का शब्द रूपान्तरण ज्यादा व्यवहारिक इसलिए भी नहीं है, क्योंकि सिंधी एक अलग भाषा है जिसके अक्षरों की बनावट, बुनावट और लेखन उर्दू, अरबी, फारसी के यावनिक अक्षरों से ली गई है, देवनागरी या भारत की किसी अन्य भाषा से नहीं। अक्षरों के ध्वनि चिन्हों की विविधता के कारण मूल अभिव्यक्ति में अव्यवहारिक परिवर्तन हुए हैं। इन समस्त परिवर्तनों के रहस्योदघाटन के लिए नाथ सम्प्रदाय की स्थापना व नाथ साहित्य प्रकाश में आया है। विश्व में प्रसारित शब्द जाल का लेखा जोखा तथा जीवन और ब्रह्माण्ड सम्बन्धी चेतना के मूल शब्दों को धारण करने की अनुशंसा नाथ सम्प्रदाय व साहित्य में हमें अर्थात् विश्व के समस्त मनुष्यों को प्रेरित करती है। उसी परमार्थ की प्रेरणा से प्रेरित होकर 'नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद' नामक यह पुस्तक, गत पचास वर्षों में नाथ सम्प्रदाय के मूर्धन्य योगेश्वरों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में से सामग्री लेकर तैयार की गई है। योगी शंभूनाथ जी द्वारा दैनन्दिनी में लिखित पाण्डुलिपियों की मंत्र सामग्री तथा अन्य रमते योगेश्वरों से संगृहीत कर सम्पादित की गयी है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य पारम्परिक गुप्त मन्त्र भी प्रकाशित कराए जा रहे हैं जो पहले कभी प्रकाशित नहीं हुये हैं।

अभिव्यक्ति के माध्यम से जहां विश्व की समस्त सभ्यताएं और संस्कृतियां एकत्रित होती हैं, वह नाथ सम्प्रदाय और उसका साहित्य ही है। यह त्रिकालिक एवं सर्वकालिक है। यह देश काल और परिस्थितियों के अनुकूल है। इस व्यवस्था का आदि मध्य व अन्त नहीं है। जब से मानव इतिहास है तब से संसार को पुनः पुनः सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नाथ सम्प्रदाय और उसके साहित्य के माध्यम से पूरी होती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नाथ सम्प्रदाय और नाथ साहित्य की तरह ही वे सम्प्रदाय जो गुरु शिष्य परम्परा द्वारा शब्द को गुरु मानते हैं, वे भी सभी समधर्मी और समअर्थी सम्प्रदाय हैं तथा इनकी उत्पत्ति भी नाद एवं ध्वनि की उत्पत्ति के आधार पर आदि अनादि काल से स्थापित की जानी चाहिये। जब से ब्रह्माण्ड है तब से नाद है और जब से नाद है तब से नाथ सम्प्रदाय व नाद के अन्य सम्प्रदाय हैं। बीज, वीर्य एवं बिन्दु से इनकी उत्पत्ति नहीं मानी जाती और न ही जाति सम्बन्धी प्रावधान सम्प्रदायों एवं सम्प्रदाय में दीक्षित अनुयायिओं पर लागू होते हैं। माता और पिता से इनके सम्बन्ध नहीं होते हैं। ये सब देव परम्परा से होते हैं तथा देव परम्परा का गुरु शिष्य के रूप में

प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज से गुरु शिष्य परम्परा में दीक्षित होने के पश्चात् अनुयायी देव संस्कृति के प्रतिनिधि हो जाते हैं। मुख्य रूप से शैव, शाक्त और वैष्णव ये तीन ही विभाग सम्प्रदायों के हैं। सिख निहंगों, जैन, बौद्ध भिक्षुओं के अवधूतों (विरक्तों) के लिए भी यही नियम लागू होते हैं। दक्षिण भारत तक में अन्यान्य सम्प्रदाय अलग अलग नामों से फैले हुये हैं। ये समस्त गुरु चैला प्रथा द्वारा नाद (नाथ) परम्परा के प्रतिनिधि हैं। प्रत्येक प्रान्त में अलग प्रकार के सम्प्रदाय देखे गये हैं। यदि ध्यान से इनके शब्दों का विचार करें तो ये पृथ्वी और धरती के पुत्र के रूप में अपने को प्रकट करने के लिए अधिकृत हैं तथा वह साहित्य जिनके आधार पर ये अनुशासित हैं भी, नाथ सम्प्रदाय की तरह युगधर्मानुसार आदि काल से प्रासंगिक हैं। अवधूतों के साम्प्रदायिक अनुयायिओं के लिए मौखिक और गुप्त कहे जाने वाले मंत्रों द्वारा जो रहस्योद्‌घाटन कराये गये हैं उनकी आज समाज को आवश्यकता है। नाथ सम्प्रदाय और नाथ साहित्य संस्कृत का हिन्दी में रूपान्तरित विशुद्ध संस्करण है। इसमें वैदिक ध्वनिदर्शन प्रतिबिम्बित होता है। विराट सनातन के धर्म वृक्ष का सूक्ष्म रूप या सूक्ष्म दर्शन, नाथ सम्प्रदाय और नाथ साहित्य के रूप में हमारे सामने उपस्थित है।

शब्द को लेखनीबद्ध करने का विरोध नाथ सम्प्रदाय की अपनी एक प्रासंगिक एवं सामयिक विशेषता है जबकि साहित्य जगत में इसे सामाजिक पिछड़ापन मानकर नाथ साहित्य के मूल्यांकन में मनमानी राय प्रकट की जाती रही है। इससे संस्कृत, हिन्दी साहित्य सहित हिन्दू का भी अहित हुआ है। समाज में व्यर्थ की कट्टरता विकसित हुई है। नाथ सम्प्रदाय में शब्द को न लिखने की सहज व स्वभाविक परम्परा है। 'शब्द निरंजन निराकार है।' इसके अतिरिक्त शब्द गुरु सुरति चेला के अनुसार शब्द की सर्वोच्चसत्ता व श्रेष्ठता सिद्ध होती है। शब्द बंदौ रे अवधू शब्द बंदौ, शब्दै सीझंत काया, शब्दै कूंची शब्दे ताला, नाद बिन्दु के योग जैसे शब्द बार बार नादानुसन्धान के लिए हमें प्रेरित करते हैं। नाथ सम्प्रदाय शब्द को गुरु मानता है और गुरु को लिखना पाप है, यह नाद बिन्दु योग की पहली शर्त है।

सिद्धान्ततः नाथ सिद्धों ने शब्द को निराकार और आकारहीन माना है। उन्होंने अपनी साधना पद्धति के माध्यम से मुखरित होकर ध्वनियों की आकृतियों के द्वारा निराकार अलख निरंजन शब्द का दर्शन करवाकर जीवन सम्बन्धी मूल ध्वनियों को धारण करने के लिए हमें प्रेरित किया है। शब्द के महत्व को अनहद अरूपी बताकर सार्थक शब्द उपासना से उसको प्राप्त करने, व समझने के लिए हमें प्रोत्साहित किया है। अपनी पवित्र वाणी द्वारा हमें गन्तव्य तक पहुंचाने के लिए हमारा मार्गदर्शन किया है।

किसलिए नाथ सम्प्रदाय ने शब्द को गुरु माना है ? क्यों शब्द को निराकार माना है ? इन प्रश्नों के उत्तर भी हमें नाथ सम्प्रदाय के सूक्ष्मवेद में पढ़ने को मिलते हैं। जहां इसमें प्रश्न किये गये हैं उत्तर भी प्रस्तुत कर दिये गये हैं। नाथ साहित्य किसी को अंधकार में नहीं रखना चाहता वह सबको शब्द के माध्यम से प्रकाशित करना चाहता है। उसका साहित्य सूक्ष्मवेद है।

यहां सूक्ष्मवेद से तात्पर्य साङ्गोपाङ्ग नाथ परम्परा, उपासना पद्धति, साहित्य और जीवन की कल्याणकारी गतिविधियों से लिया जाना चाहिए क्योंकि सूक्ष्मवेद की प्रतिध्वनि ही हमें समस्त नाथ साहित्य में सुनाई देती है। नाथ परम्परा का समस्त जीवन साहित्यमय है। नाथ परम्परा ने शरीर में निहित अलख (अदृश्य) और जीवन सम्बन्धी सार्थक शब्द को ही गुरु माना है। नाथ सम्प्रदाय में शब्द गुरु और सुरति चेला की घोषणाएं हमें पद पद पर शब्द में ध्यान देने की प्रेरणा देती हैं। अजपा जाप जीवन की उपस्थिति के रूप में हमें नाद में लीन होकर जीवन को प्राप्त करने की ओर प्रेरित करता है। अपने महत्वपूर्ण निष्कर्षों में वाणी के माध्यम से नाथ सिद्धों सहित योगाचार्य गुरु गोरखनाथ ने ध्वनि योग व नाद योग का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके लिए उन्होंने वेदों और शास्त्रों में वर्णित आदि शक्ति, महाशक्ति, भगवती, मातृका और महामातृका कही जाने वाली कुंडलिनी महामाया के वर्तुलों, अक्षरों एवं पचास मातृकाओं को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया है। कुंडलिनी के माध्यम से उन्होंने अनादि काल से मानव शरीर को उत्पन्न करने वाली ध्वनियों का विश्लेषण किया है। उन्होंने समस्त भाषाओं में से जीवन सम्बन्धी मूल ध्वनियों को छांटकर समाज के सामने रखा तथा जीवन व अभिव्यक्ति में उनके प्रयोग की अनुशंसा की है। नाथ साहित्य के अध्येताओं के विचारों को साङ्गोपाङ्ग समझने के लिए कुंडलिनी में निरुपति ध्वनियों की स्थिति, बीज मंत्रों, तत्वों, देवों, मण्डलों आदि का पाठक को ज्ञान हो; इस प्रयोग के लिए आदिकालीन कुंडलिनी का मानचित्र पुस्तक के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इसके सिद्ध पुरुषों की वाणी को आत्मसात करने का मार्ग सरल हो सकेगा। इससे अतिरिक्त ज्योतिष तथा कुंडलिनी में ध्वनियों की स्थितियों को दर्शाने वाले रंगीन दो मानचित्र भी बनवाए गए हैं।

कुंडलिनी चक्र की शब्द व्यवस्था एवं रेखांकन के माध्यम से गुरु गोरक्षनाथ ने मानव जीवन के प्रतिनिधि व ज्ञान की ज्योति जगाने वाले शब्दों, जो कि प्राणों का आधार है, को कैसे सरल, सहज व सामान्य ढंग से प्रस्तुत किया है, यहां सूक्ष्म वेद का उदाहरण प्रस्तुत है :–

अरध कंवल उरध मध्ये, प्राण पुरुष का वासा। द्वादश हंसा उरध चलेगा, तब जोतहि जोत प्रकासा।।

कुंडलिनी के छः चक्रों में नीचे के मूलाधार, स्वाधिष्टान, मणिपूर ऊर्ध्व के चक्र हैं तथा अनाहत, विशुद्ध व आज्ञा अर्ध (अधः) के चक्र हैं। अधः और ऊर्ध्व, दोनों के बीच मणिपूर चक्र है, जो ऊर्ध्व का है। ये नाभिचक्र है तथा कुंडलिनी की नाभि में ही जीवन व प्राण कहे गए हैं। इसका बीज मंत्र रां है, यह अग्नि तत्व का बीज मंत्र व प्रतिनिधि है। इसी प्रकार नाथ शब्द के दो अक्षर न और थ भी इसी चक्र के मूल अक्षर हैं। इन दो ध्वनियों एवं मात्रिकाओं को गुरु गोरक्षनाथ जी द्वादश (बारह तक) उल्टा गिनने के लिए कहते हैं। न ध्वनि को उल्टा गिनने पर (न ध द थ त ण ढ ड ल र य म) बारहवां अक्षर 'म' है। इसे ही प्राण पुरुष कहा गया है। नाथ शब्द शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। ॐ में शिव अर्थात् महेश का प्रतिनिधि अक्षर 'म' है। गोरक्ष बालरुप हैं। उनके लिये 'म' का अर्थ माता है, संहार नहीं। इस प्रकार नाथ साहित्य में 'म' दो प्रकार के अर्थ साकार करता है। 'म' चिन्ह से 'न' की उत्पत्ति हुई है। 'म' चिन्ह की पहले वाली खड़ी

एक रेखा को कम करके 'न' चिन्ह विकसित हुआ है। 'म' चिन्ह को ही शास्त्रकारों ने बिन्दु अर्थात् अनुस्वार कहा है। हलंत–संधि (अः के चिन्ह) को भी 'म' का प्रतिनिधि कहा गया है। 'म' चिन्ह की आकृति को कम करके ग, भ और झ चिन्ह विकसित व उनके विभिन्न उच्चारण निश्चित किए गए हैं।

उपरोक्त प्रयोगों के आधार पर 'म' ध्वनि को मूल अभिव्यक्ति स्वीकार करना प्रासंगिक है। संस्कृत की देवनागरीलिपि को जस का तस हिन्दी में लिया गया है जबकि देवनागरी के म, भ और ग चिन्ह गुरुमुखी (पंजाबी) लिपि एवं भाषा में भी लिए गए हैं, जिनके उच्चारणों में निम्न परिवर्तन किए गए हैं। पंजाबी लिपि में म चिन्ह को स, भ चिन्ह को म तथा ग का उच्चारण देवनागरी के समान ही ग निश्चित किया गया है। र तथा ह ध्वनि के उच्चारण को ग के पहले भाग की घुंड्डी वाली आकृति के भाग से बनाया गया है। इस प्रकार र और स ध्वनियों सहित उपरोक्त म चिन्ह से बनी अन्य ध्वनियां गुरुमुखी (पंजाबी) में विचारणीय हैं क्योंकि ये म से रूपान्तरित की गई सिद्ध होती हैं। उपरोक्त ध्वनि चिन्हों के परिवर्तनों से नाथ सम्प्रदाय के इस सिद्धान्त मत की पुष्टि होती है कि, 'शब्द निरंजन निराकार है व शब्दों से निर्मित सृष्टि एवं विश्व शब्द अभिव्यक्ति कल्पित है'। इसके साथ भाषाओं में जीवन को प्रस्तुत करने वाले सार्थक शब्द भी विद्यमान हैं जिन्हें धारण करने की अनुशंसा नाथ सिद्धों ने साहित्य के माध्यम से की है। ध्वनियां व उनके कल्पित आकारों से सृष्टि का निर्माण परिवर्तन के संकेतों से भरा पड़ा है, मूल अभिव्यक्ति की ओर लौटने के लिए नाथ सम्प्रदाय का साहित्य हमारा आव्हान करता है। हमारा स्वागत करता है।

मणिपूर चक्र में स्थित नाथ शब्द की दूसरी ध्वनि 'थ' से बारह अक्षर उल्टा गिनने पर (थ त ण ढ ड ल र य म भ ब स) बारहवां अक्षर सा है जो मानव चेतना (श्वाच्छोश्वांस) अर्थात् जीवन और अभिव्यक्ति का मूलाक्षर है। इससे कुंडलिनी में स्थित ज्ञान की ज्योति प्रकाशित होती है जबकि म प्राण पुरुष और उसका नाथ एवं स्वामी है। मणिपूर चक्र का वर्ण बीज मंत्र रां लेखन के आधार पर मूल ध्वनि स का एक भाग है। मूलाक्षर स है, 'स' के स्थान पर 'र' के रूपान्तरण से साम का राम बना। शास्त्रों के अनुसार राम की उत्पत्ति म से हुई है। महर्षि बाल्मीकि ने मरा मरा जपा और राम बना। म मानव अभिव्यक्ति का मूलाक्षर है। इसके साथ अग्निबीज र, जो कि लिखने में स का पहला भाग है, को प्रविष्ट किया गया है। स ध्वनि मूलाधार एवं पृथ्वी तत्व की ध्वनि है जबकि र अग्नि की ध्वनि। अग्नि अर्थात् रा का पाणिग्रहण संस्कार पृथ्वी अर्थात् सी सीता के रूप में स से हुआ है तथा सीता का सी पृथ्वी की ध्वनि तथा मानव उत्पत्ति व अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने वाला अक्षर है तथा ता अग्नि पर चने भूनते समय निकलने वाला अक्षर। राम का प्रथम अक्षर र तथा सीता के प्रथम अक्षर स अग्नि और पृथ्वी तत्वों के प्रतिनिधि हैं और यह नाद सृष्टि है बिन्दु की नहीं। लिपिबद्ध निर्माण प्रक्रिया के आधार पर स चिन्ह र का जनक है ऐसा स्पष्ट हो चुका है। ध्वनि रूपान्तरण के आधार पर जीवन को युग में स्थान देकर ध्वनि योग का

युग से साक्षात्कार कराया जा सकता है। नाथ सिद्धों ने अग्नि के स्थान पर पृथ्वी की ध्वनि सी को धारण करने की प्रेरणा कुंडलिनी में अनुक्रमित अंकगणित के आधार पर दी है। सिद्ध सम्प्रदाय कहलाने का यही प्रयोजन है जिसमें सी का प्रयोग सर्व प्रथम किया गया है। सी की पुष्टि व उसे पृथ्वी का मूलाक्षर सिद्ध करने के लिए शिव के स्थान पर सिव का प्रयोग नाथ साहित्य में परम्परागत रूप से उपस्थित रहा है जो कि नाथ योगियों के मूल मंत्र, गुरु मंत्र और सिव गोरष (शिव गोरक्ष) के रूप में निरन्तर योगियों के प्राणों में वास करता है। शरीर के स्वांस बाहर छोड़ते समय सी प्रतिध्वनित होता है। सा स्वांस ग्रहण करते समय प्रतिध्वनित होता है। सी और सा अविभाजित हैं, क्योंकि ये पृथ्वी की मूल ध्वनि सी के अविभाजित अंग व श्वाच्छोश्वांस के शब्द हैं। ज्योतिष में पृथ्वी की प्रतिनिधि राशि कुंभ में सासीसूसेसो ध्वनियों को क्रम से लिया गया है जबकि संगीत शास्त्र में सी के स्थान पर नी का प्रयोग (सा रे ग म प ध नी सा) करके सा की उत्पत्ति नी से की गई है। सामवेद का महावाक्य तत्वमसि है, जिसमें तत्व के रूप में (मसी) महावाक्य सिद्ध होता है। इस प्रकार के प्रमाण से सी से सा की उत्पत्ति शास्त्रीय संगीत की दोष शुद्धि व अभिव्यक्ति की मुक्त अवस्था के लिये प्रासंगिक सिद्ध होती है। जिससे साम के सा एवं सामवेद के उपवेद संगीत के सा की उत्पत्ति मसि से सिद्ध होती है, नी से नहीं। सीसा संगीत का मुख्य सूत्र है। भारतीय संगीत का मुख्य स्वर सा है तथा पश्चिम का संगीत स्वर सी। इस प्रकार श्वाच्छोश्वांस को विभाजित किया गया है। नाथ साहित्य ऐसे भ्रम से मुक्ति के लिये हमें प्रेरित करता है। स के स्थान पर र वैकल्पित व्यवस्था के रूप में अभिव्यक्ति में सम्मिलित किया गया है जबकि कल्प–कल्पान्तरों से स एवं पृथ्वी का ही सृजन एवं सृष्टि पर एकाधिकार है व यही जीवन का प्रतिनिधि व चेतन सार्थक शब्द है। अग्नि का शब्द र, सृष्टि का राजस, रजोगुणी और रजस्वला रूप है। सृष्टि की रजस्वला अवस्था में ध्वनियों के द्वारा सृष्टि अनन्त रूपों में विभाजित हो जाती है। इस रजोधर्मी काल के समाप्त होने पर पुनः जीवन की स्वाभाविक अवस्था आने पर नाद के सम्प्रदाय इस आवश्यकता की पूर्ति करते रहे हैं। नाथ, सिद्ध एवं अवधूत मत की स्थापना इस लक्ष्य को रखकर की गई है कि रजोधर्मी सृष्टि को वैकल्पिक अनुबन्धों से मुक्त कराकर पुनः पृथ्वी, सृष्टि एवं मसी को सृष्टि की कल्प व्यवस्था सौंप दी जाए। अवधूत मत का कारण स्पष्ट करते हुए स्वयं गोरख–अवधूत की व्याख्या गुरु गोरख नाथ जी ने सूक्ष्मवेद में निम्न पंक्तियों में प्रकट की है:–

"माई महेली पुत्र भरतार। सर्व सृष्टि का एकौ द्वार। पैसत पुरुष निकसतां पूत। ता कारण गोरष अवधूत।।"

अर्थात मां ही पत्नी और पुत्र ही पति है। सम्पूर्ण सृष्टि के मानवों की उत्पत्ति मां से होती है, यह सम्पूर्ण सृष्टि का सार है। पुत्र पुरुष (पति) बनकर मां के गर्भ में प्रवेश करता है और नौ मास गर्भ में रहकर बच्चा बनकर मां के गर्भ से बाहर आता है। वास्तव में वह पुरुष पति नहीं उसका पुत्र ही है और वह उसकी पत्नी नहीं बल्कि उसकी माँ है। जो समाज में पति बनते हैं वे पत्नी के पुत्र ही हैं, पति नहीं। यह आदि कारण है जो नाथ योगियों की अवधूत परम्परा की

स्थापना का आधार रहा है तथा शब्द के आधार पर समाज को नए सिरे से संगठित होने या करने के लिए हमें प्रेरित करता है। समाज की व्यवस्था का संचालन माता द्वारा अनुशासित कराने के लिए नाथ सम्प्रदाय सहित अन्य अवधूत मतों एवं सम्प्रदायों की स्थापना के पीछे आचार्यों द्वारा प्रस्तुत साहित्य में यही गूंज सुनाई देती है।

वैष्णवों के चार सम्प्रदाय श्रीसम्प्रदाय कहलाते हैं अतः इनमें सी ध्वनि प्रमुख है। श्री तीन हैं जबकि सम्प्रदाय चार। श्वेत, रक्त और श्याम ये तीन श्री हैं। श्वेत वर्ण सा, रक्त वर्ण माँ तथा श्याम वर्ण सी जीवन के प्रतिनिधि रंग व शब्द हैं। सा सृष्टि का बीज है, सृष्टि में उत्पन्न होने वाले मूल बीज एवं बिन्दु, सा (श्वेतवर्ण) के होते हैं। मां रक्त का प्रतिनिधि है, अर्थात् मां समस्त रक्तधारी जीवों के लिए, मानव और उसे जन्म देने वाली मां तथा स्वयं मानव के लिए प्रयुक्त होता है। सी मानव की अनुभूतियों को समष्टि रूप से प्रकट करने वाला अक्षर है। मिर्च आदि तीखे पदार्थों के सेवन से, पैर में अचानक कांटा लगने व चोट लगने, सर्दी की ठिठुरन के कारण मानव सी सी की निरन्तर ध्वनि प्रतिध्वनित करता है। माता द्वारा गर्भ धारण करने में सी व शिशु को जन्म देने के लिए भी बहुत लम्बी अक्षर ध्वनि सीऽऽऽ... के श्रवण से शिशु के जन्म का संकेत मिलता है और यह पृथ्वी और मानव जीवन का प्रतिनिधि अक्षर है। श्याम वर्ण दृष्टि के मध्य गोलाकार कृष्ण मण्डल है। इसे सी (जो दृष्टि है) और इसके मध्य श्वेत बिन्दु को शास्त्रकारों ने सा और शुक्ल वर्ण के रूप में वर्णित किया है दृश्यों का दृष्टा है। इसे ही जीव, सीव (शिव) और इसे ही दृष्टा और हिरण्यगर्भ भी कहा गया है।

गुरु रामानन्द द्वारा अवधूतों के लिए सिद्धान्त पटल नामक गूढ़ और रहस्यपूर्ण ग्रन्थ जिसमें दिनचर्या के लिये प्रयोग किये जाने वाले अवधूतों के अलंकरण संबन्धी मंत्रों को लिखा गया था मौखिक याद कराये जाते थे। धीरे धीरे उसके बहुत से अंश समाप्त होते चले गये। अंश रूप से यह पटल बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है। सिद्धान्त पटल के अवधूत मन्त्र, दत्तात्रेय के अवधूत मत के मंत्रों और उदासीन मन्त्रों सहित नाथ सम्प्रदाय के अवधूत मन्त्र लगभग एक ही हैं। इसी प्रकार से सम्प्रदाय के समस्त आचार्यों ने अपनी वाणी को सूक्ष्मवेद से सम्बद्ध करके सम्प्रदायों को एक सूत्र में सूत्रबंद्ध करने का अनुष्ठान प्रस्तुत किया है, इसे ही सिद्धों ने पंचम वेद कहा है। अभिव्यक्ति के आधार पर समस्त सम्प्रदाय एक हैं जबकि सांस्कृतिक रूप से इनमें भिन्नता स्पष्ट देखी जा सकती है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण आज विश्व में जो अव्यवस्था विकसित हो रही है उसके निराकरण और निवारण के लिए भारत के अवधूतों की गुरु शिष्य परम्परा में जो शब्द व्यवस्था पूर्वकाल से समाज के सहयोग के लिए निर्धारित है, उसके निष्कर्षों को स्वीकार कर समाज व देश तथा मानववंश का भला हो सकता है। दस नामों में सन्यास को व्यवस्थित कर अवधूत मत के आधार पर धर्म को पुनर्जागृत करने वाले धर्म के युग संस्थापक जगद्गुरु शंकराचार्य ने मानववंश का प्रतिनिधित्व करने व पृथ्वी के शब्दरूपी प्रधान अक्षर 'स' को न्यास के रूप में प्रस्तुत करते हुए सन्यास को दस रूपों एवं नामों

में प्रकट कर मानव अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान की है। प्रत्येक आचार्य ने अपने शब्द ज्ञान का नेतृत्व एवं सन्देश कुंडलिनी के षट् चक्रों के माध्यम से सम्पादित किया है। समस्त आचार्यों का मत है कि कुंडलिनी जाग्रत होने की स्थिति में नीचे के अक्षर ऊपर और ऊपर वाले नीचे चले जाते हैं। अन्तिम अक्षर प्रथम और प्रथम अक्षर अन्तिम हो जाता है। कुंडलिनी का अन्तिम अक्षर स है और प्रथम अक्षर क्ष। प्रथम अक्षर में तीन ध्वनियां है जिनमें स मध्य में स्थित है। क्ष में स+ह के मिश्रण से श तथा क+श से 'क्ष' के अनुसार यहां भी 'स' मूल मानव अभिव्यक्ति सिद्ध होती है। अन्त में आचार्यों के जागरण काल की स्मृति के अनुसार स ध्वनि को अभिव्यक्ति का प्रथम अक्षर स्वीकार करने तथा उसे रूपान्तरित एवं ध्वन्यान्तरित करने वाले मार्ग से सावधान रहने और होने एवं आचार्यों की अनुशंसा को स्वीकार करने की अपील करते हुए भूमिका को विश्राम देते हैं। हमारा लक्ष्य नाथ साहित्य और नाथ (नाद) के ज्ञान को परखने और समझने के लिए पुस्तक के माध्यम से सबका ध्यान आकृष्ट करना है। हमारे सन्त, महात्मा, सिद्ध पुरुष और भारत के साधू क्यों बनते हैं और क्या हैं? इन बातों को समझने के लिए यह प्रकाशन सहायक सिद्ध होगा।

यहां मेरे लिए महत्वपूर्ण एक नाम है, योगी शंभूनाथ 'रावल'। नाथ योग के ज्ञान को जन जन तक पहुंचाने की वे बड़ी आवश्यकता समझते हैं। उन्हीं के प्रकाशक रूप में मैं "नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद" का सम्पादन करने का सुअवसर प्राप्त कर पाया हूँ। उनके द्वारा संगृहीत बहुत से मंत्र पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं। उन्हें साधुवाद एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हुए 'नाथ सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद' के माध्यम से सिव–गोरष मन्त्र के जप के अनुरूप नाथ–योग और नाद–बिन्दु–योग की शरण लेता हूँ। सर्व सिद्धों को आदेश! आदेश!!

मिति आषाढ सुदी १५, रविवार,
गुरु पूर्णिमा सं. २०६०
दिनांक : १३.०७.२००३

आपका
© सम्पादक
योगी सवाईनाथ 'सामाँ'

© सम्पादक
योगी सवाईनाथ सामाँ
वी०पी०ओ० टहला, राजगढ़,
अलवर – ३०१४१० (राजस्थान)

''शिव–गोरक्ष''

''प्रस्तावना''

शब्दानुशासन विश्व का महानतम सत्य है। समूचा विश्व आदि काल से शब्दानुशासन द्वारा शासित एवं अनुशासित रहा है। बोलचाल में इसे मातृ–भाषा और साहित्य की भाषा कहते हैं। विश्व में अनेक प्रकार के शब्दानुशासन हैं ध्वनियों को विविध आकार देकर अथवा उन्हें जोड़ कर पढ़ने के क्रम को आगे पीछे उपर नीचे बदलकर उनके उच्चारण व उन्हें जोड़कर अर्थ निर्धारित किये गये हैं। इस प्रक्रिया में ध्वनियों को उच्चारण भेद से परिवर्तित किया गया है। कहीं कहीं उच्चारण ही समाप्त कर दिये गये हैं। उन परिस्थितियों में जब मूल अभिव्यक्ति को ही मूक बनाया गया हो, अभिव्यक्ति का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। विश्व के समस्त गुण–दोष शब्दों में विद्यमान हैं। शब्दों में से गुण और दोष सीखकर हम गुणों को ग्रहण और अवगुणों का त्याग कर सकते हैं। भारतीय शब्दानुशासन जीवन को प्रतिनिधित्व प्रदान करता है। भारत का प्रत्येक विषय जीवन की अभिव्यक्ति से तुलनात्मक अनुभूति को स्पष्ट करता है।

भारतीय तत्व वेत्ताओं, ऋषियों, महर्षियों, शिक्षाशास्त्रियों एवं पार्षदों, वैय्याकरणों, सिद्ध पुरुषों, योगियों, महायोगियों, सन्तों और सम्प्रदाय के समस्त आचार्यों ने शब्दानुशासन में परमार्थ–सत्य के दर्शन किये और इसीलिये उन्होंने इसे परमार्थ–सत्य कहा है। शब्दानुशासन में निहित परमार्थ का आचरण करते हुये उसमें से छिपे हुये सत्य को प्रकट करना मनीषियों ने इसे संवृत्ति–सत्य माना है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, समाज और उसे प्रतिबम्बित करने वाला साहित्य लक्ष्यपूर्ण साहित्य है तथा जिसका लक्ष्य परमार्थ है। भारतीय चौदह विद्याओं, सोलह कलाओं तथा अनन्त विधाओं के सृजन व प्रयोग का लक्ष्य परमार्थ एवं संवृत्ति–सत्य है तथा यही तत्व मिल जुलकर भारतीय साहित्य के रूप में हमारे सामने है। वैदिक साहित्य में जो जीवन सम्बन्धी प्रधान तत्व दर्ज है वह ही आगामी पारम्परिक साहित्य में उपस्थित है। आलोचक दृष्टिकोण से भी भारतीय साहित्य ने परमार्थ, संवृत्ति–सत्य एवं पारम्परिक शब्दानुशासन का मार्ग नहीं छोड़ा हैं। भारतीय साहित्य प्रतीक प्रधान है। देव संस्कृति के देव तत्वों के प्रतिनिधि हैं। सृष्टि के मूल तत्वों की व्याख्या देवताओं के रूप में की गई है, अतः किसी न किसी रूप में देव साहित्य जीवन का कोई न कोई अंग प्रस्तुत करता है।

भारतीय साहित्य की यह भी विशेषता है कि यह कड़ी दर कड़ी आप से आप आपस में एक जंजीर की तरह जुड़ा हुआ है। देखने में सारा साहित्य अलग–अलग लगता है जबकि इसकी किसी भी कड़ी को उठाकर देखें तो सारी अन्य कड़ियां स्वतः इससे जुड़कर शृंखला का रूप धारण कर लेंगी। इसी विशेषता के कारण भारतीय साहित्य में विश्व की अन्य भाषाओं को अपने में समा लेने की क्षमता है। ध्वनियों के संयोजन और उनकी प्रासंगिकता की दृष्टि से भारतीय साहित्य में दर्ज शब्दानुशासन विश्व एवं ब्रह्माण्ड में मौलिक शब्द शासन की ओर प्रेरित करता है। देश, काल और परिस्थितियों के भेद से मुक्त भारतीय साहित्य जीवन को एक पारम्परिक व निश्चित धुरी पर स्थापित करने के लिये अनुशासनबद्ध है।

इसमें सन्देह नहीं कि विश्व की समस्त भाषाओं में जीवन के अंश विद्यमान हैं तथापि पशुओं, पक्षियों, धातुओं, जड़ वस्तुओं सहित अग्नि के विविध अंश ध्वनि रूपों में भाषाओं में उपस्थित हैं। भारतीय शब्द शास्त्रों में अलग अलग ध्वनि प्रतीकों की उत्पत्ति और प्रभाव का अलग अलग प्रकार से विश्लेषण किया गया है। सांस्कृतिक रूप से ध्वनियों की अलग अलग देवों में प्रतिष्ठा और प्रभाव को तत्वों के रूप में भिन्न भिन्न प्रकार से दर्शाया गया है। पांच तत्वों और मनस् तत्व में ध्वनियों का प्रतिनिधित्व एवं देव–संस्कृति से उनका सम्बन्ध जीवन को पृथ्वी तत्व से जोड़ने के लिये अनुशासित हुआ है। उदाहरण के रूप में हम गणेश देवता को ले सकते हैं। गणेश की उत्पत्ति पार्वती के मैल से दर्शायी गई है। कुंडलिनी में गणेश को मूलाधार में स्थापित किया है। मूलाधार पृथ्वी से सम्बन्धित चक्र है तथा ज्ञानेन्द्रिय के स्थान पर कर्मेन्द्रिय गुदा को महत्व देकर श्वाच्छोश्वांस (अजपा जाप) को रहस्यमय बनाया गया है। नाथ साहित्य ने अजपा जाप की साधना को जीवन सम्बन्धी ध्वनियों से मिलाने की चेष्टा की गई है।

"श्वासा से सोऽहं भया, सोऽहं से ओंकार। ओंकार से नाद भया साधो करो विचार"। मानव को पृथ्वी का प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिये देव भाषा एवं लिपि अमल में आई है। देव भाषा की ध्वनियों की आकृतियों में ऐसी समानता और विविधता है कि उनके उद्‌भव और विकास को समझा जा सकता है। आकृतियों के माध्यम से ध्वनियों में से ध्वनियों की उत्पत्ति भी दर्शाई गई है। भारतीय शब्द व्यवस्था का मूल आधार पृथ्वी तत्व है। भारत का रहस्यपूर्ण साहित्य यद्यपि प्रत्यक्ष है तथापि इसके रहस्यों को समझना इतना सरल नहीं है। भारतीय साहित्य में अनेक विषयों का समावेश है तथा इसे समझने के लिये समस्त का पाठक को बोध होना जरुरी है, जो कि कठिन है तथा जिसके अभाव में भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व असम्भव तो नहीं परन्तु दुराधर्ष अवश्य है। नाथ साहित्य ने इसकी जीवनचर्या के माध्यम से पूर्ति की है। यह खेदजनक है कि भारतीय शब्दानुशासन की परम्परा को पीछे छोड़कर नये सिरे से जो साहित्य सृजन हुआ है उसे भारतीय साहित्य का प्रतिनिधि माना जा रहा है, जो अनुचित है। आधुनिक साहित्य में पारम्परिक शब्दानुशासन का अभाव है। यह लक्ष्यहीन है। इसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये हमें पारम्परिक अभिव्यक्ति के मन्तव्य एवं लक्ष्य को समझना होगा। भाषा भेद होने के उपरान्त भी भारतीय साहित्य परम्परा का शब्द शासन पारम्परिक रहा है। समस्त पारम्परिक भारतीय भाषाओं में समान अर्थ व्यवस्था विद्यमान है। संस्कृत भाषा से हिन्दी में रूपान्तरण के उपरान्त भी अर्थ भेद में विविधता नहीं है। यही नियम विश्व की समस्त भाषाओं पर लागू होता है। यह इसलिये क्योंकि प्रत्येक भाषा का अनुवाद अन्य भाषाओं में किया जाना सम्भव है।

नाथ सम्प्रदाय ने अपनी दिनचर्या में साहित्य के माध्यम से जीवन को आत्मसात् किया है। हर क्रिया में कोई शब्द शासन है और हर शब्द शासन में जीवन की उपस्थिति। यह वर्तमान व्यवहारिक जीवन क्रम से अलग नहीं है। वर्तमान व्यवहारिक ज्ञान में अक्षर भेद है जबकि नाथ शब्द ज्ञान, अक्षर व शब्द भेद को समाप्त करता है। यह शब्दानुशासन के माध्यम से जीवन को नितान्त नई और मौलिक दिशा प्रदान करता है। वह मृत्यु से सम्बद्ध जीवन व्यवस्था को मृत्यु

से अलग करता है और उसे अमरत्व की ओर प्रेरित करता है। नाथ सम्प्रदाय ने संस्कृत में उल्लिखित शब्दानुशासन को नये सिरे से भाषाबद्ध किया है। यही क्रम भारत की अन्य भाषाओं के शब्दशासन में दृष्टिगोचर होता है। गहन अध्ययन के पश्चात् विश्व की अन्य भाषाओं में भी यही शब्द तत्व अन्य आध्यात्मिक, दार्शनिक और सामाजिक दृष्टि से दृष्टिगोचर होता है।
भारत की समस्त भाषाओं में समानता है क्योंकि इनमें आदिकालीन वैदिक शब्द व्यवस्था विद्यमान है। उनका साहित्य संस्कृत शब्द व्यवस्था को नये नये सन्दर्भों में प्रस्तुत करता है। नाथ साहित्य में देव संस्कृति को दोहराया गया है। वैदिक, अध्यात्मिक व दैविक प्रतीक नाथ सम्प्रदाय की सामाजिक व्यवस्था में दोहराए गए हैं। नाथों के नव नाथ दैविक हैं, दैहिक नहीं। यह किसी न किसी प्रकार की तात्विक विवेचना के प्रतीक हैं मनुष्यों के नहीं। नाथ सम्प्रदाय के नौ नाथ तत्वों के आधार पर निर्धारित हुये हैं। वे तत्वों के प्रतिनिधि हैं, मनुष्यों के नहीं।
ऊँकार आदिनाथ महादेव शिव स्वरूपी हैं। देव संस्कृति के प्रधान नौ देवता अक्षर स्वरूपी हैं। ऊँ में स्थित 'म' शिव स्वरूपी है अतः यह अक्षर प्रधान व्यवस्था है, व्यक्तिवाचक नहीं। नाथ साहित्य में दोनों ही रूपों की एक साथ मान्यता से सम्प्रदाय को स्थाई रूप दिया जा सका है। शिव आकाश का प्रतिनिधि है तथा आकाश एक तत्व है, मनुष्य नहीं। इसी प्रकार से उदयनाथ पार्वती पृथ्वी का स्वरूप है जो कि पृथ्वी है स्त्री नहीं। सत्य नाथ ब्रह्मा जल का स्वरूप है तथा जल तत्व है जो सबके लिये आवश्यक है। इसे व्यक्ति नहीं कहा जा सकता। सन्तोष नाथ विष्णु तेज स्वरूपी है जो कि प्रकाश और उसका अंश है तथा जो व्यक्ति नहीं है। गज बेलि गज कंथड़नाथ गणेश स्वरूप हैं तथा जो श्वाच्छोश्वांस के रूप में हर प्राणी की घ्राणेन्द्रिय व कुंडलिनि के मूलाधार में स्थित है। यह शब्द स्वरूपी है तथा जो सब मनुष्यों और प्राणियों में समान रूप से प्राण कहलाता है तथा जो शिव रूपी भी है और गणेश स्वरूपी भी। शिव और गणेश में पिता पुत्र का भेद है। मैल का गणेश मानकर भ्रान्ति उत्पन्न हुई है जो कि शिव का अंश और शिव ही है, कुंडलिनी के ध्वन्यांकन से यह स्पष्ट होता है। अचले अचम्भे नाथ शेष स्वरूपी है जो कि शिव के गले में तथा समुद्र मंथन में नेति बनकर उपस्थित रहा है तथा पृथ्वी को अपने सिर पर धारण किये हुए है। यह शब्द तत्व है यह भी पुरुष नहीं है। ज्ञान पार सिद्ध चौरंगी नाथ अठारह भार वनस्पति का स्वरूप है जिसके लिये वेद ने औषधयः शान्ति, वनस्पतयः शान्ति, कहकर शान्ति पाठ किया है तथा जो पुरुष या व्यक्ति नहीं है। ऐतिहासिक कलियुग के परिप्रेक्ष्य में शालिवाहन संवत निर्माता के पुत्र पूरण माने जाते हैं। राजा शालिवाहन के घर पूरण का जन्म माना जाता है। हाथों और पैरों से रहित वनस्पति का स्वरूप है। इस धारणा को माता द्वारा पूरण के हाथ पैर कटवाकर कुंवे में डालने की कथा द्वारा स्पष्ट किया गया है। वनस्पति के देव नौ नाथों में शामिल किये गये हैं। वनस्पतियां हाथ पैर से रहित होती हैं इसलिये इसे चौरंगी नाथ नाम दिया गया है। माया रूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया का रूप हैं किसी स्त्री या धन का नहीं। घटे पिण्डे निरन्तरे सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ज्योति स्वरुपी और बाल स्वरूपी हैं। कलियुग के सिद्धों ने भी बाले गोरक्ष के चरण वन्दन किये हैं। इस प्रकार विश्व में प्रत्येक जन्म

लेने वाला शिशु गोरक्ष अर्थात् पृथ्वी का रक्षक है। नवनाथ परम्परा का केन्द्र कदरी (कदली, कजली) वन है तथा कजली राज्य नौ नाथों द्वारा परशुराम के लिये समुद्र से भूमि लेकर स्थापित राज्य है। कजली वन का राज्य नाथ–सम्प्रदाय में चुनाव द्वारा बारह वर्षों में परिवर्तित होता है। राजा की नियुक्ति त्रयम्बक त्रिमुख क्षेत्र में नासिक कुम्भ के अवसर पर श्रावण सुदी चतुर्थी को चुनाव प्रक्रिया द्वारा नाथ–सम्प्रदाय के अवधू और अवधूत नाथ योगियों द्वारा बारह वर्षों में एक बार सम्पन्न होती है। धार्मिक राज्य के परिवर्तन का यह क्रम राजस्व के आधार पर भी उत्तरी व दक्षिणी भारत की भूमि को नाथ–सम्प्रदाय से जोड़कर उसे शब्द शासन से जोड़ता है। कदरी का सबसे पहला राजा परशुराम माना जाता है जो त्रेता युग का विष्णु अवतार है। परशुराम के राजा बनने के पीछे मान्यता है कि परशुराम ने चौदहवीं बार पृथ्वी को जीत कर ब्राह्मणों को दान दिया, तो ब्राह्मणों ने दान दी हुई भूमि को छोड़ने और न रहने के लिये स्पष्ट निर्देश दे दिया। परशुराम त्रयम्बक में देव स्वरूप नौ नाथों की शरण में आया तथा उन्होंने परशुराम से राज्य करने की शर्त पर भूमि समुद्र से दिलाने का प्रस्ताव किया। लज्जित होकर परशुराम को बारह वर्ष के लिये राजा बनना पड़ा तथा नौ नाथों ने समुद्र से अनुरोध करके सागर को पीछे हटाया तथा कजली वन और राज़्य की स्थापना की। उस समय नौं नाथ त्रयम्बक में उपस्थित थे तथा राजा परशुराम के चुनाव के बाद ही कदरी की ऐतिहासिक यात्रा शुरु हुई। इस प्रसंग में नासिक कुंभ भी आता है, क्योंकि इसी कुंभ की परम्परा से नासिक तीर्थ के आदिकालीन काले राम मन्दिर में ही परशुराम झुंड्डी पर्व के समय उपस्थित रहती है। कजली यात्रा का प्रथम पड़ाव नासिक कुंभ है। हिंसक प्रवत्तियों का त्याग करके शब्द के आधार पर धर्म राज्य स्थापित कर नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने भविष्य में नये युग के आव्हान् का मार्ग प्रशस्त किया। कदरी यात्रा के पीछे यही तत्व प्रमुख रहा है। पुराने से पुराने राजस्व खातों में नाथ सम्प्रदाय और नवनाथ सम्प्रदाय झुंड्डी की सम्पत्तियां हैं। नासिक कुंभ में कदरी के राजा का चुनाव करके नवनाथों की योग जमात जिसे नवनाथ झुंड्डी कहते हैं, दक्षिण दिशा की ओर साढ़े सात मास पैदल यात्रा करते हुये राजा को आसनासीन करके उज्जैन के कुंभ में आती है। कदरी यात्रा के रास्ते में नाथ सम्प्रदाय की सम्पत्तियां आती हैं तथा महाराष्ट्र, कर्नाटक तक की यात्रा पूरी करके कर्णाटक के जिला मैंगलूर शहर में स्थित कदरी वन की राजगद्दी पर राजा को स्थापित करती है। कदरी वन का क्षेत्र उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल के वनों तक फैला हुआ है। हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समुद्री किनारे पर स्थित भूमि व जंगल कदरी (कजली) वन कहे गये हैं। जहाँ जहाँ से समुद्र पीछे हटा है वहां का क्षेत्र कदरी वन कहा जाता है। भारत का भू भाग तीन तरफ़ से कदरीवन से घिरा हुआ है। इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय अर्थात् नवनाथ धार्मिक राज्य के रूप में भू अभिलेखों के बंटवारे के आधार पर एक अखण्ड भारत और एक कड़ी के रूप में भरत खण्ड को जोड़ता है। भरत खण्ड में भारत, तिब्बत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांगलादेश, म्यांमार, भूटान, नेपाल तथा श्रीलंका के क्षेत्र आते हैं। इनमें नाथ सम्प्रदाय को आदि काल से भू अभिलेखों में देखा जा सकता है।

॥हंसदेवता॥
॥कामधेनु॥
यमुना

श्री नवनाथ दर्शन
श्री मत्स्येन्द्रनाथजी
श्री आदिनाथजी
श्री चौरंगीनाथजी
श्री उदयनाथजी
श्री अचल अचम्मनाथजी
श्री सत्यनाथजी
श्री गज कन्थडनाथजी
श्री सन्तोषनाथजी
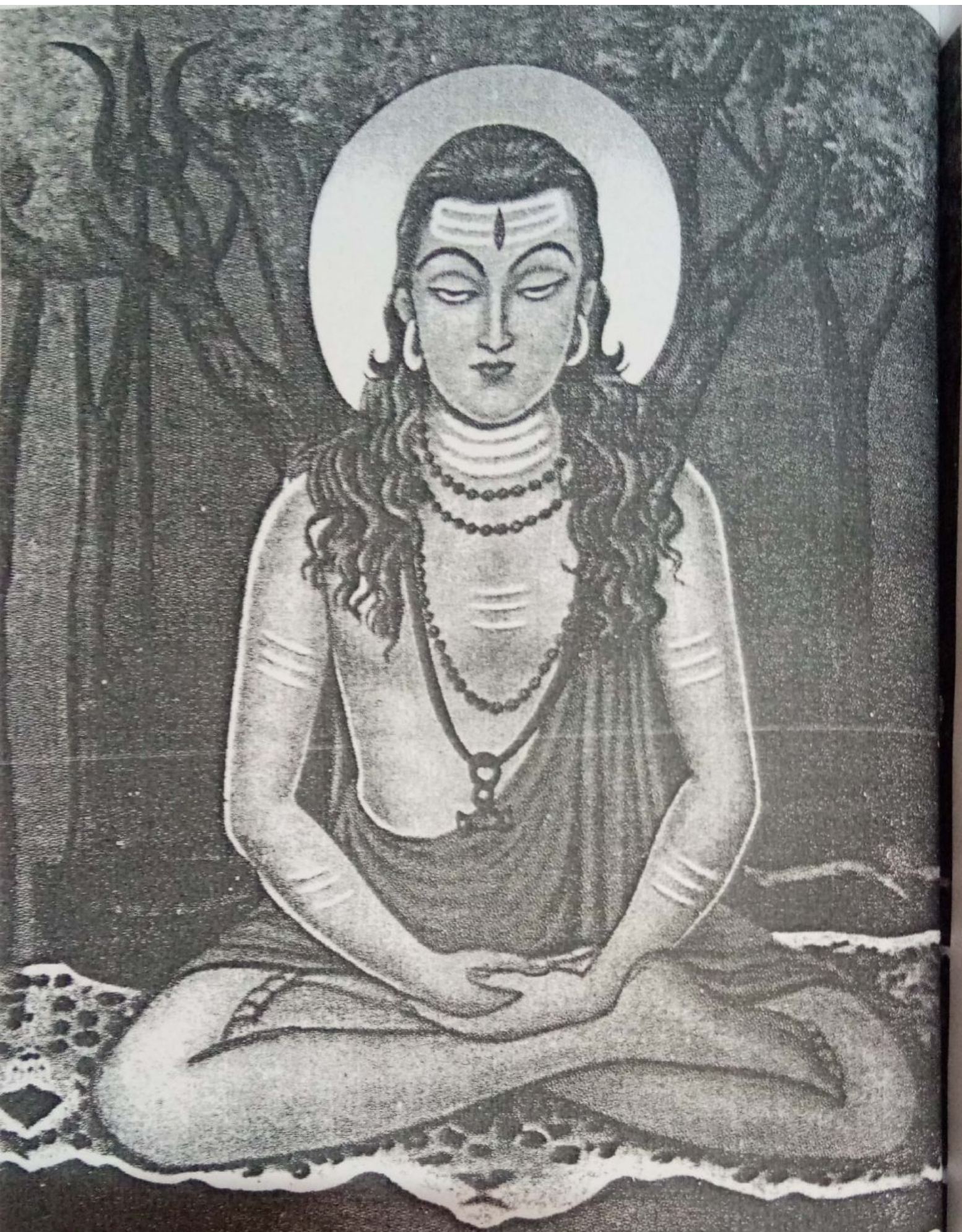
योगाचार्य गुरू गोरक्षनाथ जी
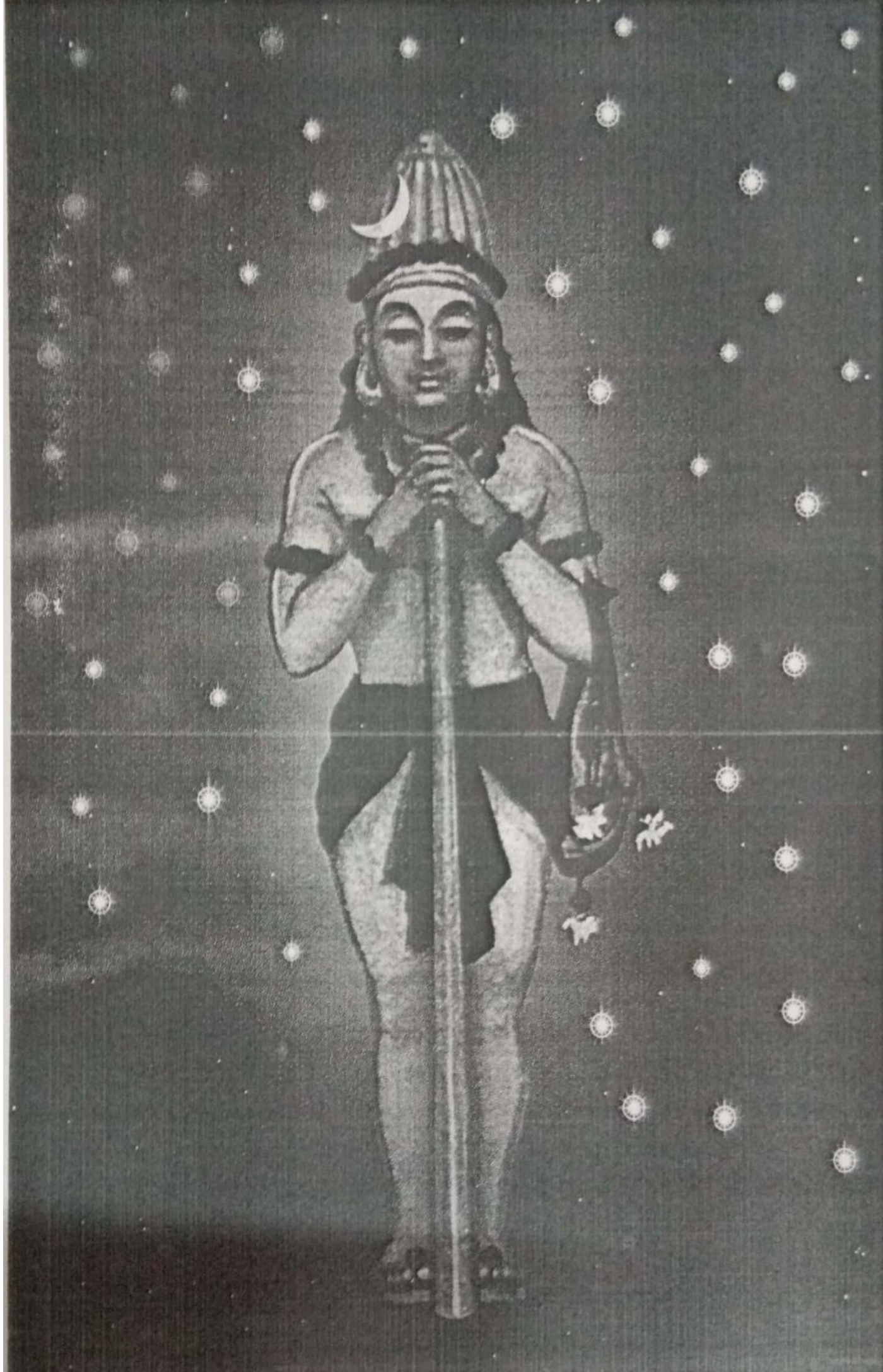
मायारूपी दादा मत्स्येन्द्र नाथजी
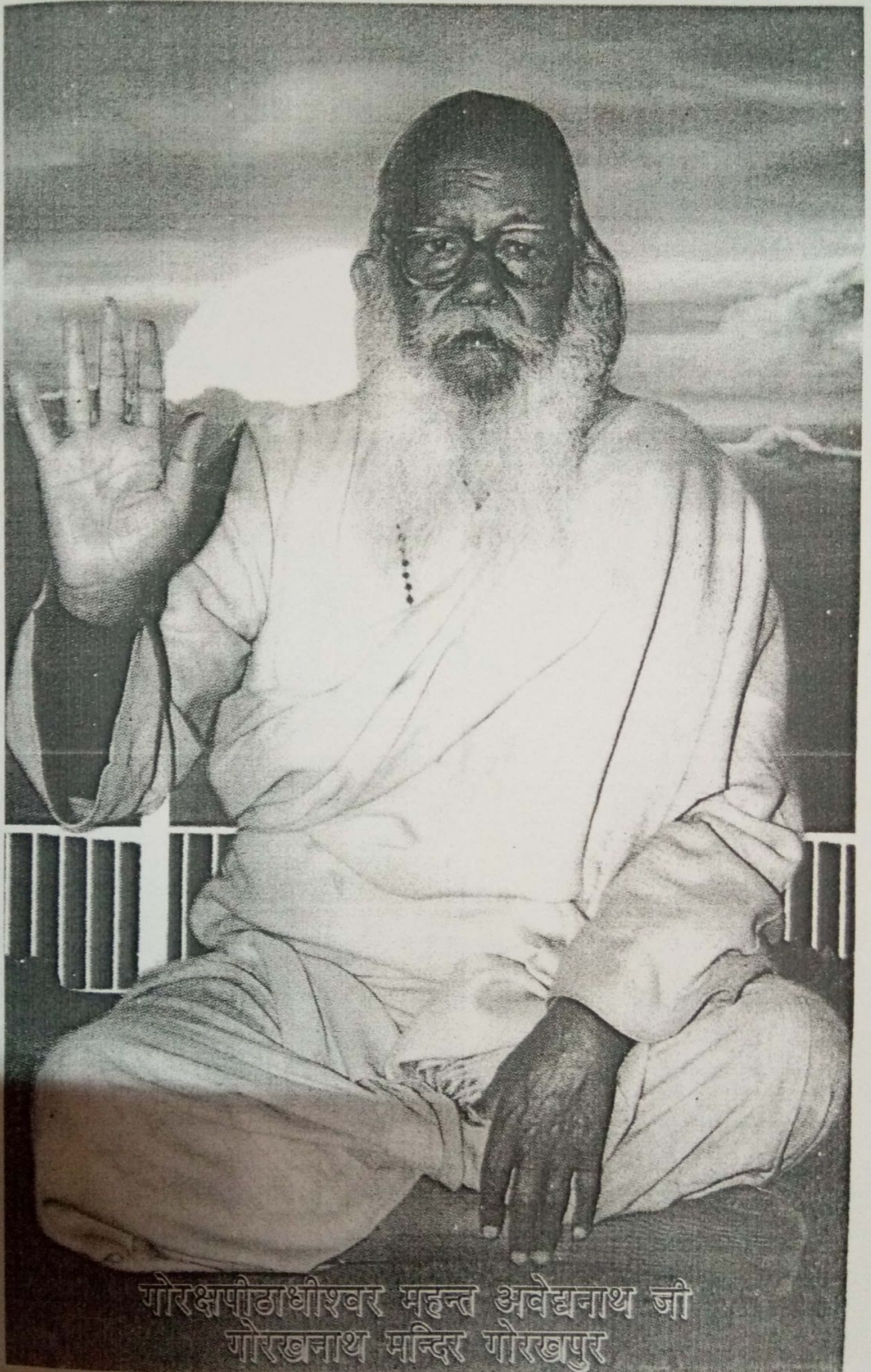
गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी
गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर
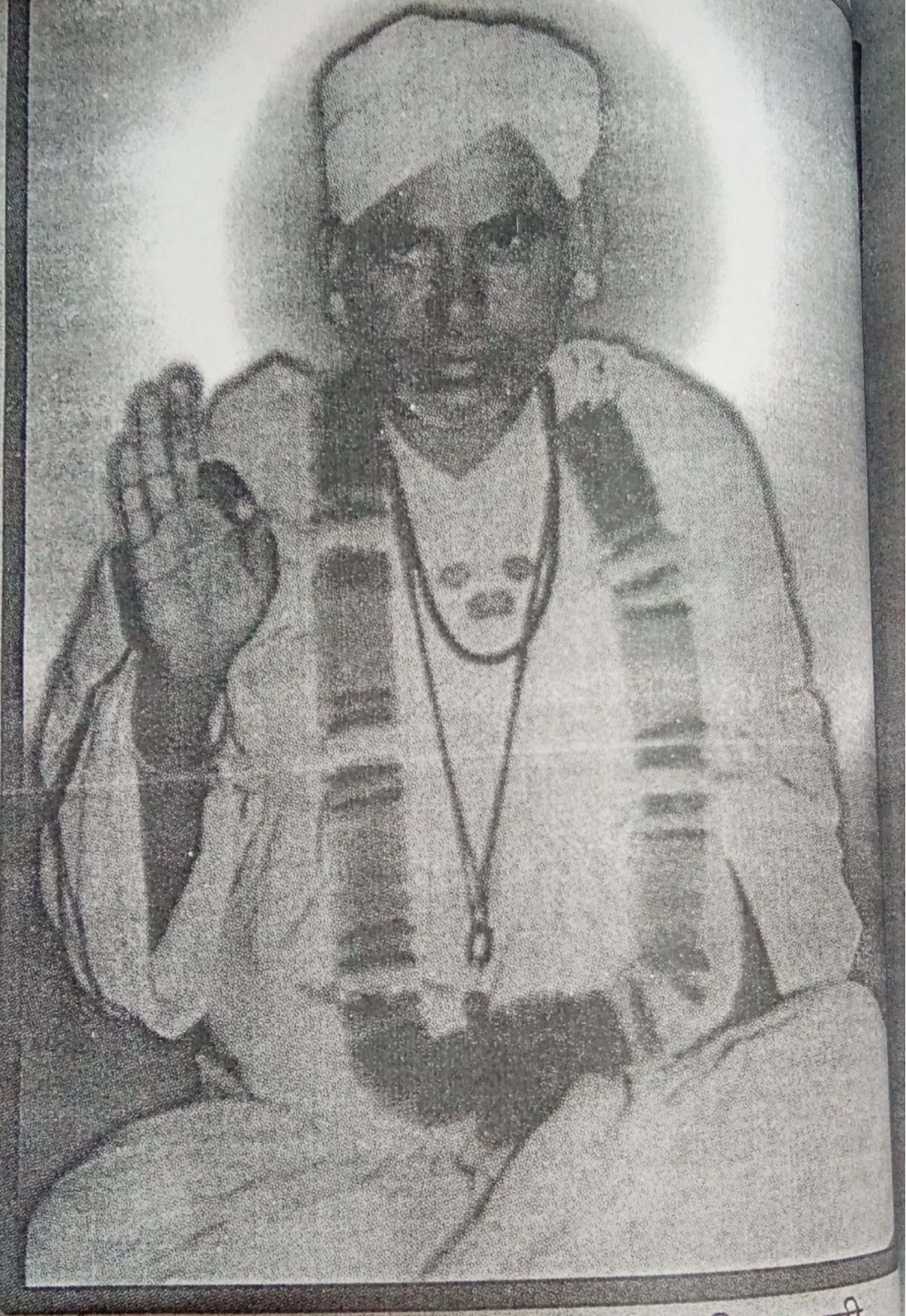
श्री जालन्धर पीठाधीश्वर पीर श्री शान्तिनाथजी
जालोर (राजस्थान)
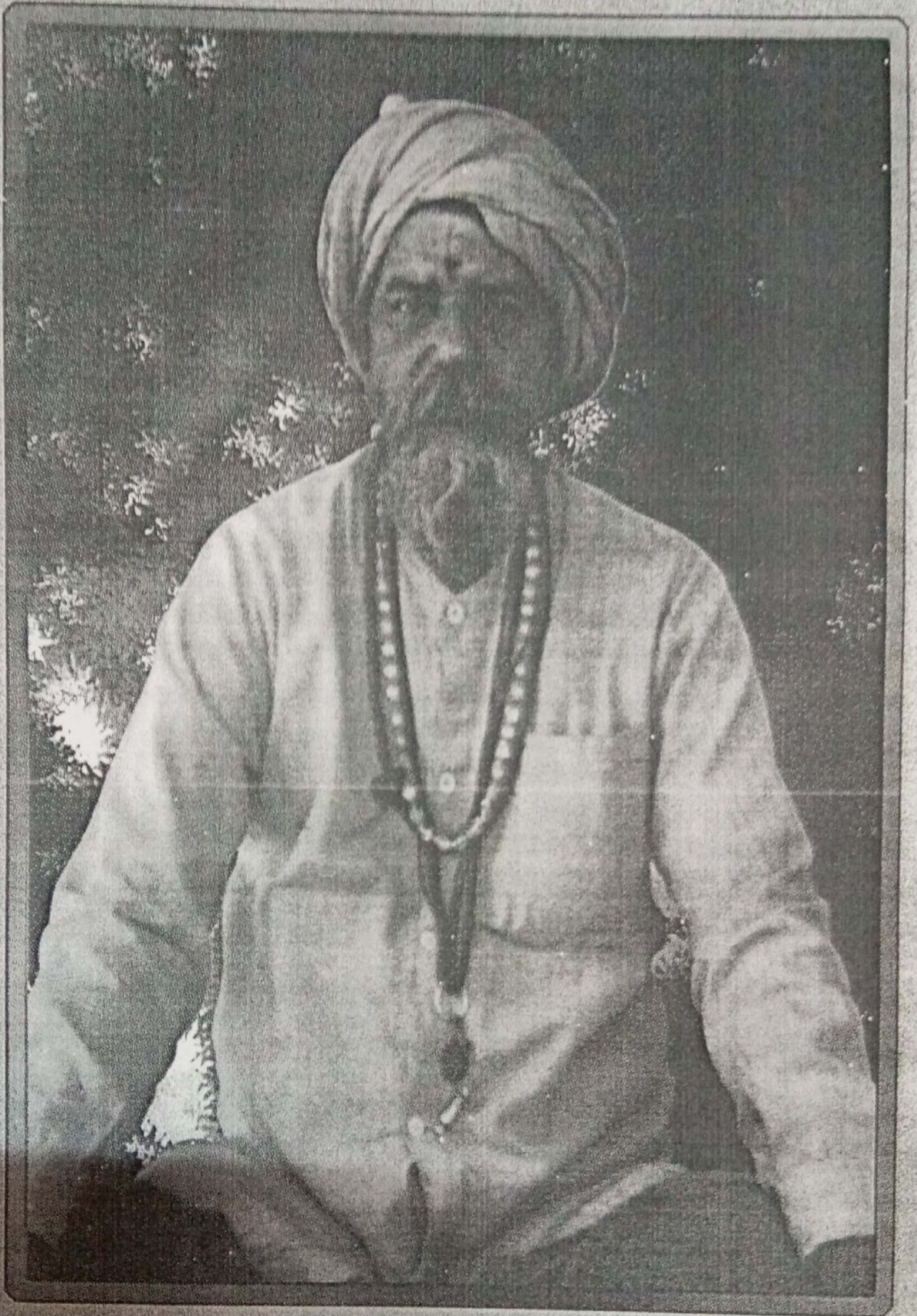
गिरनारी बापु श्री त्रिलोकनाथजी
जुनागढ -गुजरात

योगी शंकर नाथ जी फलेग्रही
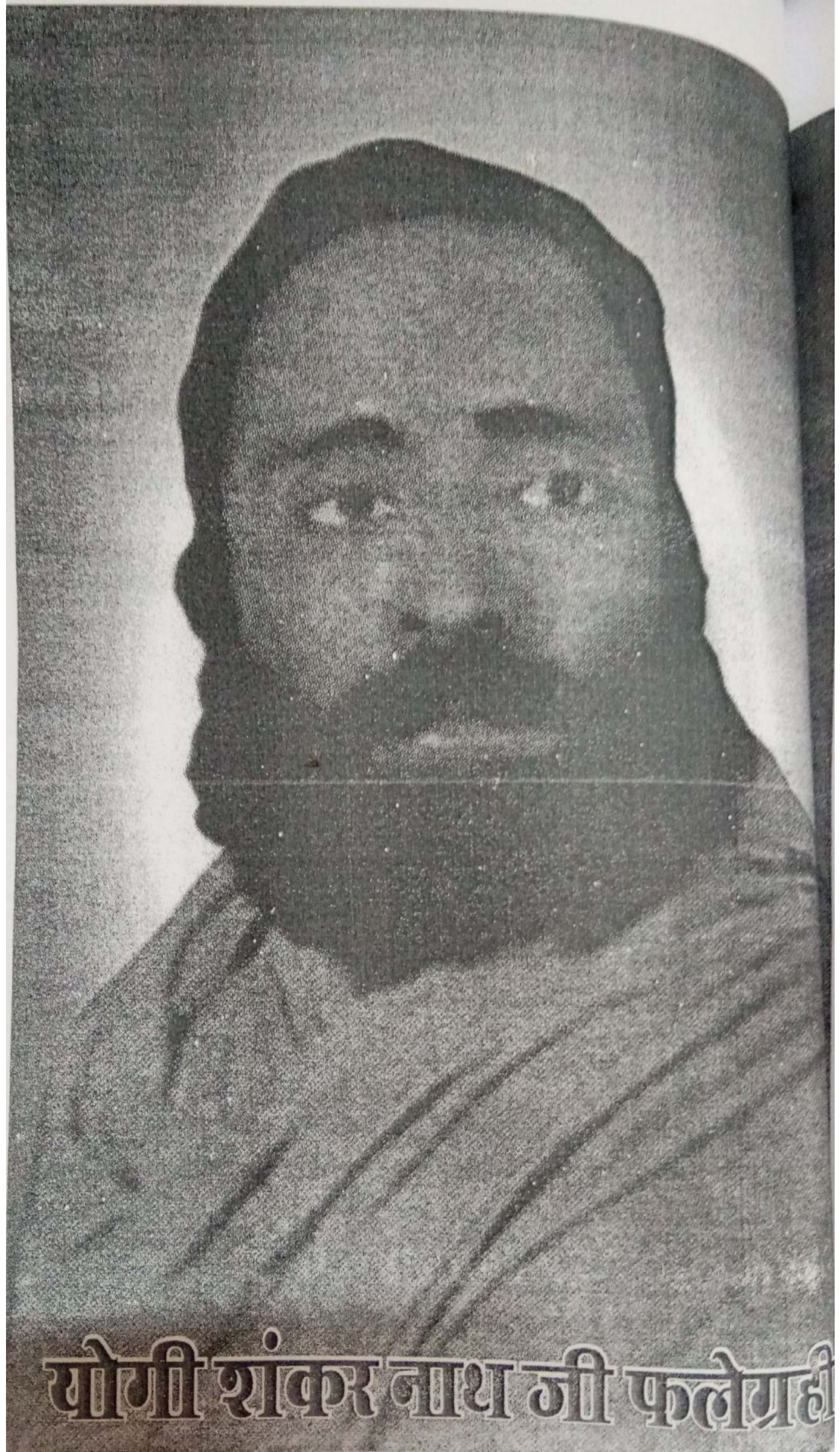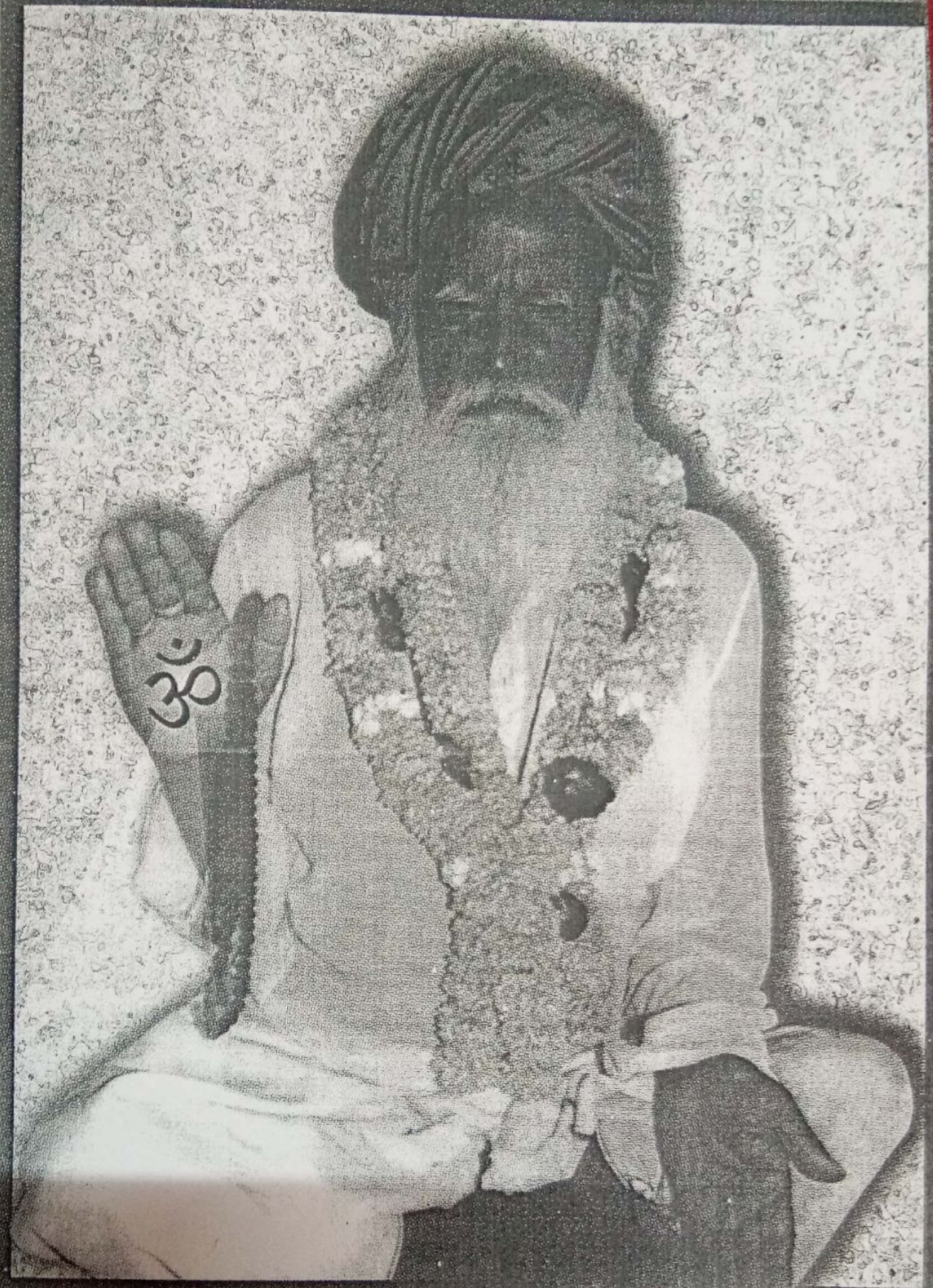
महाराज योगी शंभूनाथजी के गुरु महाराज
श्री योगीराज लेहरनाथजी (रावल)
(छीपाबेरी -आबु पर्वत, राजस्थान)

योगी शम्भूनाथ जी

अश्लेषा
पुष्य
मघा
पूर्वा फाल्गुनी
विशाखा
कर्क
सिंह
कन्या
तुला
वृश्चिक
मिथुन
उत्तराषाढ़ा

अं
आं
इं
ईं
उं
ऊं
ऋं
ॠं
लृं
लॄं
एं
ऐं
ओं
औं
अं
अः
कं
खं
गं
घं
ङं
चं
छं
जं
झं
ञं
टं
ठं
डं
ढं
णं
तं
थं
दं
धं
नं
पं
फं
बं
भं
मं
यं
रं
लं
वं
शं
षं
सं
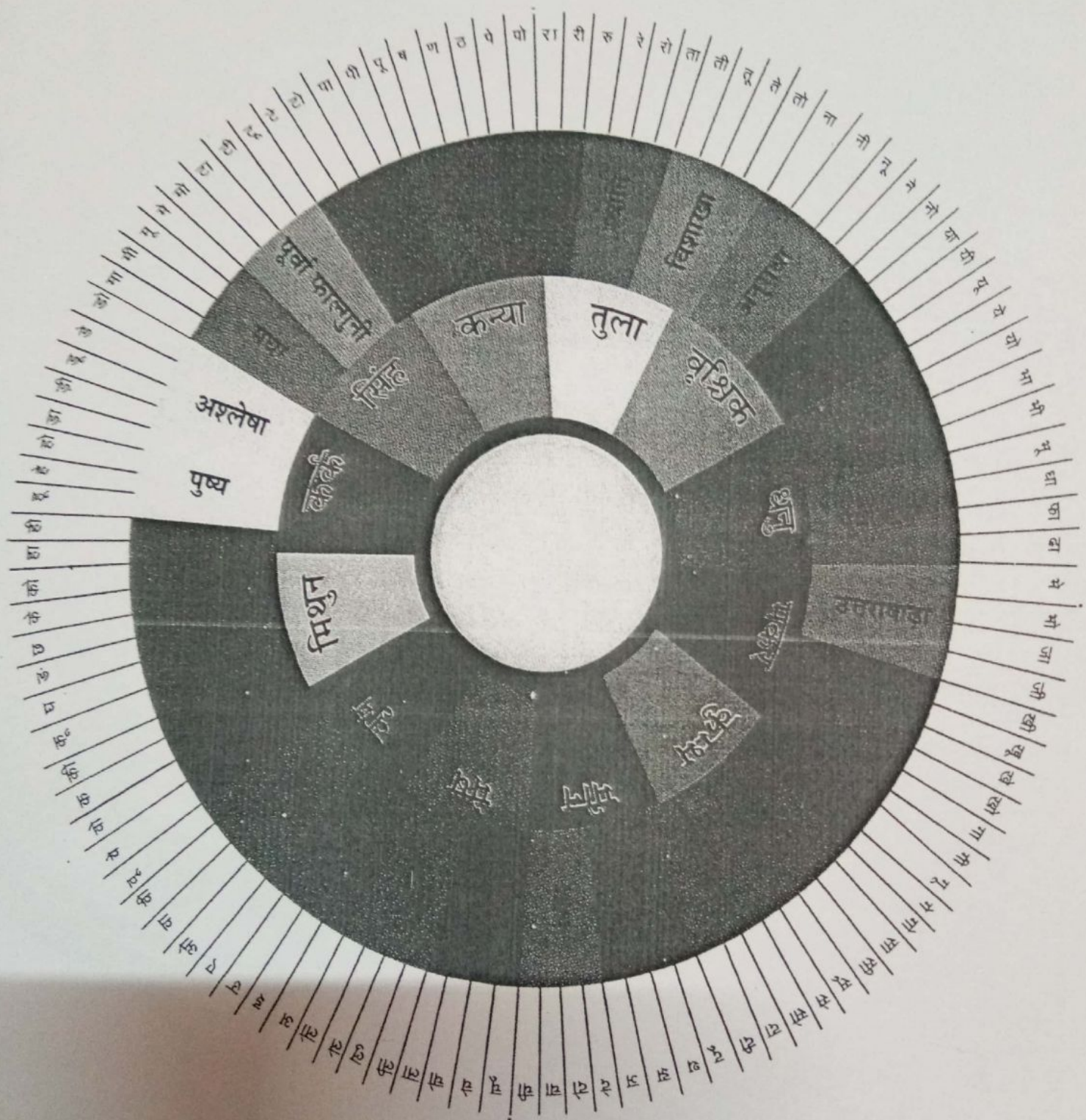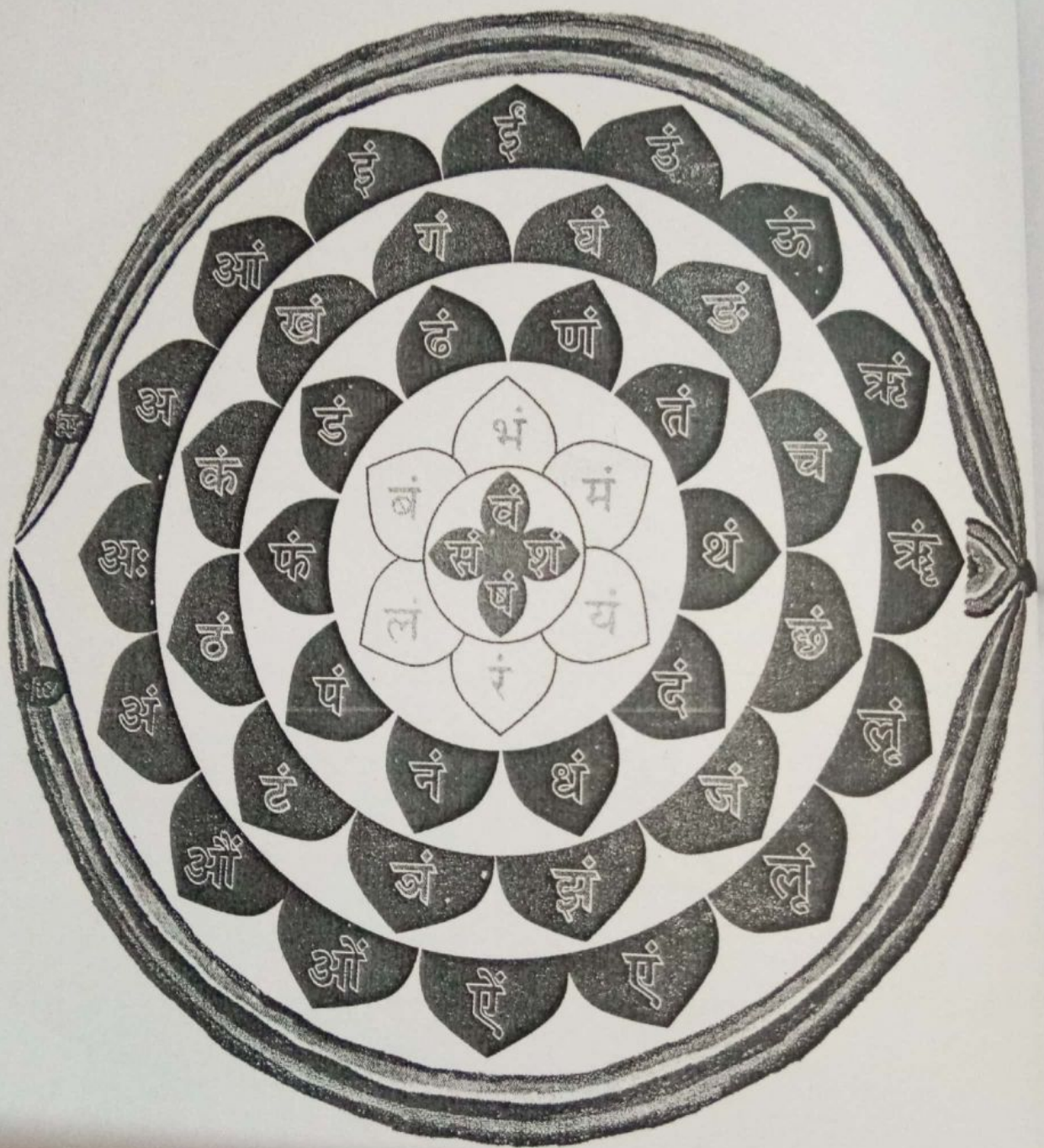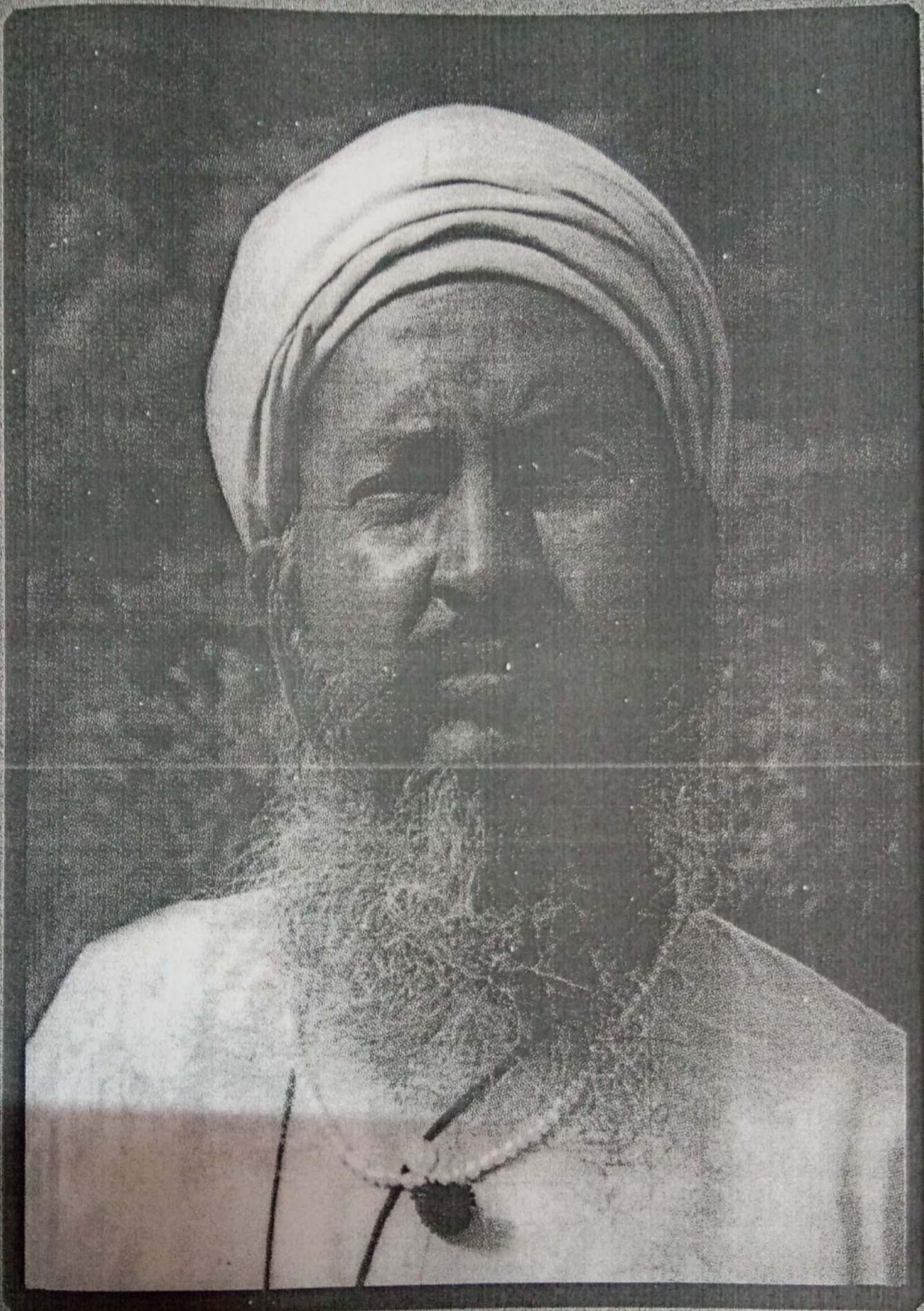
प्रकाशक : योगी शंभूनाथजी 'रावल'
महन्त गुरु गोरक्षनाथ मंदिर, आम्बेश्वरजी (सिरोही-राज.)
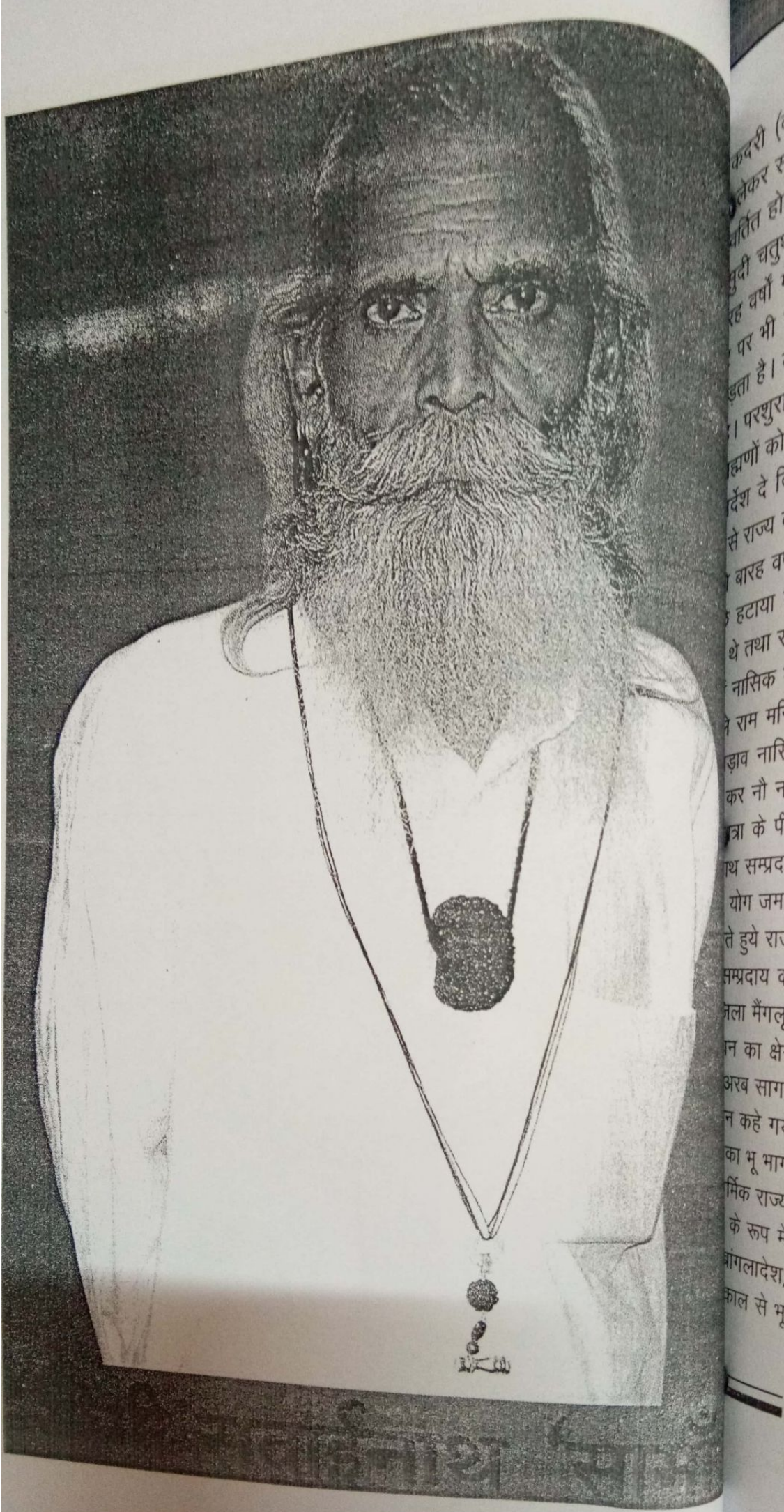
इस प्रमाण के पश्चात् भी नाथ सम्प्रदाय पृथ्वी को शब्द और व्यक्तिगत बन्धनों से मुक्त करने का पक्षधर है। नाथ परम्परा ने अपने साहित्य एवं आचरण में इसी आधार की पुष्टि की है। नाथ सिद्धों ने जीवन को स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान करने के लिये अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल दिया है। उन्होंने पृथ्वी को माता और स्त्री को माता और पृथ्वी का साक्षात् रूप मानकर जीवन के उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया है। आज, उन व्यवस्थाओं को पुनर्जाग्रत करने की आवश्यकता है। जिसके लिये नाथ शब्द शासन प्रकाश में आया है, उसे पहचानने की महति आवश्यकता है। जीवन व्यवस्था में विविधता के कारण जो भ्रांति संसार में उत्पन्न हुई है उसे आज ठीक करने की आवश्यकता है। अभिव्यक्ति में संशोधन की आवश्यकता है। भारत के प्रसिद्ध व सिद्ध साहित्य से ही इस लक्ष्य की पूर्ति हो सकती है। यही क्रम नव खण्ड पृथ्वी के रुप में अनुबन्धित हुआ है।

परम्परागत रुप से कानों के चीरा लेकर कुंडल डालने की आदिकालीन नाथ गुरु चेला परम्परा के राजस्व के भू अभिलेखों में अंकन से नाथ परम्परा एवं सम्प्रदाय के शब्दानुशासन का महत्व बढ़ता है, क्योंकि इससे गत 800–850 वर्ष पूर्व की शब्द विरासत को समझने में मदद मिलती हैं। नाथ (नाद) योग परम्परा का अनुसरण करके किसी निर्णय पर पहुंचा जा सकता है। भाषाभाषी किसी निर्णय पर पहुंचने से पहले नाथ साहित्य का अंकन जरुरी है जो कि सबके हित में है। भू–अभिलेखों में दर्ज नाथ गुरु चेला परम्परा आज भी जीवित है तथा सम्प्रदाय के रूप में इसकी उपस्थिति आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती है। यह विरासत नाथ–साहित्य के दर्शन से मेल न खाते हुये भी अंकित है। इस अंकन एवं अनुबन्धन को पुनः अंकनों और रेखांकनों से मुक्त करने की प्रेरणा देने वाला नाथ सम्प्रदाय और नाथ–साहित्य चार कुंभों से अपने–अपने महत्व के अनुसार प्रेरित होता है। नासिक कुंभ पर नौ नाथ झुंडी चुनाव प्रक्रिया द्वारा निर्धारित व्यवस्था एवं चुनाव आगामी बारह वर्षों के भविष्य की दिशा निर्धारित करता है, ऐसी सिद्धों की मान्यता रही है।

सिद्धों की वाणी और कर्म ज्ञान के लक्ष्य पर केन्द्रित हैं। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में इनका ज्ञान शरीर में केन्द्रित है तथा उसी की व्याख्या पारम्परिक आध्यात्म ज्ञान में केन्द्रित है। उसी गुप्त व रहस्यपूर्ण शब्द ज्ञान को नाथ सिद्धों ने एक नई भाषा को जन्म देकर उसे पृथ्वी (नव–खण्डों) में लागू किया है। भारतीय समाज को एक नवीन जीवन शैली (अवधूत मत)के रूप में उपस्थित किया। सम्प्रदाय का रूप देकर एक नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया है। यह गृहस्थ जीवन से बिल्कुल अलग है। इस पर भी सम्प्रदाय का सम्बन्ध समाज के मुख्य अंग स्त्री का माता के रूप में है स्वामी के रूप में नहीं। इसीलिये माँ के रूप में स्त्रियों से भिक्षा प्राप्त करते हुये अपनी सिद्धि का प्रदर्शन करना नाथ–सिद्धों एवं योगियों की मर्यादा है और रहेगी।

सृष्टि को ध्वनियों के आधार पर मूल अंकन में स्थापित व अंकन से मुक्त करने के लक्ष्य की पूर्ति के लिये बारह और अठारह, दो प्रकार के पंथ अंकित हुये हैं। शब्द बन्धन से अनुबन्धित करने को अठारह और बन्धनों से मुक्त करने को बारह पंथ निर्धारित हुये हैं। इन

सबका मूल अनुसन्धान कुंडलिनि स्थित षट् चक्रों के अनुसार निर्णायक सिद्ध होता है जबकि यही क्रम व्यवहारिक समाज की नये सिरे से व्यवस्था के लिये प्रयुक्त हुआ है जो देव संस्कृति और हिन्दू समाज से सम्बद्ध है। मुख्य मुख्य सांस्कृतिक अंश दोनों प्रकार की पंथ व्यवस्थाओं में विद्यमान है। अर्थात् ये एक दूसरे के पूरक हैं, जिसके अभाव में एक दूसरे की पूर्ति और व्याख्या नहीं हो सकती। अठारह व बारह के पंथों का क्रम कुंडलिनि में स्थित शब्द ज्ञान से है। यह ध्वनि व्यवस्थानुसार निर्धारित हुआ है। नाथ परम्परानुसार कुंडलिनि का ध्वनि केन्द्र नाभि अर्थात् मणिपूर चक्र है तथा यहीं से नाथ शब्द की शुरुआत होती है। नाथ शब्द के न और थ अक्षर इन्हीं के बारह उल्टा और सीधे गिनने की प्रक्रिया में नाथों के बारह और अठारह पंथ निर्धारित हुये हैं। नाथों के बारह पंथों में मणिपूर में स्थित अग्नि तत्व के प्रतिनिधि राम के पंथ की गुरु–चेला मान्यता व परम्परा विद्यमान है जो कि सदियों से जारी है। रां (राम) मणिपूर चक्र का बीज मंत्र है।

नाथ साहित्य के अर्थ समझने को कुंडलिनि स्थित अक्षर ज्ञान होना जरुरी है। उसके समस्त तत्वों एवं अवयवों का जिज्ञासु को बोध होना जरुरी है। अभिव्यक्ति में अनुसंधान एवं संशोधन की दृष्टि से कुंडलिनि की अक्षर व्यवस्था का आवश्यक रुप में शामिल किया जाना प्रासंगिक है जो कि नाथ साहित्य के प्रवर्तकों एवं संधानकर्ताओं द्वारा अनुशासित है। जिस शब्दानुशासन को देवलिपि एवं देवभाषा संस्कृत में परमार्थ के लिये अधिसूचित किया था, उसी लिपि और अधिसूचना को नाथ सिद्धों ने नई शब्द व्यवस्था देकर अर्थ एवं शब्द भेद से पुनः मुक्त किया है। उन्होंने जीवन को परिभाषित करके जीवन का उद्धार किया है। नाथ सिद्धों के शरीर की सिद्धि का माध्यम शब्दानुशासन है जो शरीर ही में स्थित है। नाथ साहित्य शिव तत्व को सृष्टि का आधार मानता है। सिद्धों ने शिव को ही शक्ति मानकर दोनों का ध्वनि विज्ञान के आधार पर एकीकरण एवं योग किया है। शिव तत्व को ही गोरक्ष और आचार्य के रूप में मान्यता प्रदान कर शिव गोरक्ष भेद को समाप्त करने वाले सम्प्रदाय का रूप प्रदान किया है। साहित्य के माध्यम से नाथ सिद्धों ने वाणी के अर्थ भेद को समाप्त कर जीवन में भेद बुद्धि को निर्मूल किया है। वाक् एवं वाणी की पवित्रता को प्रकट करने तथा अभिव्यक्ति को ध्वनि प्रदूषण से मुक्त करने के लिये ही नाथ साहित्य प्रकाश में आया है। शब्दानुशासन नाथ साहित्य का शस्त्र है जो हिंसक शस्त्रों को छोड़ देने की मानव जगत को प्रेरणा देता है। परम्परागत भारतीय शब्दानुशासन परमार्थ और भाषागत अभिव्यक्ति में स्थित रहस्यपूर्ण जीवन सत्य एवं सृष्टि के यथार्थ को प्रकट करने का साधन है जिसे नाथ साहित्य ने साधन बनाया है। नाथ सिद्ध शब्द विज्ञान के साधक हैं। जो लिखी ही नहीं गई है वह पत्रिका नाथ–सम्प्रदाय के आचार्य गुरु गोरक्ष नाथ के नेतृत्व में नौ नाथ चौरासी सिद्धों और अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर रची और बांची है।

शब्द हमारा षरतर षांडा रैहण हमारी साँची।
लेखे लिखी न कागद मांडी, सो पत्री हम बाँची।।

नाथ अध्येताओं ने शब्द व्यवस्था को जीवन के अन्तर्गत स्थापित, व्यवस्थित एवं चिन्हित किया

है। भारतीय साहित्य में जो शब्द शासन पूर्व में गुप्त किया गया था, उसी का खुलासा सम्प्रदाय ने अपनी जीवन शैली में किया है। नाथ सिद्धों ने अपने आचरण में नादानुसन्धान द्वारा जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली सार्थक ध्वनियों का समायोजन एवं अनुष्ठान किया है। उन्होंने जीवन को सम्पादित किया व मानव की जीवन शैली में परिवर्तित व प्रेषित किया है। उसे भारत व समस्त भू भागों में भू आवंटन सहित स्थापित किया है। नाथ सिद्धों ने अपने आचरण, विचरण, जीवनचर्या एवं दिनचर्या में प्रयुक्त भेष चिन्हों में वैदिक और देव परम्परा के अनुक्रम को व्यवहार में लेते हुये वस्त्राभूषणों और जीवन में धारण एवं प्रयोग किये जाने वाले चिन्हों में मंत्रबद्ध करके भविष्य के लिये शब्द व्यवस्था के संशोधन एवं सुधार के लिये दृढ़, निश्चयी, गूढ़ व रूढ़ सम्प्रदाय एवं स्त्री पुरुष से अलग अवधूत प्रधान समाज की रचना की है। पैतृक (पुरुष) प्रधान समाज के संस्कारों के स्थान पर गुरु शब्दों के संस्कारों से उसे चेले और शिष्य के रूप में नये सिरे से गठित व्यवस्थित एवं अनुशासित किया है। भू अभिलेखों में दर्ज सम्पत्ति के वारिसाना रक्षण के लिये पिता के स्थान पर गुरु प्रधान व्यवस्था, जो जीवन का प्रतिनिधित्व करती थी, को पृथ्वी में स्थापित किया है। इसी शब्द शासन से एवं नवीन भाषा से प्रेरित होकर अन्य सम्प्रदायों के आचार्यों ने गुरु–चेला परम्परा को लक्ष्य रखकर अपने अपने मत एवं परम्परागत शब्द शासन स्थापित किये जो नाथ शब्द परम्परा के समान ही जीवन के वाहक हैं।

नाथ मंत्रावली, गायत्रियाँ और वाणी साहित्य, भेद भाव को समाप्त करने के लिये मूल ध्वनियों का समायोजन एवं अनुष्ठान करता एवं अपनी जीवनचर्या में स्थित होकर स्थापित करता है। इसके कर्मकाण्डों में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का लक्ष्य नाद एवं ध्वनि विज्ञान की आदिकालीन परम्परा के आधार पर जीवन को सुव्यवस्थित और संगठित करना है। ध्वनि विज्ञान के पारम्परिक आधार पर जीवन को सुव्यवस्थित करने और भेदभाव को समाप्त करने के लिये नाथ सिद्धों ने जीवन सम्बन्धी मूल ध्वनियों का विवेचन और विमोचन किया है। नाथ साहित्य क्योंकि परम्परागत हिन्दी साहित्य है, अतः आज के हिन्दी युग में जीवन एवं अभिव्यक्ति की परिष्कृत, संशोधित एवं स्वर्णिम सम्भावना को देखते हुये शब्दों के आधार पर संगठित होने की अपील करने वाला शब्द शासन हमारे युग के भले और कल्याण के लिये अच्छा लक्षण एवं लक्ष्य है।

नाथ साहित्य विशुद्ध परमार्थ के लिये संवृति सत्य को प्रकट एवं प्राप्त करने का साधन है। संस्कृत के अनुक्रम एवं परम्परा को नाद योग की परम्परा से जोड़ने वाली कड़ी है। नाथ सम्प्रदाय का उद्देश्य नाद बिन्दु योग है। इस शरीर रुपी बिन्दु में जो मूल नाद, ध्वनि या शब्द है उसे प्राप्त करना नाथ ध्वनि विज्ञान की पराकाष्ठा है। जीवन की वास्तविक अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में संशोधन के लिये नाथ सभ्यता, संस्कृति और उसके साहित्य को लिया जा सकता है। देव भाषा से देवनागरी में समन्वय और भावनात्मक एकीकरण नाथ साहित्य की विशेषता है। इसमें प्रयुक्त होने वाले शब्द संकेत बिन्दु रूपी शरीर में उपस्थित नाद का सन्धान करते हुये शरीर को महत्त्वपूर्ण व सार्थक सिद्ध करते और उसे सार्थक दिशा प्रदान करते हैं। शब्दों के

आधार पर जीवन को सिद्धि प्रदान करने के कारण ही नाथ सम्प्रदाय सिद्ध सम्प्रदाय कहलाता है।

नाथ साहित्य की दिशा निर्धारित करने के लिये नाद और बिन्दु प्रधान दो प्रकार की भारतीय सामाजिक व्यवस्था को समझना जरुरी है। दो प्रकार की संस्थायें लगभग एक सहस्राब्दि से भारत में विद्यमान हैं। एक ही जीवन को दो प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। नाथ सिद्धों की भाषा में इसे नाद सृष्टि और बिन्दु सृष्टि कहा गया है। मोटे तौर पर इसे गृहस्थ और विरक्त या योग सन्यास समाज भी कह सकते हैं। भरत–खण्ड सहित पृथ्वी के नौ खण्डों में नाथ सम्प्रदाय के दर्शनी नाथ योगी या जोगी कहलाते हैं। योग धारण करना आम बोलचाल की भाषा में लोक कथाओं, काव्यों, भजनों, शब्दों व अन्य भारतीय भाषाओं में चर्चित रहा है। आदि काल से समानान्तर बिन्दु एवं गृहस्थ समाज में इनकी मान्यता रही है। ये पूज्य कहे जाते रहे हैं। दूसरा बिन्दु समाज है जो कि गृहस्थाश्रम कहा जाता है। पुरुषों को बिन्दु मानते हुये कई जातियाँ एवं जातिगत समाज निर्धारित हुये हैं। इस व्यवस्था में मातृ पक्ष की गौण भूमिका है जिसे नाथ सिद्धों ने उभारने की व्यवस्था ध्वनि शास्त्र एवं ध्वनि विज्ञान के आधार पर प्रदान की है। सामाजिक व्यवस्था के विधिसम्मत संचालन के लिये नाथ सिद्धों ने मातृ पक्ष को सृष्टि का उत्पत्तिकर्त्ता एवं पालनकर्ता निर्धारित किया है।

धर्म शास्त्र में स्त्री पुरुष के शब्दानुशासित समाज के विवाह की पारम्परिक परिभाषा एवं व्याख्या मूल रूप से मातृ प्रधान समाज की पक्षधर प्रतीत होती है। गृहस्थ जीवन की निर्धारित शब्द व्यवस्था में स्त्री पुरुष की परिभाषा वर और कन्या के रुप में करते हैं। पाणिग्रहण के पश्चात् वर संज्ञा में कोई अन्तर नहीं होता जबकि कन्या वधु कहलाती है। वर की वधु। इस शब्द व्यवस्था में पुरुष और स्त्री में र और धु का अन्तर है 'व' अक्षर दोनों में समान रूप से स्थित है जो जल तत्व का बीज मंत्र है, स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित है तथा यह मूलाधार (पृथ्वी) का मूलाक्षर है। ऊँ में स्थित शब्द व्यवस्था के आधार पर विष्णु एवं पालन करने का प्रतिनिधित्व करने वाली ध्वनि वधु में संकलित है। उ ध्वनि के अभाव में वधु एक वध या हत्या का प्रतीक है। जब तक वधु, स्त्री एवं माँ को उसके उत्पत्ति और पालन अधिकार नहीं मिल जाते, समाज में उसकी हत्या हो रही है; ऐसा शब्द शासन से प्रकट होता है। इस हत्या के शमन के लिये नाथ सिद्धों ने अवधु और अवधूत शब्दों की रचना की तथा इस शब्द व्यवस्था को व्यक्ति एवं मानव जीवन पर लागू कर भविष्य के लिये अपनी कल्याणकारी योजना की सम्भावना को विश्व हित में स्थापित किया और उसके भविष्य में क्रियान्वयन की युगधर्मी प्रेरणा को सम्प्रदाय के माध्यम से सुरक्षित किया है। जिस काल में सृष्टि की व्यवस्था विनाश की ओर प्रेरित थी उस अवस्था में सृष्टि को नवजीवन प्रदान करने के लिये नाथ सिद्धों ने नये सिरे से पारम्परिक शब्द व्यवस्था का निर्धारण किया। उन्होंने स्त्री पुरुषात्मक बिन्दु सामाजिक व्यवस्था और नाद प्रधान गुरु शिष्यात्मक गुरु शब्द व्यवस्था को नादानुसंधान के आधार पर एक करने का मार्ग प्रशस्त किया। नाथ सम्प्रदाय ने शिव एवं महेश की प्रतिनिधि ध्वनि 'म' को सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता और इसे ही शक्ति भी माना है।

इसी को शिव और गोरक्ष भी माना है। भेंद से रहित होते हुये भी अर्थ भेद से शिव पिता और गोरक्ष शिशु हैं। शिव संहार एवं तमस के देव और गोरक्ष रक्षा करते हैं। यह समस्त विस्तार 'म' अक्षर के आधार पर अर्थ–भेद से निश्चित होता है जिसका सारांश 'म' है। नाथ साहित्य में अर्थ भेद को समाप्त कर मूल अक्षर 'म' को अभिव्यक्ति में स्थान देने और मानव अभिव्यक्ति को प्रदूषण से मुक्त होने की आवश्यक प्रेरणा दी गई है।

गोरक्ष के लिये 'म' ध्वनि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने बाल–रूप धारण किया और सदा बालक ही रहे ऐसी सम्प्रदाय की मान्यता है। गोरक्ष के 'म' (माँ) का अर्थ माता है और यही नाद योग के आचार्य की गरिमा है। माता की गरिमा को बनाये रखने के लिये नाथ सिद्धों ने गृहस्थ समाज में माँ को प्रथम महत्व दिया और उसे उपभोग की वस्तु बनने से बचाया तथा अपने अनुयायिओं को स्त्री को माता कहने को बाध्य किया। नाथ योगी की भिक्षा एक माँ से पुत्र के रूप में मांगी गई भिक्षा है। गोरक्ष गायत्री गोरक्ष का शरीर कही गई है। इसमें 'सुन्न माता अभयगत पिता' शब्द आता है। नाथ सम्प्रदाय के साहित्य में जहाँ भी सुन्न शब्द का प्रयोग हुआ है उसका अर्थ माता है। गुरु गोरक्षनाथ ने मणिपूर स्थित नाथ की न ध्वनि को उल्टा बारह तक गिनने की प्रेरणा देकर न के स्थान पर 'म' ध्वनि का आचार्य के रूप में समर्थन किया। 'म' को उन्होंने प्राण पुरुष कहा तथा थ ध्वनि से बारह उल्टा गिनने पर रां के स्थान पर 'स' (सी) ध्वनि को जीवन की ज्योति के रूप में पुष्टि की। उन्होंने पृथ्वी पुत्र के रूप में 'म' और 'स' की ध्वनि मान्यता को मनुष्यों के लिये निर्धारित किया। कुंडलिनी में व्यवस्थित शब्द ज्ञान के अनुकरण की प्रेरणा नाथ साहित्य की विशेषता है। इसे समझे बिना भारतीय साहित्य के किसी भी अंश को समझना असम्भव है।

कुंडलिनी में स्थित ध्वनि व्यवस्था की स्थिति के विषय में भारतीय परम्परागत साहित्य में कोई भेद या मतभेद नहीं है। छः चक्रों से अतिरिक्त कुछ चक्र बिना ध्वनियों के भी निर्धारित हुये हैं। उनमें से कामधेनु गायत्री माता के एक क्रमिक चित्र को हम पृष्ठ में दे रहे हैं। सिद्ध कुम्भारीपाव की हस्त–निर्मित सत्ताईस चक्रों वाली कुंडलिनी हमारे पास उपलब्ध है। मनुष्यों के लिये बिना ध्वनियों के इन चक्रों की विवेचना निषिद्ध है क्योंकि यह दैविक कहे जाते हैं। कुंडलिनी के जाग्रत होने पर मानव देव स्वरूपी हो जाता है, तभी वह अन्य चक्रों के अर्थ स्पष्ट कर सकता है। कुल पचास ध्वनियों में कुंडलिनी की ध्वनि व्यवस्था निर्धारित है। इन्हीं ध्वनियों में से एक से अधिक अक्षर जोड़कर भी नये अक्षरों का निर्माण हुआ है जो कि संस्कृत व विश्व की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त हुये हैं। इन्हीं पचास अक्षरों पर बिन्दु के प्रयोग से उन्हें मंत्रों का रूप दिया जा सका है। ध्वनि शास्त्रों में 'म' ध्वनि को ही बिन्दु माना गया है। देव प्रतिष्ठाओं में कुंडलिनी के पचास अक्षरों पर बिन्दु की उपस्थिति को जीवन से पारिभाषित एवं अभिमन्त्रित किया गया तथा 'म' को मंत्र शक्ति का आधार दिया गया है। उसे उच्चारण व धारणा करने से मूर्ति में जीवन की स्थापना को मान्यता प्रदान की गई है। सभी प्रकार की देव एवं प्राण प्रतिष्ठायें इन्हीं पचास कुंडलिनि मात्रिकाओं पर आधारित हैं। कर्मकाण्डी ब्राह्मण षोडश मात्रिकाओं की

प्रतिष्ठाओं से समस्त शुभ कार्य सम्पन्न कराते हैं जोकि कुंडलिनी के विशुद्ध चक्र की मात्रिकायें और आकाश तत्व से सम्बद्ध हैं। 'म' अर्थात् बिन्दु के अभाव में कोई मंत्र शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती। विसर्ग को भी 'म' ध्वनि का प्रतिनिधि कहा गया है। इस प्रकार भारतीय पारम्परिक साहित्य 'म' को मानव और उसकी अभिव्यक्ति का मुख्य स्रोत मानता है। नाथ साहित्य ने इसी परम्परा को नये युग के लिये नये रुप में प्रस्तुत किया है। अजपा जाप नाथ सम्प्रदाय की मुख्य साधना है।

श्वाच्छोश्वास में जो ध्वनि एवं नाद है, उसका श्रवण व जाप, नाथ साधना पद्धति का मुख्य आधार है। आचार्यों द्वारा 'ऊँ' सोऽहं सामान्य रुप से अजपा जप साधना के नाद प्रतिनिधि कहे जाते हैं। इसमें संशोधन के लिये नाथ सिद्धों ने खोज से पूर्ण खुला विचार मंच स्थापित किया है। नाथ मंत्र साधना में 'ऊँ' शब्द गुरु से पहले हर स्थान पर आया है। 'ऊँ' गुरुजी से नाथ मंत्र साधना पद्धति का शुभारम्भ होता है। सिद्धों ने ऊँ में से मकार को लिया है तथा सी ध्वनि की पुष्टि के लिये अपने मत को सिद्ध मत शिव को सिव व स्वयं को सिद्ध घोषित किया है। आदिकाल से आचार्यों ने प्रतिदिन के इक्कीस हजार छः सौ श्वास निर्धारित किये हैं। इनका उद्देश्य प्राणों की ध्वनि के वास्तविक प्रतिनिधि सीसा (स) की जो कि मूलाधार स्थित व पृथ्वी तत्व का मूल अक्षर है, अभिव्यक्ति में निर्धारित एवं स्थापित करना है। 'स' में शक्ति के प्रतिनिधि अक्षर 'ई' के योग से 'सी' को श्वसन क्रिया का आधार माना है। सिद्धों ने 'सी' से 'सा' की उत्पत्ति निर्धारित की है। 'र' चिन्ह जो कि मणिपूर एवं अग्नि तत्व का बीज मंत्र है, के स्थान पर शरीर के मूल बीज मंत्र सा को घोषित कर अग्नि के स्थान पर पृथ्वी को शरीर का ध्वनि प्रतिनिधित्व प्रदान किया है। हम ऋणी रहेंगे उन आचार्यों के जिन्होंने शब्दों के आधार पर हर शरीर में अपनी वास्तविक शब्द उपस्थिति दर्ज कर पुनः आपस में घुल मिलकर जीने की हमें प्रेरणा दी है।

वाक् वाणी, नाद एवं ध्वनि तथा इनके मिश्रण से बने शब्द सब श्रवण से सम्बन्धित विषय हैं तथा जो अदृश्य हैं। 'शब्द निरंजन निराकार', यह नाथ साहित्य का उदघोष है जबकि इसके विपरीत शब्दों की आकृतियां निर्धारित हैं। इन आकृतियों की पहचान के आधार पर इनके त्याग व ग्रहण करने की प्रेरणा नाथ साहित्य हमें प्रदान करता है। जीवन सम्बन्धी ध्वनियों को पवित्र मानते हुये साहित्य के माध्यम से नाथ सिद्धों ने जो शब्द संकेत दिये हैं उनका विवेचन और विमोचन करते हुये उन्होंने ध्वनि चिन्हों की भ्रान्ति से मुक्त होकर अभिव्यक्ति के पुनर्मूल्यांकन और नये सिरे से उसे स्थापित करने की हमें प्रेरणा दी है। अभिव्यक्ति को नये सिरे से विकसित करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

'नाथ–सम्प्रदाय और सूक्ष्म वेद' को मोटे तौर पर हम चार भागों में बांट सकते हैं। प्रथम है, ज्ञान काण्ड या शुद्ध वाणी। यह मूल साहित्य है जो कि किसी प्रकार के कर्म काण्ड या औपचारिकता से मुक्त कुंडलिनी पर आधारित संकेतक शब्दज्ञान है। दूसरा वह है जो सम्प्रदाय में पूर्व काल से ज्ञान काण्ड के आधार पर देव संस्कृति को जोड़कर बनाया गया। इसमें भी मूल

शब्द ज्ञान की धारणा देव संस्कृति के आधार पर निश्चित की गई है। गायत्री और शक्ति पूजन के सम्बन्ध में मंत्र और जप इस श्रेणी के हैं। इसमें पौराणिक चरित्रों की पात्रता सहित ज्ञान का उनसे सामंजस्य स्थापित किया गया है। तीसरा पक्ष वह है जो नाथ सम्प्रदाय द्वारा जीवनचर्या में प्रयुक्त उपयुक्त साधनों एवं सम्प्रदाय की पहचान के लिये निर्धारित सांस्कृतिक चिन्हों से सम्बद्ध है। यह सम्प्रदाय की औपचारिक शब्द व्यवस्था से परम्परा को आगे बढ़ाता है, यह भी परम्परागत साहित्य से अक्षरशः जुड़ी हुई हैं। विभूति, पात्र, आसन, चीपिया, रुद्राक्ष आदि मंत्र इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं। देव–संस्कृति की पात्रता इसमें भी विद्यमान है। देवता को भोग लगाने एवं भण्डार में काम आने वाले मंत्र भी इस क्रम में देखे जा सकते हैं। नाथ सम्प्रदाय में 'पात्र–देव–पूजा', देव–पूजा का एक मात्र साधन है जो अस्थायी और तीर्थ विशेष पर कुछ समय तक के लिये निर्धारित होती है। चारों कुंभों में तीन कुंभों हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में एक मास तक पात्र स्थापना का विधान है। प्रयागराज में ध्वजा का पूजन होता है। पात्र देव स्थापना के पुनः काल समाप्त होने के पश्चात् देवता को उठा दिया जाता है। इस प्रकार देव पूजा सम्प्रदाय में अस्थाई व्यवस्था है। देव पूजा के विधान में शरीर में धारण किये जाने वाले मुख्य चिन्हों नाद जनेऊ और दर्शन की भूमिका है तथा पूजा में प्रयुक्त शब्दों की व्यवस्था परम गोपनीय है। चौथा भाग जो कि पश्चात् में आरतियों और स्तुतियों के रुप में प्रकाश में आया है, भी दैविक संस्कृति के आधार पर आदिकालीन दैविक प्रतीकों की शब्द परम्परा से जुड़ा हुआ है। यह दोनों का मिश्रण है। नाथ साहित्य ध्वनि विज्ञान के सार्वभौमिक जीवन–सत्य को विश्व में स्थापित करने की व्यवस्था निर्धारित करता है। शब्दोद्धारकों की शृंखला में यास्क, पाणिनी, नागार्जुन, पतञ्जलि, कात्यायन, व्याडि, जयादित्य, भर्तृहरि आदि ने जिस शब्द व्यवस्था का सन्धान किया तथा आत्मा, प्राण, वाक् भेद का दिव्य नौ पार्षतों के पार्षदों कश्यप, अत्रि, भौम–अत्रि, शांखायन, पिप्पलाई, काप्य, शिवि, अंगिरा, याज्ञवल्क्य, उद्दालक, अश्वपति तथा प्रतर्दन आदि ने जिस प्राण विद्या को संधान करते हुए ध्वनि–विज्ञान के नियम निर्धारित किये उसे सूक्ष्म व सरल भाषा बनाकर नाथ सिद्धों ने प्रकट करने के लिये सम्प्रदाय और साहित्य की रचना की है। 'तत्रोभयधर्मयोगादुभयस्वभावस्वरव्यञ्जनयोरन्यद्वर्णान्तरं प्रकाशयति' की पारम्परिक उक्ति एवं प्रशस्ति के अनुसार नाथ साहित्य के अनुयायिओं की परम्परा में निन्याणवे कोटि राजाओं का समावेश है तथा समय समय पर इसका जन साधारण में प्राकट्य और विस्तार होता रहा है। हमारा युग साहित्य के अनुसन्धान के लिये प्रासंगिक है और हम नाथ साहित्य में उसकी खोज कर सकते हैं। विश्व में प्रत्यक्ष उसका साक्षात्कार कर और करा सकते हैं। समस्त भेद समाप्त कर आपस में एक दूसरे को पहचान कर विश्व में सदा के लिये एकता और शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

© श्री योगी सवाई नाथ 'सामाँ'
नासिक महाकुम्भ
श्रवण सुदी 2, गुरुवार दिनांक 31.07.2003 वि.सं. 2060

सून्यं न बस्ती बस्ती न सून्यं, अगम अगोचर ऐसा।
गगन मण्डल में बालक बोलै, ताका रूप वरण गुण कैसा ?।।१।।
अदेषि देषिबा; देषि विचारिबा, अदिृष्टि राषिवा चीया।
पाताल की गंगा ब्रह्मांड चढ़ाइबा तहां विमल विमल जल पीया।।२।।
इहां ही आछै इहां ही अलोप, इहां ही रचि लै तीन त्रिलोक।
आछै संगे रहिबा जूवा, ता कारण अनंत सिद्ध जोगेसर हूवा।।३।।
बेद कतेब न षाणी वाणी, सब ढंकी तलि आणी।
गिगन सिषर चढ़ि सबद प्रकास्या, तहां बूझिले अलष बिनाणी।।४।।
अलष बिनाणी दोय दीपक रचिलै, तीन भवन इक जोती।
तास विचार्‌या त्रिभवन निपजै, चुणिलै माणिक मोती।।५।।
सारम् सारं गहर गंभीरं, गिगन उछलिया नादं।
माणिक पाया फेरि लुकाया, झूठा बाद विवादं।।६।।
कोई बादी कोई विवादी, जोगी कूं रोस न करना।
अठसठि तीरथ समंद समाया, यूं जोगी को गुरुमुष जरना।।७।।
महंमद महंमद मत कर काजी, महंमद का विषम विचारं।
महंमद हाथ करद जो होती, लौहै घड़ी न सारं।।८।।
सबदहि मारी सबद जिलाई, ऐसा महंमद पीरं।
ऐसे भरमि न भूलो काजी, सो बल नहीं सरीरं।।६।।
महंमद महंमद न कर काजी, महंमद का बौहोत विचारं।
महंमद हाथि पैकंबर सीधा, येक लष असी हजारं।।१०।।
षड़ी न छेड़े पड़ी न षाय, सो मुसलमान भिसति में जाय।
खड़ी भी छेड़े पड़ी भी षाय, सो मुसलमान दोजख में जाय।।११।।
उत्पति हिंदू जरणा जोगी, अकलि पीर मुसलमानी।
ते राह चीन्हो काजी मुल्लां, जो ब्रह्मा विसनु महादेव मानी।।१२।।
हंसिबा षेळिबा रहिबा रंग, काम क्रोध न करिबा संग।
हंसिबा षेलिबा गायबा गीत, दिढ़ करी राषिबा आपणा चीत।।१३।।
हसिबा षेळिबा धरिबा ध्यान, अहिनिस कथिबा ब्रह्म गियान।
हसै षेलै न करै मन भंग, ते निहचल रमै सिद्धां के संग।।१४।।
मान्या सबद चुकाया दंड, निहचै राजा भरथरी परचै गोपीचंद।
मानै सबद करै विचार, सो जोगी उतरै भवपार।।१५।।

सबद बंदौ रे अवधू सबद बंदौ, सबदे सीझंत काया।
निनांणवै कोटि राजा राज तजेबा, प्रजा का अन्त न पाया।।१६।।
सबद ब्यंदौरे अवधू सबद ब्यंदौ, थान मान सब धंधा।
आत्मा मध्ये परमात्मा दैषौ, ज्यूं जल मध्ये चंदा।।१७।।
अहिनिसि मन लै उनमनी रहै, गम की छाड़ि अगम की कहै।
आसा छाड़ि रहै निरास, कहै ब्रह्मा हूँ ताका दास।।१८।।
अरधे जाता उरधे धरै, काम दग्ध जो जोगी करै।
तजै अलिंगण त्यागै माया, ताका बिसनु पषालै पाया।।१६।।
अजपा जपै सुंनि मन धरै, पांचूं इंद्री निग्रह करै।
ब्रह्म अगनि में होमै काया, ताका महादेव बंदै पाया।।२०।।
धन जोवन की करै न आस, चित्त न राषै कामणि पास।
नाद बिंद जाकै घट जरै, ताकी सेवा पारवती करै।।२१।।
बाले जोवन जो नर जती, काल दुकाले ते नर सती।
फुरते भोजन अलप आहारी, कहै गोरष सो काया हमारी।।२२।।
पंथ विणि पुलिबा अगनी विनि जलिबा, अनिल त्रिषा ज्यूं हठिया।
सुसम वेद सिध गोरषनाथ कथिया, बुझिल्यौ पंडित पढ़िया।।२३।।
हबके न बोलिबा ढबके न चालिबा, धीरै धरिबा पाव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा, य्यूं भणत गोरष राव।।२४।।
भर्‌या ते थीरं, छलकंत ते आधा।
सीधा सीध मिल्या रे अवधू, बोल्या अर लाधा।।२५।।
नाथ कहै सुणौ रे अवधू, दिढ़ करी राषौ चीया।
काम क्रोध अहंकार निवारो, तो सबै दिसंतर कीया।।२६।।
गिगन मंडल में ऊंधा कूवा, जहां अम्रित का वासा।
सुगुरा होय सो भरि भरि पीवै, निगुरा जाय पियासा।।२७।।
स्वामिजी! बनषंडि जाऊं तो षुध्या व्यापै, नगरी जाऊं तो माया।
भरि भरि षाऊँ तो कंद्रप व्यापै, कैसे सीझंत गुरु जी जल बिंब की काया।।२८।।
अवधू! धापे न षायबा भूषे न रहिबा, अहिनिसि लेइबा ब्रह्म अगनिका भेवं।
हठ न करिबा पड़ी न रहिबा, य्यूं भणत गोरष देवं।।२६।।
थोड़ो बोले थोड़ो षाय, ता घट पवना रहै समाय।
गिगन मंडल में अनहद बाजै, ष्यंड पड़ै तो सतगुरु लाजै।।३०।।
अवधू! आहार तोड़ो न्यंद्रा मोड़ो, यूं कबहूँ न होयगा रोगी।
नाग, बंग, वनस्पति ज्यूं, कोई विरला विरला जोगी।।३१।।

अवधू! अहार कूं तोड़िबा, पवन कूं मोड़िबा, कबहुन होयबा रोगी।
छठै छमासि काया पलटंत, नाग, बंग, वनस्पति, जोगी।।३२।।
देव कला ते संजम रहिबा, भूत कला आहारं।
मन पवना ले उनमनि धरिबा, ते जोगी तत सारं।।३३।।
अवधू! न्यंद्रा के घर काल जंजाल, आहार कै घर चोरं।
मैथुन कै घरि जुरा गरासै, अरध उरध ले जोरं।।३४।।
अति अहार इन्द्री बल करै, नासै ग्यान मैथुन चित्त धरै।
व्यापै न्यंद्रा झंपै काल, ताकै हिरदै सदा जंजाल।।३५।।
अवधू! षाटै षिरै षारै झरै, मीठे उपजे रोग।
गोरष कहे सुनो रे पूता! अन्न पानी का जोग।।३६।।
भरि भरि षाय ढरि ढरि जाय, जोग नहीं यौ बड़ी बलाय।
षायै भी मरियै, अणषाये भी मरियै, नाथ कहै पूता, संजमिही तरियै।।३७।।
धूतारा जो धूतै आप, भिष्या भोजन नहि संताप।
अहूठ पटण में भीष्या करै, ते अवधू सिवपुरी संचरै।।३८।।
घरबारी सो घर की जाणै, बाहरि जाता भीतरि आणै।
सरब निरंतरि काटै माया, सो घरबारी निरंजन की काया।।३६।।
गिरही सो जो ग्रहै काया, भितर की त्यागै माया।
सहज सील का धरै सरीर, सो गिरही गंगा का नीर।।४०।।
पाषंडी सो जो काया पषालै, उलटा पवन अगनि प्रजालै।
सुपनै व्यंद न देई जान, सो पाषंडी कहियै तत्त समान।।४१।।
डंडी सो जो काया डंडै, आवत जावत मनसा षंडे।
पांचो यन्द्रिका मरदै मान, सो डंडी कहियै तत्त समान।।४२।।
मनवा जोगी काया मढ़ी, पांच तंतले कंथा गढ़ी।
षिमा षडासन ग्यान अधारी, सुमति पावड़ी दंड विचारी।।४३।।
चलता चंदवा षिसि षिसि पड़ै, बैठा ब्रह्म अगनि प्रजलै।
आडै आसण गोटिका बंध, जावत प्रथमी तावत कंध।।४४।।
यहु मन सकती यहु मन सीव, यहु मन पांच तत्त को जीव।
यहु मन ले जे उनमनि रहै, तौ तीन लोक की वारता कहै।।४५।।
अवधू! नवघाटि रोकिलै बाट, वाई विणजै चौसठि हाट।
काया पलटै अविचल कंध, वाय विवर्जित निपजै सीध।।४६।।
अवधू! दमकूं गहिबा उनमनि रहिबा, ज्यूं बाजिबा अनहद तूरं।
गिगनि मंडल में जोति चमकै, चंद नहीं तहां सूरं।।४७।।

सास उसास वाई कूं भषिबा, रोकी लै नवद्वारं।
छठै छमासि काया पलटिबा, तब उनमनि जोग अपारं।।४८।।
अवधू! सहंसर नाड़ी हंस चलैगा, कोटी झमकै नादं।
बहत्तरि चंदा बाई सोष्या, किरणि प्रगटि जब आदं।।४६।।
अमावस कै घरि झिलिमिलि चंदा, पून्यूं कै घरि सूरं।
नादकै घरि ब्यंद गरजै, बाजत अनहद तूरं।।५०।।
उलटंत नादं पलटंत ब्यंद, बाइ कै घरि चीन्हंत ज्यंद।
सुनि मंडल तहां नीझर झरिया, चंद सूरले उनमनि धरिया।।५१।।
अवधू! प्रथमै नाड़ी नाद झमकै, तेजग नाड़ी पवनं।
सीतग नाड़ी ब्यंद का वासा, कोई जोगी जाणंत गवनं।।५२।।
उठत पवनं रब्य तपैगा, बैठा पुन्यूं चंदं।
सहूं निरंतरि जोगी बिलंब्या, ब्यंद बसै तहा ज्यंदं।।५३।।
द्रिष्टि आगै द्रिष्टि लुकाईबा, सुरति लुकाइबा कानं।
नासिकाग्रे मन लुकाइबा, तब लहेगा पद निरवाणं।।५४।।
अवधू! मनसा हमारी गींद (गेंद) बोलिये, सुरति बोलियै चौगानं।
अनहद सबद षेलणै लागा, तब गिगनि भया मैदानं।।५५।।
पांच तत्त ले सिधां मुंडाया, तब भेटि लै निंरजन निराकारं।
मनमस्त हस्ती मिलाय ले अवधू, तब लूटिलै नाथ भंडारं।।५६।।
अरध उरध विचि धर्‌या उठाई, मध्य सुंनि में बैठा जाई।
मतिवाला की संगति आई, गोरष कहै परमगति पाई।।५७।।
पीयालो भले पीयालो, सरवथान सहेति थीति।
रूप सहेति दीसन लागा, तह प्यंड भई परतीति।।५८।।
अरध कंवल उरध मध्ये, प्राण पुरुषका वासा।
द्वादस हंसा उरध चलेगा, तब जोतहि जोत प्रकासा।।५६।।
आसन बैसिबा पवन निरोधिबा, थान मान सब धंधा।
वदंत गोरषनाथ आतमा विचारंत, ज्यूं जल मध्ये चंदा।।६०।।
गोरष बोले सुणो रे अवधू! पांच पसार निवारी।
आपणी आतमा आप विचारी, तब सोवै पांव पसारी।।६१।।
आहार न्यंद्रा वैरी काल, कसि कसि राषिबा गुरु का भंडार।
आहार तोड़ो न्यंद्रा मोड़ो, सिव सकति ले दिढ़ करि जोड़ो।।६२।।
तब जानिबा अनहद का बंध, त्रिभुवन मध्ये न पड़ै कंध।
रगत की रेत अंगथै नहि छूटै, जोगी कहत हियो नहिं फूटै।।६३।।

सास उसास वाई कूं भषिबा, रोकी लै नवद्वारं।
छठै छमासि काया पलटिबा, तब उनमनि जोग अपारं।।४८।।
अवधू! सहंसर नाड़ी हंस चलैगा, कोटी झमकै नादं।
बहत्तरि चंदा बाई सोष्या, किरणि प्रगटि जब आदं।।४६।।
अमावस कै घरि झिलिमिलि चंदा, पून्यूं कै घरि सूरं।
नादकै घरि ब्यंद गरजै, बाजत अनहद तूरं।।५०।।
उलटंत नादं पलटंत ब्यंद, बाइ कै घरि चीन्हंत ज्यंद।
सुनि मंडल तहां नीझर झरिया, चंद सूरले उनमनि धरिया।।५१।।
अवधू! प्रथमै नाड़ी नाद झमकै, तेजग नाड़ी पवनं।
सीतग नाड़ी ब्यंद का वासा, कोई जोगी जाणंत गवनं।।५२।।
उठत पवनं रब्य तपैगा, बैठा पुन्यूं चंदं।
सहूं निरंतरि जोगी बिलंब्या, ब्यंद बसै तहा ज्यंदं।।५३।।
द्रिष्टि आगै द्रिष्टि लुकाईबा, सुरति लुकाइबा कानं।
नासिकाग्रे मन लुकाइबा, तब लहेगा पद निरवाणं।।५४।।
अवधू! मनसा हमारी गींद (गेंद) बोलिये, सुरति बोलियै चौगानं।
अनहद सबद षेलणै लागा, तब गिगनि भया मैदानं।।५५।।
पांच तत्त ले सिधां मुंडाया, तब भेटि लै निंरजन निराकारं।
मनमस्त हस्ती मिलाय ले अवधू, तब लूटिलै नाथ भंडारं।।५६।।
अरध उरध विचि धर्‌या उठाई, मध्य सुंनि में बैठा जाई।
मतिवाला की संगति आई, गोरष कहै परमगति पाई।।५७।।
पीयालो भले पीयालो, सरवथान सहेति थीति।
रूप सहेति दीसन लागा, तह प्यंड भई परतीति।।५८।।
अरध कंवल उरध मध्ये, प्राण पुरुषका वासा।
द्वादस हंसा उरध चलेगा, तब जोतहि जोत प्रकासा।।५६।।
आसन बैसिबा पवन निरोधिबा, थान मान सब धंधा।
वदंत गोरषनाथ आतमा विचारंत, ज्यूं जल मध्ये चंदा।।६०।।
गोरष बोले सुणो रे अवधू! पांच पसार निवारी।
आपणी आतमा आप विचारी, तब सोवै पांव पसारी।।६१।।
आहार न्यंद्रा वैरी काल, कसि कसि राषिबा गुरु का भंडार।
आहार तोड़ो न्यंद्रा मोड़ो, सिव सकति ले दिढ़ करि जोड़ो।।६२।।
तब जानिबा अनहद का बंध, त्रिभुवन मध्ये न पड़ै कंध।
रगत की रेत अंगथै नहि छूटै, जोगी कहत हियो नहिं फूटै।।६३।।

सबद एक पूछिबा कहौ गुरु दयालु, वृध थैं क्युं होयबा बाल?
फूल्या फूल कली क्युं होई? पूछै कहै सु गोरष सोई।।६४।।
सुण हो देवल! तजौ जंजाल, अपीव पीवतां होइबा बाल।
ब्रह्मअगनि सीचत मूलं, फूल्या फूल कली फिरि फूलं।।६५।।
उलट्यो पवन गिगनि समाई, तब बाल रूप प्रतीषि जोई।
उदै अस्त हेमगिरि पवन मेला, बांधि लै हस्तिया निजसाल भेला।।६६।।
बारै कला सोषै सोलै कला पोषै, चारी कला साधै अनंत कला जीवै।
ऊरम धूरम जोति ज्वाला, सिध साधत चारि कला पीवै।।६७।।
असाध साधन्त गिगनि गरजंत, उनमनि लागंत ताली।
उलटंत पवन पलटंत वाणी, अपीव पीवंत ते ब्रह्म ग्यानी।।६८।।
अलेष लेषंता अदेष देषंता, दरस प्रसंता दरस जानी।
सुनि गरजंत नाद बाजंत, अलेष लषंते तौ निज प्राणी।।६९।।
निहचल धरी बैसिबा; हंस निरोधिबा, कदे न होयबा रोगी।
बरस दिना में तीनी बारि काया पलटंत, नाग, बंग, बनसपति, जोगी।।७०।।
अवधू! षोडस नाड़ी चंद प्रकास्या, द्वादस नाड़ी भाणुं।
सहंसर नाड़ी प्राणका मेला, जहां असंष कला सिव थानुं।।७१।।
अवधू! इड़ा मारग चंद भणीजै, प्यंगुला मारग भाणं।
सुषमण मारग वाणि बोलिये, त्रियामूल त्रिय थानं।।७२।।
अवधू! काया हमारै नालि बोलिये, दारु बोलियै पवनं।
अगनि पलीता अनहद गरजै, ब्यंद गोला उडिया गगनं।।७३।।
उलटि पवन षटचक्र बेधिया, ततै लोहै सोषिया पाणी।
चंद सूर दोउ निज घरि राष्या, ऐसा अलष बिनाणी।।७४।।
लाल बोलै अमे पार उतरिया, मूढ रह्या उरवारं।
थिती बिहूणा झूठा जोगी, ना तस वार न पारं।।७५।।
उदै न असत राति न दिनि, सरव सचराचर भाव न भिनि।
सो निरंजन डाल न मूल, सरव व्यापिक काया सुषम सथूल।।७६।।
वकता न सुरता जोग न भोग, जुरामरण नहि तहां रोग।
गोरष बोलै येकंकार, नहि तहां आचार विचार वोऊंकार।।७७।।
बाहिरां न भीतरां नेड़ी न दूर, खोजते रहे ब्रह्मा अर सूर।
सेत फटिकमणि हीरै बींधा, तहां प्रमारथ श्री गोरषनाथ सीधा।।७८।।
ब्रह्मांड फूटिबा नगर सब लूटिबा, कोइ न जाणिबा भेवं।
वदंत गोरष नाथ जब प्यंड दर भेटिवा, तब पकड़िवा पंच देवं।।७९।।

अहंकार टूटिबा निरंकार फूटिबा, सोषिवा गँग जमुन का पाणी।
चंद सूर दोउ सनमुषि राषिबा, कहो अवधू! तहां की सहनानाणी ?।८०।।
चितरा चेतिबा आपा न रेतिबा, पंचकी मेटिबा आसा।
ब्दंत गोरषनाथ सति ते सूरिबा, उनमनि मन में वासा।।८१।।
सिध का संकेत बूझिलै सूरा, गिगनि असथान बाई लै तूरा।
मीन कै मारिग रोपिलै भाणं, उलट्या फूल कंवलमै आणं।।८२।।
वास बसंता तहां प्रगट्या षेल, द्वादस आंगुल गिगनि घरि मेल।
ब्दंत गोरष नाथ पूता होइबा चिराई, न पड़ै काया न जमघरी जाई।।८३।।
पढ़ि देषि पंडिता रहि देषि सारं, आपणि करणी उतरिबा पारं।
ब्दंत गोरषनाथ कहि धू साषी, घटि घटि दीपक बलै; पणि पसू न देषै आंषी।।८४।।
सबद हीरा बेधिलै अवधू ! जिभ्या करिलै टकसालं।
औगुण मध्ये गुण रचिलै, तौ चेला सकल संसारं।।८५।।
अभरा था ते सुभरा भरिया, नीझर झरता रहिया।
षांडाथी षुरसाण दुहेला, य्यूं सतगुरु मारग कहिया।।८६।।
पिंडे होइतौ पद की आसा, बिण निपजै चौतारं।
दूध होइ तो घृत की आसा, करणी करतब सारं।।८७।।
मन मै रहणा भेद न कहणा, बोलिबा अम्रित वाणी।
आगिला अगनि होइबा अवधू, आपा होइबा पाणी।।८८।।
उनमनि रहणा भेद न कहणा, पियबा नीझर पाणी।
लंका छोड़ि पर लंका जाइबा, तब गुरमुष बोलिबा वाणी।।८९।।
नीझर झरणै अम्रित पिवणां, षट दल बेध्या जाई।
चंद विहूंणा चांदणा, तहां देष्या श्री गोरष राई।।९०।।
काजी मुला कुराण लगाया, ब्रह्म लगाया वेदं।
कापड़ि संन्यासी तीरथ भ्रमाया, न पाया निर्वाण पद का भेवं।।९१।।
देवल जात्रा सुनि जात्रा, तीरथ जात्रा पाणी।
साधु जात्रा सुफल जात्रा, बोलै अम्रित वाणी।।९२।।
सुणि गुणवंता सुणि सुधिवंता, अनंत सिधां की वाणी।
सीस निवावत सतगुरु मिलिया, जागत रैणि विहाणी।।९३।।
जोगी सो जो मन जोगवै, बिणि बिलाइति राज भोगवै।
कनक कामणी त्यागै दोई, सो जोगेसर निरभै होई ।।९४।।
संन्यासी सो करै सरव का नास, गिगनि मंडल मै मांडै आस।
अनहद स्यूं मन उनमनि रहै, सो संन्यासी गम की कहै।।९५।।

नाद हमारै बावै कवण, नाद बजाया टूटै पवन।
अनहद सबद बाजता रहै, सिध संकेत श्री गोरष कहै।।६६।।
भिष्या हमारी कामधेनु बोलिये, संसार हमारी बाड़ी।
गुरु प्रसादे भिष्या षाइबा, तौ कदी न होइबा भारी।।६७।।
बड़े बड़े कूलां बड़े बड़े पेट, नहिं रे पूता गुरु सौं भेट।
षड़ षड़ काया निरमल नेत्र, होइरे पूता गुरुसौं भेट।।६८।।
अंनका मास अनल का हाड़, तत का बंध भषिबा अहार।
वदंत गोरष नाथ फेरिवा वाई, न पड़ै प्यंड न जमघरि जाई।।६६।।
लोहा पीर तांबा तकबीर, रूपा महमद सोना खुदाई, दोहु बीच दुनिया गोता षाई
बाबा रतन हाजी ऐसी कहै, हम तौ इन तै न्यारा रहै।।१००।।
कहणी सुहेली रहणी दुहेली, कहणि रहणि बिन थोथी।
पढ़या सुवटा मीनी ले गई, पंडित कै हाथि रह गइ पोथी।।१०१।।
कथणि सुहेली करणि दुहेली, बिण षाया गुड़ मीठा।
षाया हींग कपूर बषाणे, गोरष कहे सब झूठा।।१०२।।
केता आवै केता जाय, केता मांगे केता षाय।
केता रूष विरष तलि रहे, गोरष अणभै कास्यूं कहै।।१०३।।
घटि घटि गोरष फिरै निरूता, को घटि जागे को घटि सूता।
घटि घटि गोरष घटि घटि मीन, आपा परचौ गुरुमुष चीन्ह।।१०४।।
घटि घटि गोरष बावै क्यारी, जो निपजै सो होय हमारी।
घटि घटि गोरष कहै कहाणी, काचै भांडै रहै न पाणी।।१०५।।
मूरष सभा न बैसिबा अवधू! पंडित स्युं न करिबा वादं।
राजा संग्राम झूझ न करिबा, हेलै न बोइबा नादं।।१०६।।
नग्री सोभंत; बहुजल मूल बिरिषा, सभा सोभंत पंडित पुरिषा।
राजा सोभंत दल परवाणी, य्यूं सिधां सोभंत सुधि बुधि वाणी।।१०७।।
बैठा अवधू लोहे की षूंटी, चलता अवधू पवन की मूठी।
बोलता अवधू प्यंजरै सूवा, सोवता अवधू जीवता मूवा।।१०८।।
गिगने न गोसंत तेजे न सोसंत, पवने न पेलंत बाई।
उदके न बूडंत महिभारे न भाजंत, कहुतो को पतियाई।।१०६।।
अतीत होय पर निंद्या झषै, मदमांस अर भांगी भषै।
मनसा वाचा नरके जाई, सति सति भाषंत गोरष राई।।११०।।
जीव सीव संगे वासा, बधि न षाइबा रूध्रं मासा।
हंस घात न करिबा गोतं, कथंत गोरष निहारि पोतं।।१११।।

जीव क्या हतिये रे प्यंडधारी, मारिलै पंच भूम्रगला चरै थारी बुधिबाड़ी।
जोग का मूल है दया दाण, कथंत गोरष नाथ नृवाण।।११२।।
जूझिलै मनवा मारि लै मनद्रोही, जाकै रूप वरण मास नहीं लोही।
जिनि मन ग्रासे देव दाण, सोमन मारि लै गहि गुरुग्यान बाण।।११३।।
जोगी सो जो राषै जोग, जिभ्या यंद्री न करै भोग।
अंजन छाड़ि निरंजण रहै, ताकूं गोरष जोगी कहै।।११४।।
कै मन रहै आसा पासा, कै मन रहै परम उदासा।
कै मन रहै गुरुकै बोलै, कै मन रहै कामणि कै षोलै।।११५।।
सांग का पूरा ग्यान का ऊरा, पेट का टूटा डयंभ का सूरा।
वदंत गोरषनाथ न पाया जोग, करि पाषंड रिझाया लोग।।११६।।
सोवत आडा बैठत आडा, अगनि ब्यंद न बाई।
निहचल आसण पवना ध्यान, अगनि ब्यंद न जाई।।११७।।
नाद नाद, सबको कहै, नाद ही ले कोई विरला रहै।
नाद ब्यंद की फीटी सिला, जिनि साध्या ते सीधा मिला।।११८।।
अवधू! बूझणा ते भूलणा नहीं, न षोजै ते अग्यानी सही।
षोजी जीवै वादी मरै, उपाधी कौ प्यंड पड़ै।।११६।।
सरवारै सरवा त्रिभवण तैं गरवा, पाणीहुतै पातला पौहप तै हलवा।
काया तै मन जाण न देहूं, निसवासर अभिअन्तर लेहूं।।१२०।।
मन मुंडाकै रूप न रेष, जगतगुरु मनही मन देष।
उलटैगा मन तब मन कूं गहैगा, काच पलटि कंचन होय रहैगा।।१२१।।
योह तन सांच सांच का घरवा, रूध्र भया फिरि षीरं।
अतीत पुरिषा ग्यान पद परसै, तदि निरमल होय सरीरं।।१२२।।
महैमा धरि महैमा कूं मेटौ, सति का सबद विचारी।
नान्हा होइ जिनि सतगुरु षोज्या, तिनि सिर की पोट उतारी।।१२३।।
आप न भजिबा सतगुरु षोजिबा, जोग पंथ न करिबा हेला।
फिरि फिरि मनिषा जनम न पाइबा, करि लै सिध पुरिष स्युं मेला।।१२४।।
पंथ बिहूणा गगन रचीलै, तेल बिहूंणी बाती।
गुरु गौरष के वचन तब पतियाई, जब पूता दिवस न राती।।१२५।।
न्यंदा असतुति आदर भाव, प्रीती सनेह अगनि का डाव।
इण स्यूं संगति न करिये पूता, गगन मंडल मै रमौ अवधूता।।१२६।।
गगन मंडल में सरवर भरिया, सुषमण बांधी पाली।
ष्यंड बिहूणै अबीलो मोर्‌यो, पिंड बिहूणा माली।१२७।।

न्यंद्रा सुपनै ब्यंद कू हरै, पंथ चलंता आतमा मरै।
बैठा षट पट ऊभा उपाध, नाथ कहै पूता सहजै समाध।।१२८।।
जीवता जोगी अमीरस पीवता, अहि निसि षंडै धारं।
अदिसटि मध्ये दिसटि रोपिबा, ऐसा अगह अपारं।।१२६।।
सुनिज माई सुनिज बाप, सुनि निरंजन आपै आप।
सुनि कै परचा भया सथीर, निहचल जोगी गहर गंभीर।।१३०।।
तजौ व्याकुलता मेटौ, भंग, अहनिसि राषौ ओजस बंध।
सरव संजोग आवै हाथि, (श्री) गुरु भाषै निरवाण समाधि।।१३१।।
अकुच कुचिया विगसिया पोहा, ससिधरि जलि उठि लागिया धूवा।
कहै गोरषनाथ धूवा प्राण, ऐसे पिंडका परचा जाणै प्राण।।१३२।।
अवधू! यो मन जात है, याहि तै सब जाणि।
मन मकड़ी का ताग ज्यूं, उलटी अपूठो आणि।।१३३।।
जे आसा ते आपदा, जे संसा तो सोग।
गुरुमुष बिना न भाजसी, ऐ दुन्यौं बड़ रोग।।१३४।।
इस औजूद मारि लै गोता, कछु मगज भीतरि ख्याल रै।
पंच काटा रहै भीतरी, निमस करि बेहालरे।।१३५।।
ब्यंद ब्यंद सब कोई कहै, महा ब्यंद कोई विरला लहै।
इह ब्यंद भरोसे लावै बंध, असथिर होत न देषो कंध।।१३६।।
उलटै मूल डाल नही रहै, फाड़ि कछोटा रात्यों बहै।
ना वोह छीजै ना वोह गहै, ब्यंद नहीं सो भगमुष ढलै।।१३७।।
गरजै गगन अनाहत बाजै, प्यंड पड़ैतो सतगुरु लाजै, विण वैसंदर जोति बलत है, गुरु प्रसादै दीठी।
स्वामी सीला अलोणी कहिये, जिन चीन्ही तिनि दीठी।।१३८।।
जहां गोरष तहां ग्यान गरीबी, धुंधुवाद नहि कोई।
निसप्रेही निरदावै षेलै, गोरष कहिये सोई।।१३६।।
नाथ कहंता सब जुग नाथ्या, गोरष कहंता गोई।
कलमा का गुरु महमद होता, पहली मूवा सोई।।१४०।।
पावड़ी पग फिसलै अवधू, लोहै छीजै काया।
नागा मौनी दूधा धारी, येता जोग न पाया।।१४१।।
दूधा धारी पर घर चित्त, नागा लकड़ी मांगै नित्त।
मौनि करै म्यंत्रकी आस, गोरष कहै पूता बिन गुदड़ी नहीं निवास।।१४२।।
गुदड़ी च्यारि जुगतै आई, गुदड़ी सिधौं साधिकों चलाई।
गुदड़ी मै अतीत का वासा, कहत गोरष नाथ मछंद्र का दासा।।१४३।।

दीषिण जोगी रंगा चंगा, पूरब जोगी वादी।
पछिमि जोगी बाला भोला, सिध जोगी उतरादि।।१४४।।
अवधू! पूरब दिसि व्याधि का रोग, पछिम दिसि म्रतका सोग।
दीषण दिसि माया का भोग, उत्तर दिसि सिद्ध का जोग।।१४५।।
अगम अगोचर रहै निहकाम, भंवर गुफ़ा नाही विसरांम।
जोग जुगति न जाणै जागै राति, मन काहु कै न आवै हाथि।।१४६।।
नवनाड़ी बहोत्तरि कोठा, ए अष्टांग जोग सब झूठा।
कूची ताला सुषमण करै, उलटि जिभ्या ले तालवै धरे।।१४७।।
बजरी करंता अमरी राषै, अमरी करंता बाई।
भोग करंता ब्यंद जो राषै, ते गोरष का गुरुभाई।।१४८।।
घटि घटि कथ्या ग्यान न होई, वन वन चंदन रूष न होई।
रतन रिधि कौणके होई, येह तत चीन्है विरला कोई।।१४९।।
उलट मीन सदा रहै जलमें, सूकर सदा मलीना।
आतम ज्ञान दया बिन कछु नाही, कहा भयौ तन षीना।।१५०।।
छ्योतारा न पीवो रे अवधू! भांगि न षावौ रे भाई।
गोरष कहे सुणो रे अवधू, या काया होयगी पराई।।१५१।।
पीवै तमाषु भांगि भसकावै, तामै अकलि कहां सै आवै।
चढ़ता पित्त उतरता बाई, तातै गोरष भांग न षाई।।१५२।।
मास षायै ते दया धरम का नास, मद पीवै ते प्राण निरास।
भांग भषंत ते ग्यान ध्यान षोवंत, वै प्राणी जमपुरि ठाडा रोवंत।।१५३।।
रूठा मूठा रोगी भोगी, येता नाहीं करना जोगी।
गोरष बोलै जोग सहाई, येता माया माहिं भुलाई।।१५४।।
सत जुग मध्ये कौन जोगी? स्यौ जोगी। रहते कहाँ?
कवलास (कैलाश) प्रवते (पर्वते), भछते कहा? सुनि फलं।।१५५।।
बोलते कहा? ब्रह्म वाणी, जीवका वासा कहाँ होता?
हाडकी मीजि मध्ये, सिधाय नमै।।१५६।।
त्रेता जुग मध्ये कौन जोगी ? सनकादिक जोगी। रहते कहा ?
गिरि परवते ,भछत कहा ? कंदमूल।
बोलते कहां? देव वाणी। जीव का वासा कहां होता? रूध्र मधि सिधाय नमै।।१५७।।
द्वापर युग मध्ये कौण जोगी? राजाजोगी। रहते कहा? रूषे व्रिषे। (वृक्षे)
भछते कहा? अच्यंत भीछया, बोलते कहा? सुधबुध वाणी।
जीवका वासा कहां होता? तुचा (त्वचा) मधि सिधाय नमै।।१५८।।

कलिजुग मधि कोण जोगी? प्रजा जोगी, रहते कहां? घरे आंगणे।
भछते कहा? अन्न पाणी, बोलते कहा? तैं मैं वाणी।
जीवका वासा कहां होता? अन्नमधि सिद्धाय नमै।।१५६।।
माई महेली पुत्र भ्रतार, सर्व सृष्टि कौ एकौ द्वार।
पैसत पुरिष निकसता पूत, ता कारण गोरष अवधूत।।१६०।।
राष्या रहै गमाया जाय, सति सति भाषत गोरषराय।
ऐकै कही दूसरै मानी, गोरष कहै वो बड़ो ग्यानी।।१६१।।
गोरष कहै सुणौ रे अवधू, जग मै इहविधि रहणा।
आष्यां देषिबा कानां सुणिबा, मुषते कछू न कहिणा।।१६२।।
कोई न्यंदे कोई ब्यंदे, कोई करै हमारी आस।
गोरष कहे सुणौ रे पूता, यौह पंथ षरो उदास।।१६३।।
गोरष कहै सुणौ रे अवधू! सुसूपाल स्यूं डरिये।
उठा करी मुदग्र की दे तो, बिण आई ही मरिये।।१६४।।
च्यंत अच्यंत ही उपजे, च्यंता सब जग षीण।
जोगी च्यंता विसरै, तौ होइ अच्यंतहि लीन।।१६५।।
नासा अग्रे भ्रूमंडले, षोजिबा आप सरीरं।
माता ग्रभि (गर्भ) न जनमि आयबा, बहुड़ि न पीबा षीरं।।१६६।।
जिणि जाण्या तिणि षरा पिछान्या, वा अटल स्यूं लौ लाई।
गोरष कहे अमे कानां सुणता, सो आष्यां देष्या रे भाई।।१६७।।
वास कहंता सब जग वास्या, स्वाद कहंता मीठा।
साच कहूंतौ सतगुरु मानै, रूप सहेता दीठा।।१६८।।
बैसता पूरा रमता सूरा, एक रस राषिबा काया।
बैसि अंतरि रस राषिवा, यौं भणत गोरषराया।।१६९।।
अवधू! स्यौ (शिव) हमारै चेला बोलियै, मछंद्र भणिजै नाती।
निगुरी प्रथमी (पृथ्वी) मरि मरि जाती, ताथैं उलटि थापना थापी।।१७०।।
गिरही कौ ग्यान अमली कौ ध्यान, बूचा कौ कान वेस्या कौ मान।
वैरागी अर माया स्यूं हाथ, या पांचा कौ एकौ साथ।।१७१।।
गिरही होय करि कथै ग्यान, अमली होय करि धरै ध्यान।
वैरागी होय करि बांधे आसा, नाथ कहे तीन्यौ षासा पासा।।१७२।।
यंद्री का लड़बड़ा मुख का फुहड़ा, नाथ कहै ते प्रतषि चुहड़ा।
काछ का जती मुष का सती, सो सतगुरु उत्तमो कथी।।१७३।।
रांड मूये जती, धापे भोजन सती, गये धन त्यागी।
नाथ कहे सुनौ रे अवधू! ये तीन्यौहि अभागी।।१७४।।

त्यागै माया फेरि मंगावै, मंदिर छाड़ै कुटी बंधावै।
सुंदरी छाड़ै नकटी बासै, ताथै गोरष अलगा न्हासै।।१७५।।
पढ़ि पढ़ि पढ़ि केता मूवा, कथि कथि कथि कहा कीन्ह।
बढ़ि बढ़ि बढ़ि बहु घटि गये, पारब्रह्म नहिं चीन्ह।१७६।।
सिध सँकेत बूझिलै सति, सति बोलै गोरष राणा।
तीनि जनै का संग निवारौ, नकटा बूचा काणा।।१७७।।
मनमुष डयंभ बहुत अहंकारी, सति का सबद उछेदै।
काया कै बल करड़ा बोलै, अंतरि गति क्यौं भेदै।।१७८।।
मन वैरागी धूधूकार, पेट वैरागी कांधे भार।
ग्यान वैरागी त्रिभुवन सार, अतीत वैरागी उतरै पार।।१७९।।
मन चंगा तो कठौती में गंगा, बांध्या पेला तौ जगन्न चेला।
भणत गोरष सरूप सति जाना, ताके रूप न रेष नहि बाना।।१८०।।
सीषिबा सबद विसाइबा बुरा, नाथ कहै पूता षोटा न षरा।
सिषिबा सबद बिसाइबा बुरा, रालिबा षोटा अर लेबा षरा।।१८१।।
कदे न सोभै सुंदरी, सनकादिक कै साथ।
जब तब कलंक लगायसी, काली हांडी हाथ।।१८२।।
पासे बैठी सोभै नाही, साथि रमावै भुण्डी।
गोरष कहै या असतरी, कहा कोरी कहा मुंडी।।१८३।।
जरणा जोगी जुग जुग जीवै, झरणा मरि मरि जाय।
षोजै तत मिलै अबिनासी, अगह अमर पद पाय।।१८४।।
जप तप जोगी संजम सार, बालै कंद्रप कीया छार।
येहा जोगी जगमै जोय, दूजा पेट भरे सब कोय।।१८५।।
जोगेसर की इहै परछ्या, सबद विचार्या षेलै।
जितणा लायक वासण होवै, तेतौ तामै मेलै।।१८६।।
चापी भरै तौ बासण फूटै, बारै रहै तो छीजै।
वसत (वस्तु) घणेरी वासन वोछा, कहौ गुरु क्या कीजै।।१८७।।
अवधू! सहजै लैणा सहजे दैणा, सहजै प्रीति ल्यौ लाई।
सहजै सहजै चलैगा रे अवधू, तौ बासण करैगा समाई।।१८८।।
तुम्बी मै त्रिलोक समाणा, त्रिवेणी रवि चंदा।
बूझौ रे कोई ब्रह्म ग्यानी! अनहद नाद अभंगा।।१८९।।
सत्यो सीलं दोय स्नानं, तृतीये गुरु वायकं।
चतुर्थे षीमा स्नानं, पंचमे दया स्नानं।
ये पंच असनान निरमला, नित प्रति करत गोरष बाला।।१९०।।

त्रिया जीत ते पुरिषा गता, मिलि मानंत ते पुरिषा गता।
विसास घाति ते पुरिषा गता, काया रौ तंत ते पुरिषा गता।।१६१।।
अभष भषंत ते पुरिषा गता, सबद हीन ते पुरिषा गता।
बुदिक राषंत ते पुरिषा गता, परत्रिया राषंत ते पुरिषा गता।।१६२।।
सति सति भाषंत गोरष बाला, इतना त्यागिर रहौ निराला।
पंडित भंडित अर कतवारी, पलटी सभा विकलता नारी।
अपढ़ विप्र जोगी घरबारी, नाथ कहै उनका संगि निवारी।।१६३।।
जवान जोगी वैद रोगी, सूरिवा (सूरमा) अर पीठी पीछै घाव।
झूठा बामण लोभी राजा, येता न वंदै गोरष राव।।१६४।।
रात गई अध रात गई, बालक एक पुकारै।
है कोई नगर मै सूरा पूरा, बालक का दुष निवारै।।१६५।।
दिसटि पड़ै ते सारी कीमति, कीमति सबद उचारै।
नाथ कहै अगोचर वाणी, ताका वार न पारै।।१६६।।
मनमुषि जाता गुरुमुषि लहै, लोहि मास अगनिमुषि दहै।
मात पिता की मेटै घात, एसै होय तो बुलावै नाथ।।१६७।।
गिगनि मंडल मै गऊ बियाई, कागदि दही जमाया।
छाछि मथिमथि पंडित षाई, माषण सिधौं षाया।।१६८।।
वेदे न सास्त्रे कतेबे न कुराणे, पुसतगे न वांच्या जाई।
ते पद ध्यावत विरला जोगी, और सब दुनियां धंधे लाई।।१६९।।
सबद हमारा षरतर षांडा, रहणी हमारी सांची।
लेषै लिषी न कागद मांडी, सो पत्री हम बांची।।२००।।
आवती पांच तत्तकूं मोहै, जाती छैल लगावै।
गोरष पूछै बाबा मछंद्रा? न्यंद्रा कहांथै आवै।।२०१।।
गिगनि मंडल मै सूनि दुवार, बीजल चमकै घोर अंधार।
तामै न्यंद्रा आवै जाय, पाचूं तत्त रहै समाय।।२०२।।
ऊभा बैठा सूता लीजै, कबहु चित्तस्यूं भंग न कीजै।
अनहद सबद गिगनि चढ़ि गाजै, प्यंड पड़ै तौ सतगुरु लाजै।।२०३।।
ऊभा मारूं बैठा मारूं, मारूं जागत सूता।
तीन लोक भग जाल पसारया, कहां जाहूगे पूता?।।२०४।।
ऊभा सिमरूं बैठा सिमरूं, सिमरूं जागत सूता।
तीन लोक स्यौं रहूं निराला, तो गोरष अवधूता।।२०५।।
मन बांधूगा पवन स्यूं, पवन बांधूगा मन स्यूं।
मन पवना की गांठी द्योंगी, तौ बोलैगा कवन स्यूं?।।२०६।।

मन तेरा की माई मूंडूं, पवना द्यौं न बहाई।
मन पवना का गम नही, तहां रहूं ल्यौ लाई।।२०७।।
कौण देस स्यूं आये जोगी, कहां तुमारा भाव?
कौण तुमारी बहण भाणिजी, कहां धरौगा पांव?।।२०८।।
पछिम देस स्यूं आये जोगी, उत्तर हमारा भाव।
धरती हमारी बहण भाणिजी, पापी कै सिरि पाव।।२०६।।
सकति अहैडै मीस रीध, को सबल स्यूं बागो।
गोरष कहै चालती मारूं, कान गुरु तौ लागो।।२१०।।
नाथ कहै मेरा दुन्यौ पंथ पूरा, जत नहीं तौ सतकानि सूरा।
जत सत किरिया रहणी हमारी, और बली बाकली देवी तुम्हारी।।२११।।
आसन द्रिढ़ आहार द्रिढ़, जै न्यंद्रा द्रिढ़ि होय।
गोरष कहे रे बालका! मरै न बूढ़ा होय।।२१२।।
करनि करै सो सीष बोलिये, वेद पढ़ै सो नाती।
रहनि रहै सो गुरु हमारा, हम रहता के साथी।।२१३।।
रहैता हमारै गुरु बोलिये, हम रहिता का चेला।
मन मानै तो संग फिरैंगे, नही तर फिरैं अकेला।।२१४।।
मन सरीषा मेलु न मिलिया, च्यंत (चित्त) सरीषा चेला।
ग्यान सरीषा गुरु न मिलिया, तातै गोरष रमै अकेला।।२१५।।
येकलो बीर दूसरो धीर, तीसरौ षटपट चौथे उपाध।
गोरष कहै सुनौ रे रमतौ! पांच सात तहां वाद विवाद।।२१६।।
जल कै संजम अटल आकास, मन कै संजम जोति प्रकास।
पवन कै संजम लागै बन्ध, ब्यंद कै संजम थिर होय कंध।।२१७।।
सुरिज षायबा चंद सोयबा, उभै न पीबा पाणी।
जीवता कै तलै मुवा बिछायबा, बोल्या (गोरष) वाणी।।२१८।।
जीवता बिछायबा मुवा वोढिबा (ओढिबा), कबहु न होयबा रोगी।
बरसदिनमै तीनि वारि या काया पलटै, सो को को विरला जोगी।।२१६।।
पवनहि जोग पवनहि भोग, पवनहि हरै चौसठि रोग।
या पवन का कोइ जाणे भेव, सो आपै करता आपै देव।।२२०।।
ब्यंदहि जोग ब्यंदहि भोग, ब्यंदहि हरै चौसठि रोग।
या ब्यंद का कोइ जाणे भेव, सो आपै करता आपहि देव।।२२१।।
अगनिहि जोग अगनिहि भोग, अगनिहि हरै चौसठि रोग।
या अगनि का कोइ जाणे भेव, आपहि करता आपहि देव।।२२२।।

दरसण माई दरसण बाप, दरसण माही आपै आप।
या दरसण का कोई जाणे भेव, सो आपै करता आपै देव।।२२३।।
सबदहि कूची सबदहि ताला, सबदहि सबद जगाया।
सबदहि सबद (स्यूं) परचा हूवा, तब सबदहि सबद समाया।।२२४।।
सिववा तौ कंथा, चलिवा तौ पंथा।
धरिबा तौ ध्यान, कथिबा तौ ग्यान।।२२५।।
भिष्या तौ प्राण रष्या, कंथा तौ सीत निवारनं।
अंचला तौ अवगति, और विभोक्या प्रयोजनं।।२२६।।
सूरा का पंथ हार्या का विश्राम, सुरता लेहु विचारी।
बिना परचे जो भिष्या षायबी, अंतकाले होयगी भारी।।२२७।।
तत बानी सिधां तत बानी, तत बिन क्यों तरे निरदेही प्रानी।
तत ते आदि जाप और सब आसा, भनंत गोरष नाथ मछंद्र का दासा।।२२८।।
दरवेस सोई जो दरद की जाणैं, पांचो पवन अपूठा आणें।
सदा सचेत रहै दिन राती, सो दरवेस अलष की जाती।।२२९।।
जिभ्या स्वादी तत्त न ब्यंदे, षेल करे गुरु वाचा।
अगनि विहूना बंध न लागै, ढलकि जाये रस काचा।।२३०।।
जिभ्या इंद्री एकै नाल, जो चीतै सो बांचे काल।
पंडित ग्यानी न करिबा ग्रब (गर्व), जिभ्या जीति जिनि जीत्या श्रब (सर्व)।।२३१।।
जोग धरम का षरतर पंथ, जिभ्या इंद्री दीजे बंध।
जोग जुगति में रहे समाय, सो जोगेश्वर नाम कहाय।।२३२।।
निस्प्रेही निरदावे षेले, निरष जोग नियारा (निराला)।
पसु पंखेरू पंष सूं बांध्या, निरपष गोरष सारा (बाला)।।२३३।।
जोगी होय पर निंदा झषे, मद्य मांस अर बगनी भषे।
मनसा वाचा नरकहि जाय, सति सति भाषत गोरष राय।।२३४।।
जोग का मूल रे दया अर दान, वदंत गोरषनाथ ब्रह्म ग्यान।
जब लग हिरदे दया न आई, तब लग कहिये सिद्ध कसाई।।२३५।।
सब मे येक ब्रह्म समान साधे, सो जोगेसर यंद्री बांधे।
भणत गोरष नाथ मछंद्र के पूता, निष्ठ ग्यानी जोगी षरा विगूता।।२३६।।
जाके हिरदे दया न आई, सो तो कहिये प्रगट कसाई।
दया विहूंना दोजग जाय, सति सति भाषे गोरष राय।।२३७।।
मूल अगोचर कंठहि बंध, पवना षेलै चौसठि संध।
गगन मंडल मै अनहद बाजै, प्यंड पड़ै तौ सतगुरु लाजै।।२३८।।

उतरा षंड जायबा सुनिफल षायबा, ब्रह्म अगनि पहरबा चीरं।
नीझर झरने अमीरस पीयबा, यौ मन हूवा थीरं।।२३६।।
हिन्दू ध्यावे देहुरा, मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावे अलष कूं, जहां देहुरा न मसीत।।२४०।।
हिन्दू ध्यावे राम कूं, मुसलमान षुदाय।
जोगी ध्यावे अलष कूं, कहै कौन पतियाय।।२४१।।
प्यंडे होता तो मरता न कोई, ब्रह्मंडे होता तो देषता न कोई।
प्यंड ब्रह्मंड स्यूं निरंतर वास, भाषत गोरष सतगुरु का दास।।२४२।।
अधरा धरे विचारिबा, धरिया ही मे सोय।
धरे अधरे परचा हुवा, तब दूजा नाही कोय।।२४३।।
तुम अवधू क (कि) अवधूता? माँ का षस्म क (कि) माँ का पूता?
कौन प्रसादे काया मुकता, कैसी जुगती भया सब जुगता?।।२४४।।
निरति न सुरति जोग नहि भोग, जुरामरण नहि व्यापें रोग।
गोरष बोलै एकोंकार, समझि देषिये औधू (अवधू) ग्यान विचार।।२४५।।
भाषत गोरष नाथ होयबा चिराई, प्यंड पड़े नहि जम घर जाई।
गुरु कै सबद का करै विचार, सुनौ भरथरी तजि अहंकार।।२४६।।
ह्रिदा का भाव हाथ सूं देषै, यह कलि आई झूठी।
गोरष कहै सुनौ रे पूता, करवे होय सो निकसे टूटी।।२४७।।
आवो देवी बैठो, द्वादस आंगुल पैठो।
पेठत पेठत होयगा सुष, जुरा मरण का मिट गया दुष।।२४८।।
स्वामी काची बाई काची ब्यंद, काची काया काचा ज्यंद।
किस विध पाके किस विधि सीजे, काची अगनि नीर क्यूं सीजे।।२४९।।
तो देवी पाकी बाई पाका ब्यंद, पाकी काया पाका ज्यंद।
ब्रह्म अगनि अषंडित बले, पाकी अगनि नीर होई जले।।२५०।।
चलता पंथा टूटे कंथा, तन छीजै तत जाई।
काया सूं कछु अगम बतावे, ताकी मूंडू माई।।२५१।।
पढ़ि देषि पंडिता ब्रह्म ग्यान, मूवा मुकति बैकुंठ थान।
जार्‌या गाड़्या अनसमझ्या सो भ्रम मे आया। सति सति भाषंत गोरष राया।।२५२।।
आकास तत सदा समजान, तिस अभिअंतर पद निरवाण।
प्यंडमे परचा गुरुमुष जोय, बहुरी आवागवन न होय।।२५३।।
ऊरम धूरम जोती ज्वाला, भेदे रवि की चार्‌यों कला।
कंचन कवलै क्रिन (किरण) बसाय, जलबल दुरगंध सकल दुष जाय।।२५४।।

दाबे न मारिबा षाली न राषिबा, अगनि का जानिबा भेवं।
बूढ़ा गुरुमुष बाला होयबा, सति सति भाषंत गोरष देवं।।२५५।।
एका एकी सीधानां, दोय रमे सिध साधवा।
पांच सात कटुवानां, अधिक रहे ते लसकरा।।२५६।।
नऊ द्वार मल संग्रहे, पार ब्रह्म तहां कैसे रहै।
ब्रह्म अखंडित अधरा धारी, सो ब्रह्म क्यों कहिये मेल मंझारी।।२५७।।
भूषा रूठा नागा रोगी, एता नाही करना जोगी।
गोरष कहे जोग सहाई, येता माया मांहि भुलाई।।२५८।।
काजल मांहि सफेदी काढ़े, जल मुष दीपक बाले।
नाथ कहे ते सिध जानिये, ऐसी रहनि गति पाले।।२५६।।
तिल में तेल पोहप में गंध, नर वरडंड अर पवना बंध।
ऐसी सिधा जे गुरु लषावे, जनम होय पर मरन न पावे।।२६०।।
नादबिंद बांधिवा ओधू! पूरिले अनहद आसा।
येकंत का वासा सोधिले भरतरी, कहे गोरष मछंद्र का दासा।।२६१।।
चंद मांहि सूर; सूर मांहि चंद, चंद मांहि सूरा।
चापिले तीनि तिहांरा, बाजंत अनहद तूरा।।२६२।।
भनत गोरष नाथ ये पद पूरा, भाजत भौंदु झूझत सूरा।
ग्यान हमारै सोय स्माय, सुनो भरतरी मन चित्त लाय।।२६३।।
षरतर पवना निरंतर बहे, छीजै न काया प्यंजुरे रहे।
मन पवना जिनि चंचल गहिया, बोले नाथ निरंतर रहिया।।२६४।।
ज्यों ज्यों भुयंगम आवे जाय, सुरही घर नहीं गरुड़ रहाय।
तब लग सीधा दुर्लभ जोग, तिनि आहार विनि ब्यापें रोग।।२६५।।
गरुड़ भुयंगम सम करि सूता, देव दोय पर मरदौ पूता।
मरदत मरदत कीया पीठी, सोइ बात गोरषनाथ दीठी।।२६६।।
च्यारि कला विचारि बैसिवा, चारि असी में दीठा।
भनत गोरषनाथ आप विचारंत, तब अम्रित पीबा मीठा।।२६७।।
मरौ वे जोगी मरौ मरण है मीठा, तिस मरणी मरौ जिस गोरष दीठा।
जीवता मरिवा मरि करि जीयवा, अमी महारस भरि भरि पीयवा।।२६८।।
षायबा पीयबा जीयवा नाही, चालिबा धायबा थाकिबा नाही।
हंसिबा षेलिबा बौलिबा नाही, देषिबा भालिबा भूलिबा नाही।।२६६।।
आसन द्रिढ आहार द्रिढ़, जो निंद्रा द्रिढ़ होय।
नाथ कहे रे बालका, मरै न बूढ़ा होय।।२७०।।

जब लग पेट पूठि नहीं अहड़ै, तव लग रगत रेत नहीं सहड़ै।
चित चेतनि लगि काम न काटै, जोगी कहै ता हिया न फाटै।।२७१।।
बड़ बड़ कूला पिंड असथूल, आगै जुगति न जाणै मूल।
षाया भात फुलाया पेट, नाहि रे पूता गुरु सौं भेट।।२७२।।
षड़ षड़ काया निरमल नेत, तौ जाणिबा गुरु का हेत।
मिलिया सतगुरु दीनी दीछ्या (दीक्षा), उत्तम करणी आगै भीछया।।२७३।।
अवधू भिछया हमारी कामधेनु बोलिये, संसार हमारी बाड़ी।
गुरु प्रसादे भिछया षायबा, अंत काल न होयगी भारी।।२७४।।
खावै भोत चलावै छोटा, जोगी नाम पंथ का षोटा।
अलप अहारी पातरी पूरा, नाथ कहे पंथ का सूरा।।२७५।।
यंद्रि का लड़बड़ा जीभ का फुहड़ा गोरष कहे ते परतषि चुहड़ा।
काछ का जति मुष अमरत वाणी, सो सतिपुरुषां उत्तम जांणी।।२७६।।
किरिया हीण सबद का सूरा, कारिज सिध न परतषि पूरा।
सीषी साषी बसाया सूरा, नाथ कहे पूता षोटा न षरा।।२७७।।
षारै षिरंत षाटै झरंत, मीठै बढंत रोग
नाथ कहै सुणौ रे अवधू! अन पाणी का जोग।।२७८।।
आलस निंद्रा छींक जंभाई, उदक आप रु प्रान समाई।
गोरष कहे अध्यातम एहा, साधंत जोगी देह विदेहा।।२७९।।
भग मुषि बिंद अगनि मुष पारा, जो राषै सो गुरु हमारा।
जोग जुगति कर साधत काया, काल न लागति लिपै न माया।।२८०।।
सांच का सबद सुना की (सोना की) रेष, निगुरां कूं गड़बड़ सुगुरां कूँ उपदेस।
नाथ कहै सति नहीं भिराँति, जाति प्रबाणै लागै कांति।।२८१।।
रोला गोला झूठा रोगी, बाला भोला भिच्छक भोगी।
नाथ कहै सरपटा, सौगी, इनमें विरला निपजै जोगी।।२८२।।
प्रथम अति छाडिबा अवधू, केस वेस अरु देस।
माया ममता मौह फुनि (पुनि), तजिबा, सतगुरु कै उपदेस।।२८३।।
सूषै कंठ भूष संतापै, देह विसर्जन निद्रा व्यापै।
बुधि बिन बकै विकल होय जाय, तातै गोरष भांग न षाय।।२८४।।
अवधू! अमरा निर्मल पाप न पुन्य, सत, रज, तम विवर्जित सुन्य।
सोहं हंसा सुमरै सब्द, तिह परमारथ अनंत सिद्ध।।२८५।।
चलत सुमारग निश्चल थांन, जोगी जुगत न भरमत आंन।
जाता बुलावै बैठा उठावै, नाथ कहै मोहे दोष न भावै।।२८६।।

अधिक तत्त सौं गुरु बोलिये, हीन तत्त सौं चेला।
मन मानै तौ संग रमौं, नातर रमौ अकेला।।२८७।।
कुंभै बांध्या जल रहै, जल बिन कुंभ न होय।
ग्यानै बांध्या मन रहै, गुरु बिन ग्यान न होय।।२८८।।
सेत फटक मणि जिसकी काया, पिंड ब्रह्मंड ता माहि समाया।
नाथ कहे येह ग्यान विचारी, भगति मुगति दोवू टाकर (दोऊ टाकर) मारी।।२८६।।
छत्र पवन निरंतर रष है, छीजै काया पींजरा रहै।
मन पवन चंचल जिनि गहिया, बोलै नाथ निरंतर रहिया।।२६०।।
इकटी विकटी तिकटी साधि, पछिम द्वारै पवना बांधि।
षूटै तेल न बूझै दीवा, बोलै नाथ निरंतर हूवा।।२६१।।
ग्यानी सौ ग्यान मुरिष सौं मवन, बादी बाद सौं छीजै पवन।
जहां जैसा तहां तैसा, नाथ कहै पूता जोग ऐसा।।२६२।।
निद्रा कहै हूं अलिया बलिया, ब्रह्मा विसनु महेसर छलिया।
निद्रा कहै हूं षरी विगूती, जागै गोरष हू पड़ि सूती।।२६३।।
टूटी डोरी रस कस बहै, उनमनि लागै असथिर रहै।
उनमनि लागै रहै अनंद, टूटी डोरी विनसे कंध।।२६४।।
आकास तत्त सदा सिव जाण, तिस अभिअंतर सदा नृवाण।
प्यंडै परचा गुरुमुष जोय, बहुड़ी न आवा गवणा होय।।२६५।।
प्यंडे होई तौ मरै न कोई, ब्रह्मंडे देषे सब कोई।
प्यंड ब्रह्मंड निरंतर वास, भणत गोरष मछिंद्र का दास।।२६६।।
इकलख सिंगण नौलष बांण, बेध्या मीन गगन असथांन।
बेध्या मीन अगन कै साथ, सत सत भाषत गोरषनाथ।।२६७।।
पंचम लै सिधुं मुडाया, तब भेटिलै निरंजन निराकारं।
मन मस्त हस्ती मिलाय लै, लूटि लै अलष भंडारं।।२६८।।
पंडित ग्यानी मरौ क्या झूझि, अजहू लेहु परमपद बूझि।
आसरण पवना उपदर (उपद्रव) करै, निसिदन आरंभ पच पच मरै।।२६६।।
पुस्तक पढ़े न पंडित होयबा, पवन न सीझंत काया।
ब्यंद राषै ते जति न जानबा, जब लग परम तत्त नहि पाया।।३००।।
उनमनी जोगी दसवै द्वार, नाद ब्यंद लै धुंधूकार।
दसवै द्वार देवै कपाट, गोरष षोजै औरै बाट।।३०१।।
आरंभ जोगी कथिला एक सारं, षिण षिण सिधा करै सरीर विचारं।
तलबल ब्यंद धरि बायक तोलै, तव जाणिबा अवधू आरंभ का बोलै।।।३०२।।

घटही रैहबा मन नही जायबा दूरं, अहनिसि पीवै जोगी वारणी सूरं।
स्वाद विस्वाद वाइ का भछिन, तब जाणिबा जोगी घट का लछिन।।३०३।।
परचै काल उणमनी षेला, अहनिस इछा करै देवता सूं मेला।
षिण षिण जोगी नाना रूप, तब जाणिबा जोगी प्रचै रूप।।३०४।।
निसपति जोगी जाणिबा कैसा, अगनि पाणी लोह न मानै जैसा।
राजा परजा सम करि देष, तब जाणिबा जोगी निसपति का भेष।।३०५।।
अरध उरध बीच धरी उठाई, मध्य सुनि में बैठा जाई।
मतवाला की संगति पाई, कथंत गोरष नाथ परम पद पाई।।३०६।।
देषो पूता कलिका भाव, भीछ्या लीजै गलिदै साव।
सत का भोजन अलष लषावै, गलै पाव परिमोध देषावै।।३०७।।
अभच्छया इमरित सबद का पाणी, षेदा षेदी रगत्र (रक्त) करि जाणी।
नाथ कहै यह ग्यान अनूप, देषति द्रष्टि न पड़िए कूप।।३०८।।
उगंत सूर पात्र पूर, काल कंटक भागे दूर।
नाथ का भंडार सदा भरपूर, जती अतीत अर सेवक सूर।।३०६।।
षाया जरै अर वाचा फुरै, औरकी च्यंता अलेष पुरुष करै।
रहिबा निरास न करिबा आस, यौं वदंत गोरष मछेन्द्र का दास।।३१०।।
थान मान गुरु ग्यान बोध्यान, बोध सिधान पार ग्रामी।
आगम सुं देषिबा देसं, अचिंत्य नाथ कौं करिबा आदेसं।।३११।।
जहां सुष दुष नाही हरष सौगं, सोवणा न जागणा भूषा न भौगं।
आवणा न जावणा; अबोल न बोलना, नाथ कहै जहां एक रस रहणा।।३१२।।
मढ़ी न बांधिबा सती न प्रबोधिबा, भिछया न बांधिबा असथूलं।
पंच घर चितायबा येकंत रहिबा, ये जीवन का मूलं।।३१३।।
सूसम वेद हीरा बेधिलै, जिभ्या करि टकसारं।
औगुन मध्यि गुन करि लीजै, तौ चेला सकल संसारं।।३१४।।
बिरला जानंत भेदान भेद, विरला जानंत दोय पष छेद।
बिरला जानंत अकथ कहाणी, बिरला सोभ्रंत सुध बुध वाणी।।३१५।।
सत का सबद विचारै अवधू, बोलै गोरष राणा।
तीनि जनां का संग निवारो, नकटा बूचा काणा।।३१६।।
सिद्धन का संकेत बूझिलै सूरा, गगन आसनि बाइलै तूरा।
मीन कै मारिग रोपि लै भानं, उलटया फूल कली मै आनं।।३१७।।
येकै डीबी येकै तौवा (तवा), बोलै गोरष ये सिध रौवा।
इकुटि विकुटि त्रिकुटि संधि, पछिम द्वारै पवना बंधि।।३१८।।

उलटै गंगा चढ़ै ब्रह्मंड, तब नष सिष बिंद फिरै सर्वंग।
गोरष कहे सुनौ रे अवधू! सूक्षम वेद विचारौ सबदूं।।३१६।।
नासिका जीतत तालका संधि, अहिनिसि सक्ति दिढ़ करि बंधि।
इड़ा पिंगला का रोकिला घाट, गोरष बोलै जोगारम (जोगारम्भ) की बाट।।
ऐसी बात करूं; जे कोई मरै, गोरष बोलै मेर (मेरु) जांहां झरै।
बैठा सूता जान न देही, नाथ कहै पूता अचिरज लेही।।३२१।।
घट मै चंदा घट मै सूर, घट मै बाजै अनहद तूर।
घट मै बहै नदी सुरसती, घट मै बैठा गोरष जति।।३२२।।
घटमै प्रान किलोलां करै, सतगुरु मिलै सहजै तरै।
हाट वाट की थेगली, तांति पांवका धागा।
गोरष कहे नाथ का पूता, भूषा रहे न नागा।।३२३।।
सबद ही में कहे ब्रह्म, मनसा नहि साधै, ते जोगी मन मनसा कदे नहि बांधै
भणत गोरष नाथ मछंद्र का पूता, ये नर ग्यानी भगत घणे विगूता।।३२४।।
जोगी सोई जुगति बिचारै, काम क्रोध विकार ही जारै।
माया ब्रह्म का करै निबाला, ता जोगी कै सदा उज्याला।।३२५।।
वाद विवाद तजि निरंतरि रहै, तब जाय अलेष परम तत्तकूं गहै।
छाड़ी आसा रहे निरास, भणत गोरषनाथ मै ताका दास।।३२६।।
अवधू! आदि न होता अंत न होता, न होता भी दिष्टि धारं।
सून्य महासून्य एक न होता, (नहि) होता वेद ऊंकारं।।३२७।।
पिंड ब्रह्मंड एवं न होता, नह होता सप्त पातालं।
ब्रह्मा विसन सबै नहीं होता, नहिं होता चंद सूरिया झलालं।
गोरष जावकत्व भ्रथरी (भर्तृहरि) जीत्वा, इति ग्यान कलस संपूरणं।।३२८।।
जोग अवरणं (जोग अभेदं), जोग अषंडित जोग अछेदं।
जोग जति सति (जोग) दया, येहा ग्यान जति गोर्ष कह्या।।३२९।।
एकादसी द्वादसी कीनी हो पंडिता, तोउ न सीजंत जलाबिंब की काया।
सति एकादसी संतोष पारणु, तब चीयाराय गगन समाया।।३३०।।
इति श्री सूक्ष्मवेद जोगेश्वरी साखी संपूर्ण सही।
अनन्त कोटि सिद्धा में श्रीनाथजी गुरुजी ने कही सिधो आदेश! आदेश।।

महात्म्य (सूक्ष्म–वेद)

सूक्षम वेद हीरा बेधिलै, जिभ्या करि टकसारं।
औगुन मध्यि गुन करि लीजै, तौ चेला सकल संसारं।।
ऐसा रे उपदेस दाखै, श्री गुरु गोरष राया।
जिनि जग चतुर वरन राह लाया।।टेक।।
पढ़ि लै सूसम वेद, करि लै विधि नषेद (निषेध)।
जाणि लै भेदान भेद, पूरि लै आसा उमेद।।१।।
विषमी संधिमंझारी, संझा पांच वषत सारी।
रहिवा दसवें द्वारी, सैबा (सेईबा) पद निराकारी।।२।।
जपि लै अजपा जाप, विचारिलै आपै आप।
छूटिला सबै संताप, लीपै नही पुण्य अर पाप।।३।।
अहनिसि समाध्यान, निरंतर रमता राम।
कथंत गोरष नाथ ग्यान, पायबा परम निधान।।४।।
कथंत गोरष नाथ दसवें द्वारी, सुरगनै केदार चढ़िया।
इकबीस ब्रह्मण्ड ना सिखर ऊपर, सूक्षम वेद उचरिया।।टेक।।
द्वादस दल भीतरि रवि शक्ति, ससि षोडस शिव थानं।
नाद अनाहद गरजै गैणं (गहनं), पच्छिम ऊग्या भाणं।।१।।
दषिणी डीबी उत्तर नाचै, पाताल पूरब ताणं।
चन्द्र सूर नी मुद्रा कीनी, धरणि भस्म जल मेला,
नादी व्यंदी सिंगी आकासी, अलष (अलख्ख) गुरुना चेला।।२।।
तीन सै साठ थे गली कंथा, इकविस सहंस छसै धागं।
बहत्तरि नाड़ी सुई नवासी, बावन वीर सीया लागं।।३।।
इली सोधि प्यंगुली घर पूरी, सुषमनि चढ़ी असमानं।
मछिंद्र प्रतापे जति गोरष बोलै, निरंजन सिद्ध स्थानं।।४।।
गहियौ बाला सत्त सबद सुष धारा।
गगन मंडल चढ़ि प्रीतम परसौ, रूप वरन सौं न्यारा।।टेक।।
धर्ता कौं कर्ता मति जानौ, सत का सबद बताऊँ।
अजहूं मरम न जाणौ मेरा, तौ गूझि मारिग दिषाऊँ।।१।।
मै भी माया तुम भी माया, माया रावण राघौ।
जै तुम बाला पूछि करत हौ, तौ सूछम वेद सौं लागौ।।२।।
सूछम वेद का भेद निराला, च्यारौं वेद विकारा।
जा आखर स्यौं सायर पाटा, सो सबका करतारा।।३।।

तीन लोक और भवन चतुर्दस, रच्या काल का चारा।
साध सबद ह्रदै धरि लीजै, एती नोबट पारा।।४।।
अवनि धसन्ती यूं सत भाषौ, राषौ तोष तुमारा।
सुख सागर मे सहज मिलौगे, सत्य प्रमान हमारा।।५।।
किति एक बार भया यह चीन्हा, या कोई जाणे गहण गति।
इच्छा बोऊं आदि लूँ माया, यूं सत भाषै सतवन्ती।।६।।

गोरक्ष शिक्षा दरसण

ॐनमो आदेश गुरांजी कौं, आदेश! आदेश! ॐअनहद शब्दे उत्पन भए निरंजन निराकार।
निराकार ले उत्पन्ना आकास, आकास ले उत्पन्ना वायु, वायु ले उत्पन्ना तेज।
तेज ले उत्पन्ना तोया, तोया ले उत्पन्नी मही।।१।।
मही रूप देवी का रंग, जल रूप ब्रह्मा का वरण।
तेज रूप विसन की माया, पवन रूप ईसर की काया।।२।।
आकास रूप नाद की छाया, सो नाद अवगति उपाया।
सुंन निरंजन भूचर देव, ता भूचर का लहै न भेव।।३।।
अकल अगोचर अनंत तरवर, अनंत साखा सूषम वेद।
परम भेद भेदान भेद, आतम ध्यान ब्रह्म ग्यान।।४।।
षेचरी मुद्रा भूचरी सीधि, उनमनी अवस्था अगोचरी बुधि।
चाचरि निधि अणभै करामाति, अतीत देवता अवगति पूजा।।५।।
अलील आश्रम अध्यात्म विद्या, गिगन आसण अमीरस प्याला।
मनसा माई पंच भू चेला, मन रावल पवन भोगी,
दसवै दवारी बसै प्राण नाथ जोगी।।६।।
सहजै आवण संजमी रहणा, सुषमण नदी निह केवल जल पीवणा।
त्रिवेणी सनांन त्रिकाल पूजा, अजपा गायत्री अनुपम मंत्र।।७।।
निरंजन माला निराकार ज्वाला, कंवल गरजै तहां सब्द उजियाला।
छसै सहंस इकीस करि मेला, नषसिष पवन बांधिले भेला।।८।।
नाद अनाहद निहसबद वाणी, जीव तै सिव यौं होइबा प्राणी।
देह विदेही अवचल थीरु, रुध्र पलटा होइबा षीरु।।९।।
दिसटि बिदिसटि जोइबा नैणु, पवन निरंजण बोलिवा बैणु।
सबद निहसबद होइबा थूलं, आदि का नादि जाइबा मूलं।।१०।।
नादबिंद गंठिबा गवणि अकास, न पड़ैगा पिंड न होइगा नास।
धरणि गगनि परिमाध न होई, जंत्र चलै तहां काल न कोई।।११।।

अषंड मढ़ी तहां जोगिबा ध्यानु, जुगि जुगि तालि कथिबा ग्यानु।
मूल चक्र तहां पलटै ज्यंदु, पलटै काया थिर होइ कंधु।।१२।।
मूलबंध बज्र कछोटा पकड़िया थीरु; सति उडयाणी बांधिवा बीरु।
जतण जंगोटा आसन पूरा, धारा कमंडल ले होइबा सूरा।।१३।।
कुंभपात्रे जहां पीवना नीरु, चेतनि विभूति अंग सरीरु।
अजर कंथा नहि वाद विवादं, अनहद किंगुरि बजाइबा नादं।।१४।।
संतोष तिलक जहां पद निरवाणु, ब्रह्म टोपी कंवल पहरबी प्राणु।
मन वैराग मुद्रा जोइबा अरूप, वदंत गोरष नाथ ए तत अनूप।।१५।।
दया दण्ड तहां त्रिकुटी थानु, षिमा लकुटी टेकिया प्राणु।
चंद सूर भाटी उजैइबा धारु, झुरै गिगनि तहां होई मतिवालु।।१६।।
ते जोगी जुगता अविचल सारं, छछंद मुकता भये भ्रम पारं।
दोइ पछि ब्रह्मंड बंधीबा पूरं, गुरुवचने अनाहद मानिबा सूरं।।१७।।
अनंत सिधां तहां सारम सारु, निहचल थीरु तत्त निरालु, अजाचिक भीष्या (भिक्षा) आइबा थानु,
ऐ गुरु मछिन्द्र नाथ नी सिष्या, (शिक्षा) पहरिवा कानु।।१८।।
अकलप डीबी झोली निरासु, संजीवनी मात्रा बीरज नासु।
एकंत रहिबा बांधिबा मूल, न होइगा आवा गवण का सूल।।१९।।
बारै कला देवी; सोलै कलादेव, सुषमणा नारी बांधिबा भेव।
नवसै जोगण चलाईबा साथु, बुरज बहत्तरि जगाइबा नाथु।।२०।।
नव षंड पृथमी मांगिबा भीष्या, त्रिलोक मधे न होयगी अपीछ्या।
चवदा ब्रह्मंड जोइबा दवारु, षट दरसण ऐ पंथ निहारु।।२१।।
दारं बहणी जूं होइगा भेउ, असंष दल पंषुड़ी गिगनि करि सेउ।
कथंत गोरष ऐ अविचल जापु, लीपै नही ताहि पुंनि न पापु।।२२।।
सुनि (सुन्न) ध्यान सोलै कला संपूरण माला, आपै आप, जति गोरष बाला

इति श्री शिक्षा दरसण ग्रंथ संपूरण समाप्त।।

तिलक–ज्ञान

सबदै कूची सबदै ताला, सबदै सबद भया उजियाला।।१।।
नाथ कहै तुम आपा राषौ सिद्धो! हठ करि वाद न करना।
सब जग है कांट्यां की बाड़ी देषि देषि पग धरना।।२।।
कांटा सेती कांटा षूटै, कूंची सेती ताला।
सिधां सेती साधक निपजै, तब घट होय उज्याला।।३।।

अलष पुरुष मेरी द्रिष्टि समाना, सांसा गया अपूठा।
जब लग नर तन मन नहि षोजै, कथै बदै सब झूठा।।४।।
सहज स्वभावु मेरि त्रिसना फीटी, सिंगी नाद सिध मेला।
अमिरस पीया विषै रस टल्या, गुरु गारुड़ी अकेला।।५।।
अंजन मांहि निरंजन देष्या, तिलमुषि भेट्या तेलं।
मूरति मांहि अमूरति परस्या, भया निरंतरि षेलं।।६।।
सरप रहै बांबी उठि नाचै, बिण कर डैरू बाजै।
नाथ कहै जे यहु विष जीतै, प्यंड पड़ै तो सतगुरु लाजै।।७।।
चकमक ठरकै उगनि परैगी, दधिमथि घ्रित करि लीया।
मूल विचारत आपा निपज्या, गुरु संदेसा दीया।।८।।
सुरति गहौ सांसे जिनि अटकौ, पूंजी हाण न होई।
एक तत्त ले अंतरि निपज्या, टार्या टरै न सोई।।६।।
निहचा होय तौ नेड़ा निपजै, भया भरोसा थोड़ा।
परचा होय तौ सबही निपजै, नहिं तौ सहजै नवेड़ा।।१०।।
जिस लूटी तिस षबर न पाई, कसि कसि इंद्री डांडी।
तन मन की कछु षबरि न पाई, सुरति विगोई रांडी।।११।।
रांडी तजै न षसिया जीवै, पुरिषा तजै न नारी।
कहै नाथ ए दोन्यो घर विनसै, धोषै की असवारी।।१२।।
वैसंदर मुष ब्रह्म जुहोतं, सुद्र पढ़ाऊं वाणी।
असमेध जिग ब्रह्म विधि निपज्या, जुगति जमाया पाणी।।१३।।
जुग रांडयां जोगेसर ब्याह्या, सिव सकति सूं फेरा।
ज्यां पद मंदिर धजा फरहरे, ता मंदिर घर मेरा।।१४।।
ता रहणी मै घर घर वासा, जोग जुगति करि पाया।
सिध समाधि पंच घर मेला, गोरष तहां समाया।।१५।।
हाली भीतरि षेत निदाणै, बग मैं ताल समाई।
बरसै मोर कुहकै सावण, नदी अपूठी आई।।१६।।
मेडक माहि पोहकर फुदकै, दादुर भरै झिलारै।
चात्रिक मै चौमासा बोलै, ऐसा समा हमारै।।१७।।
आसा त्रिसना थिर ह्वै बैठी, पद परचै सुष पाया।
सूकै तरवर कूपल मेल्ही, इहि विधि निपजी काया।।१८।।
पूरब दिसा पछाही घाटी, तहां लिष्या हमारा जोगं।
गुरु हमारा नावर कहिये, गया भरम विष रोगं।।१६।।

नवग्रह मारि अगनि मुष झोकूं, दुंदर बाधूं डोरी।
अलष हमारै कागद मांड्या, भई अगम गति मोरी।।२०।।
अकथ कथ्या अनआषरि बांच्या, अगम गमी करि लीया।
हंस बिलंबै बूंद न ढलकै, ता सरवर बंधि दीया।।२१।।
कहै नाथ गगन घर वासा, अंतर बसिया जाई।
पूरण पुरुष मेरा प्यंजरे विलब्या, दिन दिन कला सवाई।।२२।।
ऐसै रमूं जैसे नषसष भेदै, संक्या सरीर न लूटै।
चलता फिरता जबै समावै, जुरा मरण भौ छूटै।।२३।।
मरि मरि जाये संसा ही मै, जिनि तन का मरम न पाया।
समझ होइ तौ पद ही परसै, नहितर धोषै जनम गवाया।।२४।।
या पद की जै कठिन है करनी, केवल मता पुरिषकी रहणी।
या रहणी मै पारस परसै, लोहा कंचन पद होइ दरसै।।२५।।
नीझर नीर अगनि मुष बरसै, सीझै बाग हमारा।
ऐसी विधि पैकंबर निपज्या, तीसा मरै संसारा।।२६।।
अंबर बरस्या धरती निपजै, इंद्री बरस्या देही।
गुरु हमारा वाणी बरसै, चुनि चुनि मानिक लेही।।२७।।
पाहन में पारस अविनासी, अष्टधात में सोना।
यौं सब माहि समझ अविनासी, ता घट पाप न पूना।।२८।।
बहती नदी भाव भरि थांभी, देष्या सूर पछांही।
देवन दुर्लभ मना अगोचर, ता बेली फल षांही।।२९।।
गिरही कै घर जनम हमारा, संगति सुरति द्रिढ़ाणी।
कहै पुरुष ब्रह्म जीव एकौ, स्यौ (शिव) घरि सकति समाणी।।३०।।
अनहद धुनि मै रहणी हमारी, तंत्त देषि मन लागा।
आपा मांझे आपा प्रकट्या, इनि विधि संसा भागा।।३१।।
ते नर जोति अजोनी संभू, सिद्ध पुरिस स्यौं मेला।
ता रहणी मै थान हमारा, ता घर पुरुष अकेला।।३२।।
उरधै भरै तौ थिर करि जीवै, सरधै घटा संवारी।
अरधै लोयण सब जुग सूझै, सालम सवै अंधियारी।।३३।।
आवागवण भरम का मारग, पुरिषां पंथ बताया।
सबद अतीत निरंतर वासा, अवगति तहां समाया।।३४।।
जा पद मंदिर धजा फरहरै, मढ़ी संभारे चेला।
कोटि कला तहां अनहद वाणी, गावै पुरिष (नाथ) अकेला।।३५।।

नौ लष पातर आगै नाचै, पीछै सहज अषाड़ा।
इहि विधि जोगी मनलै षेलै, अन्तरि बसै भंडारा।।३६।।
ग्यान गहै तौ तिसना हारै, सूरज देष प्रछांही।
सतगुरु मिलै तो सांसा भागै, मूल विचार्‌या मांही।।३७।।
जहां नही तहां सब कछु देष्या, कह्या न को पतियाई।
दुबध्या मेटि जपै तो छूटै, विरले पदे समाई।।३८।।
दिषणि हमारी डीबी पाचै, अगनि बलै मुलतानं।
ऐसी विधि हम जोगी निपना, प्रगटया पद निरवानं।।३६।।
बाफ न निकसै बूंद न ढलकै, सहज अंगीठी रांधै।
सहज समाधी जोग अभ्यासी, गुरु प्रचै सर सांधै।।४०।।
अवधू! धमकी न चलणा; तमकी न बोलणा, खींच न पीवना पानी।
गोरष कहै सुनो रे अवधू, यह सिद्धों की बानी।।४१।।
कहे बुधिवंता सुनि गुनवंता, हमारी जाति लोहारं।
जो जो आया हमारी संगति, सो निपज्या तत सारं।।४२।।
कहे गुनवंत्ता सुनि बुधिवंता, कलि मै ऐसै रहिये।
आषां देषिये कानां सुनिये, मुष सूं कछु न कहिये।।४३।।
गुरु हमारा गहरी बाणी, बोलै प्रकट पसारा।
ले दीपक दरिया में पैसा, चहूँ दिस भया उज्यारा।।४४।।
जुग मैं रांडी बाघन कहिये, बिन दांतां जुग षाया।
काल पुरुष की षबर न पाई, फेरि बिगूचे माया।।४५।।
रांडी त्यागि जुदा होय बैठे, निहचा सबद न पाया।
लंघन करि करि भोंदू मूवा, गुरु नहिं भेद बताया।।४६।।।
माया करि करि भोंदू मूये, जोग जुगति नहि पावे।
नाथ कहे कोई समझे नाहीं, धन कूं सब को ध्यावे।।४७।।
अरथ गरथ कूं ताला कूंची, देह सरूप लुटाया।
गोरष कहे ते निहचें विनसें, गुरु का भेद न पाया।।४८।।
सूके काठही ज्यों घुण लागै, लौहै लागे काई।
बिना परतीति कहा गुरु कीजै, काल घसीट्‌या जाई।।४६।।
सील बरत में रहे न भोंदू, या पद की कठिनाई।
केवल मता पुरिष की रहनी, येह सुधि किनहुं न पाई।।५०।।
च्यार वेद चौरासि आहुती, विधि करि ब्रह्म जगाया।
ज्योति सरूप निज पद परस्या, सो गुरु भेद बताया।।५१।।

नौ लष किरन अपूठी प्रगटी, कोटि कला मुष आगे।
गोरष कहे धर्म का मारग, सांचे बूंद न लागै।।५२।।
अंतर मांहि निरंतर भेट्या, आपा मध्ये आपा।
गोरष कहे निरंतर मेला, ताका माइ न बापा।।५३।।
दरसण मांही दरसण देख्या, नीरे निरंतर झांई।
आपा मांही आपा प्रगट्या लषैत दूर न जांई।।५४।।
तुंबी मै त्रिलोक समाना, त्रिवेणी रवि चंदा।
बूझौ हो कोइ ब्रह्म ग्यानी, अनहद सबद (नाद) अभंगा।।५५।।
धीरज थंभ अडोरी धूनी, समियाना असमानं।
अटल दुलीचा अषै पद, तहां गोरष का दीवानं।।५६।।
विमल पंथ बीज ज्यौं चमकै, घरहर करि घण गाजै।
तारहणि मैं जोगीका मंदिर, अनहद बाजा बाजै।।५७।।
सुणि सुधिवंता सुणि गुणवंना, अनंत सिधां की वाणी।
सीस निवावत सतगुरु भेट्या, जागत रैण विहाणी।।५८।।
महाकरणी महारैणी आचारे विचारे, पापे न लीपते पुनये न हारते।
ॐ नमो गुरु मछिंद्र नाथ पादुका नमस्ते।।५९।।
इति श्री गोरष नाथ तिलक ग्यान संपूर्ण सही।
अनन्त कोटि सिद्धों में श्री नाथ जी ने कही।।
श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश! आदेश!

अजपा–गायत्री

जागे जोगी नींद से, बैठे आसन मार। अजपा गायत्री जाप का, पहले किया विचार।।
ॐ नमो आदेश गुरांजी कौं आदेश! आदेश!
ॐ गुरुजी! षट्चक्र बोलिये घट भीतरि, ते कौण कौण बोलिये?
आधार–चक्र, स्वाधिष्ठान–चक्र, मणिपूर–चक्र, अनाहत–चक्र, विशुद्ध–चक्र, आज्ञा–चक्र।
सप्तम ब्रह्मरंध्र भंवरगुफा बोलिये घट भितरि।
प्रथम आधार–चक्र बोलिये गुदास्थाने चार पंखड़ीका कमल तहां गणेशनाथजी जोगी।
सिद्धि बुद्धिशक्ति, षटसै स्वाँस, अजपा गायत्रीजाप, परब्रह्म ध्यान।
श्री गणेश नाथ गजकंथड़ नाथ जी कूं आदेश! आदेश।।१।।

द्वितीय स्वाधिष्ठान–चक्र बोलिये लिंगस्थाने, छै पंखड़ी का कमल, तहां सत्यनाथ ब्रह्माजी जोगी। सावित्रीशक्ति, षट् सहस्त्र स्वांस, अजपा–गायत्री जाप, परब्रह्म ध्यान।
श्री सतनाथ ब्रह्मा जी कूं आदेश आदेश।।२।।
त्रितीये मणिपूर–चक्र बोलिये; नाभि स्थाने, दश पंखड़ी का कमल, तहां सन्तोष नाथ विष्णु जी जोगी। लक्ष्मी शक्ति, षट्–सहस्त्र–स्वांस, अजपा गायत्री जाप, परब्रह्म ध्यान।
श्री सन्तोष नाथ विष्णु जी कूं आदेश आदेश।।३।।
चौथा अनाहत–चक्र बोलिये, हृदयस्थाने, द्वादश पंखड़ी का कमल तहां रूद्रनाथजी जोगी। उमाशक्ति, षट्सहस्त्र स्वांस, अजपा–गायत्री जाप, परब्रह्म ध्यान।
श्री रूद्र नाथ जी जोगी कूं आदेश आदेश।।४।।
पांचवा विशुद्ध–चक्र बोलिये कण्ठस्थाने, षोडश पंखड़ी का कमल, तहां हंसनाथ जी जोगी। अविद्या शक्ति, एक सहस्त्र स्वांस, अजपा–गायत्री जाप परब्रह्म ध्यान।
श्री हंस नाथ जी जोगी कूं आदेश आदेश।।५।।
षष्टम आज्ञा–चक्र बोलिये, भ्रू स्थाने, द्विय पंखड़ी का कमल, तहां आदिनाथ जी जोगी। ज्ञान शक्ति, एक सहस्त्र स्वांस, अजपा गायत्री जाप, परब्रह्म ध्यान।
श्री आदि नाथ जी जोगी कूं आदेश आदेश।।६।।
सप्तम ब्रह्मरंध्र भंवरगुफा बोलिये मूर्धास्थाने, सहस्त्र पंखड़ीका कमल, तहां गुरु गोरखनाथ जी जोगी। अनुपम शक्ति, एक सहस्त्र स्वांस, अजपा–गायत्री जाप, परब्रह्मध्यान।
श्री शंभू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी कूं आदेश! आदेश।।७।।
अजपा नाम गायत्री, योगिनां मोक्षदायिनी।
अस्याः संकल्पमात्रेण, नरः पापैः प्रमुच्युते।।
इति षट्चक्र जोगारमसार, स्वासस्वास का जाप अपार।।
गुप्त चक्र का पावै भेव, सो जोगी विश्वंभर देव।।
ॐ सोहं हंस विचार, जपो तपो गुरुमुख आचार।
अजपा गायत्री विधिसार, अनन्त सिद्ध ले उतरे पार।।
ओवं बाला सोहं बाला, श्री शंभू जति गुरु गोरख बाला।।
प्रातः जपै धुनि ध्यान लगावै, करोड़ गौ दान का फल पावै।
मायारूपी दादा श्री गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी की चरण पादुका कौं नमस्ते नमः।।
ॐ शिव गोरक्ष! ॐ शिव गोरक्ष! ॐ शिव गोरक्ष!

"शिव–गोरक्ष"

"कुंडलिनी-चक्र-तालिका"

क्रमांक	चक्र	स्थान व दल	नाद और वाणी	तत्त्व और वेद	तत्त्व के गुण	तत्त्व के बीज	तत्त्व के रंग	शक्ति	देवता और जाप	वाहन	ग्रन्थि व लिंग	कर्म व ज्ञानेन्द्रिय
1.	मूलाधार चक्र	गुदास्थाने चतुर्दल	व, श, ष, स परावाणी	पृथ्वी सामवेद	गन्ध	लं	पीत स्वर्ण–वर्ण	सिद्धि बुद्धि	गजबेलि गणेश कंथड़नाथ 600 जाप	मूषक	ब्रह्म ग्रन्थि स्वयम्भू लिंग	गुदा–नासिका
2.	स्वाधिष्ठान चक्र	लिंग स्थाने षट् दल	ब, भ, म, य र, ल पश्यन्ति वाणी	जल (अलील) यजुर्वेद	रस	वं	श्वेत शुभ्र वर्ण चांदी वर्ण	गायत्री सावित्री	ब्रह्मा (सत्य–नाथ) 6000 जाप	हंस	ब्रह्म–ग्रन्थि	हस्त–जिव्हा
3.	मणिपूर	नाभिस्थाने दश–दल	ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ मध्यमावाणी	अग्नि ऋग्वेद	रुप	रं	रक्त वर्ण	लक्ष्मी	विष्णु (संतोष नाथ) 6000 जाप	गरुड़	विष्णु–ग्रन्थि बाण लिंग	नाभि–नेत्र
4.	अनाहत	ह्रदय–स्थाने द्वादश दल	क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ वैखरी वाणी	पवन	स्पर्श	यं	नील–वर्ण–प्रभा	उमा (उदयनाथ पार्वती)	महारुद्रनाथ (ईश) 6000 जाप	हिरण	विष्णु–ग्रन्थि	लिंग–त्वचा
5.	विशुद्ध	कण्ठ–स्थाने षोडश दल	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः विज्ञ–वाणी	आकाश	शब्द	हं	कृष्ण (श्याम)	अविद्या	हंसनाथ सदा शिव 1000 जाप	हस्ती	रुद्र–ग्रन्थि सदा शिव लिंग	कर्ण–श्रवण
6.	आज्ञा	भू–मध्य द्विदल	ह, क्ष आगम–वाणी	मनस्	आत्मतत्त्व	ऊँ	कृष्ण वर्ण	विमला	1000 जाप गुरू गोरक्षनाथ	नाद	रुद्र ग्रन्थि सदाशिव लिंग	ज्ञानेन्द्रियों के प्रकाश से कर्म बन्धन मुक्त
7.	सहस्रार	ब्रह्मरन्ध्र सहस्रदल	समस्त नाद	समस्त तत्त्व	समस्त गुण		समस्त वर्ण व रंग (इन्द्र–धनुष के रंग)	सर्व शक्ति व सर्वदेव	गुरू गोरक्षनाथ जी 1000 जाप	बिन्दु	बन्धन मुक्त	– –

ज्ञान-गोष्ठी

किसने जो देखे बड़े गाज बाजे, किसने जो देखे महा भूप राजे?
किसने जो देखी बड़ी क्षेमकरणी, किसने जो देखी सर्व जगत जननी?
किसने जो देखा बिना पंख सूवा, किसने जो देखा बिना काल मूवा?
इन्दर जो देखे बड़े गाज बाजे, सद्गुरु जो देखे महा भूप राजे।
पृथिवी जो देखी बड़ी क्षेमकरणी, माता जो देखी सर्व जगत जननी।
मनुवा जो देखा बिना पंख सूवा, निद्रा जो देखी बिना काल मूवा।।
ॐ गुरुजी! कौन पेड़ बिन डाल, कौन पंखि बिन सूवा?
कौन पालि बिन नीर, कौन काल बिन मूवा?
अवधू! पवन पेड़ बिन डाल, मन पंखि बिना सूवा।
धीरज पालि बिन नीर, निद्रा काल बिन मूवा।।
ॐ गुरुजी! कौन सुमंदिर कौन सुद्धार, कौन सुमूरति कौन सुअपार?
कौन प्रचै मन उनमनि रहै, सतगुरु होय सो बूझयां कहै?
अवधू! सुंनि सुमंदिर सबद सुद्धार, जोति सुमूरति ज्वाला अपार।
रूप अरूप मन उनमनि रहै, ऐसा विचार मच्छेन्द्र कहै।।
ॐ गुरुजी! कौन सुदीवा कौन सुप्रकास, कौन सुबाती तेल निवास?
कैसे दीवा अविचल रहे, सतगुरु होय सो बूझयां कहै।।
अवधू! ग्यान सुदीवा सबद सुप्रकास, सन्तोष बाती सुतेल निवास।
दुबध्या मेटि अखण्डित रहै, ऐसा विचार मच्छेन्द्रनाथ कहै।।
ॐ गुरुजी! कौन बीज कौन खेत्र कौन सरवण कौन नेत्र।
कौन जोग कौन जुक्ति, कौन मोक्ष कौन मुक्ति?
अवधू! मंत्र बीज मती क्षेत्र, सुरती श्रवण निरती नेत्र।
ऊरम जोग धूरम जुक्ति, जोती मोक्ष ज्वाला मुक्ति।।

ब्रह्म-ज्ञान

सत नमो आदेश! गुरुजी को आदेश! ॐ गुरुजी!
एक अलील पकड़ी बहुरंगा, जिसकी कुए पड़ गई गंगा।।
एक बून्द से सृष्टि उपाई। राई पर्वत बीच समाई।।
ब्रह्म सभा में बन्या शरीर। उपजी श्रद्धा छुप गया नीर।।
उपजे (ब्रह्म) बंधे विचार। आप पूछे अपनी राह।।
आपे भूल्या भरमिया आप, जेवड़ी का करते हैं सांप।।

सोता हो तो उठकर जाग। रूई लपेटी रहे न आग।।
भर्मत भर्मत जग भरमाया। भया ब्रह्म जब वेद उपजाया।।
कहीं कृष्ण कहीं कंस कहाया। कहीं राम कहीं रावण आया।।
माला, तसबी, टीका, छाप। दूजा और जनावे आप।।
सेवक होके कीनी पूजा। अपना ब्रह्म बतावे दूजा।।
वेद उपाधि किया जग झेड़ा। ज्यों देखो सिद्धो भवसागर कागज का बेड़ा।।
भले बुरे दो कर्म बनाये। अपनी पैरीं संगल पाये।।
काढ़या पार बनाया ख्याल। आपे ही फंस गया जाल।।
जब मुठभेड़ हुई ग्राह की। तब शिव लीला करणी साखी।।
कर कर कर्म, कर्म गत हारी। भीजी कमली, हो गई भारी।।
कर्म ही उपजे कर्म ही मरे। कर्म ही लक्ष चौरासी भरे।।
भले बुरे का नही विवेक। सागर कुञ्जी लोहा मेख।।
धन का कूंआ है अभिमान। पतिव्रतकारी युग प्रमाण।।
गौतम रीषी की पतिव्रता नारी। जिसकी जग में चली कहानी।।
अपनी गत में आपा भूल्या, कीना पीता हेत। क्या गंगा गया गोदावरी हित कर हेत।।
काली कमली भई न श्वेत। काशी मथुरा सिमरूं मन द्वारका। मन का खोटा कभी न खरा।।
क्या काशी पुष्कर भोया। जिन अन्दर घट का मैल न धोया।।
क्या त्रिवेणी सागर संगम नहाय। माटी खोद के देव बनाय।।
पूजा कीनी मन चित्त जोड़, बहुत पशु को लै गये चोर।।
क्या गंगा जल पिया मन चितलाय। वह तो अन्त मूत्र हो निकल जाय।।
कौड़ी तुम्बी न्हावण गई। नहाय धोय मुड़ घर को गई।।
मीठी भई न पलटिया रंग। क्या हुआ जब नहाया गंग।।
मन की मैल न जल से जाई। अन्दर घट में खोजत पाई।।
भूली भूली रे जग सारी। अलख लखन की गत है न्यारी।।
गुरु प्रसाद शिव जी पढ़े। भरम की पोथी श्री नाथ जी पढ़े।।
सच कहे तो मारिये, होली जात समीत। अपने अपने स्वार्थ के, सब कोई गावें गीत।।
क्या पण्डित कथे कहानी, क्या माखन मांगे पानी।
पढ़ पढ़ कागज काले खोये। भोरे भये जब शीसूं रोये।।
क्या तुम देश दिशान्तर जाई। क्या तुम खोजो घट के मांही।।
तेरे घट का भेद न पाया। जल में डूबे मरे तिसाया।।
क्या काजी कज्जल पाया, क्या पंडित चौका दीने। तन मन सच्च नहीं कीने।।
तन मन कर लागी काही। क्या भौदूं सेज बिछाई।।

भेख लिया क्या बाणा। जिन पर दुःख नहीं जाणा।।
तेरे हृदय राम न आया। घिस घिस चन्दन तिलक लगाया।।
जती कहाय जुगता। मन में हुआ न मुकता।।
हम योगी हम घरबारी। हम सेवक हम मठधारी।।
क्या हुआ जब मूण्ड मुण्डाय। क्या हुआ शिर जटा रखाय।।
सुरत निरत का मेला। हाथ बैठा चेला।।
जप तप सुमिरण नही किया। जाते का क्या पकड़ लिया।।
कहता है पुकार पुकारा। बिन सतगुरु तेरे घट में घोर अन्धेरा।।
क्या भगवा साफी पीला। क्या वस्त्र पहिरे नीला।।
क्या वैरागी क्या सन्यासी। जिन माया नहीं त्यागी।।
क्या तुम भये उदासी। कटी न यम की फाँसी।।
क्या तुम भये दूधाधारी। जिसका मन मनसा नहीं मारी।।
मन मनसा ठहरानी। जैसा पीया दूध जैसे पीया पानी।।
एक गाढ़ा सा पत्थर जल में पड़िया। जब काढ़या कूढ़ा हो तरिया।।
एक बात अटक रही भारी। कोई कोई योगीश्वर को लगेरी प्यारी।।
हरी का सेवक रंगा चंगा। उज्जवल काया निर्मल अंगा।।
रोहड़ी सक्खर भक्खर, विच ख्वाजे का थान। घोड़ा चोली परसो सिद्धो, उपजे ब्रह्मज्ञान।
दायी भुजा भानु का, फिर उगन का नांही। मन की मिट गई वासना, ब्रह्मज्ञान के मांही।
और ज्ञान सब ज्ञान है, ब्रह्मज्ञान सो ज्ञान। जैसे गोला तोप का करता चले मैदान।
पूर्ण ब्रह्म बसे घट मांही। न कहीं आवे न कहीं जाई।
इतना ब्रह्मज्ञान समपूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

तिलक-ज्ञान

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
ॐकार तिलक ज्ञान, सिद्धां कारण देह बनी। पुरो बसन्ती माता बैठी।।
सत पूर्णी देवी विद्या देवो भरपूर। सन्तोषी सतगुरु का चेला, बैठे अटल वृक्ष की छाया।।
ऊँचे चढ़कर देख तमाशा, नाचे कूदे हर की माया।।
कहे गुणवन्ता सुन बुधवन्ता, कलियुग मध्ये कैसे रहिये?
आंखां न देखे, कानां न सुने, मुख से कुछ न कहिये।।
सत्गुरु कहे हमारी गहरी बाणी, जिसने प्रगट किया सकल पसारा।
ले दीपक दरयाव में बैठे, चहूँ दिश हुआ उजियाला।।
ॐ गुरुजी जल सोधूं थल सोधूं, सोधूं जलाबिम्ब की काया।

नव मास गर्भवास में रह्या, सत्गुरु स्वामी जी क्या उपदेश बताया?
शब्द की कुञ्जी शब्द का ताला शब्द से घट पिण्ड में हुआ उजियाला।
जिस शब्द से खोजन्ते पुजन्ते, श्री शम्भूयती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।।
जहां गोरक्ष तहां ज्ञान गरीबी। पाटी कन्था सार की डिबी।।
आपा खोजो फिरो गरीबी। हठकर सिद्धो धुन्धुवाद नहीं करना।।
यह संसार सागर कांटे की बाड़ी, निरत सुरत पग धरना।।
कांटे बिना न काँटा निकले, कुञ्जी बिना न ताला।।
सिद्ध बिनां साधक न निपजे, कैसे गुरु जी घट में होय उजियाला।।
अलख पुरुष मेरे ह्रदय में समाया, संसे भया अपूठा।।
जब लग सिद्धो तन, मन नहीं खोजो, कथे पढ़े सब झूठा।।
सहज स्वभाव से तृष्णा मेटो, सिंगी नाद शिव मेला।।
विष रस छोड़ अमीरस पीवो, गुरु बहुरंगी फिरे अकेला।।
दर्पण मांही दर्शन देखो, ज्ञान कथे न कोई।।
आपा मध्ये आपा देखो, ज्ञान कथे न होई।।
चकमक ठुनका आगे लागे, दूध भाव घी अमृत हो जाई।।
आपा खोजो मूल विचारो, गुरु सन्देशा देना।
सूरज के संशय मत लागो, कूंजी चान्दन हुआ।।
कहे गुरु जी सुन रे बालका! एक तन्त से इतना कीजे! टाला टले न सोइ।
निश्चय होय तो आप निपजे, नहीं तो सहजे नवेड़ा।।
जिन लूटी तिन खबर न पाई, घिस घिस इन्द्री डण्डी।
योग युक्ति की मर्म न जाने, सूरत बिगाड़ी रण्डी।।
बान्धो रे मना बहु गुनिया, धातु जग खाया।
काल पुरुष का मर्म न जाने, छोड़ भगवती माया।।
ज्यों लकड़ी में घुण लागे, ज्यों लोहा लागे काही।
बिना परिचय गुरु कैसे भेटे, काल ग्रासी आई।।
रांडी तजे न षसिया जीवे, पुरुष तज्या न नारी।
कहेनाथ जी दोनों बिनसे, धोखे की असवारी।।
अग्नि मुख में ब्रह्म उत्पन्न, सुघड़ मुण्डाया बानी।
सुमेर पर्वत से ब्रह्म उत्पन्न, युक्ति जमाया पानी।।
युग माण्डे योगेश्वर हुए, शिव शक्ति घर मेला।
हाली बिना न खेत में दाना, तालीम बाग समाया।।
बरसे मेघ कूके सावन, नदिया भर भर आई।

धन धान्य भरा भंडारा क्षेत्र में चौमासा बरसे।।
देखो सिद्धो! ऐसा समय हमारा। आशा तृष्णा थिर कर बैठो, पद परसे सुख
जैसे सर्वर (सरवद) का पात्र निपजे, तैसे निपजे मेरी जलांबिम्ब की काया।।
पर्व देही परचाया घाटी, कर्म हमारा योगी।
गुरु हमारे गोरक्ष योगी, मेटे परम दुःख रोगी।।
नवग्रह बान्ध अग्नि मुख होऊं, धुन धुन लावूं डोरी।
अलख निरंजन दो अक्षर वाचूं, अगम अगम कर लेना।
हंसा बिन्द में बुन्द न टपके, सर्वर बान्धी देना।।
कहे नाथ जी सुन रे बच्चा ! हमारा गगन घर मे वासा। अधूरा इन्द्र वर्षा
प्राण पुरूष मेरे पिंजर बिल में, दिन दिन कला सवाई।।
ऐसी रहनी रहते साधू, वेद न कतेब। रमते गमते को क्या उपदेश?
मालुम होय समझ चलिये पग, पंछी धोखे जन्म गवाई।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

ज्ञान–गोदड़ी

सत नमो आदेश गुरुजी को आदेश।। ॐ गुरुजी !
नाथ कहे दोउ कर जोरी। यह संशय मेटो प्रभु मोरी।।
काया गोदड़ी का विस्तारा। तां से होय जीवन निस्तारा।।
आदि पुरुष इच्छा उपजाई। इच्छा शक्ति निरंजन मांही।।
इच्छा ब्रह्मा, विष्णु, महेशा। इच्छा शारद गौरी गणेशा।।
इच्छा से उपजा संसारा। पांच तत्व गुण तीन पसारा।।
अलख पुरुष जब किया विचारा। लक्ष चौरासी धागा डारा।।
पांच तत्व की गोदड़ी बीनी। तीन गुणों से ठाड़ी कीनी।।
तां में जीव ब्रह्म है माया। सद्गुरु ऐसा खेल बनाया।।
सींवन पांच पच्चीस सो लागे। काम क्रोध मद मोह त्यागे।।
अब काया गोदड़ी का विस्तारा। देखो संतो अगम अपारा।।
चन्द्र सूर्य दोउ चंदोआ लागे। गुरु प्रताप से सोवत जागे।।
शब्द की सुई सुरति का डोरा। ज्ञान का टोपा निरंजन ओढ़ा।।
इस गोदड़ी की कर होशयारी। दाग न लागे देख बिचारी।।
सुमति के साबुन सतगुरु धोई। कुमति के मैल को डारे खोई।।
जिन गुदड़ी का किया विचारा।। उनको भेंटे सिरजनहारा।।
धीरज धूनी ध्यान धर आसन। जत की कोपीन सत्य सिंहासन।।

युक्ति कमण्डलु कर गहि लीना। प्रेम पावड़ी सतगुरु चीन्हा।।
सेली शील, विवेक की माला। दया की टोपी, तन धर्मशाला।।
मेहर मतंगा, मति की साखी। मृगछाला मन ही की राखी।।
निष्ठा धोती, पवन जनेऊ। अजपा जपे सो जाने भेऊ।।
रहे निरन्तर सद्‌गुरु दाया। साधों की संगत से कुछ पाया।।
लय की लकुटी, हृदय की झोली। क्षमा खड़ाऊँ पहिर बहोरी।।
युक्ति मेखला, सुकृत सुमरनी। प्रेम प्याला पीले मौनी।।
दास कूबरी कलह निबारी। ममता कुत्ती को ललकारी।।
यतन जंजीर बान्ध जो राखे। अगम अगोचर खिड़की लाखे।।
वीतराग वैराग्य निधाना। तत्व तिलक दीनो निर्वाना।।
गुरु गम चकमक, मन सम तूला। ब्रह्म अग्नि प्रगट भई मूला।।
संशय शोक सकल भ्रम जारे। पांच पच्चीसों प्रगट मारे।।
दिल के दर्पण दुविधा धोई। सो योगेश्वर पक्का होई।।
सुन्न महल की फेरी देई। अमृत रस की भिक्षा लेई।।
सुख दुख मेला जग का भावे। त्रिवेणी के घाट नहावे।।
तन मन खोज भया जब जाना। तब लख पावे पद निर्वाना।।
अष्ट कमल दल चक्र सूझे। योगी आप आप में बूझे।।
इड़ा पिंगला के घर जाई। सुषुम्ना नीर रहा ठहराई।।
ॐ सोहं तत्व विचारा। बंक नाल में किया संभारा।।
मनसा मार्ग गगन चढ़ जाई। मानसरोवर बैठ नहाई।।
छुट गई कल्मष मिले अलेखा। इन नैनों से अलख को देखा।।
अहंकार अभिमान विडारा। घट में चौका किया उजियारा।।
श्रद्धा चंवर प्रीती की धूपा। निष्ठा नाम गुरु का रूपा।।
अनहद नाद नाम की पूजा। ब्रह्म वैराग्य और नहीं दूजा।।
चित्त का चन्दन तुलसी फूला। हित का सम्पुट करले मूला।।
गोदड़ी पहरी आप अलेषा, जिसने चलाया प्रगट भेषा।।
जो गोदड़ी को पढ़े प्रभाता। जन्म जन्म का पातक जाता।।
जो गोदड़ी को पढ़े मध्याना। सो नर पावे पद निर्वाना।।
सन्ध्या सिमरण जो नर करे। जरा मरण भवसागर तरे।।

जो गोदड़ी की निन्दा करे। षट् दर्शन से वह नर टरे।।
कहे मत्स्येन्द्र सुनो गोरक्षनाथ। ज्ञान गोदड़ी करे प्रकाश।।
।। इति ज्ञान गोदड़ी सम्पूर्ण सही।।
गादी पर बैठ श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

आत्म-ज्ञान

ॐ गुरु जी आसन करूं पद्मासन करूं, पिछला आसन पवन को साधूं।
मन मुंडावूं लावे तालू, गगन शीश में होय उजालू।।१।।
आसन बैठे माया बन्ध, पवन खेले चौसठ संध।
नऊ दरवाजे नवै तालू, दसवां मध्ये होय उजालू।।२।।
ऐसा भुवंगम जोगी करे, धरतरि सोषे अम्बर भरे।
गगन में पवन सुरति ताणी, धरतरी पर पानी अम्बर आनी।।३।।
ता जोगी की जुगति पिछानी, मन पवन ले उनमुन आनी।
मन पवन ले उनमुन रहे, तौ काया गरजे जती गोरष कहै।।४।।
चढ़े महारस अमृत भरे, ऐसा आरंभ जोगी करे।
शक्ति उलटे चढ़े ब्रह्माण्ड, नस नस पवन खेले नव खण्ड।।५।।
चन्द्र उल्टे राहू को ग्रासे, सूर्य उलटे केतु को ग्रासे।
शशि द्वार में सूरज स्थिर रहे, तत्त्व भाष जोगेश्वर कहे।।६।।
अर्धे जाता ऊर्ध गहे, द्वादश पवना उन्मुन रहे।
अहिनिशि बाई धुनि में बाजै, पश्चिम द्वारे पवना गाजे।।७।।
अब अन्दर ब्रह्म अग्नि प्रजाले, पंच चोर ले ज्ञान संभाले।
अपने घरी दीवाला दीपै, ता जोगी की काया काल न छीपै।।८।।
हले हले पवन काया गरजे, सूरा होई अभिअन्तरि झूझे।
ज्ञान खड़ग लै झुझिबा द्वार, अजीति जितिबा पंच गही सार।।९।।
अष्ट पर्वत असाध साधिबा, नव द्वारा दृढ़ करि बांधिबा।
दस दरवाजै कूंची सार, मैमन्त हस्ती बांधिवा बार।।१०।।
भीतर राजा जूझनहार, चहूं दिसि जाता राष्या मार।
राजा जूझे विषय में धाई, मन पवन ले रहे समाई।।११।।
मन पवन की विषमी संधि, चन्द सूर दोऊ सम कर बंधि।
नौ सौ नवासी सायर सोषे, जोगी सोषे सदा भरि पोषै।।१२।।

बिन पुस्तक पढत पुराण, सरस्वती उच्चरे ब्रह्म ज्ञान।
अज्र सोषै बज्र करै, सब दोष काया ले लहे।।१३।।
खेरै खोजै लावे बंध; तो अजरामर थिर होय कंध।
सोषै पोषै जालै बालै, अहनिसि ब्रह्म अग्नि परजालै।।१४।।
अहनिसि अग्नि पाप कूं खाई; संधै संधै पवन लुकाई।
मन होय धीर थीर बहे पवन, शिवपुरि जाता राखै कवन।।१५।।
ब्रह्मसागर सोषै बंध ज्यंदु, क्षीर सागर सोषे अजरामर कंद।
बज्र कछोटा आसन करै, रोग व्याधि क्षुधा सब हरै।।१६।।
जड़ी बूटी बोवे मति कोई, पहली रांड वैद की होई।
जड़ी बूटी अमर करे, तो वैद धनवन्तर काहे को मरे।।१७।।
सोने रूपे सीझे काज, तो कत राजा छोड़े राज।
पसुवा होय जपे नहीं जाप; सो पसुआ मोषि क्यूं आप।।१८।।
ऋद्धि सकेले रोलांणी धरै; गुरु न षोजै मूरिख मरे।
रोलानी आगे बैसे फूली; गुरु की वाचा गया जे भूली।।१९।।
अकल पुरिष के सकल न्याव; मीठा बोलै झूठा भाव।
सत बोले सोई सतवादी, झूठ बोले सो महापापी।।२०।।
देखन भौंदू विषिया धाई, झूठा बोलै मरि मरि जाई।
जैसा करे सो तैसा पाय, येकोतर सै पुरिषा नरकि ले जाय।।२१।।
एक पुरुष बहु भांति नारी, सरब निरन्तर आत्मा सारी।
सरब निरन्तरि भरि पूर रह्या, आतम ज्ञान सम्पूर्ण कहिया।।२२।।
जो आतम ज्ञान पठन्ते, कथन्ते, गुणवन्ते, मुक्ति फल पावन्ते।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

योग-ज्ञान-चालीसा

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
ऊँकार नाद से उत्पन्नी माया, आदि नाथ संग पार्वती माता।
सुन पार्वती! कहे महादेव, भेद नाद बिन्द का जाने बिरला।।१।।
ॐ आदि नाथ मुखै ज्ञान प्रगटाया, पर जोग निद्रा भई माता गौरजां।
शब्द शब्द पर हुंकार आया, ध्यान ज्ञान से भेद को पाया।।२।।
क्षीर सागर तट में हुंकार समाया, राघौ मत्स्य गर्भ बालक बैठा।
गर्भ ज्ञान शिव ने कहाया, मत्स्येन्द्र नाम का जोगीन्द्र प्रगटा।।३।।
सतगुरु ज्ञान को धारण कीन्हा, तब पीछे सिद्धों को दीन्हा।

देखो सिद्धो! यही ज्ञान अनन्त कोटि सिद्धों को गुरु गोरष ने पढ़ कथ कर सुनाया।।४।।
आदिनाथ पारब्रह्म शिव शक्ति, प्रथम आदि उत्पत्ति माया।
ऊँकार रूप नाद कहाया, बिन्दु रूप की बोलिये काया।।५।।
उदै भईला सूर अस्त भईला चन्दा, दुहू बीच कल्पना काल का फंदा।
उदै ग्रह अस्त एक करि वासा, तब जानिबा जोगीन्द्र जीवन आसा।
बारह कला रवि सोलह कला शशी, चारी कला गुरुदेव निरन्तर बसी।।६।।
हीन पद सुराया लागा हंसा, तन का तेज ले उड़िया हंसा।
हंस का तेज लै थिर रहै काया, काल का भेद कहो गुरु राया।।७।।
द्वै पख छेदी एक है रहना, चन्द सूर दोऊ सम करि गहना।
ऊंच भ उपरै मध्य निरन्तरे, ता तलि भाठि जराई।।८।।
सीजी अमीरस कंचन हुआ, यहि विधि पिंजरे बिनवै सुआ।
उपजंत दिसंत निपजत नाहीं, आवरण नास्ति संसार माही।।९।।
बूझिलै! सतगुरु बुद्धि भेद सिद्ध संकेत, परचा जानी लगावो हेत।
उरम धूरम जोति ज्वाला, नौ कोटि खिड़की पूर ले ताला।।१०।।
ताला न टूटे खिड़की न भाजै, पिण्ड पड़े तो सतगुरु लाजै।
भरे सागर धुनि धूसर कूँची, तहां सकल विध है सोई सूची।।११।।
इहि विधि योगी अतीत होई, अमर पद ध्यावत विरला कोई।
सहज भरे अष्ट पग धरणा, ज्ञान खड़ग ले काल संहरना।।१२।।
अमर कोट काया एक ब्रह्म मध्ये, जीत ले यमपुरी राखिले कन्धे।
आत्मा झूझ जती गोरखनाथ किया, संसार विनाशा आपन जीया।।१३।।
झूझंति सूरा बूझंति पूरा, अमर पद ध्यावत गुरु ज्ञान बंका।
दल को मारि जंजाल को जीतिले, निर्भय होई मेटिले मन शंका।।१४।।
अझूझ झूझि ले पैस दरिया, मूल बिन वृष अमीरस भरिया।
तन मन ले करि शिवपुरी मेला, ज्ञान गुरु योगी संसार चेला।।१५।।
मन राई चंचल थान स्थिति नाहीं, बांधि लै पंच भूत आतमा माही।
अलष अकथ चछुबिन सूझिया, सिद्धां का मारग साधके बूझिया।।१६।।
परख बिन गुरु करे, युगति बिन बहि मरे, विचार उपरान्त कछु ज्ञान नाहीं।
भ्रम भूले तो बहि चले पंडिता, उतरे पार ते फिरी समाहिं।।१७।।
सबद की पारखा नहीं सबद हुवा, ज्ञान की पारिखा जीवता मूवा।
रहनी करनी मुखे प्रकास, नासिका जानति पहुप की बास।।१८।।
उलटी यन्त्र धरे, शिखर आसन करै, कोटि सर छूट घाव नाहीं।
सिलहट मध्ये कावरू जीति लै, निर्मल धूनि गगनां माहीं।।१९।।
मन की भ्रमना तब छूटत होई योगीन्द्र, जब विचारंत निहसबद की बाणी।

नैन कै दाता, सार धरि पीसीबा, तब योग पद दुर्लभ सत्य करि जानी।।२०।।
उलटी गंगा चलै; धरनि ऊपर मिले, नीर में पैसि करि अग्नि जाले
घटहि मै पै सिखर कूप पानी भरे, तब पई परि पुरुषा आप उजालै।।
ज्ञान के प्रगटे श्री शंभूनाथ राया, अकल अकथ जती गोरख नाथ ध्याया।।२१।।
संसार में भ्रम्या सरब भ्रम सोई, निज पद पीवता बिनस्या न कोई।
बजरंग कोटड़ी पर दल पूरा, पंच मुवा सब जग पहुंचा सो सूरा।।२२।।
मन सौ जूझणा खांडा न लागे, शून्य गढ़ रमि रहे तो दीप धूनी जागै।
धरणी न सोखे अग्नि न खाई, बेली न रस ले भौरा न जाई।।२३।।
कथनी कथी हो पंडित रहनी न पाई, आचार के बदले मनसा गमाई।
कथत श्री शंभू नाथ सुनो नर लोई, भ्रम में भूल्या सो बहुरा न कोई।।२४।।
भूल्या सो भूल्या बहुरि चेतना, संसार के लोहे आपा न रेतना।
भेष तजि भ्रम तजि राखी सत्य सोई, तत विचारता देवता होई।।२५।।
आपा सोधो ब्रह्म निरोधो, सहज पलटी जोती।
काया के भीतरि मणि माणिक निपजे, तहां धुनि धुनि बरसे मोती।।२६।।
अरध उरध सम्पुष्टी करीजै, शंखनि नाल अमीरस दीजै।
अखण्ड मण्डल तहां नाद भेटी लै, हरि आसन तहां भक्ति करीलै।।२७।।
अलेष मन्दिर तहां शिव शक्ति निवासा, सहज सुन्न भया प्रकाशा।
तहां चन्द बिना चाँदन, अग्नि बिन उजाला, ए तन भेद अन्त वृद्ध बाला।।२८।।
करतार तजि हू आसक्त हू न जाई, मन मृग राखिले बाड़ी न पाई।
आकाश बाड़ी पाताल कुवा, भरी भरी सींचता जो सिद्ध हुआ।।२६।।
अवधू अमर कोट काया, आलेख दरवाजा।
ज्ञानी गढ़ आसन, प्राण भयो राजा।।३०।।
अवधू फेरी ले तो तत सार बुद्धि सांच।
नहीं तौ लौहा, गढ़िले तो कंचन, नहीं तो कांच।।३१।।
अवधू सिधां पाया साधक पाया, ते उतरिया पार।
कथंत जती गोरक्षनाथ; चेते न जानत विचार, ले जलि भये अंगार।।३२।।
अवधू ऐसा नगर हमारा, तिहाँ जीव आवो ऊजूद्धारं।
अरध उरध बजार मांडया है, गोरख कहे विचारं।।३३।।
हरि प्राण पातिसाह विचार का जी, पंच तत ते उजहदार।
मन पवन होऊ हस्ती घोड़ा, गिनान्ते अखै भण्डार।।३४।।
काया हमारी शहर बोलिये, मन बोलिये उहजदार।
चेतन पहरै कोटवाल बोलिये, तो चोर न झंके द्वार।।३५।।

तीन सौ साठ चीरा गढ़ रचीलै, सोलह खनि ले खाई
नव दरवाजा प्रगट दीसै, दसवां लख्या न जाई।।३६।।
अठारह भार कोट कंठ अजरा लाइलै, बहातर कोठड़ी निपाई।
नव सत्र ऊपरे जंत्र फिरै, तब काया गढ़ लिया न जायी।।३७।।
अनहद घड़ी घड़ियाल बजाइलै, परम जोति दुइ दीपक लाई।
काम क्रोध दोइ गरदनि मारिलै, ऐसे अदली पातसाही बाबै आदम चलाई।।३८।।
तहां सत बीबी सन्तोष साहिज़ादा, सीमा भक्ति द्वै दाई।
आदिनाथ नाती, मत्स्येन्द्र पूता, काया नगरी गोरख बसाई।।३९।।
ऐसा रे उपदेश दाखे श्री गोरखराया, जिनि जग चतुरवरन राह लाया।
पढ़िले सुसंवेद, करिलै विधि निषेध, जानि ले भेदान भेद, पूरिले आसा उमेद।।४०।।
विषमी साधे तत्त मंसारी (मंझारी), संझाया पंचौ बखत सारि।
रहिबा दसवे द्वारी, सेइबा पद निराकार।।४१।।
जप ले अजपा जाप, विचार ले आपे आप। छूटिला सब बियाप, लिपे नाहीं तहां पुण्य पाप।
अहोनिसि समोध्यान, निरंतर रमेबा राम। कथे गोरक्ष नाथ जी ज्ञान, पाईला पद निर्वान।।४२।।
इतना योग ज्ञान चालीसा जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

गोरक्षबोध

(गोरक्षमत्स्येन्द्र सम्वाद)

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! तुम गुरु गुसांई, अम्हे तो शिष्य, शब्द एक पुछिबा;
दया करि कहिबा, मन मध्य न करिबा रोषम्।
आरम्भी चेला किस विधि रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।१।।

भावार्थ– गोरक्षनाथ जी अपने श्री गुरुदेव से पूछते हैं कि स्वामी जी! मैं एक शब्द शिष्य होकर पूछता हूँ जिसका उत्तर कृपा कर कहो। यह मन कैसे वश में होता है? शिष्य को प्रारम्भ में साधक अवस्था में कैसे रहना चाहिये? शिष्य के प्रश्नों का सत्य उत्तर समझाकर देवें, क्योंकि आप सतगुरु हैं।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! रहिबा घाटे बाटे, रूख वृक्ष की छाया।
तजिबा काम, क्रोध, लोभ, मोह, संसार की माया।।

आप सो गोष्ठी अनन्त विचार, खण्डित निद्रा अल्प आहार।
आरम्भी चेला इस विधि रहे, गोरक्ष सुने मत्स्येन्द्र कहे।।२।।

भावार्थ– हे शिष्य! साधक आरम्भिक अवस्था में, किसी जगह जगत् प्रपंची पुरुषों में न रहे और मार्ग धर्मशाला या किसी वृक्ष की छाया में विश्राम करे। संसार की संसृति, ममता, अहंता, कामना, क्रोध, मोह, लोभ वृति की धारणाओं को त्याग कर अपने आत्मतत्व का चिंतन करे। कम भोजन तथा निद्रा आलस्य को जीत कर रहे।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन देखिबा? कौन विचारबा? कौन तत्व ले धरिबा सारम्?
कौन शब्द ले मस्तक मुंडाइबा? कौन ज्ञान ले उतरिबा पारम्।।३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक को क्या देखना चाहिए? क्या विचार करना चाहिए और किस तत्व में वास करना, किसके लिये शिर मुंडा कर किस ज्ञान को लेकर पार उतरना चाहिये?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! आपा देखिबा, अनन्त विचारबा, पंच तत्व ले धरिबा सारम्!
गुरु का शब्द ले मस्तक मुंडाइबा, ब्रह्मज्ञान ले उतरिबा पारम।।४।।

भावार्थ – हे शिष्य! अपने आपको देखना, अपने समान अन्य लोगों को मानकर अनन्त अगोचर को विचारना और पांच तत्वों के तात्विक स्वरूप में वास करना, गुरु के नाम शब्द ले मस्तक मुंडावे तथा ब्रह्मज्ञान को धारण कर भवसागर से पार उतरना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

स्वामी जी आदेश का कौन उपदेश? सुंनि का कथं वास।
सबद का कौन गुरु? बूझत गोरषनाथ।।५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! आदेश का कौन उपदेश है और सुन्न का वास कहां है? सबद का गुरु कौन है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! आदेश का अनुपम उपदेश, सुंनि का निरंतर वास।
सबद का परचा गुरु, कथंत मछिन्द्रनाथ।।६।।

भावार्थ – हे अवधू! आदेश का अनुपम उपदेश और सुन्न का निरंतर वास है। शब्द का परचा (परिचय) गुरु व अनुभव प्रभाव है।

गोरक्ष उवाचः

गुरुजी! मन का कौन रूप? पवन का कौन आकार?
दम की कौन दशा? साधिवा कौन द्वार?।।७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! मन का स्वरूप क्या है? पवन का आकार क्या है? प्राणों

की दशा क्या है? और किस द्वार की साधना करनी चाहिये?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन का शून्य रूप, पवन का निरालम्ब आकार।
दम की अलेष दशा। साधिबा दशमा द्वार।।८।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन का शून्य रूप है, पवन का निराकार (निरालम्ब) आकार है, दम की अलेष दशा और दसवें द्वार की साधना करनी चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरु जी! कौन वृक्ष बिन डाल? कौन पंख बिन सुवा?
कौन पाल बिन नीर? कौन काल बिना मुवा?।।९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! बिना डाल के वृक्ष क्या है? पंखों के बिना पक्षी कौन है? किनारे बिना नीर कौन है? और काल बिना कौन मरता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! पवन पेड़ बिन डाल, मन पंख बिन सूवा।
धीरज पाल बिन नीर, निद्रा काल बिन मुवा।।१०।।

भावार्थ – हे शिष्य! वायु बिना पेड़ के डाल (टहनी) है। मन बिना पंखों के पक्षी, धीरज बिन पाल का नीर और बिना काल मृत्यु रूप नींद है।

गोरक्ष उवाचः

गुरुजी! कौन बीरज? कौन क्षेत्र? कौन श्रवण? कौन नेत्र?
कौन जोग? कौन युक्ति? कौन मोक्ष कौन मुक्ति।।११।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस खेत में बीज क्या है? श्रवण क्या है? नेत्र क्या है? जोग में जुगति क्या है? मोक्ष और मुक्ति किसको कहते हैं?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन्त्र बीरज मति क्षेत्र, सुरति श्रवण, निरति नेत्र।
करम जोग धरम युक्ति, जोति मोक्ष ज्वाला मुक्ति।।१२।।

भावार्थ – हे शिष्य! बुद्धि रूपी खेती में मंत्र जप का बीज फल देता है। अन्तःकरण (सुरतां) रूप वृत्ति को श्रवण (नादनुसन्धान) द्वारा निश्चयात्मक रूप से दृष्टिगत करना निरति है। इसे चक्षु–दृष्टि–क्षेत्र कहते हैं। कर्त्तव्ययोग (कर्मयोग) धर्म ही योग युक्ति और त्राटक साधन (त्रिकुटी स्थान पर ध्यान) से ज्योति दर्शन ही बिना ज्वाला की मुक्ति है।

नोट : चक्षु–दृष्टि–क्षेत्र भी पचास के दशक पूर्व वेदान्तियों के लिए वाद–विवाद का विषय रहा है जिसका निर्णय किये बिना ही विवाद का अन्त हुआ है। सम्पादक

गोरक्ष उवाचः

गुरुजी! कौन मूल? कौन बेला? कौन गुरु? कौन चेला?
कौन क्षेत्र? कौन मेला, कौन तत्व ले रमे अकेला?।।१३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! वृक्ष को मूल का सहारा क्या है? गुरु कौन है, चेला कौन है? स्थान क्या है? मिलाप क्या है? और किस तत्व को धारण करके अकेला विचरण करता है।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन मूल पवन बेला, शब्द गुरु सुरती चेला।
त्रिकुटी क्षेत्र? उल्टे मेला, निर्वाण तत्व ले रमे अकेला।।१४।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन रूपी मूल का पवन रूपी बेल (सहारा) है। शब्द (सतगुरु) ही अन्तःकरण (सुरति) का गुरु है। शब्द से सुरति का मिलाप होता है, निर्वाण या सहस्रार के आधार पर निर्वाण तत्व (निवृति) मार्ग में अकेला विचरण करो।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन घर चन्दा? कौन घर सूर? कौन घर काल बजावे तूर?
कौन घर पंच तत्व सम रहे? सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।१५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! स्वरोदय में चन्द्र कहाँ है? सूर्य का स्थान कहां है? काल किस घर में नाद बजाता है? पांचों तत्व बराबर किस स्थान पर रहते हैं।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन घर चन्दा, पवन घर सूर, सुन्य घर काल बजावे तूर।
ज्ञान घर पंच तत्व सम रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१६।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन के स्थान में चन्द्र, पवन के संग में सूर्य, शून्य के स्थान में काल का नाद बजता है, ज्ञान के स्थान में पांचों तत्व सम रहते हैं।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन अमावस? कौन सी पड़िवा? कहाँ का अमिरस? कहां ले चड़िबा?
कौन स्थान मन उनमन रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे?।।१७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! स्वर स्थान में अमावस क्या है? पड़वा (शुक्ल प्रतिपदा) क्या है? कहां का महारस आनन्द लेकर कहां पर चढ़ता है? किस स्थान पर मन का अवधान (अन्तर्ध्यान) एवं लय होता है।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! रवि अमावस, चन्द्र सो पड़िवा, अर्ध का महारस ऊर्ध ले चड़िबा।
गगन स्थाने मन उनमन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१८।।

भावार्थ – हे शिष्य! सूर्य स्वर अमावस, चन्द्र स्वर प्रतिपदा, नाभी स्थान (मणिपूर) का प्राण रस लेकर (स्वर) गगन (आज्ञा चक्र) स्थाने चढ़ता और दसवें द्वार सहस्रार में अन्तर्ध्यान (अन्तर्निहित) रहता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! आदिका कौन गुरु? धरती का कौन भरतार?

ज्ञान का कौन स्थान? शून्य का कौन द्वार।।१६।।
भावार्थ – ॐ गुरुजी! आदि का गुरु ज्ञान कौन है? पृथ्वी का पति कौन है? ज्ञान का स्थान कौन है? शून्य का द्वार कहां है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! आदि का अनादि गुरु, धरती का अम्बर भरतार।।
ज्ञान का चिंतन स्थान, शून्य का परचा द्वार।।२०।।
भावार्थ – हे शिष्य! आदि का गुरु अनादि है, पृथ्वी का पति आकाश है, ज्ञान का चिन्तन में निवास है और शून्य का स्थान (परचा) ब्रह्मानुभूति है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन परचे माया मोह छूटे? कौन परचे शशिधर फूटे।
कौन परचे लागे बन्ध? कौन परचे अजरामर हो कन्ध?।।२१।।
भावार्थ – ॐ गुरूजी! किस साधन से माया मोह बन्धन की निवृति होती है? किस परचे (अनुभव, साधन) से चन्द्र सूर्य स्वर की सिद्धि होती है? किस साधन से योग बन्ध की सिद्धि तथा किस साधन से अजर अमर बंध की सिद्धि होती है।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन परचे माया मोह छूटे? पवन परचे शशिधर फूटे।
ज्ञान परचे लागे बंध, गुरु परचे अजरामर हो कन्ध।।२२।।
भावार्थ – हे शिष्य! मन के परचे (परिचय) से माया मोह की निवृत्ति, पवन को वश में करने से चन्द्र स्वर सिद्धि तथा ज्ञान सिद्धि से योग–बंध (जीव ईश्वर एकता), गुरु शब्द की प्रसन्नता से अजर अमरकन्ध (जीवन मुक्ति तत्व) सिद्धि की प्राप्ति होती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां बसे मन? कहां बसे पवन? कहां बसे शब्द? कहां बसे चन्द्र?
कौन स्थान ये तत रहे? सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।२३।।
भावार्थ – ॐ गुरुजी! मन का निवास कहां है? पवन का वासा कहां है? शब्द का निवास कहां है? चन्द्र का निवास कहां है? किस स्थान पर इन तत्वों का वास है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! हृदय बसे मन, नाभि बसे पवन, रूप बसे शब्द, गगन बसे चन्द्र।
उर्ध्व स्थान ये तत रहें, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।२४।।
भावार्थ – हे योगी! मन का हृदय में, पवन का नाभि में, शब्द का आवास रूप में, चन्द्र–सिद्धि का वास गगन (दशवें) में तथा तत्व शब्द का वासा उर्ध्व (मूलाधार स्वाधिष्ठान तथा मणिपूर) नाभि स्थान में है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! हृदय न होता तब कहां रहता मन?

नाभि न होती तब कहां रहता पवन?

रूप न होता तब कहां रहता शब्द?

गगन न होता तब कहां रहता चन्द्र?।।२५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! जब हृदय एक देश वाची स्थान नहीं था तब मन का वासा कहां था? नाभी वाचक स्थान नहीं होने से पवन कहां रहता था? रूप की उत्पति से पहले शब्द कहां था? गगन (दशवाँ द्वार) न होने से पहले चन्द्र कहां रहता था।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! हृदय न होता तब शून्य रहता मन, नाभि न होती तब निराकर रहता पवन। रूप न होता तब अकुल रहता शब्द, गगन न होता तब अन्तरिक्ष रहता चन्द्र।।२६।।

भावार्थ – हे अवधू! हृदय वाची स्थान होने से पहले मन शून्याकार रहता था, नाभि के अभाव में स्पंद अलंकार रहित पवन रहता था। रूप के अभाव में शब्द शून्य में रहता है और गगन न होने के समय चन्द्र (सिद्धि) ब्रह्म–लुप्त (ब्रह्मांड में) रहता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! राति न होती दिन कहां ते आया? दिन प्रकाश्या राति कहां समाया? दीप बुझाया ज्योति कहां लिया वासा? पिण्ड न होता तब प्राण पुरुष का कहां होता निवासा।।२७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! रात्रि न थी तब दिन कहां से आया और दिन (प्रकाश) होते ही रात्रि (अंधकार) का लीन भाव कहां हो जाता है? दीपक बुझने पर ज्योति कहां लय होती है? शरीर नहीं था तब प्राण शक्ति का कहां निवास था?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! राति न होती दिन सहजै आया, दिन प्रकाश्या राति सहजै समाया। दीप बुझाया ज्योति निरंतर लिया वासा, पिण्ड न होता तब प्राण पुरुष का शून्य होता निवासा।।२८।।

भावार्थ – हे योगी! अज्ञानान्धकार मूल माया प्रकृति स्वरूप अनिच्छा रात्रि में चेतनत्व घन शक्ति के प्रकाश का सहज ही समावेश हुआ, तब ज्ञान प्रकाश के चेतन प्रभाव से अज्ञान (तिमिर जड़ भाव) स्थितत्व में विलीन हो गया। दीपक (मानव शक्ति) के बुझने पर चैतन्य ज्योति चिदाकाश कूटस्थ (निरन्तर) में वास करती है। शरीर न होने पर प्राण का शून्य (आकाश) में निवास था।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! काया मध्ये कै लख चन्द्र? पुष्प मध्ये कहां बसे गन्ध? दूध मध्ये कहां बसे घीव? काया मध्ये कहां बसे जीव?।।२९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! शरीर में कितने लाख चन्द्र हैं। फूल में सुगन्ध का वास कहां है? दूध में घी तथा शरीर में जीव का आवास कहां पर है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! काया मध्ये नौं लख चन्द, पुष्प मध्ये चेतन बसे गन्ध।
दूध मध्ये निरन्तर बसे घीव, काया मध्ये सर्वव्यापी जीव।।३०।।

भावार्थ – हे शिष्य! शरीर में नौ लख चन्द्र हैं, पुष्पों में चेतन रूप से गंध का वास है। जिस प्रकार दूध में घी निरंतर (अन्तर्निहित) है, इसी प्रकार जीव का शरीर में निरंतर (सब स्थानों पर) वास है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां बसे चन्द? कहां बसे सूर? कहां बसे नाद बिन्द का मूल।
कहां चढ़ि हंसा पीवे पाणी? कौन शक्ति आप घरि आणी?।।३१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! शरीर में चन्द्र, सूर्य तथा नाद बिंद का स्थान कहां कहां पर है? हंसा कहां चढ़कर अमृत बूंद पीता है? किस शक्ति का प्राण के घर में वास है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ऊर्ध्व बसे चन्द्र, अधो बसे सूर, हिरदे बसे नाद बिन्द का मूल।
गगन चढ़ि हंसा पीवे पाणी, उलटी शक्ति आप घर आंणी।।३२।।

भावार्थ – हे शिष्य! ऊर्ध्व (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर) में चन्द्र तथा अर्ध (अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा चक्र) में सूर्य तथा हृदय (अनाहत) में नाद बिन्दु का मूल योग है। सहस्रार में हंस (जीवात्मा से परमात्मा होकर) तत्व रूपी अमृत का पान करता है। शक्ति अर्ध से ऊर्ध्व में अपने घर में प्रवेश करती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कथमुत्पद्यते नादं? कथं नादः समो भवेत्।
कथं संस्थाप्यते नादः? कथं नादो विलीयते।।३३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! शब्द की उत्पति कहां से होती है? और शब्द का समभाव कहां और स्थापना तथा विलय कहां होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ऊँकारदुत्थितो नादः शून्ये नादः समो भवेत्।
श्रवण ले संस्थाप्यते नादो, नादो ब्रह्म विलीयते।।३४।।

भावार्थ – हे शिष्य! ऊँकार (बीज–मन्त्र से) शब्द की उत्पति, शुन्याकाश में नाद की समता अर्थात् नाद की लीन अवस्था, आकाश (आज्ञा) के संग से शब्द (ध्वनि) की स्थिरता और निरंजन (महाकाश गगन की ध्वनि) एक्यता (नाद ब्रह्म) में शब्द का विलय हो जाता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! नादेन नादिबा बिन्देन बिन्दिबा, गगने न लाइबा आसा।
नाद बिंद जब दोउ न होयगा, तब प्राण पुरुष का कहां होयगा वासा?।।३५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! सृष्टि के आरम्भ व अन्त में नाद तथा शब्दाकाश में बिन्दु तथा वीर्य–प्रजनन–शक्ति नहीं थी। नाद बिन्दु दोनों के अभाव में प्राण पुरुष का निवास कहां होगा?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! नादे भी नादिबा बिन्दे भी बिन्दिवा, गगने भी लाइबा आसा।
नादि बिंद जब दोउ न होइगा, तब प्राण पुरुष का निरंतर होइगा बासा।।३६।।

भावार्थ – हे अवधू! शब्द, से शब्द की पहचान करे तथा बीज से उसका मिलान करे। आकाश (आज्ञा–चक्र) में इनका मिलाप (मिलान) करना चाहिये। नाद और बिन्दु जब दोनों न होंगे तब भी प्राण पुरुष का इसी निरन्तर क्रम में वास होगा।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! आकाश छूटसी निराकार होसी, पवन न होसी पानी।
चन्द सूरज दोउ न होसी, तब हंस की कौन सी निशानी?।।३७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! देहाध्यास सृष्टि के लय (प्रलय) होते समय वायु, जल, चन्द्र, सूर्यादि पांचों तत्व नहीं रहेंगे तब जीवात्मा का निवास कहां होगा? उसकी पहचान क्या होगी?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सहज हंस का खेल भणीजै, शून्य हंस का वासा।
सहजे आकार निराकार होसी, तब परम जोती हंस प्रकाश्या।।३८।।

भावार्थ – हे शिष्य! साकार सृष्टि जीवात्मा का सहज व स्वाभाविक लीला ख्याल है तथा शून्य में हंस का निवास है। जब यह आकार विलय हो जायेगा तब स्थूल सृष्टि (उत्पत्ति से पूर्व की स्थितिवश) परम ज्योति हंस का प्रकाश रहेगा।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! अमूल का कौन मूल? शून्य का कथं वास।
पद का कौन गुरु? पूछत गोरक्षनाथ।।३९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! जो सृष्टि स्वरूप वृक्ष, अमूल (बिना गौढ, जड़ के) है, तो इसका मूल कौन है? शून्य का वास कहां है। पद का गुरु (निवास) कौन है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अमूल का शून्य मूल, शून्य का निरन्तर वास।
पद का निर्वाण गुरु, कहत मत्स्येन्द्रनाथ।।४०।।

भावार्थ – हे शिष्य! अस्थिर सृष्टि का मूल तत्व (पिता) शून्य (आकाश) है। जिस निवास अर्ध बिन्दु तुरियगा में (निरन्तर) है। पद का निर्वाण (माया–उपाधि–रहित) स्वरूप है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कथमुत्पद्यते प्राणः? कथमुत्पद्यते मनः।
कथमुत्पद्यते वाचा? कथं वाचा विलीयते?।।४१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! प्राण की उत्पति कहां से हुई? मन की कहां से हुई? वा की उत्पति कहां से होकर वाणी का विलय कहां हो जाता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! शून्या दुत्पद्यते प्राणः प्राणादुत्पद्यते मनः।
मनसो जायते वाचा, वाचा मनसि विलीयते।।४२।।

भावार्थ – हे शिष्य! शून्य (आकाश की स्पंद गति) से वायु (प्राण), प्राण से मन और मन से क्रमशः वाणी का उद्‌भव हुआ और वाणी मन (मनस्तत्व) में विलय हो जाता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सरोवर? कौन सो नाला? कौन मुख होई बंचिबा काला?
जोग अगोचर कैसे लौ लहै? मन पवना कैसे सम रहे?।।४३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! स्थिर तालाब बहता रहे वह कौन है? किस मुख से यम–जाल (भव–चक्र) से मुक्ति होय? अगोचर नाद बिन्दु का योग प्राणी कैसे प्राप्त करें और मन पवन का संयम कैसे रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन सरोवर अंगुल बारा बहे, रोज करे जप थिरता गहे।
अरध उरध अगोचर लौ लहे, मन पवना ऐसे सम रहे।।४४।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन स्वरूप तालाब बारह अंगुल स्वरोदय चन्द्र स्वर में बहता रहता है और एकान्त मनन (जप स्मरण) करने से स्थिर (सुषुमना) भाव में रहता है। कुंडलिनि के अर्ध उर्ध चक्रों में स्थित अगोचर नाद की साधना से प्राणी मुक्ति प्राप्त करता है और ऐसे मन और पवन की समगति (एकता) रहती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो विषमी? कैसे सन्ध? कौन चक्र लागे बन्ध?
कौन चेतन मन उनमनि रहे? सतगुरु होय सो बुझयाँ कहे।।४५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! योग मार्ग में बाधक (स्थल) कौनसा है औंर इसे योग से जोड़ने का क्या उपाय है? चक्र–सिद्धि किस बंध से होती है? कौन चेतन मन है जो उनमुन में रहता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! इडा पिंगला विषमी सन्ध, ताके ऊपर लागे बन्ध।
सदा चेतन मन उनमन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।४६।।

भावार्थ – हे शिष्य! इडा और पिंगला विषमता को जोड़ते हैं। इनको सम करके सुषुम्ना में स्थापित करने से मन चेतना में अन्तर्मुखी होकर उन्मुनि मुद्रा में स्थित होता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां से उत्पन्न आदि? कहां आदि की स्तुति समाई?
ये तत्व कहो समझाई? कहां हमारी उत्पति रहाई।।४७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! जीवात्मा आदि में कहां से उत्पन्न हुआ? कहां विलीन होगा अर्थात् व्यापक कहां है और कहां समा जायेगा? इस तत्व को समझा कर आदि, मध्य, अन्त जनक स्थिति में हमारी उत्पति को कहो।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! तिलमध्ये यथा तैलं, काष्ठमध्ये यथानलः।
पुष्पमध्ये यथा बासंस्तथा देहे निरंजनः।।४८।।

भावार्थ – हे शिष्य! जीवात्मा का व्याप्त–भाव सदैव इस शरीर में तिलों में तेल, लकड़ी में अग्नि, फूल में सुगन्धी की भांति चैतन्य अवस्था में रहता है। जीवात्मा अनादि, सत्य व अविनाशी है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! सर्पिणी कुहंते कौन सुभाव? बंकनाल है कौन ठांव?
कहां कहां प्राण निद्रा करे, पिण्डमध्ये प्राण कहां होई स चरै।।४६।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! नाभि चक्र में कुंडलिनी (सर्पिणी) किस स्वभाव से स्पन्दन करती है? बंक नाल (श्वाच्छोश्वांस) का मूल स्थान कहां है? प्राण कहां कहां शयन करता व शरीर में प्राण कहां कहां होकर विचरण करता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सर्पिणी कुहकै सहज सुभाव, बंकनाल है नाभि ठांव।
मनमध्ये प्राण निद्रा करे, पिण्ड मध्ये प्राण अवछिन्न होई रहे।।५०।।

भावार्थ – हे शिष्य! साधना–स्थल (शरीर) में सर्पिणी (नागनी) नामक गोलाकार नाड़ी है, जिसका मुख सदैव ऊपर रहता है, जिसे पश्चिमोत्थान नामक आसन द्वारा जाग्रत कर निम्नोन्मुखी करि के योगी अमृत पान करते हैं। बंक नाल नाभि स्थान में है। मन में प्राण लीन होता है तथा शरीर में प्राण अविछिन्न (तारतम्य में निरन्तर एवं समान रूप से चैतन्य) होकर स्वच्छन्द एवं व्यापक रहता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन चक्र में दृढ़ कर चन्द? कौन चक्र में लागै बन्ध।
कौन चक्र में पवन निरोधे? कौन चक्र में मन प्रमोद?
कौन चक्र में धरिये ध्यान? कौन चक्र लीजै विश्राम?।।५१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! प्रकाशमय ज्योति की प्राप्ति चन्द्र किस चक्र में करता है? किस चक्र के बन्ध से अमृत प्राप्ति होती है? किस चक्र साधन में प्राण वायु वशीकर (स्थिर) होती है और मन को शिक्षा किस चक्र साधन से प्राप्त होती है? किस चक्र में ध्यान करना तथा किस चक्र साधन से चित्त विश्राम होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अरध चक्र में दृढ़ कर चन्द, उरध चक्र में लागे बन्ध।
नाभि चक्र में पवन निरोधे, हृदय चक्र में मन परमोधे।।
कण्ठ चक्र में धरिये ध्यान, ज्ञान चक्र लीजै विश्राम!।।५२।।

भावार्थ – हे शिष्य! अनाहत, आज्ञा, विशुद्ध (अर्ध) चक्र में चन्द्र को स्थिर करना और ऊर्ध्व (मूलाधार, स्वाधिष्ठान व मणिपूर) चक्रों में पुनः स्थापित करना चाहिये। नाभि (मणिपूर) चक्र में प्राण वायु का निरोध करना तथा हृदय चक्र में मन का सन्धान करना चाहिये। कण्ठ चक्र में ध्यान और आज्ञा–चक्र में विश्राम करना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन उपदेश माया शून्य? कौन विचारे पाप न पुण्य?
कौन ग्रह ले मन उनमन रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।५३।।

भावार्थ – ॐ गुरूजी! माया की हद किस शून्य तक है? किस विचार से पाप–पुण्य की प्राप्ति नहीं होती है? किस ग्रह (घर या चक्र) को लेकर मन में उनमुन (ध्येय–मग्न) रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! तत्वोपदेश माया शून्य, नवग्रह विचारे पाप न पुण्य।
शिव शक्ति ले मन उनमुन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।५४।।

भावार्थ – हे योगी! तत्व ज्ञान के उपदेश से माया के भ्रम का नाश होता है। नवग्रहों (नव द्वारों) का विचार पूर्वक यत्न एवं साधन करने पर पाप और पुण्य द्वन्दों का विलय होता है। शिव–शक्ति (सुरता–पवन) श्वाच्छोश्वांस के मानस संगम को लेकर मुर्द्धा स्थाने उनमुन (समाधिस्थ, ध्यान) में रहे।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन गृह? कौन वास? कौन गर्भ रहे दश मास?
कौन मुख पानी? कौन मुख क्षीर? कौन दशा उपजिया शरीर।।५५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस घर (केन्द्र) में किस का निवास है? गर्भवास में दश मास कौन रहता है? किस मुख से पानी भी खीर (दूध) के स्वाद में हो जाय किस दशा में शरीर की उत्पति हुई है।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अलील गृह अवगति वास, अतीत गर्भ रहे दश मास।
मन मुख पानी पवन मुख क्षीर, ऊँकार दशा उपजिया शरीर।।५६।।

भावार्थ – हे योगी! अलील (जल) गृह (स्वाधिष्ठान) में उल्टी गति से स्थित अतीत गर्भ दस मास रहकर विकसित होता है। मनस् तत्व के जल तत्व (बिन्दु) में योग तथा पवन (नाद एवं श्वाच्छोश्वांस) के (नाद) योग से ऊँकार के रूप में शरीर उत्पन्न हुआ है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन नाड़ी स चरे सिव? कौन मुख पैठा जीव?
कौन गर्भ बसन्ता वास? कौन नाल रस पीव?।।५७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! गोरक्षनाथ जी मत्स्येन्द्र नाथ जी से पूछते हैं कि हे गुरू जी! नौ नाड़ियों में किस नाड़ी से शिव का संचरण एवं शिव तत्व की प्राप्ति होती है? किस द्वार से जीवात्मा स्थित वृत्ति शिव में रूपान्तरित होती है? किसने गर्भ में निवास किया और किस द्वार से गर्भस्थ शिशु रस पीता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! संखनि नाड़ी स चरे सिव, सुषमनी नाड़ी पैठा जीव।
माता (शून्य) गर्भ बसन्ता वास, बंकनाल रस पीवे जीव।।५८।।

भावार्थ – हे शिष्य! कनपटी स्थाने (दस नाड़ियो में से) संखनी नाड़ी से शिव ने शरीर में प्रवेश लिया और माता द्वारा मायाध्यास ने गर्भ में निवास किया। युक्त–त्रिवेणी सनाल मुक्त बंक–नाल (नाभी) द्वारा जीव पोषण रस पीता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन शून्य उत्पन्ना आई, कौन शून्य सतगुरु बुझाई।
कौन शून्य में रहिया समाई, ये तत कहो गुरु समझाई।।५९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस शून्य में उत्पत्ति हुई? किस शून्य का ज्ञान सतगुरु ने समझाया? किस शून्य से उलट कर पुनः उसी में समाया? गुरुदेव कृपया इस तत्व को समझा कर कहो।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सहज शून्य उत्पन्ना आई, समीप शून्य सतगुरु बुझाई।
अतीत शून्य में रहे समाई, ये तत कहे गुरु समझाई।।६०।।

भावार्थ – हे शिष्य! सहज (स्वाभाविक–क्रिया)–शून्य से जीव की उत्पत्ति, समता शून्य–वृत्ति का दृढ़ात्म–ज्ञान सतगुरु ने समझाया। पंचभूतात्मा का साक्ष्य महाशून्य अतीत शून्य में समाया हुआ है, यही परम तत्व गुरु शिष्य को समझाकर कहते हैं।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन मुख लागे समाधि? कौन मुख छूटे उपाधि?
कौन मुख लागे तुरिया बन्ध? कौन मुख होय अजरामर कन्ध।।६१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस मुख (नाद) के अन्तर्मुखी होने से समाधि लगती है? किस अन्तर्मुखीवृत्ति नाद से प्रपंचोपाधि की निवृत्ति होती है? किस अन्तर्मुखी (नाद) से साक्षी–तुरिया–बंध की सिद्धि होती है? किस अन्तर्मुखी नाद से अजर–अमर (कभी नाश न होने वाले) अमृत–बिन्दु की प्राप्ति होती है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन मुख लागे समाधि, पवन मुख छूटे उपाधि।
सुरति मुख लागे तुरिया बन्ध, गुरु मुख होय अजरामर कन्ध।।६२।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन के अन्तर्भूत (नाद के प्रकट) होने से समाधि लगती है। प्राण–वायु के अन्तर्विहित (नाद के प्रकट) होने से प्रापंचिक माया उपाधि से निवृत्ति होती है। अन्तस्थ श्रवणेन्द्रिय वृत्ति (सुरति के (नाद) से अन्तर्मुख होने से साक्ष्य–तुरिया–बंध की सिद्धि तथा गुरु (नाद) शब्द के अन्तर्लीन (अन्तर्मुख) साधन से अजर–अमृत स्वाद की प्राप्ति होती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सोवे? कौन जागे? कौन दशहुं दिशि जाय?
कहां ते उठत पवन? कहां ते होंठ कण्ठ तालुका बजाय?।।६३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! इस शरीर में अष्ट–प्रहर कौन जागता और कौन सोता है? कौन दशो दिशा में दौड़ता है? प्राण–वायु कहां से उर्ध्वगामी होता है? कण्ठ–तालुका की नाड़ियों को कौन (प्रतिध्वनित करता) बजाता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन सोवे पवन जागे, कल्पना दशहुं दिशि जाय।
नाभि से उठत पवन, हृदयते होठ कण्ठ तालुका बजाय।।६४।।

भावार्थ – हे शिष्य! सुषुप्तावस्था में मन ही अन्तर्मुख संकल्प विकल्प रहित होता हुआ मानो सोता है। प्राण–वायु (श्वाच्छोश्वांस) ही तीनों अवस्थाओं में जाग्रत रहता है। कल्पना चक्षु स्थानी होकर दशों दिशाओं में गमन करती है, नाभि (मणिपूर) से पवन उठकर हृदय (अनाहत) से कण्ठ तालुका में प्रतिध्वनित होती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां ते मन करे गुण ध्यान ? कहां ते पवन करे आवागमन ?
कौन मुख चन्दा निर्झर झरे? कौन मुख काल निद्रा करे?।।६५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक को किस साधन से मन का गुणात्मक रूप से ध्यान करना चाहिये। पवन का आवागमन कहां से होता है? किस साधन (अन्तर्मुखीवृत्ति) से ज्योति–स्वर चन्द्र का उदय होता है और किस अन्तर्वृत्ति से काल सुषुप्ति को प्राप्त होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! हिरदय ते मन करे गुणध्यान, नाभिते करे आवागमन।
आप मुख चन्दा निर्झर झरे, मनमुख काल निद्रा करे।।६६।।

भावार्थ – हे शिष्य! अनाहत चक्र हृदय स्थान की साधना से मन वश में होता है। नाभि से प्राण ऊर्ध्वगामी होकर अवागमन करता है। चन्द्रस्वर में अपने मुख (साधन, शब्द) से अमृत पान करता तथा मन के स्थिर होने से काल निद्रा को प्राप्त होता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन शून्यते जोति पलटे? कौन शून्य वाचा फुरे।
कौन शून्यते त्रिभुवनसार? कौन शून्यते उतरे पार?।।६७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस शून्य की ज्योति दशर्न कर पवन–प्राण पलटे? किस शून्य से वाणी का संस्फुरण (विवेचन, विमोचन) होता है? किस शून्य से पिण्ड में तीनों लोकों का सार तत्व प्रकट होता है? किस शून्य से भवसागर से पार होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! उग्र शून्यते जोति पलटे, आकाश शून्यते वाचा फुरे?
परम शून्यते त्रिभुवनसार, अतीत शून्यते उतरे पार।।६८।।

भावार्थ – हे शिष्य! उग्र–शून्य (मणिपूर) से ज्योति पलट कर त्रिकुटी में साधक को दर्शन होते हैं। आकाश शून्य (आज्ञा चक्र) से वाणी का निश्चयात्मक बोध विश्लेषण एवं स्फुरण होता है। परम शून्य (सहस्रार) में ही तीनों लोकों का सार है, अतीत–शून्य (गुरु शब्द) से पार उतरता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कथं क्षुधः समुत्पतिः? कथंमाहारसम्भवः?
कथमुत्पद्यते निद्रा? कथं कालस्य सम्भवः।।६९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! बुद्धि का जन्म कहां से, भोजन वृत्ति (क्षुधा–तृप्ति) का जन्म कहां से हुआ? शय्याकाले निद्रा का जन्म कहां से होता है और काल (मृत्यु, यम) का जन्म कहां से होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मनसः क्षुधः उत्पतिः, क्षुधः आहारसम्भवः।

आहारसम्भव निद्रा, निद्रायाः कालसम्भवः।।७०।।

भावार्थ – हे साधक! मनस तत्व (आज्ञा–चक्र) से क्षुधा (ज्ञान रूपी भूदेव) की उत्पत्ति होती है। इस अवस्था में आहार से निद्रा और निद्रा से काल की सम्भावना होती है।

गोरक्ष उवाचः

स्वामीजी! दिव्य दृष्टि कैसे होइबा, कैसे होईबा ज्ञान विज्ञान?

गुरु शिष्य काया के रहै, कैसे होईबा पार।।७१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! दिव्य दृष्टि कैसे प्राप्त होती है? विज्ञान कैसे प्राप्त होता है और गुरु–शिष्य अलग–अलग रूपों में रहते हुए इनका एक होकर भवसागर पार कैसे उतरना होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! दृष्टिते दिव्य दृष्टि होईबा, ज्ञानते विज्ञान होइबा।

गुरु शिष्य की एकै काया, परचा होइ तो बहुरि न आया।।७२।।

भावार्थ – हे शिष्य! आन्तरिक दृष्टि से दिव्य दृष्टि होती है? ज्ञान से विज्ञान की प्राप्ति होती है। गुरु और शिष्य के शरीर एक हैं और उत्पत्ति का आधार आत्म–शब्द भी एक है। ऐसा ज्ञान होने पर भव–सिंधु पार होता है और फिर जन्म नहीं लेता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां ते उत्पन्न सांसउसासं? कहां परमहंस का वासं?

कौन शून्य मन स्थिर ह्वै रहै, सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।७३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! श्वाच्छोश्वांस कहां से उठता है? पिण्ड में जीवात्मा का निवास कहाँ है? किस शून्य में मन स्थिर होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अरधते उठंत सांसउसासं, उरधे परमहंस का वासं।

सहज शून्य मन स्थिर ह्वै रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।७४।।

भावार्थ – हे अवधू! प्राण (श्वाच्छोश्वांस) अर्ध (अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा) से उठता है। ऊर्ध्व (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर) में परमहंस के आवास हैं। सहज शून्य (समस्त चक्रों में समान रूप से गमन करते हुए आज्ञा–चक्र) में सहज ही मनस तत्व में वृत्ति को स्थित किया जाता है। साधना से मन स्थितप्रज्ञ होता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कैसे आवे कैसे जाई? कैसे जीव रहे समाई?

कैसे तन मन स्थिर होय रहे? सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।७५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! प्राण शरीर में कैसे आता और कैसे जाता है? शरीर निधन पर जीव कहां समा जाता है? मन तथा सूक्ष्म–शरीर सामग्री कहां स्थिर रहती

है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सहजे आवे सहजे जाई, सहजे जीव रहे समाई।
सहजे तन मन स्थिर रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।७६।।

भावार्थ – हे शिष्य! जीव सहज (स्वाभाविक) रूप से ही आते जाते हैं और (ब्रह्माण्डों की पारम्परिक गति एवं प्रवृत्ति अनुसार) सहज में लीन हो जाते हैं। सहज और स्वाभाविक रूप से तन और मन की स्थिति रहती है। गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी के विचार में जीवन अपने स्वाभावानुसार अग्रसर है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कहां बसे शक्ति? कहां बसे शिव? कहां बसे पवन? कहां बसे जीव?
कहां होई इनका परचा लहे? सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।७७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! शरीर में शक्ति (प्रकृति) शिव (जीवात्मा) का कहां निवास हैं? प्राण और जीव कहां रहते हैं? इन सबका अनुभव (संयोग) कहां पर कैसे होता है? यह समझा कर कहिये।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अरध बसे शक्ति उरध बसे शिव। भीतर बसे पवन अंतरिक्ष बसे जीव।
निरन्तर होइ इनका परचा लहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।७८।।

भावार्थ – अर्ध (आज्ञा, विशुद्ध और अनाहत) चक्रों में शक्ति और उर्ध (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर) में शिव का वास है, अनाहत चक्र में पवन का वास तथा सहस्रार (अन्तरिक्ष) में जीव का वास है। इनमें उपस्थित स्वाभाविक अवस्थाओं में जो नाद निरन्तर सब मानवों के पिण्ड (शरीर) में है उस निरन्तर क्रम के आधार पर परिचय प्राप्त करना चाहिये।

पृथ्वी नाभी तल से नीचे शक्ति बसती है। ऊपर गगन (अम्बर) में शिव तत्व का वास है। ब्रह्माण्ड–पिंड क्रिया का चालक पवन (प्राण) भीतर रहता है जो शून्य मण्डल में रहे वही शिव (जीव) है। प्रलय–काल अथवा शब्द साधना–काल में उनका संयोग परिचय और योग होता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन मुख बैठे? कौन मुख चले? कौन मुख बोले? कौन मुख मिले?
कौन सुरति में निर्भय रहे? सतगुरु होई सो बुझयां कहे।।७९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक को साधना पथ में उठना, बैठना और बोलना, मिलना, चलना तथा निर्भय अवस्था में कैसे रहना चाहिये?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सुरति मुख बैठे, निरति मुख चले! सुरति मुख बोले निरति मुख मिले?
सुरति निरन्तर निर्भय रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।८०।।

भावार्थ – हे शिष्य! साधक को साधना पथ में महान्–सावधानी से सदैव साधनोन्मुखी और तत्पर रहना, चलना, उठना, मिलना बैठना आदि क्रिया करते हुये सुरति (गुरु मुखी शब्द, वाणी) के आधार पर विचार कर बोलना और उसमें लीन होकर उसके आधार पर अन्तर्मुखी और निर्भय होकर रहना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो शब्द? कौन सो सुरति? कौन सो पवन? कौन सो निरति?
दुविधा मेट कैसे रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।८१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! शब्द कौन है, सुरति क्या है? पवन और उसकी निरति (शब्द में लीन होने) की प्रक्रिया क्या है? दुविधा को समाप्त कर कैसे रहना चाहिये।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! अनहद शब्द चेतन सो सुरति, स्वासा पवन निरालम्ब निरति।
दुविधा मेटि सहज में रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।८२।।

भावार्थ – हे शिष्य! अनहद (अक्षर) नाद ब्रह्माण्ड में गूंजता है, वही चेतन है। उसी में शब्द साधना से योगी निरालम्बवृत्ति को धारण करता है। ऐसा विचार कर दुविधा समाप्त कर सहज अवस्था को प्राप्त करना चाहिए।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो आसन? कौन सो ज्ञान? किस विधि बाला धरिये ध्यान?
कैसे अवगति का सुख लहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।८३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस श्रेष्ठ आसन से श्रेष्ठ ज्ञान ले? साधक किस प्रकार बाला ध्यान धरे? परमानन्द सुख की प्राप्ति कैसे होय?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! सन्तोष आसन विचार सो ज्ञान, माया तजि करि धरिये ध्यान।
गुरुमुख अवगति का सुख लहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।८४।।

भावार्थ – हे साधक! सन्तोष का आसन, विवेक द्वारा विचार करके प्राप्त किया गया ज्ञान, तेरे मेरे के भेद को छोड़कर शब्द तत्व का ध्यान करना चाहिये, ऐसा गुरुमुखी अवगति सुख की प्राप्ति करता है। साधना सहित ध्यान करे तो गुरु उपदेश निष्ठा से परमानन्द सुख की प्राप्ति होती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो सन्तोष? कौन सो विचार? कौन सो ध्यान काया के पार?
कैसे मनसा इनमें रहे? सतगुरु होय सो बुझयां कहे।।८५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! सन्तोष कैसा और विचार कैसा? शरीर से पार ध्यान कैसा? इनमें मन को कैसे रहना चाहिये?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! निर्भय सन्तोष, अभय विचार, दुहूं में ध्यान काया के पार।
गुरुमुख मनसा इनमें रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।८६।।

भावार्थ – हे शिष्य निर्भीकता में सन्तोष करते हुये भयमुक्त विचार प्रकट करने चाहिये। इन दोनों में ध्यान करने से योगी अपनी काया में सब शरीरों का पारदर्शी रूप अपने अन्दर अनुभव करता है, गुरुमुखी की मनसा (ज्ञान शक्ति) इनमें रहती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! पांव बिना कौन मारग, चक्षु बिन कौन दृष्टि?
कर्ण बिन कौन श्रवण? मुख बिन कौन शब्द?।।८७।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! पांव के बिना कौनसा मार्ग है? चक्षु (नेत्र) बिना की कौनसी दृष्टि है? कानों के बिना कौन सुनता और बिना मुख के कौनसा शब्द प्रतिध्वनित होता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! पांव बिना विचार मार्ग, चक्षु बिना निरन्तर दृष्टि।
कर्ण बिन श्रुति श्रवण, मुख बिन लय शब्द।।८८।।

भावार्थ – हे शिष्य, विचार–मार्ग बिना पांव का मार्ग है। (उपरोक्त वर्णित) निरन्तर दृष्टि बिना चक्षु की दृष्टि है। जो कानों से भी नहीं सुनी जा सकती वह ध्वनि श्रुति में प्रकट होती है यह बिना मुख के शब्द की लीन अवस्था है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो धोति? कौन सो आचार? कौन सो जाप मन तजै विकार?
कौन भावते मन निर्भय रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।८९।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! वह कौनसी धोति और कौनसा आचार है और किस जाप से मन में उत्पन्न विकारों का त्याग हो सकता है? किस भाव से मन निर्भय रहता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ध्यान सो धोती, ब्रह्म सो आचार, अजपा जाप मन तजे विकार।
आत्म भावते निर्भय रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।९०।।

भावार्थ – हे शिष्य! षट्चक्रों में उपस्थित ब्रह्म (शब्द एवं नाद ब्रह्म) के आधार पर ध्यान करना चाहिये। अजपा (श्वाच्छोश्वांस) जाप से मन के विकारों का त्याग करना चाहिये। अन्य मनुष्यों से आत्मभाव करके भय उत्पन्न करने वाले विकारों से मुक्ति प्राप्त

की जा सकती है व आत्म–भाव से निर्भय व्यवहार किया जा सकता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो वायु, कौन सो आप? कौन सी माई, कौन सो बाप?
कैसे मन मन्दिर में रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।६१।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! वायु कौन है? आप (जल) कौन है? माता कौन? पिता कौन है? किस भाव से मनरूपी मन्दिर में रहे।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! शब्द सो वायु, ज्योति सो आप? शून्य सो माई चेतन सो बाप।
निश्चल मन मन्दिर में रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।६२।।

भावार्थ – हे अवधू! शब्द जो प्राणवायु तथा उसके बीज–मंत्र यं में उपस्थित है और ऊँकार में भी स्थित है, वही वास्तविक शब्द है। ज्योति स्वयं अपना स्वरूप है। शून्यमय प्रकृति ही सबकी माता है। चेतन–सत्ता ही पिता है। मन का ध्येयाकार (निश्चित) शब्द स्वरूप बनने से प्राणी शीतल–सिंधु के समान निश्चल, पूर्ण व स्थितप्रज्ञ रहता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो चेतन? कौन सो सार? कौन सी निद्रा? कौन सो काल?
कौन में पंच तत्व सम रहें, सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।६३।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! चेतन कौन है? सार तत्व क्या है? निद्रा की उत्पत्ति क्या है? काल (विनाश) क्या है? पंच तत्व किसमें विलय होकर रहते हैं?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ज्योति सो चेतन निर्भय सार, जागिबा उत्पत्ति निद्रा काल।
ज्योति में पंच तत्व सम रहें, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।६४।।

भावार्थ – हे शिष्य! मानव शरीर में श्वाच्छोश्वांस (अजपा) की चेतन सत्ता तथा निर्भय सार है। चेतन–सत्ता (ज्योति) को प्राप्त कर निर्भय अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है, जो योग का सार है। चेतन सत्ता की चेतना ही जागना और इसका लोप होना ही मृत्यु एवं काल है। चेतना ही ज्योति है इसमें पांच तत्व समान रूप से उपस्थित रहते हैं।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सोवे? कौन जागे? कौन रूप में आपा जोवे?
कौन रूप में कैसे रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।६५।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! सोता कौन है? जागता कौन है? अपना स्वरूप (किस रूप में) कहां देखें? किस स्वरूप में स्थित होकर कैसे रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः
अवधू! शब्द जागे, शक्ति सोवे, आदि रूप में आपा जोवे।
अरूप रूप में जुग जुग रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।९६।।
भावार्थ – हे शिष्य! शब्द जागता है, शक्ति सुप्त है। इस स्थिति में स्वयं को आदि (नाथ) शिव रूप में देखे और अपने में संसार को देखे। अरूप (निराकार एवं शब्द) रूप में युगों युग से योग (नाद योग एवं नाथ योग) अजर अमर है।
गोरक्ष उवाचः
ॐ गुरुजी! कौन मुख रहनी? कौन मुख ध्यान? कौन मुख अमीरस? कौन मुख पान? कौन मुख छेद विदेही रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।९७।।
भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस मुख (शब्द) के आधार पर रहना चहिये और किस मुख (शब्द) का ध्यान करना चाहिये? किस मुख (शब्द) में अमृत और किस शब्द में प्रान है? किस कष्ट की निवृत्ति से विदेह (सब शरीरों में उपस्थित) हो सकता है?
मत्स्येन्द्र उवाचः
अवधू! सहज मुख (गुरुमुखी) रहनी शक्ति मुख ध्यान, गगन मुख अमीरस चेतन मुख प्रान। आशा मुख छेद विदेही रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।९८।।
भावार्थ – हे शिष्य! अमृत के मुख गुरु (शब्द) से रहनी का निश्चय करते हुये सफलता हेतु शक्ति को जाग्रत कर ध्यान धरना चाहिये। गगन (आज्ञा और सहस्रार चक्र) में शब्दरूपी अमृत का पान करना व चेतना एवं चेतन शब्द का ध्यान करना चाहिये। आशा (निजी लाभ) छोड़कर एवं निरर्थक ध्वनियों के (मुख) छेदकर देह को अक्षर नाद एवं अजपा जाप में लीन करे और अपनी देह (व्यक्तिगत) का मोह छोड़ दे।
गोरक्ष उवाचः
ॐ गुरुजी! कौन मुख आवे? कौन मुख जाये? कौन मुख होय काल को खाय? कौन मुख होय ज्योति में रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।९९।।
भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस मुख (शब्द) से आता और जाता है? किस शब्द से काल की गति का भक्षण होता है? आत्मज्योति के साक्षात्कार के लिये किस शब्द के आश्रित होकर रहना चाहिये?
मत्स्येन्द्र उवाचः
अवधू! सहज–मुख आवे, शक्ति–मुख जाय, निष्पक्ष होय काल को खाय।
निराश मुख होई ज्योति में रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१००।।
भावार्थ – हे शिष्य! सहज और स्वाभाविक मुख (शब्द) से आना और शक्ति मुख से गमन करे, शिव शक्ति भेद से निष्पक्ष होकर काल का दमन करे। निराश मुख (संसार से आशारहित) होकर आत्मज्योति में रहना अथवा अपने स्वाभाविक रूप को जाग्रत करना

चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो काया? कौन सो प्राण? कौन पुरुष का धरिये ध्यान?
कौन स्थान घर काल सो रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।११०।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! वस्तुतः शरीर कौनसा है? प्राण कौन है? किस पुरुष का ध्यान करना चाहिये? किस स्थान पर मन मृत्यु भय से दूर रहता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! पवन सो काया मन सो प्रान, परम–पुरुष का धरिये ध्यान।
सहज स्थान घर काल सो रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१११।।

भावार्थ – हे शिष्य! पवन ही चेतन शरीर है। मनसतत्व को प्राण का आधार मानते हुये परम पुरुष का ध्यान करना चाहिए। सहज स्थान (शब्द) को मूल घर (शब्द) मानकर काल (यं) के अनुकूल निश्चयात्मक ज्ञान में लीन रहना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो कूँची? कौन सो ताला? कौन सो बूढ़ा? कौन सो बाला?
कौन स्थान मन चेतन रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।११२।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! ताला, कूँची कौन है? कौन बूढ़ा, कौन बालक है? किस स्थान पर मन चेतन रहता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! शब्द सो कूँची शब्द सो ताला, अचेतन बूढ़ा चेतन बाला।
ज्ञान स्थान मन चेतन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।११३।।

भावार्थ – हे शिष्य! शब्दमय बन्धन (ताला) की निवृत्ति के लिए शब्द (वेद–वाक्य और गुरु वाक्य) ही चाबी हैं। योगी नाद (शब्द) की चेतना के आधार पर चेतन बालक तथा अचेतन बूढ़ा है। मन (मनस) को शब्द ज्ञान के आधार पर चेतन रहना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो साधक? कौन सो सिद्ध? कौन सो माया? कौन सो रिद्ध?
कैसे मन की भ्रान्ति नशाय? गुरु गुसाईं कहो समुझाय।।११४।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक कौन है व सिद्ध कौन है? माया क्या और ऋद्धि क्या है? मन में इस प्रकार की भ्रान्तियों से कैसे मुक्ति मिले? हे नाथ गुरु गोसाईं कृपया समझाकर कहें।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! श्रुति सो साधक, शब्द सो सिद्ध, आप सो माया पर सो रिद्ध।
दशों को मेट भ्रान्ति नशाय, ऐसा मत्स्येन्द्र कहे समझाय।।११५।।

भावार्थ – हे अवधू! अनुभव के आधार पर सुनिश्चित शब्द श्रुति (श्रवण एवं वेदादि श्रुति) में साधक के लिये शब्द ही सिद्ध एवं सिद्धि है इसी की साधना करनी चाहिये। स्वयं का हित माया तथा परहित ही योग रसायन (पके हुये भोजन) के समान है। दस इन्द्रियों के भ्रम को शब्दानुशासन द्वारा संधान करके भ्रान्ति का शमन करना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो सांच? कौन सो रंग? कौन आभूषण चढ़े सुरंग?
तामे निश्चल कैसे रहे, सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।११६।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! सत्य क्या और उसका रंग (प्रभाव) क्या है? वह आभूषण कौनसा है जिसके धारण करने से श्रेष्ठ रंग आता (ज्ञान प्राप्त होता) है? उसमें स्थिर कैसे रहा जा सकता है। सांचा कौन है? जिसमें ढलने वाला द्रव्य कौन है? कैसा आभूषण है जिस पर सदैव सच्चे रंग की कसौटी चढ़े और वह स्थिर कैसे रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ज्ञान सो सांच प्राण सो रंग, जत आभूषण चढ़े सुरंग।
तामे निश्चल उनमन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।११७।।

भावार्थ – हे अवधू! सत्य का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। प्राण (अजपा जाप) का प्रभाव ही वास्तविक प्रभाव (रंग) तथा ब्रह्मचर्य का आभूषण श्रेष्ठ प्रभाव वाला है। इसमें निश्चयपूर्वक स्थिर होकर अन्तर्मुखी रहना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो मंदिर? कौन सो देव? कहाँ बैठकर कीजै सेव?
कौन पाती? केहि विधि रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।११८।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक के लिए कौनसा मंदिर है? कौनसा देव है? कहां बैठकर सेवा करे? कौन पाती भेंट में चढावे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! शून्य सो मंदिर मन सो देव, बैठ निरन्तर कीजै सेव।
पांचों पाती मन उनमुन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।११९।।

भावार्थ – हे साधक शिष्य! शून्य ही मन्दिर है। मन द्वारा सुनिश्चित शब्द–तत्व देव है। इसकी निरन्तर सेवा करे। पांच तत्त्वों में मनस् तत्त्व के योग से उन्मुनी (मुद्रा) में रहे।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कवन सो मंदिर? कौन सो द्वार? कौन सी मूरति? कौन सो अपार?
कौन मन से उनमुन रहे, सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।१२०।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! सिद्धावस्था में कौन मंदिर है? कौन द्वार देवता है? कौन मूरति जो अपार है? किसकी उपासना करके अन्तर्मुखी (निरभय) रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! शून्य सो मंदिर, शब्द सो द्वार, ज्योति सो सुरति ज्वाला अपार।
अरूप रूप मन उनमुन रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१२१।।

भावार्थ – हे शिष्य! सिद्धावस्था में शून्य (शरीर) ही मन्दिर व ॐकार शब्द उसमें प्रवेश करने वाला द्वार है। ज्योति (शब्द) स्वयं प्रकाश है, व यही धारणा करने योग्य है। अरूप–रूप मणिपूर में अदृश्य दृश्य के दर्शन कर उर्ध्वमुखी रहना चाहिये।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन दीवा? कौन सो प्रकाश? कौन सो बाती? कौन निवास?
कैसे दीवा अविचल रहे? सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।१२२।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! दीपक कौन है? प्रकाश कौनसा है? बाती क्या है? तेल क्या है? वह दीपक अटल कैसे रहे?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! ज्ञान सो दीवा शब्द प्रकाश, सन्तोष बाती तेल निवास।
दुविधा मेट अखण्डित रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१२३।।

भावार्थ – हे शिष्य! ज्ञानरूपी दीपक में शब्दरूपी प्रकाश है। सन्तोषरूपी बाती में तेल के रूप में प्राण का निवास है। शब्द तत्त्व का निश्चयात्मक बोध करके दुविधा को समाप्त करने के लिये अखण्डित अजपा जाप करते हुये निरन्तर उसमें लीन रहे।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन बैठे? कौन चले? कौन फिरे? कौन मिले?
कौन घर में निर्भर रहे, सतगुरु होय सो बूझयां कहे।।१२४।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! साधक अवस्था में क़ौन बैठा है। क्या चलता है? क्या फिरता है? क्या मिला हुआ और कौन घर में निर्भय रहे।

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! बैठे धीरज, चलै विकास, सुरती फिरे, मिलै संसार।
सदा अतीत घर निर्भय रहे, ऐसा विचार मत्स्येन्द्र कहे।।१२५।।

भावार्थ – हे शिष्य! धीरज स्थित होकर सृष्टि का विकास एवं संचालन करता है। सृष्टि की गति एवं प्रवृत्ति के कारण सुरति (शब्द) गतिमान होकर सृष्टि का योग पक्षापक्ष निर्मुक्त होकर करता है। निरन्तर अतीत (गुरु शब्द) में प्रतिष्ठित होकर योगी निर्भय रहता है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो योगी? कैसे रहे? कौन सो भोगी कैसे लहे?
सुख में उपजै कैसे पीर? कैसे होय बंधावै धीर?।।१२६।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! वस्तुतः योगी कौन है? कैसे रहता है? कैसा भोग भोगता है? कैसे सुख पाता है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन सो योगी उनमुन रहे, उपजै महारस सब सुख लहे।
रसहि मांहि अखण्डित पीर, सतगुरु होय बँधावे धीर।।१२७।।

भावार्थ – हे शिष्य! मनरूपी योगी नादानुसन्धान द्वारा निश्चयात्मक ध्येयस्त उन्मुनि मुद्रा में स्थित रहता है। मूर्द्धा ध्यान के महारस में अनहद बाजा सुनकर अखण्डित आनन्द में रहता है। ऐसा परमानन्द साधन युक्ति द्वारा सतगुरु ही दरशाते हैं।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन सो आत्मा आवै जाय? कौन सो आत्मा शून्य समाय?
कौन सौ आत्मा त्रिभुवन थीर? कौन परचे बावन वीर।।१२८।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! आने जाने वाली आत्मा कौनसी है? शून्य विभु में विलय होने वाली आत्मा कौनसी है? तीनों लोकों का प्रेम–रस लेने वाली कौनसी स्थिर आत्मा है? किसकी शक्ति साधना से बावन वीर अनेकों बार प्रकट होते हैं?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! पवन सौ आत्मा आवै जाय, मन सो आत्मा शून्य समाय।
ज्ञान सो आत्मा त्रिभुवन थीर, शब्द परचै बावन वीर।।१२६।।

भावार्थ – हे शिष्य! वायु अंश परमात्मा (श्वाच्छोश्वांस) आती जाती है। मननशील आत्मा शून्य में विलय हो जाती है। विशेष अध्यात्म–ज्ञान–सम्पन्न आत्मा तीनों लोकों में व्यापक व एक रस है। गुरु शब्द की महिमा शक्ति ही बारम्बार उद्यत होकर बावन अक्षरों का परिचय कराती है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! मनका कौन जीव? जीव का कौन आधार?
आधार का कौन विश्वास? ब्रह्म का कौन रूप?।।१३०।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! मन का चैतन्य जीव कौन है? उस जीव का आधार कौन है? उस आधार का विश्वास क्या है और उस ब्रह्म का स्वरूप क्या है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मन का पवन जीव, पवन का शून्य आधार।
शून्य का ब्रह्म विश्वास, ब्रह्म का अचेतन रूप।।१३१।।

भावार्थ – हे शिष्य! मन का पवन जीव (शक्ति, प्राण) है; पवन (प्राण) का शून्य में निवास है शून्य का आधार ब्रह्म (शब्द–ब्रह्म) है, शब्द ब्रह्म का स्वरूप अचिन्तनीय, अदृश्य अर्थात् गुप्त है।

गोरक्ष उवाचः

ॐ गुरुजी! कौन चक्र थिर होय कन्ध? कौन चक्र अगोचर बन्ध?
कौन चक्र में हंस निरोधे? कौन चक्र में चित्त परमोधे?
कौन चक्र में लहे संवाद? कौन चक्र में लगे समाध?।।१३२।।

भावार्थ – ॐ गुरुजी! किस चक्र में जीव और ब्रह्म एकता होकर शब्द की दृढ़ व स्थिर अवस्था प्राप्त होती है ? किस चक्र में प्राण (हंसा) गति स्थिर होती है? किस चक्र में चित्त (मन) को शिक्षा मिलती है? किस चक्र में गुरु शब्द से सम्वाद स्थापित होता है। किस चक्र में काल–गति रुकती है? किस चक्र में समाधि की परिपक्व धारणा बनती है?

मत्स्येन्द्र उवाचः

अवधू! मूल चक्र थिर होय कन्ध, गुदा चक्र अगोचर बन्ध।
मन चक्र में हंस निरोध, अनहद चक्र में चित्त परमोध।
वसुधा चक्र में लहे संवाद, चन्द्र चक्र में लगे समाध।
षट् चक्र का जाने भेव, आप ही कर्ता आप ही देव।
मन पवन साधन्ते योगी, काया पलटन्त रहे निरोगी।।१३३।।

भावार्थ – हे शिष्य! मूलाधार चक्र से शब्द रूपी नागनि जाग्रत होती है मूलबन्ध से ही जालन्धर, उडियान–बन्ध की सिद्धि होती है तथा मणिपूर चक्र से प्राण वश होता है। अनाहत चक्र से मन की शिक्षा, विशुद्ध चक्र में जराव्याधि मृत्यु भय निवारण होकर चन्द्र–चक्र में समाधि धारण होती है। इन षट–चक्रों का भेद पहिचानने और साधने वाला योगी काया पलट (पक्षापक्षविनिर्मुक्त) अद्वैत–निष्ठा मुक्तात्मा होता है। शरीर, जरामरण से रहित आरोग्य, अवृद्ध और सबल रहता है।

।। इति श्री गोरक्षनाथ जी का गोरक्ष बोध सम्पूर्णम्।।

गोरक्ष–गणेश–गोष्ठी

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! ॐ गुरुजी!
स्वामी जी! कौन पुरुष कहां से आये क्या तुम्हारा नाम?
अवधू! अविनाशी के अंश निरन्तर से आये योगी हमारा नाम।
स्वामी जी! कैसे कर जानिये कैसे कर मानिये?
अवधू! रहत कर जानिये शब्द कर प्रमाणिये।।

स्वामी जी! रहत किसको बोलिये, शब्द किसको बोलिये?
अवधू! रहत बोलिये त्रिगुण रहित, शब्द बोलिये सबसे विवर्जित।
स्वामी जी! सबसे विवर्जित बोलिये सूक्ष्म, त्रिगुण बोलिये सत, रज, तम।
सतगुणी ब्रह्मा, रजोगुणी विष्णु, तमोगुणी महादेव।।
स्वामी जी! सूक्ष्म किसको बोलिये? सत, तम, रज किसको बोलिये?
अवधू! सूक्ष्म बोलिये दृष्टि न देखे, मुष्ट न आवे।
सतगुण बोलिये पवन, रजोगुण बोलिये पानी। त्रिगुण ऊँकार बोलिये।
पांच तत्व कौन कौन बोलिये? पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।
एक एक तत्व की पांच–पांच प्रकृति बोलिये।
प्रथम पृथ्वी की; अस्थि, मांस, त्वचा, नाड़ी, रोम यह पांच प्रकृति बोलिये।
द्वितीय जल की; लार मूत्र, पसीना, वीर्य, लहू (रक्त) यह पांच प्रकृति बोलिये।
तृतीय अग्नि की; क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस, क्रोध यह पांच प्रकृति बोलिये।
चतुर्थ वायु की; धावन, आकुञ्चन, चलन, वलन, प्रसारण, यह पांच प्रकृति बोलिये।
पांचवें आकाश की; माया, मोह, लज्जा, राग, द्वेष यह पांच प्रकृति बोलिये।
पांच तत्वों का कौन कौन रंग बोलिये?
पृथ्वी का पीला, जल का श्वेत, अग्नि का लाल, वायु का धूम्र, आकाश का नीला (श्याम)।
पांच तत्वों के स्वभाव कौन कौन बोलिये?
पृथ्वी का बैठा, जल का शीतल, तेज का ताता, वायु का चञ्चल, आकाश का गुम (उभा)।
पांच तत्वों के कौन कौन स्वाद बोलिये।
पृथ्वी का मीठा, जल का खारा, अग्नि का तीखा (चिटका), वायु का खट्टा, आकाश का फीका।
पांच तत्वों की भार्या कौन कौन बोलिये?
पृथ्वी की आशा धनवन्ती, जल की मनसा चोरटी, तेज की कल्पना चाण्डाली (कलहिनी), वायु की चिन्ता डाकिनी, आकाश की संख्या शीलवन्ती।
पांच तत्वों के कौन कौन से गुरु बोलिये?
पृथ्वी का मन गुरु, मन देवता वाचा स्वरूपी, जल का गुरु चन्द्र देवता तेजग स्वरूपी, वायु का गुरु विष्णु देवता अनादी स्वरूपी,
आकाश का गुरु श्री शिव गोरक्षनाथ जी अविगत स्वरूपी।
पांच तत्वों के कौन कौन गुण बोलिये?
पृथ्वी का मूल (स्थूल) गुण, जल का वृद्धि गुण, तेज का रूप गुण, वायु का प्रमल (स्पर्श) गुण, आकाश का मैथुन गुण।
पांच तत्वों के कौन घर? कौन द्वार? कौन आहार? कौन विहार? कौन व्यवहार?
पृथ्वी का उदर घर, गुदा द्वार खाई सो आहार, अजरी–बजरी निहार, लोभ–लालच व्यवहार बोलिये।
जल का ललाट घर, इन्द्री–द्वार, त्रिया–आहार, बिन्दु–निहार, मैथुन–व्यवहार बोलिये।
तेज का पित्ता (पित्त) घर, चक्षु–द्वार, दृष्टि देखे सो आहार।

अदृष्टि (हर्ष) का कौन निहार कौन व्यवहार बोलिये?
वायु का नाभि घर, नासिका द्वार, वासना आहार, निर्वासना निहार, मिथ्या व्यवहार बोलिये।
आकाश का ब्रह्माण्ड घर, श्रवण द्वार, नाद आहार, जिह्वा शब्द निहार, दम्भ पाखण्ड व्यवहार बोलिये।
ॐ गुरुजी। पांच तत्व कहां से उत्पन्न भये? कहां जा समायेंगे?
अवधू पृथ्वी तत्व से उत्पन्न भये अविगत जा समायेंगे।
अविगत से उत्पन्न ऊँकार, ऊँकार से उत्पन्ना महातत्व, महातत्व से आकाश–तत्व, आकाश से वायु–तत्व, वायु–तत्व से तेज–तत्व, तेज–तत्व से जल–तत्व, जल–तत्व से पृथ्वी–तत्व, पृथ्वी तत्व को ग्रासते जल तत्व, जल को ग्रासते तेज तत्व, तेज तत्व को ग्रासते वायु तत्व, वायु तत्व को ग्रासते ऊँकार, ऊँकार को ग्रासते अविगत देवता।।
न आवंते न जावंते निरंजन देवता पाणी का जामन जिन्दा, अग्नि का पुट पवन का खम्भा।
सुरति निरति सोध्या शून्य में समाया अविगत स्वरूपी।
इतनी गणेश–गोष्ठी जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

अथपंचअग्नि कथन

ओऊं मूल अग्नि का रेचक नाव, सो पीले रक्त पात अरु भाव।
पेट पूठ दोऊ सम रहे, ते मूल अग्नि यति गोरख कहे।। १।।
भूयंगम अग्नि का भूयंगम नाम, तजिबा भिक्षा भोजन गाम।
मूल की मूल अमीरस धीर, तिसको कहिये सिद्धों पवन शरीर।। २।।
ब्रह्म अग्नि ब्रह्म नाला, धरि लेऊं ज्ञान लहत पवना। रवि शशि गगन समान।। ३।।
ब्रह्म अग्नि मधि सिकबा कपूर, तिसको देखि मन पवन जोईबा दूर।
शिव घर शक्ति अहि निशि रहे, ब्रह्म अग्नि यति गोरख कहे।। ४।।
काल अग्नि तीन भुवन प्रवीनी, उलटत पवन सोखत पानी।
खाया पीया वाक हो रहे, काल अग्नि यति गोरख कहे।। ५।।
काल अग्नि का त्राविक नांव, सोखि लेय नदी सिंधु जल गांव।
उलटत केश पलटे चाम, योगाग्नि हैं ताका नाम।। ६।।
ज्ञान अग्नि को उलटि अबाध, संयम खिवत योग मुक्ति का साध।
ज्ञान अग्नि भरपूर रहे, सिद्ध संकेत यति गोरख कहे।। ७।।
पूरब को पीवत वायु, कुम्भ की काया शोधन।
रेचक तजत विकास त्राटिको, आवागमन विवर्जित।। ८।।
सिद्ध का मरन कोई साधु जाणे, पंच अग्नि गोरख बखाणे।
पांचों अग्नि सम्पूर्ण भई, अनन्त सिद्धों में यति गोरख कही।। ६।।
।। इति पंचअग्नि समाप्त।।

अथ अष्ट मुद्रा कथन

गोरक्षवाचः

स्वामीजी अष्ट मुद्रा बोलिये, घट भीतर ते कौण कौण?

मत्स्येन्द्रोवाचः

अवधू! मूलनी मुद्राई का नाम, ब्रह्म ले उतपनी काम।
पारब्रह्मा समोकृत्वा, मुद्रा तो भई मूलनी।
नाभी मध्ये जल श्री मुद्रा, काम क्रोध ले उत्पनी,
काम क्रोध समोकृत्वा, मुद्रा तो भई जलश्री।। १।।
हृदये मध्ये षीरानी मुद्रा, ज्ञान दीप ले उत्पनी।
ज्ञान दीप समोकृत्वा, मुद्रा तो भई षीरनी।। २।।
मुख मध्ये खेचरी मुद्रा, स्वाद विस्वाद ले उत्पनी।
स्वाद विस्वाद समोकृत्वा, मुद्रा तो भई खेचरी।। ३।।
नासिका मध्ये भूचरी मुद्रा, गंध विगंध ले उत्पनी।
गंध विगंध समोकृत्वा, मुद्रा तो भई भूचरी।। ४।।
चक्षु मध्ये चांचरी मुद्रा, दिष्टि विदिष्टी लै उत्पनी।
दिष्टि विदिष्ट समोकृत्वा, मुद्रा तो भई चांचरी।। ५।।
श्रवण मध्ये अगोचरी मुद्रा, शब्द कुशब्द ले उत्पनी।
शब्द कुशब्द समोकृत्वा, मुद्रा शब्द कुशब्द ले उत्पनी।
ब्रह्मण्ड मध्ये उनमुनि मुद्रा, परम ज्योति ले उत्पनी।
परम ज्योति समोकृत्वा, मुद्रा तो भई उनमुनि।। ६।।
इति अष्ट मुद्रा का जाणे भेव, आपे करता आपे देव।

।। इति अष्ट मुद्रा समाप्त।।

अजैपाल कीं सबदी

मुंडे मुंडे भेष वितुंडे, ना बूझी सतगुरु वाणी।
सुनि सुनि कर भूले पसुवा, आप सुध न जांणी।।
नाभि सुंनि तै पवन ऊठ्या, परम सुंनि में पैसा।
तिहि सुंनि तै पिंड ब्रह्मंड उपज्या, ते सुंनि है कैसा?
तिहि सुंनि तै आपा कीधा, आपा कुंण सौ कीधा।
सुंनि लागे ते मर मर गए, आप अनंत सिद्ध सीधा।।
पिंड तै ब्रह्मंड ब्रह्मंड ते पिंड, पिंड ब्रह्मंड कथ्या न जाई।

पिंड ब्रह्मंड दोऊ सम कर, पिंड ब्रह्मंड समाई।
पृथ्वी कै तत महल रचीला, आप कै तत करीला आचारं।
तेज के तत दीपक बालिबा, बाई कै तत हम करिबा विचारं।।
आकास का तम्बा में करीबा, मलिबा मन राई का मानं।
सुंनि स्यघासण उलीचा बैसिबा, प्राण पुरिस के दीवानं।।
जुरा मरन काल सरब ब्यापै, काम बसंत सरीरं।
लषमण कहै हो बाबा अजैपाल, तुम कूंण अरम्भ थीरं।।
ब्रह्म अगनि बजरांग सी का, कंदर्प देव सरीरं।
जुरा मृत पवन का भीषण, जोगारंभ सुधीरं।
द्वादस गगन स्थानं, सोषि लीया जल मालं।
षट् चक्रा जोग धरि बैठा, तब भाज गया जम कालं।।

भर्तृहरि जी की संक्षिप्त सबदी

सुषिया हसंति दुषिया रोवंत, क्रीड़ा करंतु वट कांमनीं।
सूरा जूझंत भौदू भाजंत, सति सति भाषंत राजा भरथरी।।
दुषी राजा दुषी परजा, दुषी ब्राह्मण बाणियां।
सुषी एक राजा भरथरी, जिन गुरु का सबद परवाणियां।।
चढ़ेगें तै पड़ेंगे, न पड़ेंगे तत विचारी।
धनवंत लोग छीजेंगे, तेरा क्या जाएगा भरथरी भिष्यारी।।
बीज नहीं अंकूर नहीं, नहीं रूप रेष आकार नहीं।
उदै अस्त तहाँ कथ्या न जाइ, तहाँ भरथरी रह्या समाइ।।
मारो भूषर साधौ निंद, सुपिनै जाता राषौ बिंद।
जुरा मरण नहीं व्यापै रोग, कहै भरथरी धनि धनि जोग।।
नाद बिंद बजाइले दोऊ, पुरिलै अनहद बासा।
एकांतिका बासा सौधिले भरथरी, कहे गोरक्ष मछिन्द्र का दासा।।

चर्पट जी की सबदी

चौपाई :

किस का बेटा किसकी बहू। आप स्वार्थ मलीया सहू।।
जेता पूता तेती झाल। चर्पट कहे आल जंजाल।।१।।

काया तरुवर माकड़ी चित्त। झाले पात भवे नित्त नित्त।।
कलो झलपे दह दिशि जाई। ता कारण कोई सिद्धि न पाई।।२।।
ढील कछोटी मन भागा फिरे। घर घर नैन पसारा करे।।
खाया जरे न वाचा फुरे। ता कारण भौंदू झुर झुर मरे।।३।।
राती कंथा रहे पटरोल। पगां पावड़ी मुखां तम्बोल।।
खाजे पीजे करे जो भोग। चर्पट कहे योगी जोवे योग।।४।।
चाकर कूकर की गुहराधी। बाली भोली तरुणी साथी।।
दिन करे भिक्षा रात करे भोग। चर्पट कहे विगोवे योग।।५।।
गन्ध विगन्धा मूत्र खाड़। पशुआ पड़ पड़ तोड़े हाड़।।
बच न सक्या अमूल वारी। चर्पट कहे ते माथा मारी।।६।।
जल की भीत पवन का थम्भा। देवल देखर भया अचम्भा।।
बाहिर भीतर गन्ध विगन्धा। काहे भूलो चर्पट अंधा।।७।।
आंख की टकटकी नाक की डंडी। आहार की कोथली नरक की कूंडी।।
मन का वासा तहाँ नाक का लूचा। सृष्टि का द्वार तहां केस का कूचा।।८।।
गन्ध विगंधा जहां यार बिजारी। चर्पट चाल मात जुहारी।।
चाम की कोथली चाम का सूवा। तासु की प्रीति कर जगत सब मूवा।।९।।
देव गंधर्व मुनि मानव जेता। उबरिया कोई इक गुरुमुख चेता।।

साखी :

चर्पट कहे सुनो रे अवधू, कामिनि संग न कीजै।
जयंद वदन नाड़ी सोखे, दिन दिन काया छीजै।।१०।।

चौपाई :

यत्न करन्ता जाय संग जाव। भग देखी जिन्हां घाल्यो घाव।।
कोटि वर्ष लो वधे तुम्हारी। सत्य सत्य भाखंत श्री चर्पट राव।।११।।
साध कहावे भोगते भग। तां का काला मुंह नीला पग।।
कूटे चमड़ी धरे ध्यान। ता पशुवा में कहा ज्ञान।।१२।।
फोकट फाकट कथे ज्ञान। कूटे चमड़ी धरे ध्यान।।
सिद्ध पुरुष कैसे करे उपाध। चर्पट कहे कलियुग का वाद।।१३।।
नृप-निशंक तां ते चेता। मन मान विवर्जित इन्द्री जीता।।

श्वेत कट मन ज्ञान रत्ता। चर्पट कहे यह सिद्ध मत्ता।।१४।।
मुंजली कंथा बगड़ी वास। कामिनी अग्नि लावै पास।।
दृढ़ कर राखो पांचों इन्द्री। चर्पट बोले ते योगिन्द्रि।।१५।।
अवधू मूल द्वारे दीजे बन्ध। बाई खेले चौसठ सन्ध।।
ज्वारा पलटे खण्डे रोग। चर्पट बोले धन धन योग।।१६।।
बंधी सी बंधी, बिषम कर बंध। ऊपर रवि नीचे कर चन्द।।
रैन दिवस रस चर्पट पिया। खूटे तेल न बूझे दीया।।१७।।
एक श्वेत पटा एक नील पटा। एक टसर कटी काला वजटा।।
पंथ छाड़ मन कूवट वटा। चर्पट बोले यह पेर नटा।।१८।।

साखी :

टीका टामां टमुकली, बोले मधुरी बाणी।
बोले चर्पट सुनो नागाअर्जुन, एक एक सहनाणी।।१९।।

चौपाई :

नाथ कहावे सके न नाथ। चेले पांच चेलरी सात।।
मांगे भिक्षा भर भर खाई। नाथ कहावे मर मर जाई।।२०।।
दृढ़ कर मनुआ थिर कर चित्त। काया पवन पखाले नित्त।।
अपरा भरो ज्यों थिर होय कन्द। न उड़े हंसा न पड़े जिन्द।।२१।।
कथणी बदणी बलिकर जाव। बन्ध सके तो बाँधो बाव।।
चर्पट कहे मन की डोर। भुगत गदहा ले गया चोर।।२२।।
एक पत्थर ऊपर पांव। दूजे पत्थर ऊपर भाव।।
चर्पट कहे दुनिया का भेद। यह क्यों पत्थर यह क्यों देव।।२३।।
पूज पूज भाटा, सर्व जग घाटा। निज तत्व रह गया निरास।।
ज्योति स्वरूप संग ही आछे। तांका करो विचार।।२४।।
मन नहीं मूण्डे; मूण्डे केस। केसा मूण्डे क्या उपदेश।।
मूण्डे नहीं मन मर्द का मान। बोले चर्पट तत्वज्ञान।।२५।।
नाडे डोडे खण्डे धर्म। ऊँचा मन्दिर कूड़ा कर्म।।
चर्पट कहे सुनो रे लोक! रत्न पदार्थ गमाया फोक।।२६।।

साखी :

चर्पट वीर चक्र सम कट्या, चित्त चमाऊ करना।
ऐसी करनी करो रे अवधू! जो बहुर न होवे मरना।।२७।।

मन चंचल, पवन चंचल, चंचल बाई की धारा।
इस घर मध्ये तीन्हो चंचल, क्योंकर रखिये भरता बिन्द का द्वारा।।२८।।

चौपाई :

ताम्बा तुम्बा यह दो सुच्चा। राजा ही से योगी ऊँच्चा।।
ताम्बा डूबे तूम्बा तरे। जीवे योगी राजा मरे।।२६।।
कानों मुद्रा गले रुद्राक्ष। फिर फिर मांगे निपणी साख।।
चर्पट कहे सुनो रे लोई! यह पखण्ड है, पर योग ना होई।।३०।।
झोली पावड़ी पत्र पाया, पाया पंथ का भेव।
रीता जाऊं भरया आऊं, कहा करे गुरुदेव।।३१।।
बैठो राजा बैठो प्रजा, बैठो जंगल की हरणी।
हम क्यों बैठें रावल बावल, सगरी नगरी फिरनी।।३२।।
आई न छोड़े लेन भी जाई; यह कहे गोरख पूता।
विचार कर खाइये टूका।।३३।।
टूका खाया मकर मचाया, जैसा शहर का कुत्ता।
योग युक्ति की मर्म न जानी, कान फड़ाय विगुत्ता।।३४।।
मद्य मांस में लावे चित्त, ज्ञान विवर्जित गावे गीत।
आलस निद्रा भोग विलास। चर्पट बोले कन्द निवास।।३५।।
दया धर्म चित्त न बसे। अतीत देख के दामिनी हँसे।।
कथे ज्ञान और फोगट रहन। चर्पट कहे यह कलू के चिन्ह।।३६।।
जिसका काम तिस ही को साजे, और करे सो ढींगा बाजे।
चर्पट कहे अचम्भा देखा। कनक कामिनी खाया भेषा।।३७।।
फोकट आय फोकट जाये, फोकट देश दुनिया समझाय।
फोकट बैठा करे विचार, चर्पट कहे यह सब उपाध।।३८।।
पग खड़ाऊं माथे टोप, गले माला मन में कोप।
माया देख पसारा करे, चर्पट कहे न खोटी भरे।।३६।।

साखी:

ऐ रावल तू खरा सयाना, तो हंस कर बांधे टाटी।
बारह अंगुल पैसि गई है, सोलह अंगुल फाटी।।४०।।
अवधू मूल द्वारे बन्ध लगाई, पवन पलटे गगन समाई।
नाद बिन्द ले स्थिर होई, अदृष्टि पुरुष दृष्टि तब जोई।।४१।।

असंख वर्ष गिरि कन्दर वास, यह विधि लेवा योग अभ्यास।
पलटे काया खण्डे रोग, बोले चर्पट धन्य धन्य योग।।४२।।
मारो भूख और सोधो नींद, स्वपने जाता राखो बिन्द।
जरा पलटे खण्डे रोग, चर्पट कहे धन्य धन्य है योग।।४३।।
वज्र कछोटी चाबे पान, तीर्थ जाय उगाहे दान।
करे वैदगी जावे रोगी, चर्पट कहे विगूता वोगी।।४४।।
जटा विडम्बन अंगे धार, मोह कंथा बहु विस्तार।
विचित्र कंथा अंचला चंगा, बटुवा सीवे बहुविधि रंगा।।४५।।
मान अभिमान लादे फिरे, गुरु खोजे मूर्ख भरे।
दण्ड कमण्डल भगवा भेष, पत्थर पूजा यह उपदेश।।४६।।
जीव हत्या और पूजा करे, तन्त्र मन्त्र ले मन में धरे।
तीर्थ जाय करे स्नान, बोले चर्पट खण्डित ज्ञान।।४७।।
न्हावे धोवे पखाले अंगा, भीतर मैला बाहर चंगा।।
होम जाप अज्ञारी करे, पारब्रह्म की सुधि न धरे।।४८।।
दिन दिन हत्या करे अपार, सूतक पातक झेले भार।
ब्रह्म रूप ढक्या संसार, चर्पट कहे यह धूर्त विचार।।४६।।
पहरी मुंदरी कंकण हाथी, नकटी बुच्ची जोगण साथी।
उठन बैठन का झंकार, रात दिवस मन विषय विकार।।५०।।
भर्तृहरि चर्पट गोपीचन्द, बिन्दो आतम परमानन्द।
छोड़ो खीर खांड बहु भोग, राखो आतम साधो योग।।५१।।

।।इति चर्पट जी की सबदी सम्पूर्णम्।।

दूसरा भाग

''नाथ सम्प्रदाय के गायत्री जाप, मंत्र''

कामधेनु गायत्री मंत्र

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
आदि अनादि पारब्रह्म, पारब्रह्म में गिरि कैलाश।
गिरि कैलाश में शिव पार्वती ने किया निवास, गौ माता गायत्री का भया प्रकाश।।
कहो स्वामी कौन गायत्री कहाँ से आई? किस नाम से किसने सजाई? कौन माया कौन महिमा सजाई?
कहे महादेव सुन पार्वती! गौ माता गायत्री निरंजुन निराकार ने लाई, क्षीर–सागर मंथन से पाई।
गौ माँ कामधेनु नाम से सजाई, तेतीस करोड़ देवी देवता में समाई।
अनन्त महिमा निरंजन माया ने जमाई, पीर किशन गोपाल ने चराई।।
योगी याज्ञवल्क ने सेवा पाई, नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने पुजाई।
ऋद्धि, सिद्धि श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ने रक्षा कराई।।
ॐ गौ गौर माँ! तू बड़ी वरदायिनी, ता दुग्ध में शक्ति बड़ी, सुर तेज भयो चन्द का नूर।।
सत का दुग्ध, क्षीर–सागर का नीर, अमर हो काया, बज्र हो शरीर।। नित्या योगी धरे धीर।
ॐ क्षीर सागर नन्दिन्यै विद्महे, कामधेनु धीमही तन्नौ गौ प्रचोरयात्।
जो नर मंत्र पढ़ गौ सेवा करे, सो अमर लोक में जाय। जो ना करे; खाया पीया व्यर्थ जाय।।
इतना गौ गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया, श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश! आदेश!

धौल (धवल) बैल मंत्र जाप

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
ॐ निराकार, सुंन में आद अलील, आद अलील धरा आधार।
आधार धरा में बैठा अलख पुरुष, सतगुरु मंत्र अलष निरंजन।
अलष निरंजन की चरण पादुका, चरण पादुका पर जल, जल पर थल।
थल पर मच्छ, मच्छ पर कमल का फूल, कमल के फूल पर शेष।
शेष पर बैठा धौल बैल, धौल बैल सर्वगत बैठी आद जोगन।
धौल बैल के सींग ऊपर जोगन ने राई ठहराई, उस पर अलष पुरुष ने तीन लोक सृष्टि उपजाई।
ॐ धौल बैल ने वरण शिव–शिवानी, धौल बैल ने वरण माई धरतरी, धौल बैल ने वरण सृष्टि सारी।
बज्र की काया, मन पवन छाया, कहे निरंजन सुनिबा जोगन! धौल बैल रहे गणेश के संग।
बुद्धिदाता, शक्ति दाता, सदा रहे आप मुक्ता, धौल बैल सिद्ध साधक का साथी।

श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने भाखी।
इतना धौल बैल जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

धरती द्वादशनाम जाप

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी !
आद अलील अनाद उपाया। सत की धर्ती जुहार लो काया।
पहले जल, जल पर कमल, कमल पर मच्छ, मच्छ पर कोरम (कुर्म)।
कोरम पर वासुकी, वासुकी पर राई। राई पर श्रीनाथजी ने नवखण्ड पृथिवी ठहराई।
प्रथमें धरतरी, द्वितीये नाम विश्वंभरा, त्रितीये मेरूमेदिनी, चतुर्थे चतुर्भुजी अस्तका–मस्तका।।
पंचमें मृतिका नाम, षष्टमें ब्रह्मचंडी, सप्तमे शिवकुमारी, अष्टमें बाला बज्र बहुजोगिनी।
नवमें नवदुर्गा, दशमें सिंह भवानी, एकादशी मृतिका नाम, द्वादशी वरदायिनी।।
माता धर्ती पिता आकाश। पिण्ड प्राण का तोपर वास। आगमदे मै लागू पाई।।
धर्ती माता तूं बड़ी तुमसे बड़ा न कोय। जो पग टेकूं तोपर मोपर कृपा सुहोय।।
धर्ती द्वादश नाम पढ़ै गुणै मनमें धरै ध्यान। जोगी का सब काम सिद्ध होय वाचाफुरै।।
इतना धर्ती द्वादश नाम जाप संपूर्ण सही।
अनन्त कोटि सिद्धों में गादी पर बैठ श्री नाथजी गुरुजी ने कही।।
औषधी पूरिते पात्रं, दधानां सुमुखाम्बुजां। सर्वसस्यामलां शुभ्रां, भूदेवीं शरणं भजे।।
समुद्र वसते देवि! पर्वत स्तनमण्डले। विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
धरतीमाता को नमस्कार। आदेश! आदेश! ॐ नमः शिवाय।

अलील गायत्री जाप

ॐ गुरुजी तन मंजन जल देवता, मन मंजन गुरु ज्ञान।
हाथ मंजन को धर्तरी, अलख पुरुष का ध्यान।।
जागो जल थल आतमा, जागो अलील देव।
जोगी आया करम कूं चाव से, दरस परस की टेव।।
अलील गायत्री सबसे न्यारी, माता कुंवारी पिता ब्रह्मचारी।।
पीया अलील बांध्या बंध, बाला जोगी थिर है कंध।।
उलटंत अलील पलटंत काया। जतिगुरु गोरखनाथ चलाया।।
सत पुरुष अलील निधान। अविचल आसन निहचल ध्यान।।
आद अलील अनाद अलील, तारण अलील विद्महे, महा अलीलाय धीमहि, तन्नो अलील प्रचोदयात्।।
इति श्री अलील गायत्री मंत्र जाप संपूर्ण सही। अनन्त कोटि सिद्धों में, श्रीनाथजी गुरुजी ने कहीं।।
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश! आदेश!

शिव गायत्री

ॐ गुरुजी, जल का दान जल का स्नान, जल मैं उपना ब्रह्मज्ञान।।
जल ही आवै जल ही जाय, जल ही जल मैं रह्या समाय।।
जल ही ऊंचा जल ही नीचा, उण पाणी सौं लीजै सींचा।।
भूख्यां कूँ अन्न प्यास्यां कूं पाणी, तहां आये गुरु गोरख निरवाणी।।
पीणी पाणी उत्तम जात, जैसा दीवा तैसी बात।
जल में ब्रह्मा जल मैं शिव। जल मैं शक्ति जल मैं जीव।।
जल में निरंजन अवगति रूप, जल मैं धर्ती जल मैं आकाश।
जल में जागे ज्योति प्रकाश। जागृत जोत जहां अटल अनूप।।
जहां से उपनी शिव गायत्री। तार तार माता शिव गायत्री।।
अघोर पिण्ड पड़ंता राख। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भरें तेरी साख।।
जपो माता शिव गायत्री सार। प्राणी पावै मोक्ष द्वार।।
प्राणी जपे जोग–पद पावै। राजा जपे राज पद पावै।।
गृही जपे भण्डार भरंती, दूध पूत सत धरम फलंती।
जो फल मागूं सो फल होय। शिव गायत्री माता सोय।।
इतना शिव–गायत्री मंत्र जाप सम्पूर्ण सही, गंगा गोदावरी, त्रिमुख क्षेत्र, कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला कल्प वृक्ष के नीचे गादी पर बैठकर सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरष नाथ जी ने नौ नाथ, चौरासी सिद्धों, निनान्वे क्रोड़ राजाओं व अनन्त क्रोड़ प्रजा व असंख क्रोड़ सिद्ध साधकों को कथ पढ़ के सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश! सिद्धो गुरु पीरों योगेश्वरों को आदेश! आदेश!

गोरक्ष गायत्री

ॐ गुरुजी, अलष निरंजन कौन स्वरुपी बोलिये ? अलष निरंजन ज्योति स्वरुपी बोलिये।
ऊँकारे शिव रूपी, संध्याने साधु रूपी, मध्याने हंस रूपी।
हंस परमहंस दो अक्षर, गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री।
ॐ ब्रह्मा, सोहंग शक्ति, शून्य माता, अविगत पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरंजन गोत्र, विहंगम जाति।
असंख प्रवर, अनन्त शाखा सूक्ष्म वेद, तत्व ज्ञानी, आत्म ज्ञानी ध्यावन्ते सर्व सिद्धो प्रचोदयात्।
ॐ गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय धीमही, तन्नो गोरक्ष निरंजनः प्रचोदयात्।
गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूरण भया, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

आदेश गायत्री जाप

ॐ नमो आदेश! आदेश! गुरांजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
आदेश नाम गायत्री जाप उठंते अनुभव देवा। सप्त द्वीप नव खंड में आदेश नाम की सेवा।
आदेश नाम अनघड़ जी की काया, ररंकार में झंकार समाया
सोहंकार से ॐ उपाया, बज्र शरीर अमर करी काया।
आदेश नाम अमृत रस मेवा, आदि युगादि करूं मैं सेवा।
आदेश नाम अनघड़ जी ने भाष्या, लख चौरासी जीवा जून पड़ंता राख्या।
आदेश नाम पाखान तराई, आदेश नाम जपो रे भाई।
आदेश नाम जपंते देवा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर एवा।
सिद्ध चौरासी नाथ नव योगी, आवागमन कदे नहीं भोगी।
राजा परजा जपै दिन राति, दूध पूत घर संपत्ति आति।
आदेश नाम गायत्री सार, जपो जाप भव उतरो पार।
आदेश नाम गायत्री उत्तम, जपतां वार न कीजै जनम।
ॐ आदेशाय विद्महे, सोऽहं आदेशाय धीमही, तन्नो आदेश प्रचोदयात्।
इतना आदेश नाम गायत्री जाप संपूर्ण सही अटल दलीचे बैठके श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।
श्री नाथ जी. गुरु जी आदेश! आदेश!

मोक्ष–गायत्री

ॐ सोहं का सकल पसारा, अक्षय योगी सबसे न्यारा।
चंद्राला तोड़, चौदह चौकी यम की तोड़, हंसा ल्याऊं मोड़।
हंसा तो ला कहां धरे? अलष पुरुष की सीम। हंसा तो निर्भय भया, काल गया सिर फोड़।।
निराकार की ज्योति में रत्ती ने खंडी हो, कौन कौन साधु भया?
ब्रह्मा, विष्णु, महेश वे साधु ऐसे भये, यम न पकड़े केश।
मोक्ष गायत्री जाप संपूर्ण भया, सिद्धो गुरुवरो योगेश्वरों को आदेश! आदेश!

बाला–अमर गायत्री

ॐ बाला जाया आपे आप, बाला जाया माई न बाप।
बाला जाया एक ओंकार, जो जुगता दूसरे ओंकार। धूप दीप ले मोक्ष मुक्ता।
धूप दीप कहां जोत जगाई, जहां बैठे श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी आसा महामाई।
ॐ सोहं महेश्वरी ॐ गुरु जी अखंडी कूची बैकुंठ धाम।
कैलाश स्वरूपी, दे दर्शन निरंजनी, ज्योति स्वरूपी।
ॐ सोहं जपे, अजपा घर आवे, सो ज्योति का होय प्रकाश।
अमर गायत्री जाप संपूर्ण सही श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

सरजीवन-बाला

ॐ अकारे, ब्रह्मा, उकारे विष्णु, मकारे महादेव सत्य शब्द निश्चय गुरु।
आय वाया मूल, मूल पर पाया पान, पान पर आया कोंपल।
कोंपल पर आया फूल, फूल पर आया सुन्न, सुन्न से आया महासुन्न।
महासुन्न से आया ॐकार।
सूखे ते हरिया किया, एकाएकी निराभेषी, अदल पाया जीव।
कहे महादेव सुन पार्वती! सर्जीवन बाला ले उतरे पार।।

श्री अमर बाला मंत्र

ॐ अमर बाला, अमर से उपज्या, मन भीतर गुरु शब्द हमारा, सुरत निरत का करो विचारा।
सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, जुग जुग देवी जी तेरा प्रताप।
श्री नाथ जी आचार्य, गंगा जोगण, ब्रह्मा साखिया, हनुमंत बीर, श्री विष्णु जी भंडारी, भरथरी टहल कमावे।
निर्वाण ज्योति कीन्ही प्रकाश, हुकम गुरां के केसर मथिया, सोने का कलश थपाया।
मोतियन् का चौक पुराया, केसर हाथ ले शिव शक्ति की भेंट चढ़ाया।
कंगना हाथ बंधाया, पान सुपारी वस्त्र ले पुतले की भेंट चढ़ाया।
काम क्रोध तज चल्यो प्राणी, सकल कुटुंब त्याग सत की पौड़ी पर पग धरिया।
ए वाक् गुरु गोरक्ष नाथ जी ने करिया। क्या योगी क्या सन्यासी, सब अमरापुर तरिया।
ॐ बीज मंत्र हुआ प्रकाश, देव देवत्यां किया प्रकाश।
आद रूपी कलश थाप्या, निरंजन जोत बैठे अनादि जी भंडारी।
बैठे चन्द्रमा कोतवाल, धरती का पद्मपाट रचाया, नौ लाख तारा साध ने तराया।
खंड खंड दीप दीप जोत जगाई, साध कीजै मुक्ति का काम, बीज मंत्र मुक्ति का धाम।
बीज मंत्र बिन लीजै नाम, औघट घाट घड़ीजे फेर, त्रिकाल मध्याह्न जपंते, सो नर निरंजन को लभंते।
इतना श्री अमर बाला बीज मंत्र जाप सम्पूर्ण सही, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

श्री बाला जप बीज मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरुजी को, आदेश आदेश ॐ गुरुजी
ॐ सोहं ऐं क्लीं श्री सुन्दरी बाला, काहे हाथ पुस्तक काहे हाथ माला।
बायें हाथ पुस्तक दायें हाथ माला, जपो तपो श्री सुन्दरी बाला।।
जीव पिण्ड का तूं रखवाला, हंस मंत्र कुल कुण्डली बाला।
बाला जपे सो बाला होय, बूढ़ा जपे सो बाला होय।।
घट पिण्ड का रखवाला, श्री शंभू जति गुरु गोरख बाला।

उलटंत बाला पलंटत काया सिद्धों का मारग साधकों ने पाया।।
ॐ गुरुजी, ॐ कौन जपंते ॐ, कौन जपंते सोहं? कौन जपंते ऐं? कौन जपंते क्लीं?
कौन जपंते श्री सुन्दरी? कौन जपंते बाला? कौन तपंते?
ॐ गुरुजी, ॐ जपंते अलख भूचर नाथ, अलख अगोचर अचिंत्य नाथ।
सोंह जपंते गुरु आदि नाथ, ध्यान रूप पठन्ते पाठ।।
ऐं जपंते ब्रह्माचार, वेद रूप जग सरजनहार।
क्लीं तपंते विष्णु देवता, तेज रूप राजासन तपता।।
श्री सुन्दरी पारवती जपन्ती, धरती रूप भण्डार भरन्ती।
बाला जपंते गोरख बाला, ज्योति रूप घट घट रखवाला।।
जो बाले का जाने भेव, आपहि करता आपहि देव।
एक मनो कर जपो जाप, अन्त वेले नहिं माई बाप।।
गुरु संभालो आपो आप, विगसे ज्ञान नसे सन्ताप।
जहां जोत तहां गुरु का ज्ञान, गत गंगा मिल धरिये ध्यान।
घट पिण्ड का रखवाला, श्री शंभू जति गुरु गोरख बाला।
जहां बाला तहां धर्मशाला, सोनेकी कूंची रूपे का ताला।
जिन सिर ऊपर सहंसर तपई, घटका भया प्रकाश।
निगुरा जन सुगुरा भया, कटे कोटि अघ राशि।।
सुचेत सैन सतगुरु लखाया, पड़े न पिण्ड विनसे न काया।
सैन शब्द गुरु किन्हे सुनाया? अचेत चेतन सचेत आया!
ध्यान स्वरूप खोलिया ताला, पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला।
बाला बीज मंत्र जाप संपूरण भया, सुणी पारवती महादेव कह्या।
नाथ निरंजन निराकार, बीज मंत्र पाया तत सार।
गगन मण्डल में जय जय जपे, कोटि देवता निज सिर तपे।
त्रिकुटि महल में चमका होत, एकोंकार नाथ की जोत।
दशवें द्वारे भया प्रकाश, बीजमंत्र निरंजन जोगीके पास।
ॐ सोहं सिद्धों की माया, सतगुरु सैन अगम गति पाया।
बीजमंत्र की शीतल छाया, भरे पिण्ड न विनसे काया।
जो जन धरे बाला बाना का ध्यान, उसकी मुश्किल होय आसान।
ॐ सोंह एकोंकार, जपो जाप भव जल उतरो पार।
ब्रह्मा विष्णु धरंते ध्यान, बाला बीज मंत्र तत जान।
काशी क्षेत्र धर्म का धाम, जहां फूंक्या सतगुरु ने कान।
ॐ बाला सोहं बाला, किस पर बैठ किया प्रतिपाला?

ऋद्धि सिद्धि ले आवै सूण्ढ सुण्ढाला, हित ले आवै हनुमत बाला।
जोग ले आवे गोरख बाला, जत ले आवे लक्ष्मण बाला।
अगन ले आवे सूरज बाला, अमृत ले आवे चन्द्रमा बाला।
बाला बाले का धर ध्यान, असंख जुग की करणी जान।
मंगला माई जोत जगाई, त्रिकुटि महल में सुरती पाई।
शिव शक्ति मिल बैठे पास, बाला सुन्दरी जोत प्रकाश।
शिव कैलाश पर थापना थापी, ब्रह्मा विष्णु भरै जन साखी।
बाला आया आपहि आप, तिस बाले का माइ न बाप।
बाला जपो सूत्र महासूत्र, बाला जपो पुत्र महा पुत्र।
बाला जपो जोग कर जुक्ति, बाला जपो मोक्ष महामुक्ति।
बाला बीज मंत्र अपार, बाला अजपा एकोंकार।
जो जन करे बाला की सेव, ताकौं सूझे त्रिभुवन देव।
जो जन करे बाला की भ्राँत, ताको चढ़े दैत्य के दाँत।
भरत पड़ा सो भार उठावै; जहाँ जावै तहाँ ठौर न पावै।
धूप दीप ले जोत जगाई, तहाँ बैठी श्री त्रिपुरा माई।।
ऋद्धि सिद्धि ले चौक पुराया, सुगुरा जन मिल दर्शन पाया।
सेवक तपै मुक्ति कर पावै, बीजमंत्र गुरु ज्ञान सुहावै।
ॐ सोहं सोधन काया, गुरु मंत्र गुरु देव बताया।
सब सिद्धन के मुख से आया, सिद्ध वचन निरंजन ध्याया।
ओवंकार में सकल पसारा, अक्षय जोगी जगत से न्यारा।
श्री सतगुरु गुरु मंतर दीजै! अपना जन अपना कर लीजै।
जो गुरु लागा सन्मुख काना, सो गुरु हरि हर ब्रह्मा समाना।
गुरु हमारे हर के जागे, अरज करूं सतगुरु के आगे।।
जोत पाट मैदान रचाया, सत से ल्याया धर्म से बिठाया।
कान फूंक सरजीवन कीया, जोगेसर जुग जुग जीया।
जो जन करे बाला की आस, सो पावै शिवपुरि का वास।
जपिये भजिये श्री सुन्दरी बाला, आवा गमन मिटे जंजाला।
जो फल मांगूँ सो फल होय, बाला बीज मंत्र है सोय।
गुरु मंत्र संपूरण माला, रक्षा करै गुरु गोरख बाला।
सेवक आया सरण में, धर्‌या चरण में शीश। बालक जान कर कीजिये, दयादृष्टि आशीष।।
गुरु हमारे हर के जागे, निवँ निवँ नावूँ माथ। बलिहारी गुरु आपणे, जिन दीपक दीना हाथ।।
श्री नाथ जी गुरुजी ओदश! आदेश!

गणेश गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
सांचा मन्त्र भजन महेश, मूल महल में बसे गणेश।
गुदा चक्र, पद्म चक्र करलो पाक, हृदय परम ज्योति प्रकाश।
गणपति स्वामी जी सन्मुख रहे हृदय ज्ञान अगम से कहे।
ॐ सोहं सत्य का शब्द, कोई नर योगीश्वर विरला लहे।
ऊर्ध्वमुख वेद कहे, सर्व कमल में फिर कर ले।

झिलमिल–झिलमिल ज्योति जगावे, इड़ा; पिङ्गला, सुषुम्ना तीनों को एक घर ल्यावे।
बंक नाल बैठकर आवे, हँस परमहँस का घट भीतर दर्शन पावे।
कहे श्री नाथ जी सुन भाई औघड़ पीर! त्रिकुटी समाधि शिव शून्य में लगावे।
नाद बिन्द की गांठ ले ब्रह्माण्ड़ चढ़ जावे। योनि संकट बहुड़ी नहीं आवे।
गणेश का मन्त्र सत्य कर ध्यावे, अयोनि शंकर प्रसन्न हो जावे।
झिलमिल झणकार, बाजा बाजे तंतसार।

गुरु के रहम से अकल के फन्द से, मूलस्थान चतुर्दल पंखडी, जहां गणेश देवता का वासा।
शक्ति स्वरूप, मूसा वाहन, गंगा गोदावरी करते स्नान।
कोइ चढ़ावे जान; कोई चढ़ावे अनजान, जान चढ़ावे मुक्ति फल पावे, अनजान चढ़ावें अकारथ जावे।
देवता तुम्हारे अर्पण ॐ वक्र तुण्डाय विद्महे एक दन्ताय धीमही तन्नो गणेशः प्रचोदयात्।
ॐ गं गं ग्लौं महा गणपतये नमः।। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

त्रिकाल गायत्री

ॐ नमो आदेश गुरां को, अमर लोक से उतरी माया।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जाया, हाडचाम की मढ़ी पवन की काया। थिर रहे हंस अमर रहे काया।
त्रिकाल गायत्री सर्जीवन मंत्र ईश्वर महादेव ने गौरां देवी पारवती को सुनाया।।
कहां से उपनी सूरिया कहां से उपनी गौरां? सीस से उपनी सूरिया कंठ से उपनी गौरां।
गर्भवन्ती जनमें शीलवन्ती, तीन जन्म जनमे सुखवन्ती।
मूले मंत्रे सहज करवाणी अष्टोत्तर पुरुषा ले उतरन्ती, ऋद्धि सिद्धि ले भंडार भरंती।
त्रिकाल गायत्री सरजीवन मंत्र देवि तुमको दिया, तेरा दिया शिवपुरि में वास। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, भरें साख।।
सवा पहर मुख चरंती, झरंती, मूलद्वारे गोबरी करंती, भग द्वारे गंगा जमुना का नीर झरंती।।
शब्द का आवरण करंती। तार तार माता त्रिकाल गायत्री तार, इस प्राणी को कबहूँ न झंपे काल।
महादेव जी जल भर लावै, गंगा गौर्जा चौंका लगावै, श्री शंभू जति गुरु गोरषनाथ जी घनचक्र पूरे।
ब्रह्मा जी वेद पाठ करे, विष्णु जी गायत्री का जप करे।
सन्ध्याने जपे शिवपुरी का वास, मध्याने जपे विष्णुपुरि का वास, प्रभाते जपे ऋद्धि सिद्धि एता भंडार भरपूर करे.।
त्रिकाल गायत्री सर्जीवन मंत्र गौरां देवी माता पार्वती कू सुनाया, इति अलील गायत्री जाप सम्पूर्ण सही।
गंगा गोदावरी त्रिमुख क्षेत्र, कौलागढ़ पर्वत, अनुपान शिला पर बैठकर अनन्त क्रोड़ सिद्धों में सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कही, श्री नाथ जी गुरुजी कू आदेश! आदेश!

शंख गायत्री

ॐ नमो आदेश गुरां जी कू आदेश! आदेश! ॐ गुरुंजी !
शंख शंख संजोग भया। ज्ञान गोदड़ी चञ्चल विलया।।
निर्भे जोगी बेपरवाई। आद का शब्द सिंगारो भाई।।
तुम हम अलील पुरुष तीनों मिलवा भाई। मैं तौ पूछूं पिण्ड की अवधू जोगी राई।।
अर्बद नर्बद धुन्धूकारा। शब्द न स्वाल न एकोंकारा।।
मरगई गौरां रह गया रुण्ड। शिव ले पहरा गल में मुण्ड।।
हाड चाम पिञ्जर का नला। षटदर्शन ले घाली गला।।
अमृत कूपी ले आगे धरी। जल थल में माता गौरजां खड़ी।।
जल में करी मीन की थाप, पांच शंख छठी गायत्री गौरां, ले निकसी अपने हाथ।।
पढ़ो शंख गायत्री सार। गंगा माँ भवसागर तार।।
अम्बेदेवी का जपो जाप। पड़े पिण्ड का हर पाप।।
उठो नारायण करो पसाऊँ। चार चौकड़ी जीवको दीजै ठाऊँ।।
षटमास जोगी हठ निग्रह करै। एकोत्र सौ पुरुषा ले अमरापुर तरै।।

पढ़ो वेद गायत्री सार। पिण्ड प्राण उरध गति तार।।
गायत्री सावित्री चौपगी चौवेदी। सोने सिंगी रूपे खुरी चंवरपुछी।।
तांबे वरणी जमघंटी नदी वैतरणी तार। राख राख माता शंभू शिव गायत्री।।
राख, अघोर पिण्ड पड़न्ता राख। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर साख।।
सत बोले सतवादी नर, गुरु वाचा तत सार। शंख गायत्री सांभलो, बहुड़ि न लै औतार।।
ॐ गुरुजी गंगा जमुना सरस्वती। तीनौ अखण्ड कुंवारि। शंख ढरै शिव पूजिये। प्राणी पावै मोक्ष दुवार।।
इतना शंख गायत्री मंत्र जाप सम्पूर्ण सही।
अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ने कही।
सिद्धो गुरुपीरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

''गर्भ-गायत्री''

सतनमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
ॐ खोजो पवन, खोजो आवागमन का चन्द्र सूर, खोजो, आदि अनादि महासुंन में अपरम्पार खोजो।
अपरम्पार में पारब्रह्म खोजो, खोजो पारब्रह्म में ऊँकार।
ऊँकार में मेरु मण्डल कैलाश, सत्य है सती। थरै धरती ऊपर आकाश, चन्द्र-सूर्य का अग्नि प्रकाश।
कहत ऊँकार गर्भ गायत्री का करो प्रवाण, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव।
कौन युग में लिया अवतार? कौन युग में थाप्या संसार?
कौन युग में गर्भ का वास? कौन युग में योगी योग में रमा?
सुनिबा सति पार्वती जी! अर्बद युग में लिया अवतार, नर्बद युग में थाप्या संसार,।
असंख्य युग में गर्भ का वास, युग युग योगी योग रम्या। सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी!
एक पात्र का आधार होता।
तहाँ कैसे उत्पन्न भया जल? कैसे थल?
कैसे मेरू, मेघ, मण्डल, गिरि, पर्वत, कैलाश?
कैसे पवन कैसे पानी? कैसे धरती? कैसे आकाश? कैसे चन्द सूर? कैसे दिन रात?
सुनिबा सती पार्वती जी!
सत से ध्याऊं जल और थल, सत से ध्याऊं मेघ, मण्डल, गिरि, पर्वत, कैलाश।
सत से ध्याऊं पवन और पानी, सत्य से ध्याऊं धरती आकाश।
सत्य से ध्याऊं दिन और रात, सत्य से ध्याऊं सत्य का प्रकाश।
सत्य से ध्याऊं प्राणी, सत्य से ध्याऊं धर्म, सत्य धर्म की रक्षा करे, एक निरंजन ले उत्पन्न भई।
नौ खण्ड गायत्री की मुक्ति, इक्कीस ब्रह्मण्ड का ठ़ीया, क्षण एक धरती लिया आधार।

अलष पुरुष भए करतार। कहो क्यों करते किस की खेती? किस का बिन्दु वह जात कुलीन भई नवन्दु?
सत है माता धरती, धर्म तो पिता, सुन्न काया से उत्पन्न भया, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी!
कै धात शिव के बोलिये? कै धात शक्ति की बोलिये?
कहे हर हरेश्वर महादेव सुनिबा सती पार्वती जी!
आप धात, नाप धात, सर्व धात यह तीन धात शिव के बोलिये।
नीर धात, खीर धात, रक्त धात, फूल धात, यह चार धात शक्ति के बोलिये। सत्य है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी!
कौन मास निश्चल नीर? कौन मास पलटें खीर?
कौन मास रक्त का गोला? कौन मास बांधे विग्रे (विग्रह)?
कौन मास थाण थाणिंतर? कौन मास योग सम्पूर्ण?
कौन मास सर्व धात की काया? कौन मास नौ नाड़ी बहत्तर कोठा? चौरासी सन्यास? कौन मास सवा हाथ का हाड़? कौन मास नरपति नर ने लिया अवतार?
कहे हर हरेश्वर ईश्वर महादेव सुनिबा सती पार्वती जी!
पहले मास निश्चल नीर, दूजे मास पलटे खीर, तीसरे मास रक्त का गोला, चौथे मास बांधे विग्रे।
पंचम मास थाण थणिंतर, छठे मासे पलटें ज्योति, सप्तमे मासे जोग सम्पूर्ण।
अष्टमे मास सर्व धातु की काया, नौवे मास नौ नाड़ी, बहत्तर कोठा, चौरासी सन्यास।
सवा हाथ का हाड़, दसवें मास लिया अवतार, कहे महेश्वर गौरजां जान, गर्भ तत्व करो प्रमाण।
सत है सती पार्वती जी!
गौरजां बोले कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी! मुखे वाक वाणी वागेश्वरी।
मन पवन दासिनी, उड़ंत कौली झड़ंत कौली, अदृष्ट कौली न माता गर्भ गायत्री।
इत्थे उत्थे, बज्र की काया, शुलफा बीज बीजन्ते।
कितने हाथ का हाड? कितने हाथ रक्त का घड़ा? कितने हाथ की खोपड़ी? कितने अंगुल का पित्ता?
कितने अंगुल भृकुटी? कितने आंख कान हाथ? कितने अंगुल ललाट का पाट?
कितने अंगुल नासिका? कितने अंगुल मुख की फाड़ी? कितने जाड़ दांत?
कितने अंगुल की आंत? कितने अंगुल का कलेजा? कितने अंगुल का फेफड़ा? कितने अंगुल की तिल्ली?
कितने अंगुल का नाभिकमल? कितनी पसली? कितने अंगुल जीभ का पाट?
कितने अंगुल बिन्दु का भंडार? कितने अंगुल अमरी का भंडार? कितने अंगुल बजरी का भंडार?
कितनी हड्डी, अंगुल, अंगूठा? कितने नख पग? कितने अंगुल का भग?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव सुनिबा सती पार्वती जी!
इक्कीस हाथ का हाड जान, सवा सेर रक्त का घड़ा, साढ़े तीन बिलान्द की खोपड़ी।

पांच अंगुल का पित्ता, चार अंगुल का लिलाट पाट, डेढ़ अंगुल भृकुटी, दो आंख, दो कान।
दो हाथ, सवा तीन अंगुल नासिका, चार अंगुल मुख का व्यास।
बत्तीस दाढ़ दांत, तेरह हाथ की आंत, बारह अंगुल का कलेजा, पन्द्रह अंगुल का फेफड़ा।
नौ अंगुल की तिल्ली, बाईस अंगुल का नाभि कमल, चौदह पसली, चार अंगुल का जीभ पाट।
सात अंगुल का बिन्दु भंडार, सोलह अंगुल का अमरी भंडार, अठारह अंगुल का बजरी भंडार।
तीन सौ साठ हड्डी, सोलह अंगुलियां, चार अंगुष्ठ, बीस नख, दो पग।
साढ़े तीन करोड़ शरीर की रोमावली, आठ अंगुल की इन्द्री, बारह अंगुल का भग।
कथे महेश्वर गौरजां जान गर्भ तत्व का करो प्रमाण, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव योगी! भूले न चूके, सूरज जाके संग रमे।
स्वामी जी इस काया में कितने कोष? कितने शरीर? कितने गुण, कितने तत्त्व?
कितनी प्रकृति? कितने चक्र दल? कितनी मुद्रा? कितनी धातु, नर और नारी?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव, सुनिबा सती पार्वतीजी! इस काया में पंच कोष बोलिये।
अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनंदमय, इस काया में तीन शरीर बोलिये।
स्थूल, सूक्ष्म, कारण, इस काया के तीन गुण बोलिये, सत, रज, तम।
इस काया के पांच तत्त्व बोलिये, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।
इस काया में पच्चीस प्रकृति बोलिये। अस्थि, मांस, त्वचा, नाड़ी, रोम, लार, मूत्र, पसीना, वीर्य, रक्त।
क्षुधा, प्यास, निद्रा, आलस, क्रोध, धावन, आकुंचन, चलन, वलन, प्रसारण। माया, मोह, लज्जा, राग, द्वेष।
इस काया के षड्चक्र और एक सहस्र पचास दल।
सहस्रार में सहस्र दल, आज्ञा चक्र द्विदल। विशुद्ध चक्र षोडश दल, अनाहत चक्र द्वादस दल।
मणिपूर चक्र दश दल, स्वाधिष्ठान चक्र षटदल, आधार चक्र चतुर्दल।
इस काया में दश मुद्रा बोलिये, खेचरी, भोचरी, सिधी, उनमुनी, अगोचरी, बुद्धि, चाचरी, निधि,
अनभय, करामाती। अतीत देवता अवगति पूजा।
इस नर काया में तीन धातु बोलिये, आब (अस्थि), नाव (नाड़ी), अनहद (वीर्य)।
इस नारी काया के चार धातु बोलिये, नीर (रोम), क्षीर (त्वचा), रक्त, पवन (मांस)।
कथे महेश्वर गौरजां जान, गर्भ तत करो परवाण, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी! इस काया में कौन ज्ञान–इन्द्रियां? कौन कर्मेन्द्रियां?
कौन अन्तःकरण? कौन विषय? कौन वायु? कैसे द्वीप? कैसे नवखण्ड?
कैसे पर्वत? कैसे नदियां? कैसे क्लेश कैसे विकार? कैसे स्थान, कौन विकार की नाड़ियां? कैसे नियम बोलिये?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव सुनिबा सती पार्वती जी!
इस काया में श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिव्हा, नासिका यह पांच ज्ञान इन्द्रियां बोलिये।
इस काया में वाचा, पाद, हाथ, उपस्थ, गुदा; यह पंच कर्मेन्द्रियां बोलिये।
इस काया में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अन्तःकरण यह पांच अन्तःकरण बोलिये।

इस काया के शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यह पांच विषय बोलिये।
इस काया में प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कुर्कल, देवदत्त और धनंजय यह दस वायु (प्राण) बोलिये।
इस काया में मुख में जम्बू–द्वीप, कान में पुष्कर द्वीप, तेज में शल्म–द्वीप, नाक में कुशा द्वीप। गुदा में कुरंज द्वीप, उपस्थेन्द्रिय में श्वेत द्वीप, उदर में शंकर द्वीप यह सप्तद्वीप बोलिये।
इस काया के गुदा द्वार में भारत खण्ड। लिंग छिद्र में काशमीर खण्ड, मुख में कर्पूर खण्ड। दाहिने नाक रंध्र में श्री खण्ड, बायें नाक रंध्र में शंख खण्ड।
बायें नेत्र में एक पाद खण्ड। दायें नेत्र में गांधार खण्ड।
बायें कान में कैवर्त खण्ड। दायें कान में महामेरु खण्ड, यह नव खण्ड बोलिये।
इस काया में दो कान, दो आंख, दो नासिका, छिद्र मुख, लिंगेन्द्रिय, गुदा यह नव द्वार बोलिये।
इस काया में काम का विकार उपस्थेन्द्रिय स्थाने। भाल में क्रोध विकार का वास। त्रिकुटि स्थान नेत्र में लोभ विकार का वास। चित स्थाने हृदय में मोह विकार का वास।
मन स्थाने बुद्धि में अहंकार विकार का वास। यह अन्तःकरण के पांच विकार बोलिये।
इस काया में काम विकार की आशा, क्रोध विकार की जड़ता, लोभ विकार की तृष्णा। मोह विकार की ममता, अहंकार विकार की भ्रमता, यह पांच विकारों की स्त्रियां हैं।
काया मध्ये अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश यह पांच क्लेश बोलिये।
इस काया में मेरुदण्ड में सुमेरु पर्वत, मस्तक में कैलाश पर्वत, पीठ में हिमालय पर्वत। बायें कंधे में मलय पर्वत, दायें कंधे में मंदराचल पर्वत, दायें कान में विन्ध्याचल पर्वत। बायें कान में मैनाक पर्वत, ललाटों में श्री शैल पर्वत, सभी उंगलियों में अन्यान्य पर्वत बोलिये।
इस काया में इडा नाड़ी में गंगा, पिंगला नाड़ी में जमुना, सुषुम्ना नाड़ी में सरस्वती। और नाड़ियों में चन्द्र भागा, पिपासा, शतरुद्रा, नर्मदा सात नदियां बोलिये।
इस काया के ईश्वर चिंतन, स्नानादि, अतिथि सेवा, सत्संग, संध्या–वन्दन पांच नियम बोलिये।
कथे महेश्वर गौरां जान, गर्भ तत् करो परवान, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी!
पहले पुण्य कि पहले पाप? पहले गर्भ कि पहले सांस?
पहले फोग कि पहले फाग? पहले माई कि पहले बाप? पहले गुरु कि पहले चेला?
पहले रात कि पहले दिन? पहले चन्द कि पहले सूर्य? पहले मूल कि पहले डाल?
पहले धरती कि पहले आकाश? पहले पवन कि पहले पानी? पहले नाद कि पहले बिन्दु?
पहले सुन्न कि पहले ऊँकार? यह हंस किस विधि उतरेगा पार?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी सुनिबा सती पार्वती जी!
पहले पुण्य पीछे पाप, पहले गर्भ पीछे सांस, पहले फोग पीछे फाग, पहले माई पीछे बाप।
पहले गुरु पीछे चेला, पहले रात पीछे दिन, पहले चन्द पीछे सूरज, पहले मूल पीछे डाल।

पहले धरती पीछे आकाश, पहले पवन पीछे पानी, पहले नाद पीछे बिन्दु।
पहले सुन्न पीछे ऊँकार, यह काया इस विधि उतरेगी पार।
कहे महेश्वर गौरजां जान गर्भ तत करो परवान, सत है सती पार्वती जी!
हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी! काया अन्दर अष्ट–सिद्धि कौन–कौन बोलिये?
सप्त ऋषि कौन–कौन बोलिये? चार खानी सृष्टि भेद कौन–कौन बोलिये?
चार बानी के स्थान कौन–कौन बोलिये?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव, सुनिबा सती पार्वती जी!
काया अन्दर अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व यह अष्ट सिद्धियां बोलिये।
काया अन्दर कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज, जमदग्नि, गौतम यह सप्तऋषि बोलिये।
अण्डज (पक्षी–सर्पादिक), जरायुज (नर व पशु), उद्भिज (वृक्षादि), स्वेदज (जूं), यह चार खानी भेद बोलिये।
खेचर आकाश में (देवता आदि) भूचर पृथ्वी पर (नर–नारी, पशु, सर्पादि)।
निशाचर (रात्रि में भूत, प्रेत, पिशाचादि), जलचर (मछली, कछुआ, ग्राह आदि) यह चार खानी भेद बोलिये।
महादेव बोलिये काया में परावाणी मूलाधार, पश्यन्ति हृदय स्थाने।
मध्यमा कण्ठस्थाने, वैखरी मुख स्थाने, यह चार वाणी बोलिये।
कथे महेश्वर गौरजां जान, गर्भतत्त्व करो परवान, सत है सती पार्वती जी!
कहो हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव जी! इस काया में कौन कौन चार पात्र बोलिये?
कौन कौन चार वेद बोलिये? कौन कौन चार कुरान बोलिये? कौन कौन सप्त समुन्दर बोलिये?
कहे हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेव, सुनिबा सती पार्वती जी !
सिद्ध ससिद्ध, अतीत, सुपात्र, यह चार पात्र बोलिये।
इस काया अन्दर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद यह चार वेद बोलिये।
इस काया अन्दर अमूर, जमूर, अकुरान, फकुरान यह चार कुरान बोलिये।
इस काया के मूत्र से क्षार, लार से क्षीर, कफ से दधि, मेदमज्जा से घृत।
चर्बी से मधु, रक्त से इक्षु, वीर्य में अमृत एते सप्त समुद्र बोलिये।
कथे महेश्वर गौरजां जान, यह गर्भ ज्ञान सदा रखियो पास।
घटे, पिण्डे, ब्रह्मण्डे, मंडे, सूर्य फिरे खण्डे खण्डे।
हृदय, चार खानी, चार बाणी, चन्द, सूर्य, पवन, पानी।
जारे प्राणी जा तेरा होवे मोक्ष शिव पुरी में वास।
इतना गर्भ गायत्री जाप सम्पूर्ण भया।
गंगा गोदावरी त्रयम्बक क्षेत्र, कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला पर नौ नाथ चौरासी सिद्धों में बैठकर
श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कथ, पढ़ जप के सुनाया।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

काल गायत्री

ॐ गुरुजी, ॐ काल, सोहं काल, काल काल, महाकाल।
अजर काल, बजर काल, अनभै काल, निरंजन काल।।
झूमर काल, कंकाल काल, अमर काल, सर्जीवन काल।
बारह काल, हमारे भाई, हमको छोड़ अवरि को ले जाई।
जीवन जुक्ति काल से पाई, नाद बिंद की कला सवाई।।
काल परमहंस समरण करे, नाद बिंद ताके घट जरै।
तीन चुल्ली पानी की पीवै, सो जोगेश्वर जुग जुग जीवै।।
संसार झरै संसार भरै, निर्भै जोगी अनभै तरै।
जो जाने काल पुरुष का भेव, आपै कर्त्ता आपै देव।।
इतना काल गायत्री मंत्र जाप संपूर्ण सही।
अनन्त कोटि सिद्धों में गंगा गोदावरी क्षेत्र, त्रिमुख देवता, अनुपान शिला पर बैठकर श्रीनाथजी गुरुजी ने कही सिद्धो गुरु पीरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

जल गायत्री छोटी

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
तन मज्जन जल देवता, मन मज्जन गुरु ज्ञान। हाथ मंजन धर्तरी, अलष पुरुष का ध्यान।
पानी पानी महा पानी, सोती काया अमर कर जानी।
उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति से ध्यान लगाया।
ॐ अलील, आदि अलील अनादि अलील, अलील पुरुष की माता क्वांरी पिता यति।
नित्य योगी धरे धीर, निरोग हो काया वज्र हो शरीर।
झड़े पारा पीवे योगी, उड़े काया। अलख निरंजन तेरी माया।
जल बिम्बाय विद्महे, अली पुरुषाय धीमही, तन्नो अलील प्रचोदयात्। इतना 'जल–गायत्री' जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

काया गायत्री

सत नमो आदेश! गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
दूर दिगम्बर से पारब्रह्म जी आये थे। सेली सिंगी नाद मुद्रा लाये थे।
ज्ञान की गोदड़ी विभूति का बटुवा लाये थे। पाँच तत्व का महल बनाये, अन्दर कूप बनाये थे।
काया कोट दश दरवाजे लाये थे। तुरी बनाई, तुरी लगाई पानी में इक लाल लगाया, सुरती पवन डुलाये थे।
चकमक झाड़ बसन्त काढ़े, जगमग जोत जलाये थे।
एक ज्योति सकल घट भीतर, सतगुरु ज्ञान बताये थे।
ऊपर बैठ तमाशा देखे, अनहद नाद बजाये थे। (अधूरी काया गायत्री प्रकाशन के लिए खेद व्यक्त करते हुये योगेश्वरों से निवेदन है कि यदि किसी योगेश्वर के पास पूरी गायत्री हो तो हमें लिख भेजें। आगामी संस्करण में प्रकाशित की जायेगी) सम्पादक

अघोर–मंत्र

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
अघोर अघोर, महा अघोर, अजर अघोर, बज्र अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर।
ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, चन्द्र अघोर, सूर्य अघोर।
काजी की कुरान अघोर, सीता का सत्त अघोर।
हनुमान की हांक अघोर। धरती और आकाश अघोर।
आकाश में वायु अघोर, वायु में तेज अघोर। तेज में तुआ (जल) अघोर।
जहां बाला परमहंस निरंजन की काया, जिसने अघोर किया विस्तारा।
उलट मंत्र काल को खावे, न खावे जीव को जंजाल।

चौसठ वायु को बन्द कर, काल को बन्द कर, दुकाल को बन्द कर, या को करे जिसने सृष्टि उपाई।
स्नेह, स्नेह, स्वामी जी जोय, ब्रह्माण्ड फोड़ के निकसी माई।
नाथ कहे रे बालका! असंख्य जुग पहले काया होवीजे हरिजन की, मंगल करणी, चिन्ता हरणी।
पिण्ड पड़े तो पृथ्वी लाजै, हाड़ चाम गले तो सतगुरु लाजे, हंसा उड़े तो निरंजन लाजै।
गोरक्ष निरंजन एक ओमकार, जपे योगी उतरे भव पार।
छः मास योगी क्रिया करे, एकोत्तीर सौ क्रिया लय उतरे।
उलटंत प्याला पलटंत काया सिद्धों का मार्ग साधकों ने पाया
काची अमरी काटे रोग, पाकी अमरी साधे योग।
अजरा अजर की काया, हांक मार हनुमन्त आया।
सवा मण खावे, सवा मण पीवै, चोट न लागे।
छाव फूटना की रक्षा करे चौरंगी माई।

कर बम बम करती बजरी आई, लोह की लाट, बजर की काया।
जो भर पाई सो पाई, तीन भर पाई, पिण्ड में रमाई।
जो तेज मुख जीभ्या बसे ज्वाला, आप कहे मारो ममता, करो सुधि उठाओ प्याला।
इतना अघोर मंत्र सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

सरभंग–गायत्री

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी !
आओ सिद्धो योग उपजाऊँ, आदि नाथ का पूत कहाऊं।

सुनो सिद्धो योगी राम नाथ की बानी, सर्व घट श्री नाथ जी ने एक एक कर जाणी।
योग मार्ग हृदय में सूझे, द्वितिया छोड़ दया उपजाऊँ।

नंगे पैर जो नर फिरे, उसके कारज पहले सरे।
आप सरस्वती धूनी जमाई, नाले झोली पत्र, नाले भस्मी का बटुआ हाथ।

हम बिगड़े सो बिगड़े भाई, तुम बिगड़े तो राम दुहाई।
हम सरभंगी सबके संगी गुरु हमारे हैं बहुरंगी।

अनघड़ चेला फिरे अकेला, नही किसी को शीश नमावें।
पाठ पवित्र करें, सबको एक भांति कर जानें।

हमारा वासा मढ़ी मसाण, डले डूंगरे वृक्ष की छाया, देखो लोग तमाशा आया।
लोगो ख्याल करो मत कोई, हमारा ख्याल करे सो हिंसा होई।

हमने त्यागी लोभ लालच, सब कुल की लाज।
भिक्षा कारने सब घर जावे, अच्छे बुरे का ख्याल न करना।

कैसे जीता कैसे हारा, ईश्वर मूलम्, कलियं फूलम्, विद्या बालम्।
संध्या देख सिंगी न बजाऊं, किसी अलमस्त त्रिया से दोस्ती न करूं।
अवधू अवधू भाई भाई, अवधू खोजो घट के मांहि।
एक अवधू का सकल पसारा, एक अवधू है सबसे न्यारा।
इस अवधू की संगत करना, उस संगत से पार उतरना।
उत्तर दिशा से योगी आया, ऊँचे चढ़कर नाद बजाया। नाद बजाया
ब्रह्म जगाया, ऐसा योगी कभी न आया।
सेली सिंगी बटुवा लाया, बटुए में काली नागिन लाया।
काली नागिन किसकी चेली, गगन मंडल में फेरी जिसकी।
काली नागिन को मार कर नीचे बिछाई, ऐसी कथनी कथो रे भाई कभी ना होवे आवाजाई।
जब तक ज्ञान न आवे भाई, तब तक साधू भक्त हरिजन कभी ना कहाई।
प्रथम आरम्भ में हम भी जीव जानकर घना ही मारते थे।
आरम्भ छोड़ गुदड़ी चलाई, सुरत निरत अविनाशी से लगाई।
जब अविनाशी से लागे रंग, ऋद्धि-सिद्धि तेरे संग।
अकल छोड़ सकल मन लागे।
कहे श्री नाथ जी सुन रे बालक तेरा जन्म मरण भव बन्धन भागे।।
प्रथम छोड़ो वाद विवाद, पीछे छोड़ो जिव्हा स्वाद।
हरा घास ना सतावे, तो प्रत्यक्ष देव कहावे।
आसन एकान्त में, कहीं न जावे, केरि लम्पट कण्टक की भिक्षा ना खावे।
योगी बड़े ज्ञान ध्यान के, इसमें ध्यान धरो योगेश्वर।
अष्ट सिद्धि नव निधि, तुरिया अवस्था पावे निर्वाण में।
भिखारी होय घर घर माँगूं, हिन्दू तुरक एक कर जानूं।
ऊँच नीच घर पावूं फेरा, कहो तो चलता पवन रोक कर उल्टा चला दूं रस्ता।
मारूं बज्र मंत्र का गोला, कौन त्यागी? कौन वैरागी? कौन योगी कौन सन्यासी? कौन भेपा कौन भांडा?
सिद्धो दूध का दूध पानी का पानी, काया अमृत कर जानी।
उड़े न हंसा पड़े ना काया, सिद्धों का मार्ग साधकों ने पाया।
इतना नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, छः जती, चौबीस अवतार, अट्ठासी हजार ऋषि की जो जपे सरभंग गायत्री, चौरासी लक्ष जिया जूनि से छुट जाये, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भस्म गायत्री माहात्म्य जाप

ॐ सत्य नमो आदेश! गुरां जी कौ आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
जुग जुग गोरष जोगी सत है, भस्म गायत्री माता तत है।।
गोरष जोगी घट घट भावै। निंदक कंटक जम कै जावै।।
सो फिर नाथ सरण में आवै। सतगुरु गोरष फेर जीवावै।।
सैंसर (सहस्र) धारा अम्बर बरसै। धर्ती उपजै गायत्री चरै।।
गायत्री माता गोबरी करै। सूरज मुख सुखै अग्नि मुख जरै।।
सो भस्मंती जोगी जति कै हस्तक ले मस्तक चढ़ै।।
माई चढ़ावे गुरु वंदना करै। दूध पूत भण्डारा भरै।।
पिता चढ़ावै गुरु वंदना करै। रण खेत में कीरति करै।।
आद के जोगी जुगाद की भभूत। सत के नाती धरम के पूत।।
भस्मंती जस्मंती भयहरंती। नाद मुद्रा जोति ज्वाला ले उतरंती।।
जल रेत भस्मी थल रेत भस्मी। तल रेत भस्मी सर्वांग रेत भस्मी।।
भस्मी भस्मी कर जाणो। सिद्धो नवै खंड पृथ्वी।।
तूं भस्मंती तूं जस्मंती। कंटक मार दानौं छेदंती।।
भस्मंती जस्मंती मांय। राजा परजा लागै पांय।।
चढ़ी खाक दिल हुवा पाक। अलष निरंजन आपो आप।।
साध संत सुनो चित लाय। चढ़ै भस्म पाप क्षय जाय।।
अनंत कोटि सिद्धों के आगे। गोरखनाथ जुग जुग जागे।।
जतिगुरु गोरखनाथ अलख, बालगोपाल, जति सतीकूं रख।।
इति श्री भस्मगायत्री मंत्र जाप संपूर्ण सही।।
दुल्लुधर्मराज गादी बैठे श्रीनाथजी ने कही।।
ॐ शिव गोरक्ष। ॐ शिव गोरक्ष।
श्री शंभूजति गुरु गोरषनाथजीकी चरणकमलपादुकाकूं आदेश! आदेश!

भस्म गायत्री सर्वमान्य

ॐ गुरुजी, भभूत माता भभूत पिता भभूत तरण तारणी।
मानुष ते देवता करै, भभूत कष्ट निवारणी।।
सो भस्मंती माई। जहाँ पाई तहां रमाई।।
आदि के जोगी अनाद की भभूत। सत के नाती धरम के पूत।।
अमृत झरे धरती फले। सो फल माता गायत्री चरे।।
गायत्री माता गोबरी करी। सूरज मुख सुखी अग्नि मुख जरी।।

अष्ट टंक विभूति नव टंक पाणी। ईश्वर आणी माता पारवती जी छाणी।
सो भस्मंती हस्तक ले मस्तक चढ़ी।
चढी भभूत दिल हुवा पाक। अलख निरंजन आपो आप।।
इति भभूती चढ़ाने का मंत्र संपूर्ण सही अनन्त कोटि सिद्धों में बैठ कर श्री नाथ जी ने कही।
सिद्धो गुरु पीरों योगेश्वरों को आदेश! आदेश!

चारों युग की भस्म गायत्री

सत नमो आदेश गुरां जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
प्रथम श्री अलील अनादिनाथजी उत्पन्न भये, धर्म राजा धर्म गुसांईजी आतम दृष्टि।
त्रिभुवन मध्य थापना थापलो हो स्वामी जी!
सकल सृष्टि संसार थापलो। थापलो सृष्टि लगायलो बन्ध, आपौ आप उपायलो जिंद।
षीर षांड अमृत भोग, षावंते ते नर लोक।
ते नर लोक मध्ये, बयालीस पाषर चौसठ रोग।
चौसठ रोग मध्ये, विसासो दारू।
बिसासो दारू मध्ये श्री अलील अनाद धर्मराजा धर्म गुसाई जी नित्य प्रति तारण जोग।
बिजली कै चमकै गुरांकै सबकै, हर हर श्री अलील अनाद धर्म राजा धर्म गुसांई जी!
तुम तज लो प्रान धरलो ध्यान!
ब्रह्मा जी रूदन करंते विसनू जी रूदन करंते, पारवती जी करूणा करंते।
हर हर श्री अलील अनाद धर्म राजा धर्म गुसांई जी!
ऐसी निंद्रा हमकूं काहे कूं लगायबा? हम कूं तजकर पर घर काहे कूं जायबा?
ब्रह्माजी भए जल रूपी, विसनू-जी भए वसुंधरा सरूपी।
पारवती जी भए अगर, चंदन, केसर, किस्तूरी, काष्ठभारा।
श्री ईश्वर महादेव जी भए पवन सरूपी, श्री नाथ जी भए जोत सरूपी।
पंच देवता मिल कर भर कर जागबा, आगै ब्रह्मा जी धरंते, पीछै विसनु जी धरंते।
आडा दीया कापड़ा, उभा दीया काठ।
श्री अलील अनाद धर्म राजा धर्म गुसांई जी, पांच देवता मिलकर ले चले सुरगापुरी की बाट
सिर जलंते पादुका जलंत नाभी नांही जलंत, नाभी स्वाहा। गंग दरियाव में दीन्ही प्रवाह।
राघो बाघो मच्छ के गुरु ज्ञान षीर समुद्र मैं बैठ करि जोत कला लै उतपन भए सिध मछंद्रनाथ जी
ज्यांसू उत्पन्न भई माता भस्मगायत्री।
कोई जाण चढ़ावै कोई अणजाण चढ़ावै, जाण चढ़ावै सौ परमपद पावै।
अणजाण चढ़ावै सौ अघोर कुंड वासा बसै।
पूछंतै ब्रह्मा जी चले, चले गए ईश्वर महादेव जी के पास। आओ आओ ब्रह्मा जी बैठो हमारे पास

हर हर हरेश्वर ईश्वर महादेवजी या बभूतकौ तुम का करवा? या बभूती हमकूं देवा।
अच्छा अच्छा ब्रह्मा जी तुम कहा (क्या) जाणो हमारी विभूती की सार ?
हमारी विभूति के हरता करता कुण बोलिये?
हमारी विभूति के हरता करता श्रीनाथ निरंजन श्रीशंभू जति गुरु गोरषनाथ जी देवा।
अच्छा अच्छा हो ब्रह्मा जी! तुमकूं क्या देवा?
च्यार वेद, चवदै सास्त्र, सात वार, सताईस नछत्तर, अठारै पुराण, नव व्याकरण, बारै रासी सोलै कला।
संध्या तर्पण, सूरज–मंत्र, चौबीस मंत्र, गायत्री मंत्र।
एता ए षट कर्म तुम झेलो हो ब्रह्मा जी! सूतक पातक पृथ्वी का भार।
तुम ही जावौ मृत्युलोक में आचार्य होकर घर घर में तुम ही पूजावौगे।
हमारा नाम बोलियै ईश्वर आदिनाथजी जोगी।
इन्द्री के जती जिभ्या के सती, गलै उदासबास कंथा।
नगरी षेड़ै आवेंगे दूध भात मांग षावेंगे हम नहीं आवेंगे हो ब्रह्मा जी तुमारा वेद शास्त्र कै नेड़ै।
पूछते विसनु नारायण जी चले, चले गए श्री ईसर महादेवजी के पास।
हर हर श्री ईसर महादेव जी! ये विभूति कूं तुम का करबा? ये विभूति हम कूं देवा।
अच्छा अच्छा हो विसनु नारायण जी! तुम कहा जाणो हमारी विभूति का सार?
हमारी विभूती के हरता करता कुण बोलिये?
हमारी विभूति के हरता कर्ता श्री नाथ निरंजन श्री शंभू जति गुरु गोरखनाथ जी देवा।
अच्छा अच्छा हो श्री विसनु नारायण जी तुम कूं क्या देवा?
तुम कूं देवा राजपाट छत्र सिंघासण, हीरा माणिक मोत्यां भरे भंडार।
सोलह कला, सहस्र गोपियां कै भरतार तुमको ही बुलावेंगे।
तुमही जावौ मृत्युलोक में भगवान होकर घर घर में तुमही पुजावोगे।
हमारा नाम बोलिये ईश्वर आदि नाथ जी जोगी, इन्द्री कै जति जिभ्या के सती।
गले पहेरवा उदास बास कंथा, नगरी षेड़ै आवेंगे दूध भात मांग षावेंगे।
हम नही आवेंगे हो विसनू नारायण जी तुमारा राज पाट कै नेड़ै।
पूछंती देवी पारवती जी चली, चली गई श्री ईसर महादेव जी के पास।
अच्छा अच्छा ईसर महादेव जी! ये विभूति तुम कहा कहा करबा? ये विभूति हमकूं देबा।
अच्छा अच्छा देवी पारवती जी! तुम कहा जाणो हमारी विभूति की सार?
हमारी विभूति का हरता करता कुण बोलिये?
हमारी विभूति का हरता करता बोलिये श्री नाथ निरंजन श्री शंभू जती गुरु गोरष नाथ देवा।
तुम कूं देबा षड़ग षांडा खप्पर, माया, मोह, कनक, कामणी, सूरत, सोलह विलास (शृंगार)।
षेड़े षेड़े बैठ कर तुम ही पुजावोगे देवी पारवती जी।
मृत्यु लोक में जावौगे तो घर घर में नवदुर्गा ह्वै तुमही पुजावोगे।

हमारा नाम बोलिये ईसर आदि नाथ जी जोगी।
इन्द्री के जती, जिभ्या के सती, गले पहरवा उदास बास कंथा।
नगरी षेड़े आवेंगे, दूध भात मांग षावेंगे।
हम नहीं आवेंगे देवी पारवती जी! तुम्हारी माया मोह कै नेड़े।
पूछते देवी पारवती जी ईश्वर महादेव जी कूं ये विभूति तुम कहा करवा? ये विभूति हमकूं देबा।
कथंत ईश्वर महादेव जी देवी पारवती! ए विभूति हमारे आसण, ए विभूति हमारे बासण।
ए विभूति हमारै हस्तक ले मसतक चढ़े। जनम जनम के प्रायश्चित कटे।
ए विभूति निंदत सो नरा देवी पारवती जी!
बांमण बांण्या सुद्र वंस ते नरा, जावंते नरके घोर।
देवी पारवती जी जल लेत भस्म थल लेते भस्म, बारेत भस्म गगन लेत भस्म।
भस्म भस्म कर जाणबा सिद्धो, सरीकत छोड़ फरीकत बंधो।
जल स्नानं मल त्यागी, विभूति स्नानं सदा शुचि।
गुरुमंत्र स्नानं हरंत पापं, ध्यान स्नानं लभंते शिवपुरी।।
सील संतोष दोय स्नानं, त्रितिये गुरु वायकम्। चतुर्थे ष्यम्या (क्षमा) स्नानं, दया स्नानं पचमम्।
ये पंच स्नानं नित्य करंते देवी पारवती जी कोई कोई नर राजेश्वरा योगेश्वरा।
हम चलावेंगे, श्री अलील अनाद धर्म राजा धर्म गुसाईं जी नित्य प्रति आरंभ जोग।
आदि के जोगी अनाद की विभूति। सत के पूत धरम के नाती, काल मार भये अवधूत।
अम्बर बरसे धरती निपजे, सो फल माता गायत्री चरे।
गायत्री माता हरी भरी, गायत्री माता कीन्ही गोबरी। सूरज मुष सूखे, अग्नि मुष जरै।
अष्ट टांक विभूति सवा टांक पाणी। ईश्वर गौरज्यां पारवती मिलकर छाणी।
अनंत कोटि सिधों के आगै, हस्तक ले मस्तक चढ़ी।
पाल लो भसमंती बांध लो गांठ, तजो तजो हो मंछा देवी पृथ्वी की भ्रांत।।
पदम कर आसण जोग स्थिर, नित प्रति बालक रहे सरीर।
जाग्रत जोगी रैण विहाय, अजरा जरै काल नहिं षाय।
सुन्दर कंठी को नर जाणै, ते नर जाण बसंदर आणै। ईश्वर अम्बर कोट प्रमांणै।
ऐसा जोगी जोग स्थिर। भस्म लपेटे गंग सो नीर। बोले बाल पषाले पांणी।
श्री गुरु गोरष नाथ जी दुनियां भस्म भस्म करि जाणी।
अंत काले सिद्धो भस्म भस्म में सामाणी, सब कोई सिद्धो भस्म भस्म के उपाय।
श्री नाथ निरंजन श्री शंभू जती गुरु गोरष नाथ जी राये।
क्षत्रीय होय गुरु वंदना करे काट्या घाव बज्र होय मिलै।
माई होय गुरु वंदना करे, दूध पूत लक्ष्मी अषूट भण्डार रहे।
जोगी होय गुरु वन्दना करे रांधै रिध, साधे सिद्ध, सदा सोहं लै पार लहै।

सतजुग मध्ये सत वाचा देवी पारवती जी कूं बुलायलो।
ईसर महादेवजी की घर घरणी, मानसरोवर कैलास बैठ स्नानं करंती।
तेतीस करोड़ देवी देवता कूं जपंती, शिव भस्मासुर मैं ही लड़ाया, मैं झगड़े सूं न्यारी।
मै भस्मंती आऊं भाय, राजा परजा लागै पाय। मै भस्मंती मैं जस्मंती, बजर बाला भौ (भव) जोगणी।
रहता पुरुष नाथ निरंजन गुरांकी चेली। जस सत क्रिया षट् कर्म देषूं तो सिद्धां कै संग रमूं नाथजी।
नातर पांच तत्व गुरु वायक (वाक्य) ले फिरूं अकेली। त्रेता जुग मध्ये देवी सीता सती कूं बुलाय लो।
राजा रामचन्द्र जी की घर घरणी सेतु बंध रामेश्वर धनुष तीरथ बैठ स्नान करंती।
राम को जितंती रावण कूं हरंती, दस सीस बीस भुजा कूं छेदन्ती, मैं झगड़े सूं न्यारी।
मैं भस्मंती आउं भाय, राजा परजा लागै पाय। मैं भस्मंती मैं जस्मंती, मैं बजर बाला भव जोगणी।
रैहता पुरुष नाथ निरंजन गुरां की चेली। जत सत क्रिया षट् कर्म देषूं तो सिधां के संग रमूं।
नातर पंच तत्व गुरु वाक्य ले फिरूं अकेली। द्वापर युग मध्ये सत वाचा देवी द्रोपदी कूं बुलायलो।
पांच पांडवां की घर घरणी, पिहेवा कुरुक्षेत्र बैठ स्नानं करन्ती।
पांचू पांडवां कूं जीतन्ती, कौरवां कूं हरंती, मैं भस्मंती मैं जस्मंती मैं झगड़े सूं न्यारी।
मै भस्मंती आऊँ भाय, राजा परजा लागै पांय, मै भस्मंती मैं जस्मंती मैं बज्रबाला भव जोगणी।
मै रहता पुरुष नाथ निरंजन गुरु की चेली, जत सत क्रिया षट् करम देषूं तो सिद्धां कै संग रमूं।
नातर पंच तत्व गुरु वाक्य ले फिरूं अकेली।
कलजुग मध्ये सत वाचा देवी कालका कूं बुलायलो। चावंडा मेरा नांव।
अघोर कुंड बैठ स्नांन करंती, जती सती कै पहरे जागंती।
पापी पाषंडी दुराचारी कूं जल बल भस्म करंती। राजा रैयत मैं ही लड़ाया मैं झगड़े सूं न्यारी।
मैं भस्मंती आऊँ भाय, राजा परजा लागै पांय। मैं भस्मंती मैं जस्मंती मैं बज्र बाला भव जोगणी।
रैहता पुरुष श्री नाथ निरंजन गुरां की चेली। जत सत क्रिया षट् कर्म देषूं तो सिद्धां कै संग रमूं।
नातर पांच तत्व गुरु वाक्य ले फिरूं अकेली। भोजन कारण माता बोलिये, सेज्यां कारण भारज्या।
पूजा कारण देवी बोलियै अंत काल की कालका। रूष तलै बैठबा जाय, पांच घर भिक्षा लायबा चेताय।
आपणी न कहिबा और की न सुणिबा। सुनो सुनो हो योगेश्वरा निरंजन निराकार होय रहिबा।
चाईये माता भम्मर, सैसो सैस कुंवारी। लोहे की कोठी बजर का ताला।
जहां बैठे श्रीशंभूजतिगुरु गोरख नाथ जी बाला।
हर हर हो श्री अलील अनाद धर्मराजा धर्म गुसांई जी। तुमारे पिंड प्राण पड़यां को मोक्ष मुक्त फल पाये।
दलंत संष पूजिये सार, सो जोगेसुर पावै मोक्ष मुक्त द्वार।
प्रथमै भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
द्वितिय भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
तृतिय भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
चतुर्थ भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।

पंचमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
षष्टमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
सप्तमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
अष्टमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
नवमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
दसमे भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
एकादश भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
द्वादसि भस्मंती किसकूं चढ़े? शिव शंकर स्वामी जी कूं चढ़े।
ॐ प्रथमे भस्मंती चेतन पुरुष कूं चढ़े देवी पारवती जी!
द्वितिय भस्मंती दोय चांद सूरज कूं चढ़े देवी पारवती जी!
तृतीये भस्मंती तेतीस करोड़ देवी देवता कूं चढ़ै देवी पारवती जी!
चतुर्थे भस्मंती चतुर्दिशा के सिद्धां कूं चढ़े देवी पारवती जी!
पंचमे भस्मंती पंच पांडव पंच भूती आत्मा कूं चढ़े देवी पारवती जी!
षष्टमे भस्मंती षट दर्सन कूं चढ़े देवी पारवती जी!
सप्तमे भस्मंती सतनाथ ब्रह्मा जी कूं चढ़े देवी पारवती जी!
अष्ठमे भस्मंती अष्ट भैरव कूं चढ़े देवी पारवती जी!
नवमे भस्मंती नव नाथ चौरासी सिद्धां कूं चढ़े देवी पारवती जी!
दसमे भस्मंती दस अवतार नारायण कूं चढ़े देवी पारवती जी!
एकादश भस्मंती एकादश रुद्र महादेव कूं चढ़े देवी पारवती जी!
द्वादश भस्मंती श्रीशंभूयति गुरु गोरष नाथ जी कूं चढ़े देवी पारवती जी!
अलील का प्याला षकंबर बाघंबर का चोला। पड़ै न पिंड, छीजै न काया।
राष राष माता भस्म गायत्री, पिण्ड प्राण अघोर पडंता राषि।
भस्मंती माई तू मेरी माई, ज्यों राषे माता, पुत्र कूं माई। ज्यों राषै माता गऊ बछड़े गाई
पिंड प्राण पड़े की रक्षा करंती आई, जोगी के मस्तिष्क सोहंती आई।
उलटंत विभूति पलटंत काया, श्री नाथ जी का मार्ग सिद्धों ने पाया।
चढ़ी विभूति घट हुआ निरमला, जत सत श्री नाथ जी तुम्हारी कला।
बजंत ताल भाजंत काल अनंत कोट सिद्धां कै आगे, गुरु गोरष नाथ तुम्हारा राज।
काल तो कल कलाट करै, ठिंगाल तो चौकी भरै।
नाद बिंद अनहद बाजा, जागती जोत सिद्धो जा परसो दुलु धरम राजा!
इति श्री भस्म गायत्री पढंते गुणंते, सांभलंते मोक्ष मुक्त फल लभंते।
श्री दुलू धरम राजा की पादुका कूं नमस्ते नमस्ते नमस्कारम्।
सिद्धो गुरु पीरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

विभूति पलटने का मंत्र

ॐ सत नमो आदेश! आदेश! गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
विभूति माता, विभूति पिता, विभूति तीन लोक तारिणी। मानुष ते देवता करे विभूति कष्ट निवारिणी।
विभूति माई, जहां पाई, वहां लगाई (तहां रमाई)। बैठ सिंहासन पूजा करी।।
आदि के योगी, युक्ति की विभूति। सत्य के नाती धर्म के पूत। काल कण्टक मार के भये अवधूत।।
विभूति किस आणी किस छाणी? ईश्वर महादेव ने आणी श्री माता गौरजां ने छाणी।
अम्बर झरे धरती फले, धरती का पान फूल गायत्री चरे।
गायत्री माता गोबरी करे, सूर्य मुख सूखे अग्नि मुख जले।
सो विभूति श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी नौं नाथ चौरासी सिद्धों को चढ़े।
चढ़ाई ख़ाक हुआ दिल साफ, अलष निरंजन आपही आप
उलटंत भस्मी पलटन्त काया। सिद्धों का मारग साधकों ने पाया।
अलष पुरुष अविनाशी धरो प्रभू का ध्यान।
भस्मन्ती यशवन्ती राजा परजा को बस करती। साधू संत को रखन्ती, कालकण्टक को भषन्ती।
इतना विभूति पलटने का मंत्र सम्पूरण भया श्री नाथजी गुरु जी को आदेश! आदेश!

हुकम जाप

ॐ गुरु जी पहली पूजा आदि अलील की, दूजी नाद पाती, सर्व देव मिल थापना थापी।
जुगत मुगत तत सार, अलख उतारे परले पार, भैरव सुन्दरी ज्योति जागी, कलश रह्या भरपूर।
चौक पुराऊं, खण्ड धराऊं, बरसो तत सार, फूल धरो ध्यान धरो, शब्दों से जोत जगाऊं।
जागी अखण्ड भई प्रचण्ड, भंडारी भंडार से जागे।
टहलुआ चूरमां बांटे, शब्दों की घनघोर गत गंगा में रही छाय।
बोले गणेश, ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर करे हिंगलाज महामाया।
पहले ऊँकार योग युगति का, दूजे ऊँकार मोक्ष मुक्ति का।
तीजे ऊँकार थापना थापी धर्मसाल, जहाँ बैठे महेश्वर,
धूप दीप ले ज़्योति जलाई, जहाँ बैठी तारा त्रिपुरा तोतला माई।
माता धरती पिता आकाश, चन्द सूर्य दो भरें साख।
धरनी पाट धीर धराया, आकाश पाट सिर पर छाया।
पवन पाट सिर पर बाजै, इन्द्र पाट सिर पर गाजे।
चन्दमा पाट सर्व पर चानणां, सूर्य पाट सोरिया करंत।
कहे अलष सात पाठ कहां होते? पद्य–पाठ कहां होते?
अलष आप कौन होते? कोटवाल कौन होते?
भण्डारी कौन होते? कौन होते जती? कौन होते सती?

इक्कीस ब्रह्माण्ड होते पद्य–पाठ। टहलुआ होते अलख आप।।
ब्रह्मा होते कोटवाल, विष्णु होते भण्डारी।
शिव जी होते जती, उमा देवी पार्वती होती सती।
शिव नर पूजिते पंच तत असंख युग यतीकी जोत।
सत् नमो आदेश गुरुजी को आदेश! आदेश!
ॐ गुरुजी हुकम से रची धरतरी, हुकम से रचा आकाश।
हुकम से रची मेरु मेदिनी, हुकम से रचा गिरी मण्डल कैलाश।।
हुकम से चलाये श्री ईश्वर आदिनाथ, हुकम से पांच तत्व भये प्रकाश।।
हुकम से बैठे गादी गुरु गोरक्ष पीर। हुकम से आदि शक्ति है ततबीर।।
हुकम से ब्रह्मा भर दीन्ही साख। हुकम से हनुमंत वीर चलाई हांक।।
हुकम से भंडारी ने ऋद्धि सिद्धि पाई। हुकम से टहलवा ने टहल कमाई।।
हुकम से अनन्त चक्र पूर, हुकम से गत गंगा में बरसे नूर।
हुकम से भैरव प्रकाश। हुकम से भैरव बाला सुन्दरी के पास।।
हुकम से केसर पीर मुख चले। हुकम बिन मथन न मिले।।
टहलुवे केसर मथ करी तैयार। जुगति से चढ़े देव–दरबार।।
केसर सुरति जगत में मेला। आपे गुरु आप ही चेला।।
जुगति संग कौन कौन आये? ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आये।।
युगति संग चन्द्र, सूर्य दोउ तपें निराधार।
जुगति से धर्म राजा, धर्म गुसांई ले उत्पन्न भए, सकल सृष्टि संसार।।
टहलुआ ठाड़ा दोउ कर जोड़ दरबार।
हुकम होय अलख पुरुष का टहल करूं दरबार।। कर पवित्री गल गिरेबान।
टहल करूं गत गंगा की, सर्व जोत का धरूं ध्यान।।
पहला पात्र धरती माई, किन्नर, गण, गंधर्व, देवता चार युगों की थापना थपाई।।
दूसरा पात्र माई बाला सुन्दरी को चढ़े, हीरे, माणिक, मोती, रत्न, जवाहर से पात्र पूरे।
तीसरा पात्र श्री भैरव जी को चढ़े, लक्ष चौरासी जीआ जूनी, चारों वर्ण बोलिये।
तेल सिन्दूर की पूजा श्री भैरव जी को चढ़े।
चौथा पात्र कुण्डे में आवे, पांच महेश्वर, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, बावन् वीर, चौसठ योगिनी, तेतीस कोटि देवी देवता सब मिल कुण्डे में समावें।
पांचवा पात्र गुरु विचार। सत शब्द ले उतरो पार।।
गादी पर बैठे गुरु गोरक्षनाथ जी। मन में करें विचार।।
सार की छुरी अमृत की धार, जौ प्रमाण चीरा दिया सकल सृष्टि संसार।।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण को कौली दीनी, सबको किया संत।
कौली आवे, कौली जावे, कौली गत गंगा में जाय समावे।

जे करे कौली बरसे आव, सत सत अमरापुर पावे वास। ना कोई माई न कोई बाप।
छट्ठा पात्र माई योगिनी को दीजे, नौ ग्रह दाहिने कर लीजै।
नौ नाथों का पात्र पूरीजे, तीनों अग्नि तृप्त कर लीजै।
दो कर जोड़ जोत जगाऊं, सप्त ऋषि हृदय में ध्याऊं।
ग्यारह रुद्र की पूजा करूं, दस दिगपाल का ध्यान धरूं।
चार वेद का पाठ करूं, षट् रस का त्याग करीजे।
भैरव सुन्दरी गत भंडारी, चाल साखिये मिल ज्योति जलाऊं, अखण्डी भई प्रकाश।
सातवां पात्र सतनाथ जी ब्रह्मा को दीजै, आवो श्री सतनाथ ब्रह्मा जी बैठो गुरु विचार।
सूतक पातक झेलो भार, असंख जुगां की भर दीजै साख।
आठवां पात्र वीर बंक नाथ जी को दीजै, अठारह वर्ण की हांक सुणि लीजै।
आठरह वर्ण का एको प्याला, अलख जगावे वीर बंक नाथ चेते हनुमान बाला।
नौंवां पात्र कुबेर भंडारी को दीजै, सर्व गत की ऋद्धि सिद्धि सारी।
सर्वगत का एको रूप, एकोएक पुरुष अनूप।
आद अन्त बीज संचरे, बाला सुन्दरी की पूजा, सत् सत् श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी करे।
दसवां पात्र गत गंगा में फिरे, अजर, बजर, अम्बर, अघोर बिरला साधू कोई नर जरे।
एकादश पात्र टहलवे को दीजै, दोय कर जोड़ टहलवा लीजै।
कर लगावे गुरु विचार, टहलवा चेते गत मंझार। मूल द्वार से बंक उठावे, दसवें द्वार की खबर बतावे।
दसवें द्वार का उल्टा ख्याल, सरवर नीर भरिया बिन पाल।
सोई नीर जोगीजन पीवै, सुई धागे बिन कंथा सीवे।
सीवत सीवत लागे युग चार, पहर खिंथा उतरे भवसागर से पार। अमर लोक की क्या निशानी?
हुकम होय अलख पुरुष का, ज्ञान कथे सत सत श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी निर्वाणी।
द्वादश पात्र अनन्त को दीजै, दोय कर जोड़ अनन्त कर लीजै।
जोई आदि सोई अन्त, ईश्वर गौरां थाप्या भगवंत।
ईश्वर गौरां करे विचार, सत सत भाषन्ते श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी।
मूल द्वारे गणपति जी का वासा, चतुरदल कमल करे निवासा।
मेरु दण्ड जे सूधा करे, नाभि कमल में सुरति धरे।
षट्दल कमल ब्रह्मा जी का वासा, श्री सनकादिक आवे जरे।
दशदल कमल विष्णु जी का वासा, कण्ठ द्वारे शिव जी का वासा।
षोडस दल कमल शक्ति का वास, ओंकार ज्योति प्रकाश।
सहस्रदल कमल निरंजन बसे, शिव शक्ति का मिल मेला बसे।
खेचरी मुद्रा मुख बसे, वैखरी करे निवास। योगी अनभौ बोलिया, वैखरी के अभ्यास।
योगी वाय संकोचन करे, द्वादश ले कुंभक में धरे।
षोडस अंगुल पूरक कहावै, रेचक शनैः शनैः फिर आवे।

बारह सूर्य सोलह चन्द्र, जो ना जाने सो नर अंध, जो जाने सो निर्वाण।
इड़ा, पिंगला सुषमना मेले, सोहं हंस निरन्तर खेले।
त्रिकुटी महल झरोखे वास, मन पवन का सुख सुरत मिलाप।
सोहं हंस अजपा जाप, सकार के मध्य में योगी करे निवास।
उन्मुन सूं लागा रहे, दृढ़कर योगाभ्यास। भुचरी मुद्रा नासा बसे, स्वांस छोड़े असवास।।
योगी आठो पहर में स्वांसो करे निवास। चाचरी मुद्रा चक्र बसे, जहां आठों पहर निवास।।
धरणां गगन के मध्य में, रवि शशि सोहं प्रकाश। गोचरी मुद्रा श्रोणी बसे, जहां सुरति करे मिलाप।।
स्वाल शब्द की धुन में, होत शब्द प्रकाश। उन्मुन मुद्रा ऊर्ध बसे, जहां आठों प्रहर निवास।।
उनमुन सूं लागा रहे, दृढ़कर योग अभ्यास। पांचों मुद्रा यह कही छठवीं गोरक्ष नाथ।।
महामुद्रा छट्ठी कही, दसवें द्वार की बात। महामुद्रा छट्ठी जहां निरन्जन नाथ।।
जहां योगीजन जाय के, होते हैं अचरज हैरान।।
नाद बिन्द कला मिले, शिव–शक्ति मिल जाय। रज बीरज उपर चढ़े, तत्त में तत्त समाय।।
चक्र धरती चक्र आकाश, जागी जोत भागी छोत, चहुंदिशि भया उजाला।
बैठा चक्र पूरता, सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी बाला।।
महादेव पार्वती श्री आदि नाथ, घटे, चंदा, घटे सूर, घटे गंगा भरी भरपूर।
आकाश तारा पाताल घट ज्योतिलिंग नमोऽस्तुते।
ब्रह्म हत्या टले, अमृत हो पड़े, अमृत अमृत कुरु कुरु स्वाहा।।
आदि का योगी युगादि की माया, सत का योगी, बज्र की काया करे। न करे तो भी बाहर भीतर कभी न मरे।
एकांगन गंधर्व जाया, छीजे न उपजे, बिनसे न काया। शब्द होय पास, तो काल न खाया।।
एता हुकम जाप सम्पूर्ण भया श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने गत गंगा को कथ पढ़ के सुनाया,
श्री नाथ जी की चरण कमल पादुका को नमस्ते नमस्ते नमस्कारम्।"
गादी पर बैठकर गत गंगा में कही श्री गत गंगा को आदेश! आदेश!

तृतीय भाग

'भेष बारह पंथ में प्रयुक्त होने वाले अवधूत मंत्र'

चोटी काटने का मंत्र

सत नमो आदेश! आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश!
ॐ गुरु जी! ओम सोहम् का भया उजियाला, आया सिद्धो श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी बाला।
कहो रे बालक! कहाँ से आया? कहाँ को जाएगा?
ॐ गुरु जी! ऊर्ध्व मुख से आया, गगन मुख को जाना है।
हे पुरुष यहाँ क्यों आया? मैं तो आप अलष निरंजन निर्वाण जी के चरणों में शीश देने आया।
कैसे बुलाया कैसे बिठाया? हित से बुलाया प्रेम से बैठाया।
कौन आसन कौन मूल? कौन बैठे कमल के फूल?
धरती आसन ब्रह्मा मूल, अलष निरंजन बैठे कमल के फूल।
कौन मुख छुरी कौन मुख धार? कौन पुरुष है मुण्डन हार?
अग्नि मुख छुरी पवन मुख धार, अलष पुरुष है मुण्डन हार।
कौन वृक्ष कौन छाया? किसके नीचे मूंड मुंडाया?
अटल वृक्ष सन्तन की छाया, धर्म के नीचे मूंड-मुंडाया।
कौन गुरु ने मूंडे केश? कौन गुरु ने दिया उपदेश?
गुरु हमारे काटे केश, सतगुरु ने दिया उपदेश।
काटी चोटी दिया निवास, चांद सूरज भरें धर्म की साष।
सत की छुरी अमर लोक से आई, हुकम गुरां के चोटी लाही।
रक्षा करे श्री शंभू यति गुरु गोरष नाथ जी, आदि शक्ति महामाई।
चोटी मंत्र जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

गुरु बीज मंत्र

ॐ गुरु जी ओहंग सोहंग का पुरखा, तत सत खोज मन बूझ सुरतां।
कहो (कौन) पुरुष कहां से आया? अविनाशी का अंश अनादि से आया।
माया प्रकृति संग मिल जीव कहलाया, गुरु मिले कर्म भर्म मेट अलेष लषाया।।
गुरु मिले गुरु क्रिया कीनी, गोरक्ष बूझे मत्स्येन्द्र कहे।
क्यो भूला रे जीव कर्म भर्म में।
ब्रह्मा तो तूही भव भंजन, दुःख निवारण तुम हो श्री नाथ जी निज तारण तरण।
इतना गुरु बीज मंत्र जाप सम्पूर्ण भया, नौ नाथ चौरासी और अनन्त कोटि सिद्धों के मध्य अनुपान

शिला पर बैठकर श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कथ, पढ़, जप के सुनाया।
श्री नाथ जी गुरुजी आदेश! आदेश!

बीज मंत्र

ॐ गुरु जी, अरबद नरबद धुंधुकारा, नहीं संवाल शब्द ऊँकारा।
जल नहीं थल नहीं, नहीं मेरु मण्डल कैलाश, नहीं आकाश का आधार धरती माता को नमस्कार।
बीज बीज महाबीज, कहां से प्रकट ब्रह्म काया, कोटि जनम से जाये छूट।
शिव शक्ति का वाचा, आप निरंजन ज्योति प्रकाशा।
गौरी शंकर धरे ध्यान, डाबे हाथ पुस्तक, जमणे हाथ में माला। ऐसे बोले गोरक्ष बाला।
ओमकार सोहंकार, बीज मंत्र एक सार। अलंग बाड़ी, बलंग, रक्षा तेतीस करोड़ देवता करे।
गुरु की शक्ति हमारी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

धूंणा पाणी मंत्र

ॐ गुरु जी, काग आसन बैठे बाघ आसन धूने को परोटे, शीश आसन धरे ध्यान।
धूणा न जले, धूणी न जले, आकाश ना जले, पांच तत्व का बांस।
सोने का आसन विभूति का कलीझां, जहाँ बैठे श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी।
हाथ फावड़ी कांधे लटा, नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने बैठ किया, धूणा पानी का मता।
धूणा पाणी, सिद्धों की बाणी, सिद्धों ने परमाणी, सिध साधक ने रल मिल धूनी रमाई।
उठे धूणी पवन का गोला, हे देवता मेरा दोष नाही, सत्य गुरु की बधाई।
श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ने हुकम से लिखाई।
अनन्त धूने धुखे धुखाए, पूजे धूणा पूजे लोग। नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने बैठ कर कमाया योग।
किस आसन धूणा परोटे, किस आसण धूणा बांधे? किस आसन धूणा तपे।
शीश आसन धूणा परोटे, बाघ आसन धूणा बांधे, पद्मासन धूणा तपे।
सिद्धासन धूना अठाय, शीश आसण धूंणा अमरापुर को पहुंचाए।
इतना धूणा पाणी का मंत्र सम्पूर्ण भया, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

धूप ध्यान का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी को आदेश आदेश ॐ गुरुजी!
पानी की बूंद पवन का थंभ (थम्बा), जहां उपजा कल्प वृक्ष का कंद (कन्दा)।।
कल्प वृक्ष की छाया, जिसमें गूगल धूप उपाया (उपजाया)।।
जहां हुवा धूप का प्रकाश, जव (जौं), तिल, घृत ले कीया वास।।
धूनी धूपिया अगनि चढ़ाया, सिध का मार्ग विरले पाया।।

ऊर्ध्व मुख चढ़े अग्नि मुख जलै, होम धूप वासना होयलै।।
श्रीनाथजी की चरणकमल पादुका को होम धूप दीप वासना होयले।।
एक्कीस ब्रह्माण्डे तेतीस करोड़ देवीदेवताकूं होम धूप दीप वासना होयले।।
सप्तमें पाताल नव कुली नाग (वासुकि) को होम धूप वास।।
श्री नव नाथ चौरासी सिद्धों को होम धूप वास।।
आद अनाद धर्म राजा धर्म गुरु गुसांई को होम धूप वास।।
उत्तर, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण चारों दिशा (खूंट) के सिद्धों को होम धूप वास।।
पीरों, महन्तों, कुठारी, भंडारी, कारबारी, पंच, सर्व भेष भगवान अनन्त कोटि सिद्धों को होम धूप वास।।
पवनमुख सूखे, अग्निमुख जले होम धूप वासना होयले।
ॐ गुरु जी वासना वासलो, थापना थाप लो।
जहां धूप तहां देव, जहां देव तहां पूजा, अलख निरंजन और नहिं दूजा।
इतना मंत्र पढ़ योगी धूप ध्यान करे, सो योगी अमरापुर जावे।
बिना मंत्र धूप ध्यान करे, खाया जरे न वाचा फुरे।
इतना धूप मंत्र जाप संपूर्ण सही। अनंतकोटि सिद्धों में श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

नाद जनेऊ का मंत्र

सत नमो आदेश गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
आदि में शून्य, शून्य में ऊँकारा, आओ सिद्धो नाद बिन्द का करो विचारा।।
नादे चन्द्रमा, नादे सूर्य, नाद रहा घट पिण्ड भरपूर।
नाद काया का पेषना, बिन्द काया की राह। नादे बिन्दे योगिया तीनो एक स्वभाव।
बाजे नाद भई परतीत, अनन्त कोटि सिद्धों में आए श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी अतीत।
नाद बाजे काल भाजे, ज्ञान टोपी गोरष साजै।
डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्हाई, वाटे घाटे टल्ल जागे।
सुन्न सुकेसर; पीर पटेश्वर, नगर कोट महा माई।
टिल्ला शिवपुरी का स्थान, चार युग में मान, मूल–चक्र मूल थान।
पढ़ मंत्र योगी नाद बजावे, छत्तीस भोजन अमृत कर पावै।
बिना मंत्र पढ़ योगी नाद बजावे, खाया जरे न वाचा फुरे, तीन लोक में कहीं ठौर न पावै।
जो जाने नाद–बिन्द का भेव, आपही करता आपही देव।
संध्या शिवपुरी का बेला, अनन्त कोटि सिद्धों का युगों युग मेला।
इतना नाद जनेऊ मंत्र सम्पूरण भया, श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

नाद जनेऊ जाप

ॐ नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश!
ग्यान का ऊन विज्ञान कपासी, काते ऊन शंभू अविनासी।
उस ऊन का जनेऊ बनाया, ब्रह्म गांठ ब्रह्मा ने लगाया। शिव गांठ शिव जी ने लगाया।
विष्णु गांठ विष्णु ने बांधा, अर्ध गांठ शक्ति ने सांधा।
सतगुरु जग्योपवीत बनाया, छानौ चोवा माप फ्रमाया।
सोई जनेऊ पहरे भगवाना, तीन वरण कौ दिया समाना।
यज्ञोपवीत शुद्ध कर पाया, सन्ध्यावन्दन अलख जपाया।
जनेउ पहरे सहेत अवलाक, वेद पुरान शास्त्र गुरु साख।
सेली सिंगी का विस्तारा, गरजे जोगी जोग अनुसारा।
सेली गूंथ गले विच राखे, कलह कलेस निकट नहि ताके।
सुरसति तीरथ निसदिन न्हाया, गुरु चरणों में ध्यान लगाया।
योगी तपते ब्रह्म समाना, ज्ञान फावड़ी धूनी ध्याना।
ब्रह्म अगनि धूनि ताव जगावै, तब मस्तक पर भस्म चढ़ावै।
शील सबूर कमर कोपीना, आठ पहर योगी लव लीना।
ऐसा जोगी विरला कोई, तीन लोक का भरता सोई।
योगी योग युगति परमान, घट में परसे पद निर्वान।
भूखा रहे न मागन जाये, सत की भिक्षा बैठा खाये।
तात शब्द अपवर्ग है, गुरु शब्द है सार। श्री सत गुरु के नाम से, बेड़ा उतरे पार।।
बेड़ा उतरे पार जति गोरख नाथ मतवाला है। नौखण्ड चौदह भुवन सब सृष्टि का रखवाला है।।
चार वेद षट शास्त्र में गुरु गोरख का ज्ञान निराला है। नौ नाथ चौरासी सिद्धों में सरपंच गोरख बाला है।।
आदेश आदेश नाथजी, आदेश पुनः आदेश। जपो जाप जनेऊ का, रहे न कलह कलेश।।
सेली सिंगी जनेऊ शब्द जाप संपूर्ण सही। अनन्त कोट सिद्धों में श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।।
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश! आदेश!

चीरा देने का मंत्र

ॐ सत् की छुरी हीरों से जड़ी, पांच महेश्वर लिये बुलाय, मस्तक धरिया हाथ।
कौन मुख छुरी कौन मुख धार? अग्नि मुख छुरी पवन मुख धार।।
चीरा दिया श्री ईश्वर आदिनाथ जी, नाम धरियो श्री करधर नाथ।।
इतना चीरे का जाप सम्पूर्ण सही, गादी पर बैठ श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भगवां मंत्र

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी !
ॐ सोहं धूंधूकारा, शिव शक्ति ने किया पसारा। नख से चीर भग बनाया, रक्त रूप में भगवां आया।
अलष पुरुष ने धारण किया, तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धो धरो ध्यान, भगवां मंत्र प्रमाण।
गेरू पानी अंचला सतगुरु का उपदेश। सिद्ध चले गोदावरी कर पिताम्बर भगवां भेष।।
इतना भगवां मंत्र सम्पूर्ण भया, श्री नाथजी गुरुजी आदेश! आदेश!

तूम्बे का मंत्र

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
जागती ज्योति की प्राप्ति, अनन्त कोटि सिद्धों ने मिल थापना थापी।
चार युगों के बीज मंगाये, धरती माता पर पधराये।
उसमें लागा तूम्बा, उसमें से एक ही रखना भाई।
ताम्बा तूम्बा, दोनों सुच्चा, राजा योगी दोनों ऊंचा।
ताम्बा डूबे, तूम्बा तरे, इस विधि राजा योगी की सेवा करे।
पात्र पवित्र तूम्बा पवित्र कहे महादेव सुन पार्वती! तूम्बा सदा राखिये पास!
इतना तूम्बा का मंत्र सम्पूर्ण भया, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

चिमटे का मंत्र

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
कैलाश पर्वत से योगेश्वर आया, अलष पुरुष से चिमटा लाया।
कौन शब्द से चिमटा लाया? कौन शब्द से उतरे पार?
चकमक चिमटा धूनी पानी, सब राखिये साथ, गुरु शब्द सिद्धों की बाणी।
लोहे का चिमटा, सतगुरु का ज्ञान, चिमटा राखे योगी निर्वाण।
चिमटा साजे चिमटा बाजे, चिपिया मांही चिमटन की काया।
चिमटे ने सारी सृष्टि को जगाया, इतना चिमटा का मंत्र सम्पूर्ण भया।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

बाघाम्बर मृगछाला मंत्र

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
अलष पुरुष बैठे आराधो, अपनी खाल खाक में मिलाय, जब मृगा की खाल पर आसन लगाय।
बिना मंत्र पढ़े आसन पर बैठे, ऐसा डूबे थाह न पाये। पढ़ मंत्र आसन पर बैठे सो योगी अमरापुर जाय।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

खप्पर का मंत्र

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
खप्पर धरती, खप्पर आकाश, खप्पर में तीन लोक करे निवास।
पहला खप्पर ऊँकार का, दूसरा खप्पर सिद्धों का।
तीसरा खप्पर धरती सारी, चौथा खप्पर माई की ज्योति प्रकाश, उधारे शरीर।
कौन खप्पर नाके घाटे? कौन खप्पर ब्रह्मा बाटे?
कौन खप्पर खाये खीर, कौन खप्पर ले उधारे शरीर?
चांदी के खप्पर नाके घाटे, सोना के खप्पर ब्रह्मा बाटे।
जहरी खप्पर खाये षीर, मिट्टी के खप्पर उधारै शरीर।।
खप्पर में खाय मसान में लेटे, काल भैरव की पूजा कौन मेटे?
राजा मेटे राज पाट से जाये, योगी मेटे योग ध्यान से जाए, प्रजा मेटे दूध पूत से जाये।।
काला भैरों कपले केश, गुरु का बालका करता फिरे अलेष! अलेष!
काला पीला तोतला तीनों बसें पाताल।
मस्तक बिन्दी सिन्दूर की, हनुमान भैरों योद्धा, रक्षा करे रक्षपाल।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

विभूति धारण करने का मंत्र

ॐ गुरु जी विभूति माता विभूति पिता, विभूति तरण तारणी।
मानुष ते देवता करे, विभूति कष्ट निवारणी। सो भस्मन्ती माई, जहाँ पाई वहाँ रमाई।।
आद के योगी, अनादि की विभूति, सत के नाती धर्म के पूत।
अमृत झरे धरती फले, सो फल माता गायत्री चरे।
गायत्री माता गोबरी करी, सूरज मुख सूखी अग्नि मुख जरी।
अष्ट टंक विभूति नव टंक पानी, ईश्वर आंणी पार्वती छांणी।
सो भस्मन्ती हस्तक ले मस्तक चढ़े, चढ़ी विभूति दिल हुआ पाक। अलष निरंजन आप ही आप।।
इति विभूति चढ़ाने का मंत्र सम्पूर्ण भया, श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

धूप ज्योति मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
चेतन धूनी धूप प्रकाश, कहे पार्वती सुनो महेशा, सोने का धूपिया जरनी का धूप, जामें निपजे ब्रह्म स्वरूप।
जल सोधो थल सोधो, सोधौ मेरु मण्डल कैलाश। पांच तत्व का धूपिया सोधौ, जागे जोत प्रकाश।।
आतम देव निरंजन ज्योति, प्रकटे झलमल मणिक मोती।
ॐ ज्योतिः पुरुषाय विद्महे, महाज्योति पुरुषाय धीमही, तन्नो ज्योति निरंजनः प्रचोदचात्।।

औघड़ पंच मात्रा

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
जागो गोरक्ष जोग अवधूता, सेली सिंगी दण्डक सोटा।
पत्र पावड़ी झोली झंड्डा, हाथ का कड़ा, कड़िये का मतंगा, धावना भेष तणी निशानी।
तज दिया कड़ा, सुमरणी माला, भेष तणां भगवान रखवाला।
भैरव, बांध के विभूति रमाये, गुरु शब्द से अमृत पावे।
कड़ा कलंगी कण्ठी माला, बाजे मृदंग मुरली, पूंगी।
ताल धतूरा, दांतर मंजीरा, सो धर्णी का लाल तम्बूरा।
सांकल संख गुदड़ी तूंबी, मौनी मृगछाला, त्रिशूल आगीवाला, सुंही (सुंई) मतंगा।
कुर्ता टोपी सिरणी मोर कलंगी, सो राखे योगी अवधू बहुरंगी।
शिव लाया एक सुपारी, हनुमान को दीनी हेतसे, तुम रखे, ब्रह्मचारी।
अनांण बनांण चार खूंणी दो कान, इतना जाणे तो जाण।
नहीं तो झोली झंडा उरे आंण, औघड़ पंच मात्रा सम्पूर्ण भया,
अनन्त कोटि सिद्धों में बैठके श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

औघड़ पंच मात्रा

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
अवधू अवधू बनखंड में वासा, पिण्ड प्राण योगी रहे न उदासा।
गले का तागा गले लगाया, पांच तत्व का परिचय पाया।
सुरत की सेली ऊन का टोप, बिना धागे गोदड़ी पूरा तोल।
मन मतंग, धीरज धरेही, अलख पंथ में खेले विरला कोई।
मत्त की धोती सत्त की कोपीन, मन का अंगोछा, जिभ्यान पोथी।
इति मंत्र लय बाला तंत्र मतवाला। टुकड़ा मांगों अविनाशी का औघड़ मतवाला।
तन की चीनी मन का मेल, गरम धूनी गुरु शिक्षा मेल। धूनी में कौन कौन रंग?
लाल रंग, जरद रंग, स्याह रंग, सफेद रंग। दिल दरिया बैठकर अवधू फूल माला बनाई।
नीर कलक चापक, चौरी, मोर के दस्ता। शब्द ले गुरु का चंचल मार मृग हराया।
काढ़ मृगा तले बिछाया, तले की कूंची को आकाश चढ़ाया।
ऐचरी, खेचरी, भूचरी, चाचरी, उन्मुनी पांचों नर सिद्ध काया।
धन्य धन्य विस्तार तुम्हारा, यश का चेला गुरु हमारा।
दण्ड कमण्डल उड़ानी, औघड़ पंच मात्रा जाप सम्पूर्ण हुआ।
गंगा गोदावरी त्रिमुख क्षेत्र कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला पर बैठकर,
श्री नाथ जी ने कथमथ कर सुनाई। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

रुद्राक्ष का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश! आदेश। ॐ गुरु जी!
मुखे ब्रह्मा, मध्ये विष्णु, लिंगाकारे महेश्वरं। सर्व देव नमस्कारं रुद्राक्षाय नमो नमः।।
गगन मण्डल में धुन्धुकार, पाताल निरंजन निराकार। निराकार में चरण पादुका, चरण पादुका में पिण्डी।
पिण्डी में वासुकि, वासुकि में कासुक, कासुक में कूर्म, कूर्म में मरी, मरी में नागफणी।
अलष पुरुष ने बैल के सींग पर राई ठहराई।।
धीरज धर्म की धूनी जमाई, वहां पर रुद्राक्ष सुमेर पर्वत पर जमाइये।
उस में से फूटे छः डाली, एक गयी पूर्व, एक गयी दक्षिण। एक गयी पश्चिम, एक गयी उत्तर।
एक गयी आकाश, एक गयी पाताल, उसमें लाग्या रुद्राक्ष।।
एक मुखी रुद्राक्ष श्री रुद्र श्री ऊँकार आदिनाथ जी पर चढ़ाइये।
दो मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये चन्द्र सूर्य को। तीन मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये तीन लोकों को।
चतुर्मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये चार वेदों को। पांच मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये पांच पाण्डवों को।
छः मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये षट् दर्शन को। सात मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये (सप्तऋषि) सप्त समुद्रों को।
अष्ट मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये अष्ट कुली नागों को। नव मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये नव नाथों को।
दस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये दस अवतारों को। ग्यारह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये ग्यारह रूद्रों को।
द्वादश मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये बारह (सूर्य) पंथ को। तेरह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये तेतीस कोटि देवताओं को।
चौदह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये चौदह भुवन (चौदह रतन) को। पन्द्रह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये पन्द्रह तिथियों को।
सोलह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये सोलह कला को। सतरह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये सतवंती श्री सीता माता को।
अठारह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये अठारह भार वनस्पति को। उन्नीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये अलष पुरुष को।
बीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये विष्णु भगवान को। इक्कीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये इक्कीस ब्रह्माण्ड शिव को।
निरमुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये निराकार को। इतना रुद्राक्ष मन्त्र सम्पूर्ण भया।
श्रीनाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

चौरासी सिद्ध गायत्री जाप

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
सिद्ध सुमिर कर चले गोदावरी, तीन भुवन हो सिद्ध।
भूल्या पंथ पथिक घर ध्यावे, अष्ट सिद्धि नवनिधि घर पावे।
सिद्ध मीन मत्स्येन्द्र नाथ, चर्पट, कन्देरी (कणेरी), कानीपा।
गजकन्थड़नाथ, अचल अचम्भे नाथ, श्री गोविन्दा, चन्द्र चौरंगी।
पूर्ण शाखा, लोहा, हरका, घोड़ा–चोली, चंचला।
इनकी थिरकाया अरु बज्र काया पिओ सिद्धो उन्मुन प्याला।
सर्व के पति श्री शम्भूयति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

ॐ गुरु जी मलका, कपली, बिरुआ, टिड्डी टिण्डाई, अमराई।
डाली, कबरा, खेचर, गोचर, नन्दाई, बन बनखण्डी, अर्जुन नागा, भवदण्डी (बहुदण्डी)।
इनकी थिर काया अरु बज्रकाया पीवो सिद्धो उन्मुन प्याला।
सर्व के पति श्री शम्भूयति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
ॐ गुरु जी कणकाई, भुसकाई, उपाई, सारस्वताई, बोताई।
चालीपा, सुरगाइ, बाल गुन्दाई, सागर कूण्डी, झाड़ीपा।
धौरीपा, घोचर, भोचर (बहुचर), ढीया, ढमक, ब्रह्मानन्द, कुम्हारिपा।
अजयपाल, कपिल मुनि, सिद्ध धुन्धली, सिद्ध धोरमनाथ, सिद्ध बीर बंकनाथ।
सिद्ध मूंगाई, सिद्ध–विचारनाथ।
इनकी थिर काया अरु बज्रकाया पीवो सिद्धो उन्मुन प्याला।
सर्व के पति श्री शम्भूयति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
ॐ गुरु जी अच्युत नाभ (नाथ) रसल गोसाईं, ठीकर नाथ, स्यों गुसांई।
नुकता, नकता, बाईपा, सिद्ध–मूंगीपा, सिद्ध–हाण्डीपा, सिद्ध–खपरीपा।
सिद्ध–चौरा, सिद्ध–जालन्धरपा, मुनि गोपीचन्द, भरथरी।
इनकी थिर काया अरु बज्रकाया पीवो सिद्धो उन्मुन प्याला।
सर्व के पति श्री शम्भूयति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
ॐ गुरुजी औघड़, स्वामी, नासकेतु, सनकादिक, नवनाथ, उघाड़ीपा।
कन्द मूल फल खावे रहे, गिरी पर्वत की छाया।
बिना पंख उड़ जावे, आदि (नाभि) कंवल पर ध्यान लगाया।
सो चले सिद्ध योगी माया की छाया करे।
नवनाथ चौरासी सिद्धों का नाम लेते जल पर लौह तरे।
इनकी थिरकाया अरु बज्रकाया पीवो सिद्धो उन्मुन प्याला।
सर्व के पति श्री शम्भूयति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
इतना चौरासी सिद्ध नामि गायत्री जाप सम्पूर्ण भया, श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

पंच धूनी चौरासी सिद्ध जाप

सिद्ध सुमर कर चले देशावर, तीन भुवन होसी इन्द्रावल।
भूल्या पंथ पथिक घर ध्यावै, अष्टसिद्धि नवनिद्धि घर पावै।।
अजर अमर तन सिद्ध चौरासी, सुमरै नाम हरै अघ राशी।
जरना जोग अमीरस प्याला, पहली धूनी निरंतर माला।।
ॐ नमो आदेश! सिद्धांकौ–
मीन मछिन्द्र, सिद्ध चौरंगी, चरपटनाथ, सिद्ध मातंगी।

कनक कानेरिनाथ, नाथ जालंधर, अचलि अचंभेनाथ, गजकंधर।।
श्री गोविन्दनाथ चंगेरी, पूरण साख, सिद्ध सिंगेरी।
लोहाहर, घोड़ा चोलीपा, चंचलनाथ, अचल, कपिलपा।।
सिद्ध चौरासी नाथ नव जोगी, नीझर नीर अमीरस भोगी।
जिनकी थिर काया अज्रकाया, बरसे सावण शीतल छाया।।
उनमुन सिद्धो पीयो प्याला, सबके पति श्री शंभू यति गुरु गोरखबाला।
पहली धूनी निरंतर माला, दूजी धूनि धूखती ज्वाला।।
ॐ नमो आदेश! सिद्धांकौं–
अम्बाई, गुरु सारस्वताई, सहजाई, भूताई, भ्राई।
समझाई, सिध बालगुँन्हाई, कुण्डाई, सागरपुराई।।
सिध नृताई, सिद्ध सुरताई, गोध्याई, सिध अगोचराई।
ब्रह्माई, नन्दाई, ठिकराई, कनकाई, भुसकाई दो भाई।।
सिद्ध चौरासी नाथ नव जोगी नीझर नीर अमीरस भोगी।
जिनकी थिर काया अज्र काया, बरसे सावण शीतल छाया।।
उनमुन सिद्धो पीवो प्याला, सबके पति श्री शंभू यति गुरु गोरखबाला।
दूजी धूनी धुखती ज्वाला, तीजी धूनी सहे गुरुबाला।।
ॐ नमो आदेश! सिद्धांकौं–
ॐ मिलाई सो मिलाई, टिण्टाई, मिण्टाई, मिलकाई।
जुक्ताई, मुक्ताई, साही, लोहा लपटाई, अपरोही।
अर्जुन नागा, सुक्कड़, भुक्कड़, भौदण्डी वनखण्डी, सब्बर।
धुंधलिनाथ, सिद्ध धोरंगा, सिद्ध गरीब नाथ गुण गंगा।।
सिध चौरासी नाथ नव जोगी, नीझर नीर अमीरस भोगी।
जिनकी थिर काया अज्रकाया, बरसे सावण शीतल छाया।
उनमुन सिद्धो पीवो प्याला, सबके पति श्री शंभू यति गुंरु गोरखबाला।
तीजी धूनी सहै गुरुबाला, चौथी धूनी अखण्ड उज्याला।।
ॐ नमो आदेश! सिद्धांकौं–
सागरकुण्डि, अघारीनाथ, पर्वतनाथ, सवाईनाथ।
ढैया, ढामक, कमरीपाव, ब्रह्मानन्द, उघारीपाव।।
अजैपाल, गोपाल विसंखा, बंकनाथ, कौलीकरफंका।
मुंगाई, सिद्ध विचार नाथ, भूचर, खेचर, कुमार नाथ।।

सिध चौरासी नाथ नव जोगी, नीझर नीर अमीरस भोगी।
जिनकी थिर काया अजकाया, बरसे सावण शीतल छाया।।
उनमुन सिद्धो पीवो प्याला, सबके पति श्री शंभू यति गुरु गोरखनाथ बाला।
चौथी धूनी अखण्ड उज्याला, पांचवी धूनी न धूवां धौला।।
ॐ नमो आदेश! सिद्धांकौं–
ज्वालीनाथ कपालीनाथ, अचेतनाथ कुठालीनाथ।
खपरीपा, सिध हांडी पाव, हालीपाव, उसारी पाव।।
हड़ताली, मालीपा, व्याली। सिध चौरासी नाथ नामावली।।
अनन्त सिद्ध नाथ नव योगी, नीझर नीर अमीरस भोगी।।
जिनकी थिर काया अजकाया, बरसे सावण शीतल छाया।
उनमुन सिद्धो पीवो प्याला, सबके पति गुरु गोरखबाला।।
पांचवी धूनी न धूवाँ धौला, ना भभूत ना काला कौला।
अंग भभूत न जोग न भोग, ना लय विलय न रोग निरोग।।
एकोंकार रह्या घट पूरि, आपहि सूरज आपहि नूरि।
जैसा तैसा नाम अलख्या, भूख न प्यास न मांगे भिख्या।।
सीजी काया जोग जगाया, नौ नाथ चौरासी सिद्ध सुहाया।
ऊरम धूरम जोती ज्वाला, जरना जोग अमीरस प्याला।।
औघड़ स्वामी नासकेत, सनकादिक सिध साधका।
नौ नाथ चौरासी सिद्ध, जोगेसर जति आदका।
कन्दमूल फल खाय रहे गिरिवर की छाया। बिना पंख उड़ जाय, ऊर्ध कमल ल्यौ लाया।।
नौ नाथ चौरासी सिद्धोंका नाम लेने से पानी पर लोहा तरै।
श्रीनाथजी की चरण कमल पादुका पर पान फूल की पूजा चढ़ै।।
सिद्धो गुरु पीरों, योगेश्वरों को आदेश आदेश।।

जाप की कार का मंत्र

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
सत्य का आसन, सत्य का सूत! सत्य का व्रत रक्षा करे श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी अवधूत।
ॐ कण्ठी, सोहं माला, सोहं ध्यान लगाया। श्रीनाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

पात्र देवता स्थापना

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश! आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
सत्युग मध्ये काहे का आसन? काहे का सिंहासन?
काहे की सेली काहे का नाद? काहे की मुद्रा? काहे का पान, फूल, फल?
काहे का पात्र थपाया? कौन पंख बोलिये?
ॐ गुरु जी! सत्युग मध्ये सोने का आसन, सोने का सिंहासन,
सोने का पात्र थपाया चन्द्रमा पंख बोलिये।
त्रेतायुग मध्ये काहे का आसन? काहे का सिंहासन?
काहे की सेली काहे की नाद? काहे की मुद्रा? काहे का पान, फूल, फल?
ॐ गुरु जी! त्रेतायुग मध्ये चांदी का आसन, चांदी का सिंहासन।
चांदी की सेली, चांदी का नाद, चांदी की मुद्रा, चांदी का पान, फूल, फल?
चांदी का पात्र थपाया, सूर्य पंख बोलिये।
द्वापर युग मध्ये काहे का आसन? काहे का सिंहासन? काहे की सेली? काहे का नाद?
काहे की मुद्रा काहे का पान, फूल, फल? काहे का पात्र थपाया? कौन पंख बोलिये?
ॐ गुरु जी! द्वापर युग मध्ये ताम्बे का आसन तांबे का सिंहासन।
ताम्बे की सेली ताम्बे का नाद, ताम्बे की मुद्रा ताम्बे का पान, फूल, फल?
ताम्बे का पात्र थपाया, पांचों पाण्डव पंख बोलिये।
कलियुग मध्ये काहे का आसन, काहे का सिंहासन। काहे की सेली? काहे की नाद?
काहे की मुद्रा? काहे का पान, फूल, फल? काहे का पात्र थपाया? कौन पंख बोलिये?
कलियुग मध्ये माटी का आसन माटी का सिंहासन ?
माटी की सेली, माटी का नाद। माटी की मुद्रा, माटी का पान, फूल, फल?
माटी का पात्र थपाया, पवन पंख योगेश्वर मारी हांक।
जो करे पात्र की भ्रान्त, उसकी देवी माई काली के दांत।
जो करे पात्र सेवा, उसको मिले मीठा मेवा। इतना पात्र देव स्थापना जाप सम्पूर्ण भया।
गंगा गोदावरी क्षेत्र, त्रिमुख देवता, कौलागिरि पवर्त अनुपान शिला पर बैठकर,
श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ने कथ पढ़कर सुनाया सर्व सिद्धों को आदेश! आदेश!
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

नाद मुद्रा चक्रावलि जाप

ॐ नमो आदेश गुरु जी को आदेश आदेश ॐ गुरुजी!
सुंन्र सुंन्र महा सुंन्र, महा सुंन्रमें ऊँकारा, आओ सिद्धों नाद बिन्दु का करो विचारा।
नादे चन्दा नादे सूर, नाद रह्या घट पिण्ड में भरपूर।

नाद काया का पोखना, बिन्द काया का राव। नादे बिन्दे जोगेश्वरा, तीनो एक स्वभाव।।
ज्ञानी जोगी नाद बजावै, छतीस भोजन अमृत कर पावै।
अज्ञानी जोगी नाद बजावै, खाया पीया अकारथ जावै।।
एकोंकार तेरा आधार, तीन लोक में जै जै कार।
नाद बाजै काल भाजै, गोरख टोपी ज्ञान की छाजै।।
गले नाद पुहप की माला, रक्षा करै श्री शंभू जती गुरु गोरख नाथ जी बाला।
चारखानी चारबानी, चन्दा सूरज पवन पानी।
एक देवा सर्व सेवा, जोत पाट ले परसो देवा।।
कानों कुण्डल गले नाद, करो सिद्धो नाद ओंकार।।
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश।
श्रीबाले गोरक्षनाथजी को आदेश आदेश।
गुरुदेव जाहेर जोगी को आदेश आदेश।

रौरास (रहोरहस्य)

ॐ नमो आदेश आदेश गुरांजीकौं आदेश आदेश ॐ गुरुजी!
सतकी पारखा सिद्धका योग, उचारंते विचारंते नहीं व्यापन्ते रोग।
धुन्धी योगी, छेत्र मेला, काया नगरी, हृदय स्थान। पांच तत्त ले रहे प्रधान।
पांच तत्त में रूप न रेखा। बोलन हारा आप अलेखा। ।
नहीं देही नहीं देवरा, नहीं मसजिद नहीं मुनारा।
नही पूजा न पाती, नहीं उपजे नहीं विनसे, नहीं मूल नहीं डाल नहीं वृक्ष नहीं छाया।
जिसका ध्यान सदा शिव ने लगाया।।
देवी पारवतीजी! उपायलो खपायलो जा बैठो शिवां संग।। ? गुरुजी!
असंख्य युग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये?
सतयुग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये?
त्रेतायुग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये?
द्वापर युग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये?
कलियुग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये? ॐ गुरुजी!
असंख्य युग मध्ये अलीलनाथ जी पीर अनहदनाथ जी तदबीर बोलिये।
सतयुग मध्ये ईश्वर आदिनाथ जी पीर पाकल नाथ तदबीर बोलिये।
त्रेतायुग मध्ये अवगतिनाथ पीर, सिद्ध चोरंगीनाथ जी तदबीर बोलिये।
द्वापर युग मध्ये दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी पीर, गुरु गोरक्षनाथ जी तदबीर बोलिये।
कलियुग मध्ये गुरु गोरक्षनाथ जी पीर औघड़ तदबीर बोलिये।

रोट लंगोट लांगो पाट सोने की मुद्रा रूपे का नाद।
कौन भेष बोलिये? तोतला कपला, छींटकी झोली पाठ का मेखला।
चंद्र से योगी गुप्त रहेंगे, बन्ध हथ्यार बाण चलायेंगे।
गुरु को नहीं मानेंगे सबद को नहीं झेलेंगे।
दमड़ी चमड़ी का लोभ लालच करेंगे ले नाम गुरां का दोज़ख भरेंगे।
कहता हूं सुनता हूं देता हूं हेला! गुरु की करणी गुरु जायेगा चेले की करणी चेला!
गंगा गोदावरी त्रयम्बक क्षेत्र, कौलागढ़ पर्वत, अनुपान शिला पर।
राजा रामचन्द्र की पीरी उठी, सतनाथ ब्रह्मा की पीरी बैठी।
खड़े सिद्ध, बैठे पाषान; अनन्त कोटि सिद्धों में आये श्री शंभू जती गुरु गोरक्ष नाथ जी निर्वाण।
आकाश भैरव पेशावर स्थान, गोरष–हटड़ी कदली–स्थान।
टिल्ला शिवपुरि का स्थान, चार थांन पांचवां मुकाम।
असंख जुगांकी रौरास पीरां महंतांके पास।
संध्या काल का (प्रातःकालका) बेला, शिवपुरिका मेला, अनंत कोटि सिद्धोंका युगों युग मेला!
ॐ गुरुजी सुन्न सुन्न महा सुन्न, महा सुन्न में ऊँकारा।
आवो सिद्धो नाद बिंद का करो विचारा! नादे चंदा नादे सूर, नाद रह्या घट पिण्ड में भरपूर।
नाद काया का पोषना, बिन्द काया का राव। नादे बिन्दे योगेश्वरा तीनों एक स्वभाव।
ज्ञानी योगी नाद बजावे, छतीस भोजन अमृत कर पावै।
बिना मंत्र योगी नाद बजावै, खाया पीया अकारथ जावै।।
एक ऊँकार तेरा आधार। तीन लोक में जै जै कार।।
नाद बाजै काल भाजै। गोरष टोपी ज्ञान की छाजै।।
गले नाद पुष्प की माला। रक्षा करे श्री शंभू यति गुरु गोरष नाथ जी बाला।।
चार खानी, चार बानी, चंदा सूरज पवन पानी।। एक देवा सर्व सेवा जोत पाट ले परसो देवा।।
कानों कुण्डल गले नाद, करो सिद्धो नादोंकार। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश! आदेश!

षट्दर्शन गायत्री

ॐ गुरु जी प्रथम दर्शन योगी का कहिए, योगी सो जो कमावे योग, उलटे पवन भगावे रोग।
धुंधुकार में ताल मिलावे, आपे भैंरू आपे काल, प्रथम स्वरूप दर्शनी योगी का कहिए।
दूसरा दरसण जंगम का कहिये जंगम सो जो जन्म सुधारे, दृढ़ ब्रह्म समाधि में बैठे।
बेगम सुर में रहा उपाय, चन्द्रमा स्वरूप जंगम का कहिए।
तीसरा दरसण सेवड़े का कहिए।
सेवड़ा सो जो सेवा करे, लाख चौरासी जीआ जून की रक्षा करे।
उज्जवल रहणी भंजन ज्ञान, तेवड़ा सेवड़ा सूरज प्रमाण सेवड़े का कहिये।

चौथा दर्शन सन्यासी का कहिये, सन्यासी सो जो सुन्न में तपे, गुरु का शब्द ब्रह्म से जुटे।
माया राखे न ममता साथ, आकाश स्वरूप दर्शन सन्यासी का कहिये।
पांचवां दर्शन जीवित शरीर दरवेश का कहिए।
जिन्दा सो जो जिन्दगी जाने, दरिया की लहर दिल में पहचाने।
खड़ी न छेड़े न पड़ी खाय, जिन्दा दोज़रव छोड़ भिश्त (बहिश्त) में जाय।
पांचवां स्वरूप दर्शन जिन्दा पीर दरवेश का कहिये।
छठ्ठा दर्शन ब्राह्मण का कहिए, ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछाने, षट् दर्शन की महिमा बखाने।
न्हावे धोवे विवेक विचार, सो ब्राह्मण भवसागर पार।
गुरु हमारे अजर तपे, छः दर्शन गुरु भाई।
सत सत भाखंते श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी राई।।
आचार की धोती, विचार की कोपीन, सत की जनेऊ नाम की छाप।
दया की झोली विवेक की तनी, युक्ति का टोपा, षे (अक्षय) की विभूति, निगह (दृष्टि) से रमाई।
नख भग चीर जौ प्रमाण चीरा दिया, सकल सृष्टि संसार।
गोरख धंधा फेरो हरदम, सहजे नन्दी सहजे मायी।
सहजे नौं नाथ चौरासी सिद्धों ने फरमाया। आदि नाथ का रास्ता किसी विरले योगेश्वर ने पाया।
इतना षट् दर्शन गायत्री सम्पूर्ण सही। गादी पर बैठ श्री गुरु गोरक्षनाथ ने कही।
श्री नाथ जी गुरुजी आदेश! आदेश!

अवधूत–गायत्री

ॐ गुरु जी अवधू अवधू भाई भाई। अवधू खोजो सब घट माहीं।
उस अवधू का सकल पसारा, वो अवधू है सबसे न्यारा।
उस अवधू की संगत करना, उस संगत से पार उतरना।
उत्तराखण्ड से जोगी आया, ऊँचे चढ़कर नाद बजाया।
नाद जगाकर ब्रह्म जगाया, ऐसा योगी कभी न पाया।।
अगम अगोचर खोजो भाई, उस जोगी की कला सवाई।
सुन्न (गगन) मण्डल में इसकी फेरी, काली नागिन इसकी चेली।
इस नागन ने सब जग खाया, ऐसा योगी कंबहूँ न आया।
ऊँचे बैठकर नाद बजाया, नाद बजाकर ब्रह्म जगाया।
दूर देश से योगी आया। सेली सिंगी बटुबा लाया।
बटुवे भीतर नागिन आई। नागन मार तले बिछाई।
तब योगी ने जुगत कमाई। ताता तत्त लाई जल थल रहा समाई।
ऐसी कथनी कथो मेरे भाई। ऊँच नीच भरम, कुछ नाहीं।

अलष भिक्षा घर घर मांगूं, कर पर खाऊं, भले बुरे के संग न जाऊं।
मैने छोड़ी घर की लाज, मैने छोड़ी लोक लाज।
लाज मर्यादा दोनों पगा, यदा बदा हो ही। हिन्दू तुर्क मिले दो भाई।
कोटि अनन्त सिद्धों का मेला, पीर पैगम्बर, सभी भेला।
देही मेरु दोनो उठें, सत की फकीरी दोनो बैठें।
करनी में डाला कुंडा, क्या करे करनी बेचारी, षट् दर्शन की करले सेवा, तब तो सिद्ध का साधक कहावे।
इतना अवधूत गायत्री जाप सम्पूर्ण भया।
अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा।
सिद्धो गुरुवरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

गोरक्ष कुंडली

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
प्रथमे बोलिये श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी देव।
विष्णु देव, महेश्वर देव, ब्रह्मादेव, शक्ति देव, आकाशे पाताले शेष।
अनन्त कोटि सिद्धों कूं करलो आदेश! आदेश!
आरती दर्शन नाम तुम्हारे, आप तरे जगत को तारे, ज्ञान खड्ग ले काल को संहारे।
जब हांक पै डंका बजावै, खेचरी भूचरी से देव दानव काल को मारे।
गोरक्ष जपे अनघड़ काया, सोलह कला सम्पूरण माला।
घट पिण्ड की रक्षा करे श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।।
अमरी धो धो पीवो खीर, अमर हो देही बज्र हो शरीर।
ॐ गुरु जी राम को कर लो आदेश, गौरी शंकर को करलो आदेश।
पश्चिम देश में आई ऊमा देवी, आगे बैठी, मीन मत्स्येन्द्र गोरक्ष योगी।
जब दोनों ने किया आदेश, नहीं लिया आदेश, नहीं दिया उपदेश।
जब देवी क्रोध में आई, खंजर बांध हृदय को धाई।
नाथ निरंजन सही कर लई, नवमे द्वारे ताड़ी लाई।
दशमें ब्रह्म–अग्नि परजाली, जलने लगी तब खड़ी पछताई।
राख राख हो शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी राख।
तुम्हारी हूंगी चेली, जगत की हूंगी माई।
माई कहता भोचर सा तन का कपट, हार श्रृंगार गहूँगी।
शिव शंकर स्वामी जी! तुम्हारा कौन विचार।
हम कुछ नहीं जानें देवी जी, अपना गाढ़ा आपही जानो।
ईश्वर गौरां दोनों मिल जावें हार। ईश्वर जी गए सातवें पाताल।।

बाले गोरक्ष की महिमा अनन्त अपार।
काया न माया, छाया कील विच कहां है, हे देवी जी।
हम को गुरु मुख दिया तुमको ब्रह्मा मुख दीन्हा।
अनन्त कोटि सिद्धों में दण्ड, कमण्डुल, दीना, अपने ज्यूँ गुरु मुखी चीन्हा।
घटो घटो गोरख कहे कहाणी, काचे भांडे रहे न पानी।
घटो घटो गोरक्ष रहे जागन्ता, पाप के पहरे सोवन्ता, धर्म के पहरे जागन्ता।
घटो घटो गोरक्ष भए उदास, ज्ञानी के हम गुरु, मूर्ख के हम दास।
घट घट गोरक्ष योग पुकारे, अमर धन कोई बिरला जाने।
इन देव अकील गुफा आए, सूरज सरिखा तपी नहीं, चन्द्रमा सरिखा शीतल नहीं।
इन्द्र राजा बर्षन्ते, धरती माता सुफल फलन्ते, शिव दर्शनी योगी, नित्य उठ ध्यान धरन्ते।
पद्म शिला पर बैठकर श्री शंभू यति गुरु गोरक्ष नाथ जी।
दुष्ट को मुष्ट को, जादू को टोना को, मढ़ी को मसाण को, भूत प्रेत को।
बांध बांध जल्दी बांध, रोम रोम में बांध, बाल बाल में बांध।
नव नाड़ी बहत्तर कोठा को बांध, जल्दी भस्म कर डाल।
नहीं बांधे तो माता का दूध की धारा लाजे।
इतना गोरष कुंडली जाप सम्पूर्ण सही। गादी पर बैठ गुरू गोरक्षनाथ जी ने कही।
सिद्धो, गुरुवरो, योगेश्वरो आदेश! आदेश!

मोहम्मद बोध

ॐ गुरु जी। अल्लाह इस्मिल्लाह बिसमिल्लाह, राम तो रहीम है। ॐ तो मोहम्मद है।
शीश तो मस्जिद है, सिर तो मदार है। कान तो कुरान है।
नैन तो नबी हैं, नाक तो कबर है। मुख तो मक्का है, हाथ तो हजरत हैं।।
पेट तो दोजख़ है। कदम तो रसूल है। पिण्ड तो पाक है, परवरदिगार है।
अकल तो पीर है, मन तो मुरीद है, तन तो शैयद (शहीद) है।
गुस्सा तो हराम है। लावा–लूतरी सभी हरकत है।
दो शब्दों का करो विचार, कौन काफर कौन मुरदार।
हम नहीं काफर, हम फकीर। जा बैठे सरवर के तीर।
चोरी यारी, दुर्मत से डरें। जागते पुरुष की बन्दगी करें।
लोग दूनी से लावें डाका। क्यों कहे काफर ? काफर सो, कुरस्ते चाले।
अल्ला खुदा का खौफ न माने। लुखा कलमा पढ़ें बथेरे।
साईं के नाम कुछ खर्चे न खाये। सदा रहे काल की दृष्टि मीयां।
मुसलमान को मोहम्मद ने नस्सी बसायी, सिदक, सबूरी, कलमा पाक।
पड़ी न छेड़े, खड़ी न खाय। सो मुसलमान दोजख छोड़ भिस्त को जाय।।

बाबा आदम की करनी, माई अमीयां के पेट से मोहम्मद पैदा हुये।
भगनी से मंखी पड़ी, जा विटाला बादशाह का खाना खाया। सल्तनत, बादशाह सन्मुख हुये।
हजरत पर कलमा बाबा रतन नाथ हाजी ने सुनाया।
वालैकम सलाम भाई, दिल की दूर करो स्याही। सफेदी है, काल का बाना। मरना हक है, जाना।
मोहम्मद से माई सिदक से पीर पहचानिये।
किधर किये घोर, किधर किये सिरहाना? उरूष किये घोर, दुरूष किये सिरहाना।
बोलो राम खुदाई, लोह न लौहार, कर्द कहां से आई?
बिन ऐरन बिन हथोड़े कर्द घड़ी किने भाई? जिस ममडी का दूध पीया था, रूह कहां छिपाई?
हक–हक करके मुल्ला बोला मस्जिद बांग सुनाई। तीसों रोज़े खूब करे था खोज मिले न राई।
कहे गोरख, सबके घट माई। वजू कीये से पाक नहीं, बांग दीये से साख नहीं।
हिन्दू ध्यावे देवरा, मुसलमान मस्जिद। फक्कड़ ध्यावे एक को, जहां दोनों की परतीत।।
बाबा आदम, बीबी हवा, मक्का मदीने चढ़े तवा। पहली रोटी फकड़ को रवा।
न दे रोटी, उड़े खटोती, फूटे तवा, फकड़ खेले अपनी हवा।
हिन्दू कहे तो मारीये, मुसलमान भी नाय। पंच तत्व का पूतला खेले गैबी माय।
गैबी आया गैब से, आन लगाये ऐब। उलट समा गया गैब में, पड़े रहे सब ऐब।।
हम न हिन्दू होवेंगे, हम नहीं मुसलमान। हम षट दर्शन में रहते रहमान।
हम मतवाले रब के मार दयो किसी और को, दूर खड़े रहो।
आहे ले लिल्ला, हजरत समान होल विल्ला।
कुल पढ़ूं, कलमा पढ़ूं। बिन कलमा कुछ नाहीं। कलमा देखो खोज के, क्या है कलमे माहीं।
क्या करे निमाज, बिन निमाज आगे खड़ा। रखे था रोजा, तन मन क्यूं नहीं खोजा।।
जाये था मक्का, दिल को मक्का क्यों नहीं किया। लिपटे था निरन्जन के नैनों में किया निवास।
या दिल सच्चा, चारों तरफ मक्का ही मक्का। किसको कहूं काला, धोला, बाहर, भीतर एक ही मौला।
रूण्ड मुण्ड मौला, जाके रूप न रेख। आडा परदा खुल गया चाहे जिधर को देख।
हिन्दू के गुरु मुसलमान के पीर। बाबा आदम के फकीर।
हिन्दू को लम्बा करके जला दीजिए। मुसलमान को लम्बा करके दफना दीजिये।
बीच में श्री नाथ जी का आसन लगा दीजिये।
इन दोनों में से जो कोई उठे उसके दो दो कुत्के लगा दीजिए।
एक लाख अस्सी हज़ार ब्रह्मा के बेटों में मोहम्मद ने मृतक नाथ नाम धराया।
इतना मोहम्मद बोध जाप सम्पूर्ण हुआ। श्री शंम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ जी ने अटक दरयाव पर
बैठ कर मोहम्मद को समझाया। श्री नाथ जी, गुरु जी को आदेश! आदेश!

धूनी प्रचण्ड जाप

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
प्रथमे सिमरुं श्री शम्भूजति गुरु गोरक्ष नाथ जी।
हाट नाथ जी वाट नाथ जी, दो चेले दग दग धर्तरी प्रचण्ड धूनी।
अग्नि का कोट पवन की खाई। अलष पुरुष की सेज बिछाई।
बाला योगी पौढ़न आये, ऊँचे चढ़कर नाद बजाये।
कानों में कुण्डल सिर पर जटा, हाथ फावड़ी कान्धे लता।
नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने मिलकर किया धूनी पानी का मता।
सिद्ध ने फरमाई साधक ने आनी। धूनी पानी सिद्धों की बानी।
धूनी का पोट अग्नि का कोट। धूंए का गोला। तीनों पुरुष एक समान।
न जले धर्ती, न जले आकाश, धूनी का हुआ प्रकाश।
जीया जन्तु कीड़ा मकौड़ा मोक्ष मुक्ति फल पाई। पांच कोस आगे से पांच कोस दाहिनी भुजा।
पांच कोस बाईं भुजा बीस कोस ऋद्धि सिद्धि ला धूनी माई।
नहीं लावे तो श्री शम्भू जती गुरु गोरक्ष नाथ जी की दुहाई।
कौन आसन जपूं जाप, कौन आसन धंरु ध्यान? कौन आसन रहूँ शुन्य में कौन, आसन कथूं ज्ञान।।
पूर्व आसन जपूं जाप, उत्तर आसन धरुं ध्यान। दक्षिण आसन रहूँ शुन्य में। पश्चिम आसन कथूं ज्ञान।।
इतना प्रचण्ड धूनी जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

गोरक्ष कील

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी,
गंगा यमुना सरस्वती, तहाँ बसन्ते योगीजन, गऊ दुहन्ते ग्वाला, गावा संग तरन्ते।
त्रिया पुजन्ते त्रिया मोहन्ते, ताके पीछे मोया मसान जागे,
मनसा वाचा कील कीलन्ता, ताके आगे मोया मसाण जागे,
ऐसी चले, घरट चले घराट चले, कुंभकरण का चक्र चले,
द्रोपदी का खप्पर चले, परशुराम का परसा चले, भीम की गदा चले, शेष नाग की खोपड़ी चले।
नागा बागा चोरटा तीनों दीजे फाही। ईश्वर महादेव का वाचा फुरे,
गोरक्ष चले गोदावरी, आँचल मांगी भिक्षा, श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! ओदश!
ॐ गुरु जी चोर का घर कीलूँ, सर्प का दर कीलूँ।
शेष नाग की खोपड़ी कीलूं, शेर का मुख कीलूँ, डाकिनी शाकिनी कीलूँ, खड़ग सिहारी कीलूँ।
बैठती का दाढ़ कीलूँ, भागती का पूठा कीलूँ, छल कीलूँ, छलिद्र कीलूँ, भूत कीलूँ प्रेत को कीलूँ।
बिच्छू का डंक कीलूँ, सर्प का डंक कीलूँ। ताप तेइया चौथैया कीलूँ।

कलेजे की पीड़ा कीलूँ, आधा शीशी कीलूँ, सारे शरीर का दर्द कीलूँ,
दुष्ट कीलूँ, मुष्ट कीलूँ, सार की कोटड़ी बज्र का ताला, जहाँ बसे जीव हमारा।
रक्षा करे श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला,
ॐ गुरु जी शीश कील कलेजा कीलूँ, पिण्ड प्राण पीछे से कीलूँ, कीलूँ, काया का सृजनहार।
नरसिंह वीर कीलूँ, अन्जनी का पुत्र वीर बंकनाथ कीलूँ, सिरहाने की सूई कीलूँ।
उठता उजयपाल कीलूँ, बैठा वीर बेताल कीलूँ,
अष्ट कुली नाग कीलूँ, तीन कुली बिन्छू की कीलूँ।
वार पर वार कीलूँ, आकाश की किसमिस मिर्चा कीलूँ।
मढ़ी कीलूँ, मसाणी कीलूँ। उठती कुंज कीलूँ, महिषासुर दानव को कीलूँ,
इतनी मेरे गुरु जी की भक्ति की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। देखो सिद्धो गोरख कील का तमाशा।
ॐ गुरु जी, घट पिण्ड कीलूँ, मच्छर डांस कीलूँ, संध्या बत्ती को कीलूँ।
उड़ते के पंख कीलूँ, राजा कीलूँ, प्रजा कीलूँ, और कीलूँ संसार।
कथ में मथ के आकाश की कड़काड़ाहट कीलूँ।
पाताल का वासुकि नाग कीलूँ, अंग संग गोरख कील।
सखियारी सत्य सवारी, चले पीर दस्तगीर, सर्वरधाम।
अल्ला अहमद फ़ातमा, धरे श्री नाथजी का ध्यान। मक्का कीलूँ, मदीना कीलूँ और कीलूँ हिन्दु का द्वार।
दिन परी जड़ साकले कीलूँ, कीलूँ आई कला।
ॐ गुरु जी गोरख चले मक्के मदीने ले मुसल्ला हाथ।
कबर कीलूँ गुस्तान कीलूँ, किर किर करे, आकाश जरे।
श्री नाथजी का नाम दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी की आन।
कलियुग में सिद्धो गोरक्ष कील प्रमाण ॐ फट् स्वाहा।

लक्ष्मण कुंडली

ॐ गुरु जी सत्त हीन पृथ्वी, गगन हीन पानी, वेद हीन ब्रह्मा, ज्ञान हीन योगी।
सिद्धो! देखो कलू काल की निशानी।
अग्नि रूपी समोनारी, घृतरूप समो नरः। कथ्यते लक्ष्मण जतीः।।
माता जाकी लष्टम पस्टम, पिता वर्ण संकरा। तासु पुत्र भये योगी धुन्धुपाधी तस्करा, मस्करा।
माता जाकी सतवन्ती (सीलवन्ती), पिता सत, सत भाषंते।
तासु पुत्र भये योगी, योगारम्भ को साधन्ते, अष्टोत्तर कुल तारन्ते।। पाप छोड़ पुण्य लगन्ते।
कहो तो गुरु जी धरती पलटूं, कहो तो पलटूं काया। कहो तो गुरु जी दीन पलटूं कहो तो खैंचूं माया।।
काहे को लक्ष्मण दीन पलटो, काहे को खींचो माया। आपो आप धुन्धु (द्वन्द)मचेगा, हुकम गुरु का आया।।

दर्शनी तो कर्षनी होंगे, राजे होंगे हाली। जती सती कोई विरला होगा, हो जाएँगे सब घर बारी।।
पहरा आएगा शाह का, धरती मांगेगी भोग। कितनों को षड़ग संहारसी कितनों को व्यापे रोग।।
पैसे पैसे में घोड़ा होगा, धेले धेले नारी। जती सती कोई बिरला रहेगा, और सब हो जायेंगे घर बारी।।
देवल देख के देव धसेगा, मस्जिद देख मुनारा।
जम्बू द्वीप में हलचल मचेगी कोई न होगा सिद्धो वर्जनहारा।।
तपस्वी तो हाट, मांगेगा, सुद्र तो एकादशी रखेंगे।
ब्राह्मण तो बाट मांगेंगे, गुरु चेले का प्रायश्चित लगेगा।।
पुत्र न माने माई ना बाप। सात वर्ष की कन्या साधेगी घरबार।।
इन्द्र तो अलप बरसेंगे, संसार तो निष्फल फलेगा, नदी नालों का जल सूख जायेगा।।
गंगा यमुना सातवें पाताल में बहेगी, तब सिद्धो आया कलूकाल का वर्तमान।
दिल्ली तख्त का झंडा झाड़ फाड़ कर बिछावेंगी, चौसठ योगिनी बैठकर मंगल गीत गावेंगी।।
श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण, जिस पर बैठे अलष पुरुष निर्वाण
पहले बैठी बामना, पीछे बैठी बीणजपुत्र। जगत व्योवहार, जोगी कूड़ा कामनियाँ।।
हम तो सिद्धो तत्व निर्वाणी, अधर तत्त लौ लाई!
नित्त उठ अपनी काया को खोजो, आवागवन मिट जाई।।
सत् की सिद्धो सेली बांधलो, सब्द गुरु का वाचा, रण में झूंझे सो सूरमा जान।
असंख जो जोगी रहे मलंगा, खड़ग कामिनी खेले संगा।।
हंस हंस रखो काया गढ़ का राज, दृढ़कर राखो अपने पास।
बज्र की लंगोटी बांधो कसकर, पांच भूत आतमा करलो वश।।
लक्ष्मण जी कहे राम चन्द्र जी सुन लो!
कलयुग मध्ये वृत्तान्त सम्पूर्ण, लक्ष्मण कुंडली जाप सम्पूरण भया।।
टिल्ला शिवपुरी स्थान पर बैठकर सिद्ध बाल गुंदाई जी ने कथ पढ़कर सुनाया।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! ओदश!

सूर्य मंत्र

ॐ सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
ॐ ऊगंत सूर, बाजंत तूर, बरसंत सूर काल कण्टक जाहि दूर।
हाथ खंग गले पुष्प माला, नौ खण्ड पृथ्वी भया उज्याला।
त्रिकाल देवता सूरज स्वरूपी, प्रभाते ब्रह्म स्वरूपी,
मध्याह्ने विष्णु स्वरूपी, सन्ध्याह्ने शिव स्वरूपी,
एता सूर्य जाप जपन्ते, अष्ट सिद्धिनव निधि फलंते।
ऊँकार, जै जै कार, सूर्य देवता को नमस्कार।

पंच स्नान व्रत जाप

सत्यसील दोय स्नानं त्रितीये गुरु वाक्यम्। चतुर्थे क्षिमा स्नानं पंचमे दया स्नानं।।
ये पंच स्नान निर्मला, नित प्रति करत गोरष बाला।।
सील व्रत संतोष व्रत, क्षिमा दया व्रत दान। ये पांच व्रत जो नर गहै, सोई साधु सुजान।।
इन व्रतां का जानै भेव, आपहि करता आप हि देव।
मन पवन ले उनमनि रहै, एते व्रत गोरष नाथ कहै।।

सर्भङ्ग लीला

ॐ नमो बिसमिल्लाह सो विष्णु, अल्ला सो अलेष।
राम तो रहमान। सैयद घोड़ा सैयद पलाण। जा पर चढ़िया मोहम्मदा पीहर (पीर) पठाण।।
कौल हिन्दू कौल है मुसलमान? कौल का बांध्या जमीन सारे सात आसमान।।
तल धरनी धीर धराया, उपर अम्बर सकल छाया। सरभंग है सब संसारा, जिसका नाम लिया निस्तारा।
सर्व अंग सूर्य सकल प्रतापे, सर्व अंग चन्द सकल में व्यापे। सर्व अंग इन्द्र सकल में गाजे, सर्व अंग पवन सकल में बाजे।।
मैं सर्भंगी सबका संगी, सबको भेद बताइंदा। औघड़ का चेला फिरे अकेला, ना कोई शीश नुमाइन्दा।।
जोड़ करे तो जाबर देऊं, इन्द्री पकड़ नुमाइन्दा। मैं भठियारी कामणगारी, घर घर लाय लगाइन्दा।।
बज्र मन्त्र को गोला फेकूं, पाखर पेड़, उड़ाइन्दा। बानाधारी परोपकारी, कर उपकार चलाइन्दा।।
सुखा छोड़ गर्भ के माही, तीजी घड़ी बताइन्दा। नाहर बकरी भेल चरा दयूँ, एकै प्याला पाइन्दा।।
ऊपर कर धरती, तल कर अम्बर, उल्टा राह चलाइन्दा। छाया कर माया ने फेरूं, ब्रह्मा ने वैह कराइन्दा।।
आमण इमण करूं स्नेवा, राखूं वर सन्ता मेवा। राजा कर दूं कारा मींढा, हाकिम कर दयूं भैसा।
भैसाने नौ गज कर दयूं ऊंचा नीचा। नौ नाथ ने बोलूँ ऊंचा।।
क्या त्यागी क्या विरागी, क्या भोपा भरड़ा भांड। इतनो की मैं मूंडूं मैया।
मत छेड़ रंडी! मुंड्या माथा जोगी बड़ा जुगत के भीतर। त्राटक ध्यान धरा ज्योगीस्वर।।
उलट चरखा राह चला दूं उलटा सात समेटूं पाणी। गोरख बोले उल्टी वाणी, कूएं ऊपर चादर ताणी।।
मढ़े मसाणां धूनी घालूं मेरी लूरी लीरी में। बावन भैरूं चौसठ जोगन, छप्पन कलवा नौ नाहर सिंह।।
जादू मन्त्र तन्त्र, सातूं भैंणां, बृज बादली यह मेरा दास दासी।।
उन उस्माद हीददू तीजी ताली, देही का अटकाऊं नाला। कदे न निकसे बाला बाना, धार करूं उपकारा।।
राजा परजा पाय लगाय ल्यूं, जगत बुला ल्यूं डेरे। वीर हनुमान कड़ी जोगिणी, सब तत्वन को घेरे।।
चलाऊं आखर चले न पाखर, मांरू भैंरू बज्र की टाकर।
सिद्धाई का भूसा, पकडूं, ठोक दयूं धड़ में लक्कड़।।
लगे न फक्कर की टक्कर, जोगी सा बादशाह ने भुला दयूं साथ ही मक्कड़।
ढीमाला भैरू हड़ हड़ हंसे, तपकारी रेत मशान की शाई, सर्वंग लीला जाप सही।।

अन्ता अन्त क्रोड़ सिद्धों में गादी बैठ श्री गुरु गोरख नाथ जी ने महादेव के आगे बलक बुखारे के बादशाह से कही।
आपो आप सही, नौं नाथों की सही! चौरासी सिद्धां की सही।
ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति! सिद्धो गुरु पीरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

सर्भङ्ग गायत्री जाप

ॐ गुरु जी! मैं सरभंगी सबका संगी, सबको भेद बताऊंगा।
मैं ओघड़ का चेला, रमूं अकेला, नहीं मैं शीष नवाऊंगा।।
पातर कर पवित्र करलूं, भ्रांत कदे नहीं लाऊंगा, ऊंचा नीचा राजा पकडूं एकै प्याला पिलाऊंगा।
जोर करे जग जाव न पावे, सबको पकड़ बुलावूँगा, तले को अम्बर उपर को पृथ्वी उल्टी राह चलाऊंगा।
बज्र मन्त्र का गोला वाऊं, परबत मार उड़ाऊंगा, कहो तो पवन बसकर राखूं कहो तो मेह बरसाऊंगा।
मारू मेख वज्र की टक्कर, आखर आगे चले नहीं पाखर।
कोट कपाट बांधू घाटा, लंगड़ी बुची का मूण्डूं माथा।
जोगी बड़ा जुगत के मांही, सहस्र ध्यान धरे जोगेश्वर।
नख कर दूं न्यारा, भजूं अपरा भेला, मन्त्र पदवी का गर्व करे तो जला दूं पूला।
सिद्धाई का बाना पूछूं गाड़ दूं दह मांही। लेरी लीरी बावना भैरू सैल शिकारी।
रक्त हाड बीज भाली तुम्हारी दासी, आके मुंह काला कर दूं राजा कर दूं भैंसा।
डाकनी शाकिनी भूत पलीतनी, ताप तंजारी तोड़ूं।
अटक दो नाड़ी हजरत मांगे भाड़ा। ब्रह्मण्ड को ताला।।
गोरक्ष बोले उलटी वाणी। खोलूं कूआ उपर चादर तानी।।
आसन मारूं गहरा–गहरा, जा शमशान लगाऊं डेरा।।
धौल जगा बुलवाओ ढेर, गोरक्ष नाथ गुरों का चेला। मढी मसाना फिरे अकेला।।
कामरू देश चली चण्डी, हाथ में लिये तेल की हण्डी।
चण्डी–चण्डी फिरे ब्रह्मण्डी, सरभंग गायत्री जाप सम्पूर्ण सही
अनन्त कोटि सिद्धों में कैलाश पर्वत पर बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

जोत माता की रौरास

ॐ गुरुजी! आटी घाटी; ब्रह्म कपाटी, अलष पुरुष पौढ़े निज पाटी।।
लागी कूंची खुलिया ताला। पिण्ड ब्रह्मण्ड भया उजियाला।।
आवो चंदा बैठो पास। हमको कहो धर्म की बात।।
सूरज बाला करे विचार। धर्ती तपे अपरम्पार।।

उत्तर दिसा से धुंधूकार। जोत जगाय किया जैकार।
बलिबलि जाऊं लागूं पाँऊँ, जोति भवन में शीश नमाँऊँ।।
जोत जगै सिरथान में, सूरज कोटि समान। जो सुख गहरा चाहिये, तो धरो जोति का ध्यान।।
जागी जोति भागी छोत, जहां जोत तहां उजियाला। तहां बैठे श्री शंभूजति गुरु गोरष नाथ जी बाला।।
जागती जोत धर्मका राज। सब की काल भैरव रांखे लाज।।
दुल्लुक्षेत्रे वैश्वानरी ज्वाला देविकौ हाथ जोड़ कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
गोरख डिब्बी ज्वाला बहै, जागै जोत अखण्डित रहै।।
कोट कांगड़े वाली भुवनेश्वरी, लाटां वाली को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
जोत जोत महाजोत, अटल जोत बालासुंदरी।
घटे पिण्डे जोति ज्वालेश्वरी को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
ॐ सौहं ऐं क्लीं एता बीज रूपा तारा त्रिपुरा तोतलाम्बा को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
महा माहेश्वरी आदिकुमारी उदयनाथ पार्वती को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
एकोंकार, द्विकुमार, तीन देव, चारवेद, पाच पांडव, छै जति, सात सती, आठ भैरव, नौ नाथ, दश औतार, ग्यारह रुद्र, बारह पंथ, जोगी, जती, तेतीस कोटि देवी देवताओं को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
श्री नाथ जी की चरण कमल पादुका को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
अयोनि शंकर गुरु आदि नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
माया रूपी दादा गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
श्री शंभू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
अष्ट भैरव नौनाथ चौरासी सिद्धों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
निनानवे कोटि राज योगेश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
अनंतकोटि सिद्ध साधकों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
असंख कोटि सूरवीर दाता दानियों कूं हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
हाजरा हजूर जाहर जिंद पीर जोगीकूं हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
धराधर गुप्त प्रगट जिवित समाधि वाले सिद्धों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
ग्यानी, ध्यानी, थानी, मकानी, संत, मंहत, नागा, निर्वाणी, जती, सती, त्यागी, तपस्वी, महासिद्ध योगीश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
राजा कोटि निनानवे अनंत कोटि नरवीर। सतगुरु सुमरण कारणे, सब तज भया फकीर।।
ऐसे करणी कमाई वाले राज ऋषीश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
योग युगति का अनुभव भाष्या। लष चौरासी पड़ंता राष्या।।
अप्रमाण निधि; अगम विचारै। आप तरै साथी संगी तारै।।
ऐसे परोपकारी सदगुरां को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।

नाद मुद्रा जोति ज्वाला घट में लषाया। पिण्ड ब्रह्माण्ड का भेद बताया।।
ऐसे तत्वज्ञानी गुरुदेव दाता को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश! नमामि नमः।।
सत्सरणं, तत्सरणं, जागती जोत तेरी ओट।
राख राख माता, शरण पड़े की लाज। तूं माता तूं पिता, तूं सबकी सिरताज।।
साधक आया शरण में धर्या चरण में शीश।।
बालक जानकर कीजिये, दया दृष्टि आशीष।।
जै जै जगदम्बे! अम्बेकी जागी जोत जोगमाया की जय!
ज्वालामाताकी जय! जागती जोत भवन की जय!
शंभो कैलासपति भोलेनाथ! बाल जति गुरुदेव गोरक्ष नाथ!
रक्षतां पाहि मां! त्राहि माम्! नाथ निरंजन! सब दुख भंजन! गोरक्ष योगी! काया निरोगी!
गत गंगा को आदेश! आदेश!

समाधि गायत्री बीज मंत्र

ॐ गुरु जी पानी की बूँद पवन का थंबा, देवल देख भया अचंभा।
जाग्रत नगरी दीजै वास। हंसा छोड़ चल्या कैलाश।।
आओ सिद्धो जोगि जमाति। सोधो धर्ती खोदो समाधि।
कितनीक समाध बोलिये। कितनीक गुफ़ा बोलिये?
अहूठ हाथ समाध बोलिये। सवा हाथ की गुफा बोलिये।
सवा हाथ का हाड बोलिए। चार अंगुल का मास बोलिये।।
तिल भर चाम बोलिये। चार अंगुल रोमावलि बोलिये।
सुंन नासिका सुंन समाध। शब्द बोलिये एकोंकार।।
जपो समाध बीज गायत्री। पीवो दूध दोहो धरित्री।।
ब्रह्मा धर्ति विष्णु कुदाली। ईश्वर गौरा माटी डाली।
पढ़ गुण मंत्र समाधि दीजै। तैया का भण्डारा कीजै।।
दूध भात का भोग लगाया। प्राण पुरुष अमरापुर ध्याया।।
जोगी पूजै पाँव पखाली। चूरी चिप्पी चादर थाली।।
बिना मंत्र समाधि देवै। सो प्राणी जम पुरी में रोवै।।
पढ़ो समाध गायत्री सारं। प्राणी पावै मोक्ष दुवारं।।
इतना समाध–गायत्री–बीज–मंत्र जाप संपूर्ण सही।
अनन्तकोटि सिद्धों में श्री नाथ जी गुरुजी ने कही।।
श्रीनाथजी गुरु जी को आदेश! आदेश!

समाधि–गायत्री

ॐ नमो आदेश! गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
ॐ आद, आद में सुंन्न, सुंन्नमें वाय, वायमें तेज, तेज में आकाश
ॐ बाला परमहंस निरंजन की काया।।
धर्तीमाता तूं मुझकूं दे निवास। तुझ ह्रदय मधि लूं निवास।
कोण सो धोती कोण सो देव? धर्ती धोती निरंजन देव।।
मास गलै तो धर्ती लाजै। चाम गलै तो महादेव लाजै।।
हाड़ गलै तो गोरख लाजै। हंसा उड़े तो निरंजन लाजै।
प्रथमें धर्ती द्वितिये आकाश। त्रितीये त्रिसंख्या देव प्रकाश।।
प्रथमें मुट्ठी जब उठाई, ऊँकार को खबर पठाई।
धर्तीमाता दे निवास! प्राणी पहुँचे तेरे पास। मोक्ष मुक्ति शिवपुरिका वास।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। लख चौरासी पड़ंता राख।।
तुम सुनो सहजा माई। तुम हम नहि तो प्रलौ हो जाई।।
ब्रह्मा धर्ती विष्णु कुदाली। ईश्वर गौरां माटी डाली।।
चेतन काया रुण्ड की माला। पिण्ड प्राण का तूं रखवाला।।
हर हर महादेव ॐ श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश! आदेश!
ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश! आदेश!
दूसरी मुट्ठी जब उठाई। सूरज चन्द्रको खबर पठाई।
धर्तीमाता दे निवास! प्राणी पहुंचे तेरे पास। मोक्ष मुक्ति शिवपुरी का वास।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। लख चौरासी पड़ंता राख।
तुम सुनो सहजा माई! तुम हम नहि तो प्रलौ हो जाई।।
ब्रह्मा धर्ती विष्णु कोदाली। ईश्वर गौरां माटी डाली।
चेतन काया रुण्ड की माला। पिण्ड प्राण का तूं रखवाला।
हर हर महादेव ॐ श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश! आदेश!
ॐ नमो तीसरी मुट्ठी जब उठाई। तीन लोक को खबर पठाई।।
धर्तीमाता दे निवास! प्राणी पहुंचे तेरे पास। मोक्ष मुक्ति शिवपुरी का वास।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। लख चौरासी पड़ंता राख।।
तुम सुनो सहजा माई! तुम हम नहि तो प्रलौ हो जाई।।
ब्रह्मा धर्ती विष्णु कोदाली। ईश्वर गौरां माटी डाली।
चेतन काया रुण्ड की माला। पिण्ड प्राण का तूं रखवाला।
हर हर महादेव ॐ श्री नाथ जी गुरुजी आदेश! आदेश! आदेश!

ॐ नमो चौथी मुट्ठी जब उठाई। चौबीस धूनी कौं खबर पठाई।
धर्तीमाता दे निवास! प्राणी पहुँचे तेरे पास। मोक्ष मुक्ति शिवपुरि कैलास।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। लख चौरासी पड़ंता राख।
तुम सुनो सहजा माई! तुम हम नहि हों तो प्रलौ हो जाई।।
ब्रह्मा धर्ती विष्णु कोदाली। ईश्वर गौरां माटी डाली।।
चेतन काया रुण्ड की माला। पिण्ड प्राण का तूं रखवाला।।
हर हर महादेव ॐ श्रीनाथ जी गुरुजी आदेश! आदेश! आदेश!
ॐ नमो पांचवी मुट्ठी जब उठाई। पांच तत्त कौं खबर पठाई।
धर्तीमाता दे निवास! प्राणी पहुँचे तेरे पास। मोक्ष मुक्ति शिवपुरि कैलास।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। लख चौरासी पड़ंता राख।
तुम सुनो सहजा माई! तुम हम न होते तो प्रलौ हो जाई।।
ब्रह्मा धर्ती विष्णु कोदाली। ईश्वर गौरां माटी डाली।
चेतन काया रुण्ड की माला। पिण्ड प्राण का तूं रखवाला।
हर हर महादेव ॐ नमो आदेश!।। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश! आदेश!।
इतनी समाध गायत्री मंत्र जाप संपूर्ण सही।
अनन्त कोट सिधों में श्री नाथ जी गुरु जी ने कही।।
सिद्धो गुरु पीरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

श्री नाथ जी के भण्डार में प्रयुक्त किये जाने वाले मंत्र

गणेश कूंची

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
गणेश आया ऋद्धि सिद्धि लाया। ऋद्धि सिद्धि का भरे भण्डार।।
देह कूंची हिगंलाज की ज्ञान कूंची ग्रहों की। कंठ कूंची गोरक्षनाथ जी की।।
लागी कूंची खुले कपाट अब देखो ब्रह्माण्ड का ठाठ, अक्षय नाथ जी का भरे भण्डार।।
अनन्त अनन्त कोटि सिद्धों में खीर खाण्ड का होवे प्रवान।।
लावो भण्डार धरो ध्यान, आगच्छ आगच्छ श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

श्री गणेश कूंची मंत्र

ॐ गुरु जी! गणेश आया, ऋद्धि सिद्धि लाया। ऋद्धि सिद्धि का भरो भंडार।।
पीर पैगम्बर औलिया आदेश उतारा। शिखर कोट के उपर आप विराजो। दर्शन दीजौ माँ हिगलाज!
अनभे कूंची अनभे ध्यान, लागी कूंची खुला कपाट। दुखीया भरे मूंज का ठाठ।।
जपता जाप कटंता पाप, अलष निरंजन आपो आप। गणेश कूंची मंत्र सम्पूर्ण भया।
गादी बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। सिद्धो गुरुवरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

कुबेर भण्डार गायत्री

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
ॐ सोहं आकाश डिब्बी पाताल का ठीया। धर्ती का चूल्हा करुं, आकाश का ठीया।।
नवनाथ चौरासी सिद्धों ने बैठकर भण्डार का मता किया।।
चढ़े डिब्बी, उतरे ऋद्धि–सिद्धि। काली पीली शिर जटा माई पार्वती का उपदेश, शिव मुख जावे।
हाथ खड़ग तत की माला, जाप जपे श्री सुरिया बाला।
ऋद्धि पूरे माई अन्न पूर्णा, घृत पूरे गणेश। अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महाकाली।
हीरा पूरे हिंगलाज नवखण्ड में जोत जगाई।
ऋद्धि लावो भण्डारी माई। ऋद्धि खूटे सदाशिव की जटा टूटे।।
ऋद्धि खूटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे।।
ऋद्धि खूटे माता पार्वती का कंगन टूटे। ऋद्धि खूटे मान थान का मान टूटे।।
चन्द सूर्य दो भरें साखी इतना कुबेर गायत्री जाप सम्पूर्ण भया।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भण्डार का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरुजी!
अन्न पूरे अन्नपूरणा, घृत पूरे गणेश। निधि नाथ भण्डार तपे, जोत जगाय महेश।।
आकास की डीबी पाताल का ठीया। नौनाथ चौरासी सिद्ध मिल भण्डार आरंभ किया।।
चढे डीब्बी उपजे भाव। राजा प्रजा लागे पाव।।
ये डीब्बी मस्तक बसी नीचे बरै अंगार। ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा तीनो करे संभार।।
ठीकर नाथ का ठीकरा सदा रहे भरपूर। इसका अन्त न पाइये भर्या भण्डार ढक्या भरपूर।।
इतना भण्डार मंत्र सम्पूर्ण सही! श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भण्डार चेताने का मंत्र

ॐ गुरुजी! आकास की डीब्बी, पाताल का ठीया। सब सिधों ने मिल, भण्डार का मत किया।।
चढ़े डिब्बी उतरे रिद्धि। उत्पति जोगनी रांधे सिद्धि।।
काली कपालनी सिर जटा, डीब्बी शिव के संग। मढ़ी मसाणे हांक फिरे, मेरे गुरु का रंग।।
धर्ती डब्बी ब्रह्म कपाली। ब्रह्मा विष्णु अगनि प्रजाली।।
सात समुद्र की लकड़ी आनी। रसोई तपे सो आद भवानी।।
शक्ति रूप सदा शिव स्वाय। अन्न–पूरणा सिद्ध साधकों की मांय।।
इतना भंडार चेताने का मंत्र सम्पूरण सही श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

बिलपात्रा का मंत्र

ॐ गुरुजी!
पहली पूजा आदकी, दूजी पूजा अनाद की। तीजी पूजा धर्ती माता की।।
चौथी पूजा अलील देवता की। पांचवी पूजा आकाश की।।
आकाश भैरव पेशावर स्थान। बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।।
बली भष बलाय भष जती सती को रख। पापी पाखण्डी को भख।।
त्वं प्रसंनं कोटान कोट भैरव भूपाल। क्षेत्रपाल, तृप्यताम तृप्यताम।। आदेश! आदेश! ॐ स्वाहा।।
इतना बिल पात्रा मंत्र सम्पूर्ण सही, श्री नाथ जी गुरु जी की सही।
नौं नाथ चौरासी सिद्धों की सही, अनन्त कोटि सिद्धों की सही, श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

भंडारे पाने के समय का मंत्र

उगंत सूर पात्र पूर। काल कंटक सब दूर। श्रीनाथ जी का भण्डार भरपूर। जति सती सेवक सूर।।

खाया जरै वाचा फुरै। चिन्ता अचिन्त्य नाथ की करै।।

जिसका अन्न उसीका पुन्न। जोगी अवधूत को पाप न पुन्न।।

अन्न का दाता सदा सुखी। वस्त्र का दाता कमला पति।।

दाता दे सन्तोषी खाये। तिस की वासना, तीन लोक में जाये।।

पिया अलील उत्तम जात। जैसा दीया वैसी बात।।

जति सती की कमाई जगत्र का भला, जत सत श्री नाथ जी तुम्हारी कला।।

अलख शिव गोरष। जति सति को रख।।

रुद्रनाथजी गुरुजी को आदेश! आदेश! सिद्धों! गुरुवरों, योगेश्वरों को आदेश! आदेश!

अन्नपूर्णा मंत्र

ॐ गुरु जी!

ददा दाता एक है, सबको देवनहार। देंदे टुट्ट ना आवसी अनन्त भरे भंडार।।

खाठी हरी कोठी भरी, जिस भंडार से निकला, सो भंडारा भरपूर होय।

खावे पीवे भस्माभूत, महादेव पार्वती दोनों अवधूत।।

जिसका चुन्न उसी का पुन्न। योगी अवधूत को पाप न पुन्य।।

अन्न का दाता सदा सुखी। वस्त्र का दाता कमलापति।।

दाता देय सन्तोषी खाय। जिसकी वासना तीन लोक में जाय।।

भंडार भरपूर काल कंटक सब दूर, लोह लंगर तपंता रहे। साधु संगत चलता रहे।।

नाम दान अस्नान बना रहे, सुख में वाधा (वृद्धि) होय। दुख दरिद्र दूर होय।।

जिस बहाने से अंस खाई लेखे जाई। नाम चित आई।।

गुरु गोरक्षनाथ चढ़ती कला। तेरे बहाने सर्वत्र का भला।।

श्री नाथ जी गुरुजी आदेश! आदेश!

पंचम–भाग

धूनि पर रोट बनाने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश! आदेश!
ॐगुरु जी! उबरे जनमे उबरे जाय। बांध जमात नाथ जी आय।।
तले धर्ती ऊपर आकाश। धूनी पानी का किया प्रकाश।
धूप दीप ले अगनि चढ़ाया। आसन बांध रोंट पधराया।।
गोघृत श्रीफल गूगल वास। झेलो माता धरतरी रोट का प्रकाश।
रोट भया संपूरण पाक। लाल वस्त्र से दीजै ढाक।।
आदि जोग अनादी माया। तब श्री नाथ जी कूं रोट चढ़ाया।।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

रोट को गादी देने का मंत्र

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
शुन्य शुन्य (सुन्न–सुन्न) महाशुन्य (महासुन्न), महाशुन्य (महासुन्न) में ओमकारा।
शिव शक्ति, मिल किया पसारा।।
नीचे धरती ऊपर आकाश। झेल झेल धरती माता रोंट का प्रकाश।।
नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश! आदेश!

रोट मुक्ता जाप

सत नमो आदेश! गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
आदि का योग अनादि की माया, जहाँ पर श्री नाथ को रोट चढ़ाया।
अन्न पानी का पूतला सतगुरु जी का उपदेश।
करद काढ़ कर रोट मुक्ता करूं, रक्षा करे श्री गुरु गोरक्षनाथ जी अलेष।।
श्री नाथ जी को नाभी चढ़ाऊँ। सर्व सिद्धों को शीश निवाऊँ।
श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी की चरण कमल पादुका पर मस्तक झुकाऊँ।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश! आदेश!

रोट नथाना जाप

सत नमो आदेश! गुरां जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
बिन बाती बिन तेल की, अहनिश जागे जोत। तहां चढ़ाया नाथ कूं, सवा मनों का रोट।।
जागती जोत रोट की पूजा। जिसका भाव न राखो दूजा।।
नाद बिंद का अनहद बाजा। पर्सो सिद्धो दुल्लुधर्म राजा।।
नाथका नथाना; गुरुका नाद। उचारिवा विचारिवा सिद्धो न करिबा वाद।।

दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी की चरण कमल पादुकाकौं नमस्ते नमस्ते नमस्कारं।
सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी की चरण कमल पादुका को नमस्ते नमस्ते नमस्कारं।
इतना रोट प्रसाद वर्तने को जाप संपूर्ण सही श्री नाथजी गुरुजी को आदेश! आदेश! आदेश!

दश बिल पात्रा

सत नमो आदेश! गुरुजी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
आदिनाथ जी बिल पात्रा थाप्या, ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे। नौ नाथ चौरासी सिद्ध बैठे।।
नौं क्रोड़ दुर्गा बैठी, प्रथम पूजा उत्तर दिशा की कीजै।।
नारदा शारदा देवी भवानी बम माया भरपूर। पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।।
पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।
कण्टक मार खप्पर में लीजै, दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई, ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव, जीया लेता बाला। तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते, एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल। एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा, अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष, जति, सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान। बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 1।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
दूसरी पूजा पूर्व दिशा की कीजै, कामरू देश कामक्षा देवी भरपूर।
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।
पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै, जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।
कण्टक मार खप्पर में लीजै, दैत्य मार दानव बलि लीजै।
उमा देवी, सहजानन्दी, माई ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला।
तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते, एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल। एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष, जति सती को रष।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान, बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 2।।

श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
तीसरी पूजा दक्षिण दिशा की कीजै, तुलजां देवी लकड़िया वीर भरपूर,
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।
पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै, जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला। तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते, एक जीव सूक्ष्म, एक जीव स्थूल, एक जीव मारे कूं पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष, जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान। बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 3।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
चौथी पूजा पश्चिम दिशा की कीजै, आशा देवी हिंगलाज माई भरपूर।
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।
बाल गोपाल के विघन हरीजै, जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई, ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला। तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै, एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते।।
एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल, एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष, जति सती को रष।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान, बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 4।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
पांचवी पूजा दिल्ली क्षेत्र की कीजै! कालिका माई समेत बावन भैरव, चौसठ योगिनी भरपूर।
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।।

सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला। तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै, एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते।।
एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल। एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष, जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान, बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 5।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
छट्ठी पूजा आकाश की कीजै। इन्द्र–देव, इन्द्राणी देवी भरपूर।।
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला। तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते। एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल, एक जीव मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष। जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान। बिलपात्रा मुक्ता किया कज़ली के स्थान।। 6।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
सातवीं पूजा पाताल क्षेत्र की कीजै। वासुकि नाग, नागिन देवी पाटन में भरपूर।। 7।।
आठवीं पूजा अष्ट भैरव की कीजै, मद्य मांस को षप्पर भरीजै, अठारह भार वनस्पति भरपूर।।
पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि–सिद्धि भण्डार भरपूर।।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला! तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै, एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते।
एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल, एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष। जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान। बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 8।।

श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
नवमी पूजा नौ नाथ चौरासी सिद्धों की कीजै, षीर षांड से पात्र भरीजै।
आदि शक्ति देवी भरपूर। पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा, प्रजा, यती, सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि-सिद्धि भण्डार भरपूर।।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला, तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते। एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल, एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष। जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान, बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 9।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
दशमी पूजा दशों दिशा की कीजै, मढ़ी मसाणा में वासा, रूष, वृक्ष की छाया में वासा करीजै।
कालका देवी भरपूर, पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजै।।
पीर, तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, राजा-प्रजा, यती-सती, साम चक्र।।
बाल गोपाल के विघन हरीजै। जो बलि मांगे, सो बलि दीजै।।
कण्टक मार खप्पर में लीजै। दैत्य मार दानव बलि लीजै।।
उमा देवी, सहजानन्दी माई। ऋद्धि-सिद्धि भण्डार भरपूर।
सोमावन्ती नाम बाल भैरव जीया लेता बाला, तृण चरणा पाणी पीता, धरती मुख सुमेला।।
हे देवी पार्वती जी! तेरे कारण पूजा रची, मम् दोष न दीजै।।
एक जीव रक्षते, एक जीव मक्षते। एक जीव सूक्ष्म एक जीव स्थूल, एक जीव कूं मारे पाप न पुण्य।
जा रे प्राणी मोक्ष द्वार! तेरा होगा शिव पुरी में वासा। अनन्त कोटि सिद्ध मिल भरें ग्रासा।।
भैरव बल भष बला भष, पापी पाषंडी को भष। जति सती को रष।।
कोटान कोटि भेषान भेषो तृप्तवान, बिलपात्रा मुक्ता किया कजली के स्थान।। 10।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!
इतना दश बिल-पात्रा जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश! आदेश!

सायं व प्रातः आरती स्तुतियां

निर्गुण लीला

ॐ श्री अवधू! निर्गुण दाता हरता करता, सब जग विनशे आप न मरता।
सदा सर्वदा अविचल होय, लेना एक न देना दोय। ऐसा मता सन्त का होय।।१।।
ॐ श्री अवधू! निर्गुण सागर अपरम्पार, जाकी तरंग बसे सकल संसार।
उत्पति प्रलय वाही में होय, लेना एक न देना दोय।।२।।
ॐ श्री अवधू! निर्गुण ब्रह्म लिखने से न्यारा, पोथी पुस्तक भरे अपारा।
कोरे कागज लिखि पढ़ जोय, लेना एक न देना दोय।।३।।
ॐ श्री अवधू! घट–घट मांही नित्य निवास, कली–कली कीजे फुलवास।
ऐ मन भोरा कर कर जोय, लेना एक न देना दोय।।४।।
ॐ श्री अवधू! कहा बताऊं रूप निशानी, ज्यों दर्पण में चमके पानी।
निश्चल ब्रह्मा अश्चल होय, लेना एक न देना दोय।।५।।
ॐ श्री अवधू! निर्गुण ब्रह्म अविचल देखा, शाखा पत्र रूप न रेखा।
छोटा मोटा कभी न होय, लेना एक न देना दोय।।६।।
ॐ श्री अवधू! अलख पुरुष मैं देखा दृष्टि, जो करना हो वाहु की पुष्टि।
निश्चय कर जन जाने जोय, लेना एक न देना दोय।।७।।
ॐ श्री अवधू! जग में होता रूप न रेखा, न होय तिरिया न होय पुरुषा।
बाला बूढ़ा कभी न होय, लेना एक न देना दोय।।८।।
ॐ श्री अवधू! ब्रह्म भवन में पोखर भरिया, बिन पानी बिन सागर तरिया।
सूरज कोटि उजियारा होय, लेना एक न देना दोय।।६।।
ॐ श्री अवधू! बिन उस्ताद मिल्या ना कोय, मिल्या बिना न लेखा होय।
लखते लखते हल्का होय, लेना एक न देना दोय।।१०।।
ॐ श्री अवधू! जिस कारण मैं मूण्ड मुण्डाया, सो योगी मोहे सहजे पाया।
आगा पीछा बैठा खोय, लेना एक न देना दोय।।११।।
ॐ श्री अवधू! सो योगी गुरु सहजे पाया, आगा पीछा सभी बताया।
जब ही सो बैठे सब खोय, लेना एक न देना दोय।।१२।।
ॐ श्री अवधू! पोथी पढ़ पढ़ भूले पण्डित, बहुत चलावहिं वाद वितण्डित।
पढ़ा घणा ते कुछ न होय, लेना एक न देना दोय।।१३।।
ॐ श्री अवधू! सात समुद्र स्याही करता, धरती कागज कर पर धरता।
इक अक्षर का अरथ न होय, लेना एक न देना दोय।।१४।।

ॐ श्री अवधू! निर्गुण सागर भरयो जिसका, तरते तरते यह मन थक्या।
तेरा पार न पाया कोय, लेना एक न देना दोय।।१५।।
ॐ श्री अवधू! जिस अवधू का सकल पसारा, सो अवधू है सबसे न्यारा।
उत्पति प्रलय निशानी जोय, लेना एक न देना दोय।।१६।।
ॐ श्री अवधू! कैसे जानूं काला धौला, सब घट मांही माणिक मौला।
पांच रंग से न्यारा सोय, लेना एक न देना दोय।।१७।।

निर्वाण समाधि

ॐ श्री अवधू! सतगुरु षोजो मन कर चंगा, इस विधि रहणा उत्तम संगा।
सहजै संगम आवै हाथ, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१।।
ॐ श्री अवधू! कंचन काया गुण रतना, सतगुरु खोजो बहु जतना।
हस्ती मन बांध रखो पास, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।२।।
ॐ श्री अवधू! बोलन चालन बहु जंजाला, वचने वचने जोग रसाला।
नेम धरम दो राखो पास, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।३।।
ॐ श्री अवधू! नीर निरंतर सिधों का वास, इच्छा भोजन परम निवास।
अच्छर मच्छर धुंध उपाध, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।४।।
ॐ श्री अवधू! पहले छोड़ो वाद विवादा, पीछे छोड़ो जिभ्या स्वादा।
अगम अगोचर खण्डे धार, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।५।।
ॐ श्री अवधू! आलस छोड़ो निद्रा तोड़ो, गुरु वचनां से इच्छा जोड़ो।
जिभ्या इन्द्री दोऊ राखो पास, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।६।।
ॐ श्री अवधू! अगम अगोचर कण्ठी बंध, वाई में खेले चौसठ संध।
उनमुन जोगी दसमें द्वार, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।७।।
ॐ श्री अवधू! आलस निंद्रा छीक जंभाई, त्रिष्णा डायण जगत्र खाई।
आकल बाकल बहु जंजाल, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।८।।
ॐ श्री अवधू! जोग दामोदर भगवाँ धरो, जोत नाथ का दरसन करो।
जत सत दोये राखो पास, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।९।।
ॐ श्री अवधू! वेद सास्त्र का बहु विस्तारा, परम जोत का अन्त न पारा।
पढ़े लिखे नहि आवै हाथ, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१०।।
ॐ श्री अवधू! पढ़ै लिखै से अजम्मर होय, तो ब्रह्मा क्यों प्रलये होय।
पढ़े लिखे से कारज सरता तो ब्रह्मा प्रलय काहे को करता।
पढ़ना लिखना ब्रह्माकी आस, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।११।।

ॐ श्री अवधू! जड़ी बूटी सींचो मत कोय, पहले रांड वैद घर होय।
जड़ी बूटी से कारज सरता, वैद धन्वन्तरि काहे को मरता।
जड़ी बूटी वैदों की आस, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१२।।
ॐ श्री अवधू! सोने रूपे का बहु विस्तारा, परम पुरुष का अंत न पारा।
सोना रूपा से कारज सरता, तो नृप छत्रपति काहे को मरता,
सोना रूपा जगत की आस, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१३।।
ॐ श्री अवधू! डरे डूंगरे चढ़ नहि मरना, राज द्वारे पग नहि धरना।
छोड़ौ राव रंक की आस, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१४।।
ॐ श्री अवधू! कनक कामनी दोनों त्यागो, अंचल भिक्षा पंच घर मांगो।
छोड़ो रूप रंग की आस, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१५।।
ॐ श्री अवधू! जोग सरूपी एकौंकार, गुरु खोजो पावो निस्तार।
गुरु वचनां के रहना पास, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१६।।
ॐ श्री अवधू! गगन मंडल में गुरु का वास, जहां पर हंसला करे निवास।
पांच तत्त ले रमणा साथ, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१७।।
ॐ श्री अवधू! अण्डाने जोगी मंडाने काया, मरै न जोगी बहुड़ि न आया।
सत सत भाषे श्री गोरखनाथ, श्री गुरु भाषे निर्वाण समाध।।१८।।
इतना निर्वाण समाध जाप संपूर्ण भया, अनंत कोटि सिद्धों में श्री शंभूजति गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कथ पढ़ के सुनाया सिद्धों आदेश! आदेश!

छः जतियों का शब्द

ॐ गुरु जी!
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी। सिद्धो जती सतियों का दर्शन पाया हो जी।
दर्शन पाया अलष धणी ध्याया हो जी। दर्शन पाया अमर हो गई काया हो जी।
सतगुरु मिले अमर हो गई काया हो जी।।टेक।।
पहिला पहिला जती शिव शंकर घर जन्म्या हो जी। जती स्वामी कार्तिक नाम धराया हो जी।
दूध उगल माता गौरां आगे धरिया हो जी। माता गौरां जी का भरम मिटाया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।१।।
दूसरा जती राजा दशरथ घर जन्म्या हो जी। जती लक्ष्मण नाम धराया हो जी।
बारह वर्ष बन खण्ड तप कीना हो जी। राजा रामचन्द्र पार न पाया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।२।।
तीसरा जती माता अंजनी घर जन्म्या हो जी। जती बीर बंकनाथ नाम धराया हो जी।
लंकनी उद्धार लंका जाय पहुंच्या हो जी। माता सीता जी की खबरां ल्याया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।३।।

चौथा जती वेदव्यास घर जन्म्या हो जी। जती शुकदेव नाम धराया हो जी।
बारह वर्ष गर्भ योनि में तप कीना हो जी। शिव के वचनां से बाहिर आया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।४।।
पाचवां जती पारस घर जन्म्या हो जी। जती गरुड़देव नाम धराया हो जी।
अष्ट कुली नाग भस्म जो कीना हो जी। इक कुली नाग बचाया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।५।।
छटवां जती गुरु गोरक्षनाथ कहिये हो जी। जिन्हां साढ़े बारह पंथ चलाया हो जी।
यह तो गर्भ योनि नहीं आया हो जी। निनानवे करोड़ राजा जोगी कीना हो जी।
इनकी प्रजा का अन्त (पार) न पाया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।६।।
सातवां जती नर नारायण कहिये हो जी। जिसने गढ़ मुलतान थपाया हो जी।
रघुपति जुगपति जुमला जगाया हो जी। सिद्ध मेहरनाथ यश गाया हो जी।।
आज तो हमारे घर आनन्द बरस्या हो जी।।७।।

बालाष्टक

ॐ गुरुजी, प्रथम सुमिरण श्री गुरां जी का कर लो हृदय में ज्ञान प्रकाशितं।।
श्री आदि योग युगादि ब्रह्मा, सेवते शिव शंकरं। श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।
जै श्रीनाथ जी के चरण प्रणाम्यहं।। जीवो जति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।। टेक।।
ॐ गुरुजी, बालयति गुरु ब्रह्म ज्ञानी, घट ही में ज्योति प्रकाशितं।।
उदित भानु बसंत कमला, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।१।।
ॐ गुरु जी, रहत निशदिन अगम अगोचर, सिद्ध ज्ञान प्रकाशितं।।
जपत सुर नर देव मुनि जन, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।२।।
ॐ गुरु जी, आकाश धूना पाताल मंडल, पवन संगम सायरा।।
अजनम अयोनि जी का स्मरण करलो, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।३।।
ॐ गुरुजी, आदि अंत अनादि निर्भय, रहत निश दिन उनमुना।।
लष चौरासी जीया जूनि जी का नाम रखलो, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।४।।
ॐ गुरु जी, जल तो अम्बर, थल तो सायर, सोहत गले में कण्ठा मेखला।।
कानों में कुण्डल विभूति आवरण, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।५।।
ॐ गुरु जी! एक ज्योतिगुरु सकल व्यापक, कोटि कुन्जर प्राकरम्।।
मदनमोहन जी का मान रख लो, श्रीबाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।६।।
ॐ गुरु जी, आबू का मंडल द्वारका क्षेत्र, गोरक्ष मढी संस्थान (अस्थान) है।।
श्रीमाधो प्राची में श्रीनाथ जी ने, रुकमणि जी के कंकण बांध्यो।
श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।७।।

ॐ गुरु जी इतना श्रीनाथजीका बाला जो अष्टक, पढ़त निशदिन कैलाश वास सदा फलं।।
श्री देव कृष्ण श्री नाथ जी की शरण आये, श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।८।।
जै श्रीनाथजी के चरण प्रणाम्यहं। जीवो जति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहं।।
ॐ गोरक्ष गोपालं घड़ी घड़ी के रक्षपालं। आई बलाये टालं, वृद्धं न बालं, जीते जम कालं।।
प्रातःकाल मंगला आरती की सिद्धो गुरुवरो योगेश्वरो आदेश! आदेश!

शिव गोरक्ष मंगल आरती

ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी, हर शिव जय जय गोरक्ष योगी।
वेद पुराण बखानत ब्रह्मादिक सुर मानत अटल भवन योगी, गुरुजी पिंडब्रह्माण्ड योगी
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।। टेक।।
ॐ गुरुजी! बाल यति ब्रह्मज्ञानी योगयुगति पूरे, गुरु जी ज्ञान ध्यान पूरे।।
सोहं शब्द निरंतर, अनहद नाद निरंतर, बाज रहे तूरे, गुरुजी ताल मृदंग धूरे।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।१।।
ॐ गुरुजी! रत्नजड़ित मणि माणिक, कुण्डल कानन में, गुरुजी झलकत कानन में।।
जटामुकुट सिर सोहत, भूरि जटा सिर साजत, भस्मन्ती तन में, गुरुजी भसम लसे तन में।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।२।।
ॐ गुरुजी! आदिपुरुष अविनाशी निर्गुण गुणराशी, गुरु जी सरगुण गुण राशी।।
सुमिरन से अघ नाशे, पूजन से अघ छूटे, टूटे जम फांसी। गुरुजी काटे भव फांसी।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।३।।
ॐ गुरुजी ध्यान कियो दसरथ सुत रघुकुल वंशमणि, गुरुजी रघुकुल राज मणि।।
सीता शोक निवारक, सीता निरभय कारण, मारयो लंक धनी। गुरुजी मारयो दैत गनी।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।४।।
ॐ गुरुजी! नन्द नन्दन जग वंदन गिरवर, वनमाली, गुरु जी मोर मुकुट धारी।।
निसवासर गुण गावत बंसी मधुर बजावत, संग रुकमणि बाली, गुरु जी गोप ग्वाल ग्वाली।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।५।।
ॐ गुरुजी! धारा नगर मैनावति तुमरो जोग करे, गुरुजी तुमरो ध्यान धरे।।
अमर करै गोपीचन्द अभय करै गोपीचंद, दुर्मति दूर करे, गुरुजी सब दुख दूर करे।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।६।।
ॐ गुरुजी! चन्द्रावल लख रावल निज कर घात मरी, गुरु जी विलखत आप मरी।।
योग अमर फल देकर, हस्तक मस्तक देकर; क्षण में अमर करी, गुरुजी पल में सिद्ध करी।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।७।।

ॐ गुरुजी! भूप अमित शरणागत जनकादिक ज्ञानी, गुरु जी सनकादिक ज्ञानी।।
मान दिलीप युधिष्ठिर, हरिश्चन्द्र से दानी, हरिश्चन्द्र से दानी, गुरुजी रघुकुल से ध्यानी।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।८।।
ॐ गुरुजी! धीर वीर संग ऋद्धि सिद्धि गणपति, चंवर करे, गुरुजी सुर नर चंवर ढरे।।
जगदम्बा जगजननी, आदिशक्ति महारानी, योगिनी ध्यान धरें, गुरुजी विमला ध्यान धरे।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।६।।
ॐ गुरुजी! इतनी श्री नाथजी की मंगला आरति, निसदिन जो गावे, गुरुजी प्रातः समय ध्यावे।
भणत विचारनाथ योगी, जपत भृर्तहरी राजा, सो परमपद, पावै गुरुजी सो अमरपद पावै।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।१०।।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी, गुरु जी हर हर गोरक्ष योगी।
वेद पुरान बखानत, ब्रह्मादिक सुर मानत, अटल भुवन योगी, गुरुजी पिण्ड ब्रह्मांड योगी।
ॐ शिव जय जय गोरक्ष योगी।।११।।
ॐ जय गोरक्ष जति, भूलो मति, पाप न लागे एक रती।।
प्रातःकाल मंगला आरती धूप ध्यान की, सिद्धो गुरुवरो योगेश्वरो, आदेश आदेश।।

श्री नाथ जी की संध्या आरती

ॐ गुरुजी! शिव जय गोरक्ष देवा, श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा।
सुरनर मुनिजन ध्यावत सुरनर मुनिजन सेवत, सिद्ध करें थारी सेवा।
श्री अवधू जी संत करत सेवा, शिव जय गोरक्ष देवा।।टेक।।
ॐ गुरुजी! योग युगति कर जानत, मानत ब्रह्मज्ञानी, श्री अवधूजी मानत सर्वज्ञानी।
सिद्ध शिरोमणि राजत सन्त शिरोमणि साजत गोरक्ष गुरु ज्ञानी।
श्री अवधूजी बाले गोरक्ष सर्व ज्ञानी। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।१।।
ॐ गुरुजी! ज्ञान ध्यान के हो धारी, गुरु सर्व के हो हितकारी। श्री अवधू सर्व के हो सुखकारी।
गो इन्द्रियों के हो राजा, गुरु सर्व इन्द्रियों के हो पालक, राखत सुधि सारी।
श्री अवधू राखत बुधि भारी। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।२।।
ॐ गुरुजी! रमते श्रीराम सकल युग माहीं, छाया है नाहीं, श्री अवधूजी माया है नाहीं।
घट घट गोरक्ष व्यापक, गुरु सर्व घट श्री नाथ जी विराजत, सो लक्ष्य मनमाहीं।
श्री अवधू सो लक्ष्य दिल माहीं।। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।३।।
ॐ गुरुजी! भस्मी गुरु लसतस, रजनी है अंगे, श्री अवधूजी जगनी है संगे।
वेद उचारें सोई जानत, योग विचारें सोई मानत, योगी गुरु बहुरंगा।
श्री अवधू बाले गोरक्ष सर्व संगा।। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।४।।

ॐ गुरुजी! कण्ठ विराजत सेली और सिङ्गी, गुरु जत मत सुख सेली।
श्री अवधूजी जत सत सुख सेली।
भगवां कन्था सोहत, गेरूवाला अँचला विराजत, ज्ञान–रतन थैली।
श्री अवधू योग युगति झोली।। शिव जय जय गोरक्ष देवा0।।५।।
ॐ गुरुजी! कानों में कुण्डल राजत साजत रवि चन्द्रमा।
श्री अवधूजी सोहत मस्तक चन्द्रमा।
बाजत श्रृङ्गी नाद गुरु बाजत अनहद नाद भाजत दुःख द्वन्दा।
श्री अवधूजी नाशत सर्वसंशा। शिव जय जय गोरक्ष देवा0।।६।।
ॐ गुरुजी! निद्रा ने मारो, गुरु काल संहारो, गुरु संकट के हो वैरी,
श्री अवधूजी दुष्टन के हो वैरी।
करो कृपा सन्तन पर, गुरु दया पालो गुरु भेषन पर, शरणागत तुम्हरी।
श्री अवधूजी शरणागति थारी। शिव जय जय गोरक्ष देवा0।।७।।
ॐ गुरुजी! इतनी श्रीनाथ जी की सन्ध्या और आरती निश दिन जो गावै।
श्री अवधूजी सर्व दिन रट गावे।
वरणी राजा रामचन्द्र स्वामी, गुरु जपे राजा रामचन्द्र योगी, मनवांछित फल पावे।
श्री अवधूजी सुख सम्पत्ति फल पावे। शिव जय जय गोरक्ष देवा0।।८।।
ॐ गुरुजी! शिव जय जय गोरक्ष देवा, श्री अवधूजी हर हर गोरक्ष देवा।
सुर नर मुनिजन ध्यावत सुरनर मुनिजन सेवत, सिद्ध करें थारी सेवा।
श्री अवधूजी संत करें सब सेवा, शिव जय जय गोरक्ष देवा0।।६।।
ॐ गोरक्ष गोपालं, घडी घडी के रक्षपालं, वृद्धं न बालं, जीते यम कालं, आई बला को टालं।
सन्ध्या आरती धूप ध्यान की सिद्धो गुरुपीरो योगेश्वरो आदेश आदेश।।

स्तुति–संध्याकाल की

ॐ गोरक्षबालं गुरु वंश (शिष्य) पालं, शेषाहिमालं शशिखण्डभालं।।
कालस्य कालं जितजन्मजालं, वन्दे जटालं जगदब्जनालं।
ॐ शिवहर शंकर गौरीशं, वन्दे गंगा धरमीशं।।
शिव रुद्रं पशुपति विश्वनाथ, कल हर काशीपुरी नाथं।।
भज पार लोचन परमानंदा, श्री नीलकण्ठा त्वं शरणं।
शिव असुर निकन्दन भव दुःख भंजन, सेवक के प्रतिपाला।।
बं आवागमन निवारो (मिटाओ) भोले शंकर, भज शिव बारंबारा।।
बं शिव हर शंभू सदाशिव साम्ब। हर हर सदा सदाशिव साम्ब।।
बं जै शिव शंभू सदा शिव साम्ब। हर हर सदा, सदा शिव साम्ब।।

बं हर भज शंभू सदा शिव साम्ब। हर हर सदा सदा शिव साम्ब।।
बं महादेव शंभू सभी बात पूरे, लपेटें जटा जूट खावें धतूरे।
बहे शीश गंगा भुजंगा विराजे, गले मुण्ड माला भस्मी रमावैं।।
महादेव शंभू सभी बात पूरे, लपेटें जटा जूट डमरू बजावें।
बहे शीश गंगा भुजंगा विराजे, गले नाग काला मृगछाला बिछावें।।
महादेव योगी सभी योग पूरे, लपेटें जटा जूट नाद बजावें।
बहे शीश गंगा भुजंगा बिराजे, रहे देव बाला सभी काम साजे।।
मात गंगे हर! नर्मदे हर! जटा शंकरे हर! ॐ नमः पार्वती पतये हर हर महादेव!!!
बोलिये सत्य सिद्ध श्री शंभू यति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की जय!
श्री माया रूपी दादा गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज की जय!
अयोनि शंकर पर दादा गुरु आदि नाथ जी महाराज की जय!
नव नाथ चौरासी सिद्धों की जय! नवौ नवैकोटि राज योगेश्वरों की जय!
अनन्त कोटि सिद्ध साधकों की जय! भेष भगवान बारह पंथ की जय!
अपने अपने गुरु महाराज की जय! सनातन धर्म की जय!
कल्पवृक्ष कामधेनु गौमाता की जय! जागे (जागती) जोत अटल छत्र की जय!
ॐ नमः पार्वती पतये हर हर महादेव हर! धूप ध्यान संध्या आरती की सिद्धो गुरु पीरों योगेश्वरों को आदेश! आदेश!

नौ नाथ स्वरूप दर्शन

आदिनाथ आकाश स्वरूपी, सूक्ष्मरूप ऊँकार।
तीन लोक में हो रहा, आपका जय जय कार।।१।।
जय जय जय कैलाश निवासी। योगभूमि उत्तराखण्ड वासी।।
शीश जटा शुभ गंग विराजे। कानन कुण्डल सुन्दर साजे।।२।।
डिमक डिमक डिम डमरू बाजे। सिंगी नाद मधुर ध्वनि गाजे।।
ताण्डव नृत्य किया शिव जबही। चौदह–सूत्र प्रकट भये तबही।।३।।
शब्द शास्त्र का किया प्रकाशा। योगयुक्ति राखे निज पासा।।
भेद तुम्हारा सबसे न्यारा। जाने कोई जाननहारा।।४।।
योगी जन तुमको अति प्यारे। जरामरण के कष्ट निवारे।।
योग प्रकट करने के कारन। गोरख रूप किया शिव धारन।।५।।
ब्रह्मा विष्णु को योग बताया। नारद ने निज शीश नमाया।।
कहां तलक वरणौं गुण गाथा। आदि अनादि हो आदिनाथा।।६।।
उदयनाथ तुम पार्वती, प्राणनाथ भी आप।
धरती रूप सो जानिये, मिटे त्रिविध भव ताप।।७।।

गोरक्षनाथ का बारह मास

कहता हूं कह जाता हूं कहां बजाऊं ढोल। इक इक सासां जात है त्रिलोकी का मोल।।
आषाढ़ आगम की गम राखो दम राखो साधि के। चांद सूर्य स्वर एक लावों मूल राखो साधि के।।
श्रावण सोहं जाप जपले ऊँ सोहं आप है। नाभि नासिका बीच देखो सोई अजपाजाप है।।
भादों भृकुटि खोज प्यारे त्रिकुटी के संग से। प्राण पुरुष आनन्द कहिये संत रचे हरी संग से।।
आसोज करता प्यॊरे ब्रह्म का दीदार है। उल्टे चश्में फेर देखो सोई वसता पार है।।
कार्तिक काया खोज प्यारे सुरति राखो अर्थ पै। चुकी बाजी फेर खेलो जैसे नटुवा भत पै।।
मार्गशीर्ष सेती हेत रखो सुरत राखो शून्य में। बिना ताल मृदंग बाजे चित्त राखो धुन में।।
पोष पवना उल्ट देखो नाद की झनकार है। तासे झीनी अवाज लखिये लखे हंसा सार है।।
माघ मन में बान्ध राखो मकड़ तार से नेहरा। तासे झीनी ज्योत जगे है अलख सोहं सेहरा।।
फाल्गुन भगुवा खेलो गगन में अनहद बाजे वहाँ बजे। राच रहे हंसा उस देश याही के साजे वहाँ सजे।।
चैत चेतन रूप तेरा और दूजा है नहीं। काम क्रोध मद लोभ माया वहाँ पर है नहीं।।
वैशाख बरसे अमी जल धारा बिन बादल इक दामनी। भीजेगा कोई योगी विरला बिन श्रावण इक तीज है।।
जेठ मरण जन्म कटै उस घर हंसा जाइयो। कहत गोरक्ष नाथ विरला हरीजन पाइये।।

गोरक्षनाथष्टक

गोरक्षनाथ सुनाथ निर्भय निर्विकार निरंजनम्। अजर अमर अडोल निश्चल श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।
जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम्। जय हो जती गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।१।।
ब्रह्मा शेष महेश नारद अष्ट भैरव सिद्ध यति। ध्यावते दोउ पाद पङ्कज ध्यावते सिद्ध गणपति।।२।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि वन्दित ध्यावते रघुवर सिया। व्यास शुक प्रह्लाद सेवत सेविते हनुमत प्रिया।।३।।
शून्य मन्दिर करत आसन योग ध्यान सदा रतं। आत्म लाभ सन्तोष पूर्ण, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।।४।।
मान नहीं अभिमान जाके कनक माटी एक समान। राग द्वेष अतीत मनसा, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।।५।।
अङ्ग विभूति विराजत सुन्दर लाल तिलक त्रिलोचनम्। चन्द्र सूर्य अग्नि कहिये कर्ण कुण्डल अद्‌भुतम्।।६।।
ज्ञान ध्यान अचिन्त्य मूर्ति आत्म ज्योति सदा शिवं। त्रिगुण रूप अतीत तुर्य्या, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।।७।।
श्री कृष्णचन्द्र सुध्यान कीन्हों कंस दुष्टादिक हनम्। षोडश नार सहस्र पाइये अष्टचक्र शोभितम्।।८।।
अक्षमाल विराजत सुन्दर चर्म चन्दन मृगं धरं। त्राटक मुद्रा ज्ञान पूर्ण कथंते सनकादिकं।।९।।
गोरक्ष अष्टक पढ़त निशदिन कैलाश वास सदा शिवं। सर्व तीर्थ लभ्यते पुण्यं सर्व पाप विनाशनम्।।१०।।

शिव गोरक्षबावनी

शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटते शेष महेश। सरस्वती पूजन करे, वन्दन करे गणेश।१।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटे जो मन दिन रात। अवागमन को मेट के, मनवांछित फल पात।२।
शिव गोरक्ष शुभ नाम से, हुए हैं सिद्ध सुजान। नाम प्रभाव से मिट गया, लोभ, क्रोध, अभिमान।३।
शिव गोरक्ष शुभ नाम से, हो जाओ भव पार। कलिकाल में है बड़ा, सुन्दर खेवन हार।४।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जिसने लिया चितलाय। अष्ट सिद्धि नव निधि मिली, अन्त में अमर कहाय।५।
शिव गोरक्ष शुभनाम में, शक्ति अपरम्पार। लेते ही मिट जात हैं, अन्तर के अन्धकार।६।
शिव गोरक्ष शुभनाम है, रटे जो निशदिन जीव। नश्वर यह तन छोड़ के, जीव बनेगा शिव।७।
शिव गोरक्ष शुभनाम को, मन तू रटले अघाय। काहे को चंचल भया, जैसे पशु हराय।८।
शिव गोरक्ष शुभनाम में, निशदिन कर तू वास। अशुभ कर्म सब छूटिहैं, सत्य का होगा भास।९।
शिव गोरक्ष शुभनाम में, शक्ति भरी अगाध। लेने से ही तर गये, नीच कोटि से व्याध।१०।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, धरे जो अन्तर बीच। सबसे ऊँचा होत है, भले होय वह नीच।११।
शिव गोरक्ष शुभ नाम में, करे जो नर अति प्रेम। उसको नहीं करना पड़े, पूजा, व्रत, जप, नेम।१२।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटे जो बारम्बार। सहजहि में हो जायेंगे, भव सिन्धु से पार।१३।
शिव गोरक्ष शुभ नाम से, सीख ले अद्वैत। मेरा मेरा छोड़ दो, तजो सकल ये द्वैत।१४।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटना आठों याम।आखिर में यह आयेगी, मूड़ी तुमको काम।१५।
शिव गोरक्ष शुभ नाम में, शक्ति भरी अगाध। रटनेवालों को मिला, भव सिन्धु का थाह।१६।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, पहचाना जयदेव। इस दुस्सह संसार से, तर गए वह तत खेव।१७।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रसना रट तू हमेश। वृथा नहीं बकवाद कर, पल पल कह आदेश।१८।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटले तू चित लाय। घोर कलि से बचने का, एक यही उपाय।१९।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, मन तू रट दिन रात। झूठ प्रपंच त्याग दे, छोड़ जगत की बात।२०।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रसना कर तू याद। क्यों स्वारथ में भूल के, वृथा करे बकवाद।२१।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, मन तू रट दिन रैन। कबहूं न खाली जान दे, एक भी तेरा बैन।२२।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, सुमिरे कोटिक सन्त। श्री नाथ कृपा से हो गया, जन्म मरण का अन्त।२३।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, निर्मल पावन गंग। रटने से रहती सदा, ऋद्धि सिद्धि सब संग।२४।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसा पूनम चन्द। रटते हैं निशदिन उन्हे, राम, कृष्ण, गोविन्द।२५।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसा गंगा नीर। रट के उतरे कोटि जन, भव सागर के तीर।२६।
शिव गोरक्ष शुभ नाम में, जो जन करते आस। निश्चय वो तो जात हैं, अलष पुरुष के पास।२७।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसे सुन्दर आम। रटने से ही हो गया, अमर जगत में नाम।२८।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसे दीप प्रकाश। नित रटने से होत है, अलष पुरुष का भास।२९।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, उदधि तरन को जहाज। रटने से ही हो गये, अमर भरथरी राज।३०।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसे सूर्य किरन। रटले जीव तू प्रेम से, चाहे जो सिन्धु तरन।३१।

शिव गोरक्ष शुभ नाम है, निर्मल और विशुद्ध। रटने से शुद्ध होत है, होय जो जीव अशुद्ध।३२।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, अमर सुधा रस बिन्द। पाने से ही हो गये, अजर अमर गोपीचन्द।३३।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, रटे अनेकों राज। जरा मरण का भय मिटा, सुधरे सबके काज।३४।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटा जो पूरण मल। आधि व्याधि मिट गई, जन्म मरण गया टल।३५।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटते चतुर सुजान। अन्तर तिमिर विनाश हो, उपजत है शुद्ध ज्ञान।३६।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, सुन्दर उज्वल भान। रटने वालों को कभी, होवे नहीं कुछ हान।३७।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, पारस पत्थर जान। जीव रूपी इस लोक को, करते स्वर्ण समान।३८।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, जाने सुर तरुवर। रटने से मिल जात हैं, जीव को इच्छित वर।३९।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटते कोटिक सन्त। नाम प्रताप से कट गया, चौरासी का फन्द।४०।
शिव गोरक्ष शुभ नाम का, बहुत बड़ा है पर्व। जिसको हैं रटते सदा, सुर, नर, मुनि, गन्धर्व।४१।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटते श्री हनुमान। भक्तों में हुए अग्रगण्य, देवों में मिला मान।४२।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, रटे जीव अज्ञान। नाथ प्रताप से होत है, निश्चय चतुर सुजान।४३।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसे निर्मल जल। प्रेम लगा रटते रहो, क्षण क्षण और पल पल।४४।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, कलि में तारण हार। रटने वालों के लिए, खुला है मोक्ष का द्वार।४५।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, जैसा स्वच्छ आकाश। रटने वालों को बना, लेते हैं निज दास।४६।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, अग्नि आपो आप। रटने वालों के सभी, जल जाते हैं पाप।४७।
शिव गोरक्ष शुभ नाम है, अमर सुधारस बिन्दु। पीने से तर जात हैं, सहज ही में भव सिन्धु।४८।
शिव गोरक्ष शुभ नाम की, महिमा अपरम्पार। कृपा सिन्धु की बूंद ही, करदे भव से पार।४९।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, वन्दन करुं हजार। कृपा करो त्रिलोक पर, करदो भव से पार।५०।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, प्रेम सहित आदेश। ऐसी कृपा करो प्रभु, रहे नही कुछ शेष।५१।
शिव गोरक्ष शुभ नाम को, कोटि करूँ आदेश।करके कृपा मिटाईए, जन्म मरण का क्लेश।५२।

श्री सिद्ध चालीसा

श्री गुरु गण नायक, शारद को ले आधार। कहूं सुयश श्री नाथ का, निज मति के अनुसार।।
श्री शिव गोरक्ष नाथ के, चरणों को आदेश। जिनके योग प्रताप को, जानें सकल नरेश।।
जय श्री नाथ निरंजन स्वामी। घट घट के तुम अन्तर्यामी।।
दीन दयाल दया के सागर। सप्त द्वीप नव खण्ड उजागर।।
आदि पुरुष अद्वैत निरंजन। निर्विकल्प निर्भय दुख भंजन।।
अजर अमर अविचल अविनाशी। रिद्धि सिद्धि चरणों की दासी।।
बाल जती ज्ञानी सुखकारी। श्री गुरु नाथ परम हितकारी।।
रूप अनेक जगत में धारे। भगत जनों के संकट टारे।।
सुमरण चौरंगी जब कीना। होय प्रसन्न अमर पद दीना।।
सिद्धों के सिरमोर सुहावो। नव नाथों के नाथ कहावो।।

जिनका नाम लिये भवजाल। आवा गवन मिटे तत्काल।।
आदि नाथ, मत्स्येन्दर पीर। धोरम नाथ, धुन्धली वीर।।
कपिल नाथ, चरपट, कण्डेरी। नीम नाथ, पारस, चंगेरी।।
परशु नाथ जमदग्नी नन्दन। रावण मार राम रघुनन्दन।।
कंस आदिक असुरन संहारी। वासुदेव अर्जुन बलधारी।।
अचलेश्वर लक्ष्मण बलबीर। बलदाई हलधर यदुवीर।।
सारंग नाथ, पीर सरसाई। तुंग नाथ, बद्री सुखदाई।।
भूत नाथ, धौरीपा धोरा। बटुक नाथ, भैरूं बल जोरा।।
वामदेव, गौतम, गंगाई। गंगा नाथ, धोरी समझाई।।
रतन नाथ रण जीतन हारा। यवन जीत काबुल कंधारा।।
नाग नाथ, नाहर रमताई। बन खण्डी, सागर, नन्दाई।।
बंक नाथ, कंथड़, सिध रावल। कानीपा, निरिपा, चद्रावल।।
गोपी चन्द, भरथरी भूप। साधे जोग लखे निज रूप।।
खेचर, भूचर, बाल गुंदाई। धर्म नाथ, कपली, कनकाई।।
सिद्ध नाथ, सोमेश्वर, चंडी। भुसकाई, सुन्दर बहुदण्डी।।
अजयपाल, शुकदेवो, व्यास। नासकेतु, नारद, सुखरास।।
सनत्कुमार, भरत नहि निंद्रा। सनकादिक शारद सुर इन्द्रा।।
भंवर नाथ आदिक सिध बाला। च्यवन नाथ, माणिक मतवाला।।
सिद्ध गरीब, चंचल, चंदराई। नीम नाथ, आगर, अमराई।।
त्रिपुरारी त्र्यम्बक दुख भंजन। मंजु नाथ सेवक मन रंजन।।
भाव नाथ भरम भय हारी। उदय नाथ मंगल सुखकारी।।
सिध जालन्धर, मूंगी पाव। जाकी गति मति लखी नहिं जाव।।
औघड़ देव, कुबेर भण्डारी। सहजाई, सिद्ध नाथ, केदारी।।
कोटि अनन्त योगेश्वर राजा। छोड़े भोग योग के काजा।।
योग युगति करके भरपूर। मोह माया से हो गए दूर।।
योग युगति कर कुन्ती माई। पैदा किये पांचो बलदाई।।
धर्म अवतार युधिष्ठिर देवा। अर्जुन भीम नकुल सहदेवा।।
योग युगति पारथ हिय धारा। दुर्योधन दल सहित संहारा।।
योग युगति पांचाली जानी। दुःशासन से यह प्रण ठानी।।
पाऊं रक्त न जब तक तेरा। खुला रहे यह मस्तक मेरा।।
योग युगति कर सीता उधरी। दशकंदर से गिरा उच्चरी।।
पापी तेरा वंश मिटाउँ। स्वर्ण लंक विध्वंस कराउँ।।
राम चन्द्र को सुयश दिलाऊँ तो मैं सीता सती कहाऊँ।।

योग युगति अनुसुया कीनी। त्रिभुवन नाथ साथ रस भीनी।।
देवदत्त अवधूत निरंजन। प्रकट भये आप जग वन्दन।।
योग युगति मैनावति कीनी। उत्तम गति पुत्र को दीनी।।
योग युगति कर वंछर मातु। गोगा जाने जगत विख्यातु।
योग युगति मीरा ने पाई। गढ़ चित्तौड़ में फिरी दुहाई।।
योग युगति अहिल्या जानी। तीन लोक में चली कहानी।
सावित्री सरस्वती भवानी। पारवती शंकर मन मानी।।
सिंह भवानी मनसा माई। भद्रकालिका सहजा बाई।।
कामरू देश कामक्षा योगन। दक्षिण में तुलजा रस भोगन।।
उत्तर देश में शारदा रानी। पूरब में पाटन जग मानी।।
पश्चिम में हिंगलाज विराजै। भैरव नाद शंख–ध्वनि बाजै।।
नव करोड़ दुर्गा महारानी। रूप अनेक वेद नहिं जानी।।
काल रूप धर दैत्य विडारे। रक्त बीज रण खेत पछाड़े।।
मैं योगन जग उत्पत्ति करती। पालन करती संहार करती।।
जती सती की रक्षा करनी। मार दुष्ट दल खप्पर भरनी।।
मैं श्रीनाथ निरंजन की दासी। जिनको ध्यावें सिद्ध चौरासी।।
योग युगित से तपे महेशा। योग युगति धर धरि हैं शेषा।।
योग युगति से रचे ब्रह्मण्डा। योग युगति थरपे नव खण्डा।।
योग युगति विष्णु तन धारा। योग युगति असुरन दल मारा।।
योग युगति गजानन जाने। आदि देव त्रिलोकी माने।।
योग युगति करके बलवान। योग युगति करके बुधवान।।
योग युगति कर पावे राज। योग युगति कर सुधरे काज।।
योग युगति योगेश्वर जाने। जनकादिक सनकादिक माने।।
योग युगति मुक्ति का द्वारा। योग युगति बिन नहिं निस्तारा।।
योग युगति जाके मन भावे। ताकी महिमा कही न जावे।।
जो नर पढ़े सिद्ध चालीसा। आदर करें देव तेतीसा।।
साधक पाठ पढ़े नित जोई। मनो कामना पूरन होई।।
धूप दीप नैवेद्य मीठाई। रोट लंगोट सुभोग लगाई।।
रतन अमोलक जगत में, योग युक्ति है मीत। नर से नारायण बने, अटल योग की रीत।।
योग विहंगम पंथ को, आदि नाथ शिव कीन्ह। शिष्य प्रशिष्य परम्परा, सब मानव को दीन्ह।।
प्रातःकाल स्नान कर, सिद्ध चालीसा ज्ञान। पढ़े सुने नर पावहिं उत्तम पद निर्वाण।।
शिवार्पित मनस्केभ्यः सिद्धेभ्यःसततं नमः। ब्रह्मा वन्दिताः सिद्धा ज्ञानविज्ञान सिद्धये।।
आदेश आदेश सिद्धपादुकाभ्याम नमः नमामि।।

"सप्तम-भाग"

भैरव पूजन

अष्ट-भैरव-जाप

सत् नमो आदेश, गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
प्रथमे आदि अलील नाथ जी, सुध बुध भैरव बोलिये।
इक्कीस ब्रह्माण्ड में बैठकर थापना थापलो, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर के पिता कहायलो।
ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान कराय लो।
लक्ष चौरासी जीया जून को चुग्गा दाना पानी आहार पुराय लो, प्रतिपाल कराय लो।
जिनकी अर्धांगिनी महामनसा देवी, स्थूल दृष्टि, कूर्म वाहन।।
प्रथमे अलील आदि नाथ जी, सुध बुध भैरव, हमारे घट पिण्ड का भय हरणं।
दोजख तरणं, नाद-बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणं, धर्म क्षेत्रपाल जी को आदेश! आदेश!
द्वितिय ईश्वर महादेव जी भैरव बोलिये। उत्तराखण्ड मानसरोवर बैठ कर थापना थाप लो।
तेतीस करोड़ देवी देवों के राजा से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान कराय लो।
लक्ष चौरासी जीया जून को चुग्गा, दाना, पानी, आहार पुराय लो, प्रतिपाल कराय लो।
जिनकी अर्धांगिनी गंगा गोरजां देवी पार्वती जी, वृषभ वाहन।।
दूसरे ईश्वर महोदव जी भैरव बोलिये, हमारे घट पिण्ड का भय हरणं, दोजक तरणम्।
नाद-बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणम्, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
तीसरे मत्स्येन्द्र नाथ जी भैरव बोलिये।
राघो मच्छ के घर लिया अवतार, क्षीर सागर बैठकर ले विस्तार।
कदली कोट (सिंहल द्वीप) पर बैठकर थापना थापलो।
बावन वीर, चौसठ योगिनी, सवा लक्ष भूतावली के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान कराय लो।
जिनकी अर्धांगिनी महा मंगला पद्मिनी देवी, मच्छ वाहन।।
तीसरे मत्स्येन्द्र नाथ जी भैरव, हमारे घट पिंड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद-बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणं, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
चौथे सिद्ध चौरंगी नाथ जी भैरव बोलिये।
राजा शालिवाहन के धर्म पुत्र कहायलो। बिना दोष हाथ पैर कटाय कुयें में गिराय लो।।
बारह वर्ष तक दूध भात का घड़ा भरपूर राख, कुयें के बाहर निकलाय लो।
अठारह भार वनस्पति के राजगुरु कहाय लो।
अठारह भार वनस्पति के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान कराय लो।
लक्ष चौरासी जीया जून को चुग्गा, दाना, पानी, आहार पुराय लो, प्रतिपाल कराय लो।
जिनकी अर्धांगिनी तारा, त्रिपुरा, तोतला देवी, विश्वकर्मा बल वाहन।।
चौथे सिद्ध चौरंगी नाथ जी भैरव, हमारे घट पिण्ड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद-बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणम् धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!

पांचवे श्री सत्य नाथ ब्रह्मा जी भैरव बोलिए। पुष्कर तीर्थ पर बैठकर थापना थाप लो।
चार वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण, नव–व्याकरण, संध्या, तर्पण, गंगा, गीता, गायत्री, सूर्य–मंत्र, बीज मंत्र, होम, जाप, सूतक, पातक, सोलह श्रंगार के स्वामी कहाय लो।
अट्ठासी हजार ऋषियों के राजगुरु कहाय लो।
अट्ठासी हजार ऋषियों के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान, करायलो।
चौरासी लक्ष जीया जून को चुग्गा, दाना पानी, आहार पुराय लो। प्रतिपाल करायलो।
जिनकी अर्धांगिनी सावित्री देवी, हंस वाहन।।
पांचवें सत्य नाथ ब्रह्मा जी भैरव, घट पिण्ड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद–बिन्दु, ज्योति कला ले उद्धरणं, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
छट्ठे श्री संतोष नाथ जी विष्णु भैरव बोलिये। द्वारिका क्षेत्र बैठकर थापना थापलो।
चक्र हाथ में लेकर दैत्य–दानव संहारणं। छप्पन क्रोड़ यादवों के राज गुरु कहायलो।
छप्पन करोड़ यादवों के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप ध्यान करायलो।
लक्ष चौरासी जीया जून को चुग्गा, दाना पानी, आहार पुराय लो।
जिनकी अर्धांगिनी महालक्ष्मी देवी, गरूड़ वाहन।।
छट्ठे श्री सन्तोष नाथ विष्णु जी भैरव बोलिये। हमारे घट–पिण्ड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद–बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणम्, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
सातवें श्री वासुकि नाग जी भैरव बोलिये। पाताल लोक में बैठ थापना थापलो।
नव कुली नागों के राजगुरु कहायलो।
नव कुली नागों के हाथ से सेवा, पूजा, आरती, धूप, ध्यान करायलो।
लख चौरासी जीया जून को चुग्गा, दाना, पानी, आहार पुराय लो। प्रतिपाल करायलो।
जिनकी आर्धाङ्गिनी महालीला नागिनीपद्मनी देवी, कूर्म वाहन।
सातवें वासुकी नाग जी भैरव बोलिये, हमारे घट–पिण्ड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद–बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणं, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
आठवें श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी भैरव बोलिये।
गोदावरी क्षेत्रे अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर थापना थापलो।
नौ नाथ, चौरासी सिद्धों में आचार्य पदवी प्राप्त कराय लो।
लक्ष चौरासी जीया जूनी को चुग्गा, दाना, पानी, आहार पुराय लो। प्रतिपाल कराय लो!
जिनकी अर्धांगिनी हठ योगिनी विमला देवी, मन पवन वाहन।
आठवें श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी भैरव। हमारे घट–पिण्ड का भय हरणं, दोजख तरणं।
नाद–बिन्दु ज्योति कला ले उद्धरणं, धर्म क्षेत्र पाल जी को आदेश! आदेश!
इति अष्ट भैरव जाप सम्पूर्ण सही गादी पर बैठकर गुरु गोरक्ष नाथ जी ने कही।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भैरव अष्ट नाम

आठ नाम भैरव के उचरो। शक्ति सहित वाहन मन सुमरो।।
प्रथमें सुधबुध भैरव भक्ति। पुष्पवाहिनी मनसा शक्ति।।
द्वितीये आदिनाथ गुरु भैरव। उमा शक्ति वृषवाहन जै रव।।
तृतिये भैरवनाथ मत्स्येन्द्र। मच्छवाहिनी शक्ति मंगला।।
चौथे भैरव सिध चौरंगी। शक्ति तोतला यान महांगी।।
पंचम भैरव ब्रह्मा हंसयान, शक्ति सावित्री भक्ति।।
षष्टम भैरव विष्णु नारायण। लक्ष्मी शक्ति गरुड़वर वाहन।।
सप्तम वासुकि भैरव ध्यानी। शक्ति वाहिनी कूरम यानी।।
अष्टम भैरव गोरखबाला। वायुवाहिनी शक्ति विमला।।
आठौं भैरव शक्ति समेता। नाम जपो नवनाथ सहेता।।

भैरव इष्ट जंजीरा

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
चण्डी चण्डी तूं प्रचण्ड़ी। अलावल फिरे नवखण्डी।।
तीर बांधूं तरकस बांधूं। बीस कोस पर बांधूं बीर।।
चक्र ऊपर चक्र चले। भैरों बली के आगे धरे।।
छल चले बल चले। तब जानवा काल भैरों तेरा रूप।।
कौन भैरों? आदि भैरों, युगादि भैरों। त्रिकाल भैरों, कामरू देश रौला मचावे।।
हिन्दू का जाया। मुसलमान का मुर्दा फाड़ फाड़ बजाया।।
जिस माता का दूध पिया। सो माता की रक्षा करना।।
अवधू खप्पर में खाये मसान में लेटे। काल भैरों की पूजा कौन मेटे।।
राजा मेटे राजपाट से जाये, योगी मेटे योग ध्यान से जाय, प्रजा मेटे दूध पूत से जाय।।
लेना भैरों लौंग सुपारी। कड़वा प्याला भेंट तुम्हारी।।
हाथ काती, मोढे मढ़ा। जहां सिमरूं तहां भैरों हाजिर खड़ा।।
श्री नाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भैरव नाथ स्तुति

भैरव बलकारी, आनन्द कारी, गल पुष्पन की माला।
शिर जटा सुहावनी, अति मन भावनी, लोचन दृष्टि रसाला।।
कर्ण कुण्डल शोभित, भस्मी भूषित, कटि में नाग शुभ काला।
हम शरण तुम्हारी, करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।१।।
कर खप्पर छाजै, डमरू बाजै, सोहे शस्त्र विशाला।
प्रेतादिक कंपै, काल न झंपै, डरपत नर भूपाला।।
सुर नर गुण गावें, शीश नवावें, महिमा रूप निराला।
हम शरण तुम्हारी, करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।२।।
अधम उधारन, दुष्ट विदारण, सन्तन का रखवाला।
जो नाम उच्चारे, भये सुखारे, अभय उन्हें कर डाला।।
प्रभु पतित पावन, पाप नशावन, तुम हो देव भुवाला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।३।।
सुन्दर तन भेषा, नमत सुरेशा, गुण गावत नरपाला।
जो शरण में आया, शिष्य बनाया, जरा मरण भय टाला।।
तुम सबके स्वामी, अन्तर्यामी, भैरव देव भुवाला।
हम शरण तुम्हारी, करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।४।।
करिये प्रभु दाया, शुभ हस्त छाया, करो त्रिलोक निहाला।
हरिये मम विपदा, कृपा निकेता, भैरव देव कृपाला।।
यह स्तुति गावै, सब सुख पावै, मिले शीघ्र फल आला।
हम शरण तुम्हारी, करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।५।।

भैरव चोला जाप

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश! आदेश! ॐ गुरु जी!
तुम भैरों काली का पूता सदा रहे मतवाला। चढ़े तेल सिन्दूर गल फूलों की माला।।
जिस किसी पर संकट पड़े। जो सुमिरे तुम्हे उसकी रक्षा करे।।
भैरों भूपाल, तुम हो रक्षपाल। भरी कटोरी तेल सिन्दूर की धन्य तुम्हारा प्रताप।।
काल भैरों, महाकाल भैरों, अकाल भैरों, लाल भैरों, जल भैरों।
थल भैरों, बाल भैरों, आकाश भैरों, क्षेत्रपाल भैरों, सदा रहो कृपाल।
भैरों चोला जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी आदेश! आदेश!

भैरव चालीसा

भैरवनाथ के चरण को कोटि कोटि आदेश। जिनकी कृपा से टरत हैं भव बन्धन के क्लेश।।
जय श्री भैरव नाथ निरंजन। भव तारण जय भव भय भंजन।।
रुद्र रूप से आप सुहावें। आदि नाथ के अंश कहावें।।
शीश जटा अति सुन्दर कारी। कानन कुण्डल की छवि न्यारी।।
गले में सेली नाद विराजे। कर त्रिशूल खप्पर अति छाजै।।
तन पर सुन्दर भस्म लगावें। डिमक डिमक डिम डमरू बजावें।।
चौसठ योगिनी बावन वीरा। भैरव नाम जपत रणधीरा।।
सुर नर मुनि सब ध्यान लगावैं। नारद शारद मिल गुण गावैं।।
शिव अपमान सहन नहीं कीन्हा। सृष्टिपति को शिक्षा दीन्हा।।
ब्रह्म हत्या को चले लिवाई। आदि नाथ की आयुष पाई।।
चौदह लोक फिरे तुम नाथा। ब्रह्म हत्या नहीं छोड़े साथा।।
काशी जाकर गंग नहाये। ब्रह्म हत्या को शीघ्र भगाये।।
काशी के कोतवाल कहाये। प्रेमी जन के मन को भाये।।
यतियों में भी नाम तुम्हारा। निज भक्तों को पल में तारा।।
योगी जन के तुम रखवारे। योगियों के तुम प्राण प्यारे।।
योग युक्ति है तुमको प्यारी। योगियों की करते रखवारी।।
भैरव नाथ अनाथ के स्वामी। रूप अनेक नाम बहु नामी।।
दीनन के प्रभु तुम हितकारी। धीर गम्भीर श्रेष्ठमति धारी।।
देवन के सब काज सुधारे। दानव दैत्य को मार विडारे।।
रूप अनेक जगत में धारे। भैरव अष्ट अति भये सुखारे।।
अकथ अथाह आपकी शक्ति। जानो श्रेष्ठ योग की युक्ति।।
भक्तन के तुम होत सहाई। योगी जन के हो सुखदाई।।
जो जन तुमसे ध्यान लगावैं। सब सुख भोग अमर पद पावैं।।
भैरव नाम जो जपत हमेशा। होय अभय मिट जाये कलेशा।।
भैरव नाम की महिमा भारी। जपै जो नर पावै फल चारी।।
भैरव नाम जो उच्चरिहैं। सहजहि में भव सिन्धु तरिहैं।।
काम क्रोध नहीं उसे सतावै। जो भैरव का दास कहावै।।
काल बलि भी अति डर पावै। भैरव भक्त के पास न जावै।।
भैरव नाम जहां होत उचारा। भूतादिक गण भागत सारा।।
डंकनी शंखनी निकट न आवे। भैरव नाम का रट जो लावे।।
सुर नर मुनि गन्धर्व पुकारें। नित्त भैरव का नाम उच्चारें।।

पुत्र हीन नर करे जो सेवा। पूरे इच्छा भैरव देवा।।
रोगी होय जो पाठ सुनावें। करे स्नान चालीसा गावें।।
चालीसा पाठ करे नित जोई। मनोकामना पूर्ण होई।।
रोट लंगोट से भोग लगावै। करे धूप और ज्योति जगावै।।
रविवार दिन श्रेष्ठ कहावै। कर पूजा भैरव को मनावै।।
भैरव देव अति बलकारी। सेवक की करते रखवारी।।
जो इच्छा होय मन माहीं। भैरव कृपा से दुर्लभ नाहीं।।
करो कृपा मो पर गुरु ज्ञानी। निश दिन जाप जपै मन बानी।।
महिमा आपकी अति घनेरी। कहि न सकौं मन्द मति मेरी।।
नाथ त्रिलोकी है शरण तुम्हारी। करो कृपा हरो विपत हमारी।।

– दोहा –

भैरव चालीसा पढ़े, भाव धरि जन कोई। भैरव नाथ कृपा करें, मनवांछित फल होई।।
शिवाद् भैरवो, भैरवात् श्रीकण्ठः, श्री कण्ठात् सदा शिवः।
सदाशिवात् ईश्वरातः ईश्वरात् रूदः रूद्रात विष्णुः, विष्णोः ब्रह्मा।।

काल भैरव बीज मंत्र

ऊँ हूँ खों जं रं लं बं क्रौं ऐं हीं महाकाल भैरव विघ्न नाशाय ह्रीं फट् स्वाहा।।
महाकाल भैरव मंत्र : ऊँ ह्री महाकाल भैरव सर्व विघ्न नाशाय फट् स्वाहा।।
ऊँ हूँ क्षं प्रां जं रं लं बं क्रौं ऐं ह्रीं महाकाल भैरव विघ्न नाशाय फट् स्वाहा।।

भैरव जी की आरती

जय भैरव स्वामी, प्रभु जय भैरव स्वामी। करत कृपा निज जन पर, तुम अन्तर्यामी।। जय०।।
शीश जटा अति सुन्दर, गल पुष्पन माला। कानन कुण्डल साजै, कटि में नाग काला।। जय०।।
हाथ त्रिशूल सुशोभित, तन भस्मी धारी। डमरू नाद बजावत, ध्वनि मंगल कारी।। जय०।।
भैरव नाम तुम्हारा, अति मंगलकारी। सब देवन में देव बली हो, सबके हो हितकारी।। जय०।।
भैरव शक्ति तुम्हारी, भक्तों के रखवारे। नाम तुम्हारा सबके, काटत फन्द सारे।। जय०।।
ब्रह्मा विष्णु सुरेशा, तुम्हरो गुण गावें। नारद शारद सब मिल, ध्यान सदा लावें।। जय०।।
काशी के कोतवाल तुम्ही, प्रभु मुक्ति के दाता। तुम्हरा ध्यान धरे जो, भव से तर जाता।। जय०।।
भैरव नाथ जी की आरती, निश दिन जो गावे। विनवत बाल त्रिलोकी, मुक्ति फल पावे।। जय०।।

बारह पंथों के मूल स्थान

अवधू, जाहर जोगी जिन्दा। बारह पंथ जोगी अवधूता, जोग जुगति जोगिन्दा।।टेक।।
सत्यनाथ ब्रह्मा शिव योगी, भुवनेश्वर है सिरमाथा। रामपंथ बिसनोका कहिये, गोरखपुर है सिरमाथा।।
पाकल नाम चौरंगीनाथ, जिसकी पाकल पंथ प्रथा। रमते राम जोगिका मेला, रोहीतास है सिरमाथा।।१।।
पावपंथ जलन्धरनाथी, गढ़ जालोर है शीर्षस्थान। धर्मनाथ पंथ धर्मराज का, तीस हजारी है शीर्षस्थान।।
शकवंशी महाराज रसालू, गोरख शिष्य भये मतिमान। जिनकी परंपरा मन्ननाथी, कहिये टाइयां शीर्षस्थान।।२।।
इति शिव के छै पंथ, जो मांही दीक्षित जोय। शिव जोगी साचा सही, अठारह का होय।।
सिद्ध कपिल का पंथ कपिलाणी, गोरखवंशी पीठस्थान। हर हर गंग बहाइ भगीरथ, जिसकी तीन लोक में शान।।
गंगानाथी पंथ कहाये, गंगा सागर पीठस्थान। नटेश्वरी लछमनके जोगी, गोरष टिल्ला पीठस्थान।।३।।
विमला के आइपंथी योगी, बंग देश है मूलस्थान। भर्तृहरि वैराग पंथ के, राता डूँडा मूलस्थान।।
बप्पदेव रणसूरा छत्री, गैला रावल सिद्ध महान। रावल पंथ प्रणाली उनकी, बादबारी मूलस्थान।।४।।
पुनि कहिया छै पंथ जो, गुरु गोरख के जान। यामै दीक्षा जो लहै, सो बारह का मान।।
गोरष दत्ता दीक्षा सति, औघड़ पंथ सही सब ठाम। शब्दाचार रमै सिद्धां मै, भावै जहां तहां गुरु धाम।।
बारह अठारह के जोगेसर, बारह पंथ जोगका धाम। शिव गोरष गोरष शिव शंकर, एकहि एक न दूजा नाम।।५।।
कोटि निनानवें राजा सीजे, शिव गोरख गहि मंत्र महान्। कोटि अनंत संत जन उधरे, जगतारण गुरु गोरख ज्ञान।।
नाथ पंथ जुग जुग का आदि, ज्ञान कला प्रकाश निधान। गोरख शिव, शिव गोरष जैसे, ज्योति ज्योति का मेल समान।।६।।
शिव गोरष आचार में, कथिया बारह पंथ। षट् दर्शन के भेष में, शाषा कोटि अनंत।।

बारह पंथों के स्वरूप

पाव पाकल ध्वज रावल, चोलि वन कंथड़ चन्द। वैराग्य हेत पंख गोपाल, इहे बारह पंथ जोग्यन्द।।
पाकल रावल दास कंथड़, आई ध्वज वन पंख। चोलि हेत गोपाल गम, जोगी बारह पंथ।।
सत्यनाथ अरू राम के, कन्थड़ पाकल पाव। धर्मनाथ छै पंथ इहे, शिष योगी जतिराव।।
गंगनाथि वैराग्य पुन, नटेश्वरी कपिलान। आई रावल षट् इहे, गोरख जोगी जान।।
शिव गोरख मत एक है, कोई न समझे दोय। यह सिद्धन का पंथ है, भेदभाव नहि कोय।।
इति श्री बारहपंथ नामस्वरूप। 12/18 के योगेश्वरों को आदेश! आदेश

श्री गोरष नाथ पंथ का देव। अनंत सिधां मिल पाया भेव।।
पाया भेव अर पाइ प्रतीत। अनंत सिधों मै गोरष अतीत।।१।।
रावल ते जे चालै राही। उलटी लहर समावै माही।।
पांच तत का जाणे भेव। ते तो रावल परतछि देव।।२।।
पाकल ते जे परकति गालै। अहि निसि ब्रह्म अगनि प्रजालै।।
अहि निसि अगनि लगावे बंध। काया अजरामर थिर कंध।।३।।
बनि जोगी वन खंड मै रहै। सुनि निरालंब वारता कहै।।
माया न ममता आस न पास। ते वन खंड मै रहे उदास।।४।।
अगमागम करै ते गमि। अहि निसि काया राखै दमि।।
नाद बिंद का जाणै भेव। अगमागम करै ते देव।।५।।
आइ पंथ ते अनभै करै। उलटा बाण गगन कूं धरै।
उलटी जाई बेधिया भौरा। आतम जोगी बस किया जौरा।।६।।
पांखी सो सुनि देखै आंषि। परम सुंनि मै जोति असंषि।
बेध्या हीरा माणिक पाया। तो तव पांषि पंथम आया।।७।।
ध्वज जोगी ते धजा कूं जाणै। उलटा पवन गगन कूं आणै।
अहि निशि नाद बजावै बीणा। ते जोगी ध्वज धजा सूं लीणा।।८।।
गोपाल ते जे बंचै काल। सदा सरीखा अहिनिश बाल।।
काम क्रोध मेटै विस्न की माया। ते गोपाल नाथ की काया।।९।।
हेत कला से पूरण भये। बारां सोलां सम करी गहे।।
चंद्रकला नहि दीजै जाण। हेत जोगी ते जुगति प्रमाण।।१०।।
दास जोगी जो रहे उदास। माया ममता रखे न पास।।
हेत कला से पूरण भये। दास जोगि सो गुरु के हाजर रहे।।११।।
कंथड़ जोगी कंथा सीवै। लागे अरंभ अहनिस जीवै।।
सीवै कंथा उपजे हेत। कंथड जोगी सिध संकेत।।१२।।
चोली जोगी चलै विचार। रसतृप्ता मन ममता मार।।
स्नान ध्यान का करे मेखला। सो चोली, कहिये सतगुरु का चेला।।१३।
बोलंत सिद्ध घौड़ा चोली। हम रिण षेत्रि षेत्र का सूरा।।
गगन मंडल मै रहणि हमारी। जहां बाजै अनहद तूरा।।१४।।
रिणवट पैसि रमायण कीता। दससिर छेदि वहाड़ी सीता।
सरा सेत तहां बांध्या पाणी। दससिर छेदि लच्छिघर आणी।।१५।।

गोरष ते जे राखै गोइ। माया मनसा करै न मोहि।।
सदा अल्यंपत रहै उदास। परचै जोगी स्यंभ निवास।।१६।।
जोगारंभे भये सीधा। द्वादस हंसा गगने बीधा।।
सोहं सोहं सास उसास। पिण्ड ब्रह्मण्ड निरंतर वास।।१७।।
अच्यंत फुरणा गिगने ग्रास। बोले घोड़ा चोलि मछिन्द्र का दास।।
अचिंत्य फुरै हांक्या न आवे। तब घोड़ा चोली कहा तूं पावै।।१८।।
नष सिष पूरी रहिले पवना। आयो है दूध भात तो खायगो कवना।।
षुध्याकी अगनि बुझाई झाल। चौसठ संधि पवनकी माल।।१६।।
मेरडंड काठा करि बन्धि। बाई खेलै चौसठ सन्धि।।
अभराभरै का बूझै डंस। न पड़ै काया न उडै हंस।।२०।।
इति श्री घोड़ाचोलीनाथ जी का बारह पंथ मात्रा शास्त्र संपूर्ण भया सर्व सिद्धों को आदेश! आदेश!

वर्तमान के बारह पंथ

	पंथ	मुख्य स्थान (सिर मत्था)	किसके योगी
1.	सत्यनाथ	पाताल भुवनेश्वर	ब्रह्मा
2.	राम	नोहर	परशुराम
3.	धर्मनाथ	गोरखपुर (धनोदर)	धर्मराज
4.	पाव	जालोर राजस्थान	जालन्धर नाथ जी
5.	पागल	रोहताश (अस्थल बोहर, हरियाणा)	सिद्ध पाकल नाथ जी
6.	रावल	गैलपुर (बादबारी) राजस्थान	विष्णु (सिद्ध गैला रावल)
7.	कपलानी	गोरखबंसी (कलकत्ता)	कपिलमुनि
8.	गंगनाथी	गंगासागर (जखवड़, पंजाब)	भागीरथ (भीष्म)
9.	नटेश्वरी (दर्यानाथी)	गोरख टिल्ला	लक्ष्मण जी
10.	आई पंथ	विमला (बंगला)	विमला माई के
11.	भर्तृहरि वैराग्य	राताडूण्डा (राजस्थान)	भर्तृहरि
12.	मननाथी	टाइयां (राजस्थान)	चन्द्रमा (पूरण के)

"नवम्-भाग"

राजा मानसिंह व नेपाल नरेश का पृथ्वीनारायण शाह देव नाथ-गुरु-गुणगान

राजा मानसिंह

गोरष देव नमो गणराय।
आपै आप निरंजन रूपी, सब घट रह्यो समाय।।१।।
थावर जंगम पै निरंतर तेरी महिमा, अलष लखी नहि जाय।।२।।
पार, बिरम तुंही परमेश्वर, तो पै विपति कहा करूँ बनाय।
दास मान तूं पार उतारै, चरन सरन तिहारौ लियौ है आय।।३।।

जोगिया सब पै तिहारी छाप।।

राधा छली पारवती छली छले गये नहि आप। जोगिया सब पै तिहारी छाप।।
माया छली तगत कूं छलती, ऐसी जोग सिंगार प्रताप।
रसीले राज को मन्दमति है, जो न जपै तव जाप।।

नेपाल नरेश पृथ्वीनारायण शाह देव

बाबा गोरक्षनाथ सेवक सुख दाये, भजहुँ तो मनलाये।।टेक।।
बाबा चेला चतुर मछिन्द्र नाथ को, अधबुध रूप बनाये।
शिव के अंस सिवासनकाये, सिद्धि महा वनि आये।।१।।

सिंघि नाद जटा कूबरी, तुम्बी बगल दबाये।
समृथन भाग बघम्बर बैठे, तिनहि लोक वरदाये।।२।।

मुद्रा कान मै अति सोभिते, गेरूवा वस्त्र लगाये।
गलै माल रूद्राछे सेली, तन में भसम चढ़ाये।।३।।

अगम कथा गोरष नाथ की, महिमा पार न पाये।
नर भूपाल शाह जिउ को नन्दन, पृथ्वीनारायण गाये।।४।।

प्रकाशक
श्री शिवावतार योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ योगाश्रम समिति
आम्बेश्वर धाम, पोस्ट पालड़ी एम., सिरोही, राजस्थान
अमृत संजीवनी बाग, नैशनल हाइवे नं. 11, पो. पालड़ी एम., सिरोही, राजस्